स्वप्नानुभव एक संपदा

INTUTIONS- IMPORTANT MESSAGES

अर्थ, उपचार, प्रार्थना साहित

WITH MEANING, SOLUTION AND PRAYER

संग्रहकर्त्ता एवं प्रकाशक :
श्री कल्कि बाल वाटिका
1903, पहली मंजिल चांदनी चौक दिल्ली-6

वितरक :

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स
110, चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार
पो.बा. न. 2037, दिल्ली-6 **फोन**- 23251630, 23273220

अरोड़ा पुस्तक भण्डार
तहसील रोड, सम्भल-244302 **फोन**- 09412140553

सोनू धार्मिक पुस्तक व सामग्री विक्रेता,
बड़े हनुमान जी कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

मुकेश श्रंगार साहित्य सेंटर,
दानघाटी मंदिर, गोवर्धन, मथुरा (यू.पी.)

कैलाश बुक डिपो,
श्री कल्कि महाराज मंदिर परिसर, सिर डयोढी गेट के सामने,
हवा महल बाजार, जयपुर

शंकर हैंडीक्राफ्ट
दुकान नं. 8 पुरानी विधान सभा के सामने
हवामहल रोड जयपुर फोन- 09672106482

प्रथम संस्करण : 5000 प्रतियां

मूल्य मात्र : 151 रुपए
कल्कि समाज के लिए मूल्य मात्र : 101 रुपए

विषय—सूची

बेटे पर से दोहरी मारकेश टली	63	बेटा बीमारी के चंगुल से निकला	91
जब अकाल मृत्यु टली..	64	प्रचार से बहन की शादी	91
दसवीं में 94 प्रतिशत अंक मिले	65	महाशक्तियों का तांडव रुका	92
भैया तीन में से कौन सी लूँ	166	झांसे से घर हड़पा	68
कल्कि वालों की लड़कियों की शादी पहले	66	मैं और कंप्यूटर कभी नहीं	74
		भैरों बाबा किससे कैसे	75
19 वर्षों बाद संतान प्राप्ति	67	बचाते हैं ?	
भरोसा टूटने पर कल्कि जी ने थामा	78	ब्याज की रकम लौटाओ	72
पिताजी मर कर जिंदा हुए	77	कल्कि जी का लॉकेट	65
सीलिंग टली	76	सुरक्षा कवच है	
साहित्य कार्य पर चाहत पूरी	80	सिद्ध मंत्र ने बदला पत्नी	61
पितृ ने पितृ से स्पष्टीकरण मांगा	165	खाने का स्वाद	
अच्छा सोचो तो तमन्ना पूरी	81	बुद्ध ग्रह प्रभाव से पति	43
माँ काली दुर्घटना से बचाती हैं	82	पत्नी में कलह	
मैंने मौत को सुना नहीं देखा है	83	तांत्रिक जादू से कीला	45
मालकिन ने राक्षस को निकाला मालिक ने रोका	161	घर व्यापार मुक्त	
		पावरफुल कलि का	47
स्वर्गीय नानी ने वादा निभाया	83	पावर से झटका	
कल्कि महोत्वव की पितृ लोक में हलचल	8		
		अमेरिका में कार ड्राइवर फ्री	51
मकान से प्रेत शक्तियां भागी	86	ऑपरेशन टला	52
जब रोग से छुटकारा मिला	87	असाध्य रोग से मुक्ति	51
शेर का दिखना शुभ नहीं	87	आरती करते हुए ज्योत का बुझना	
वनमानुष से नाश नहीं सर्वनाश	162	सिद्ध मंत्र व उपचार	
23 रूपए से 2100 वाले मकान में	88	इंटरनेट बने	59
लक्ष्मी जी सुरंग से नए घर में लाईं	89	हैं सिद्ध मंत्र इतने प्रभावशाली!	59
उपचारों से ज्वैलरी-घर मिला	89	आसुरी शक्तियों में	60
परेशानियों से निकलने के रास्ते मिले	89	तू तू मैं मैं	60
मेरी तो दुर्गा माँ	180	मंत्र बॉक्स चोरों पर मोर	61
वाकई कल्कि जी चमत्कारी स्वर्गीय पिताजी को	90	सिद्ध मंत्र ने अनिष्ट से बचाया	40
प्रसन्नता स्वास्थ्य मिला	91	बहनजी न्यूरो आई सी यू भाग्यशाली हो!	

विषय—सूची

जिद्दी और मूर्ख बच्चे होशियार बने	93
दैवी शक्तियों ने चोरी के कागज दिलवाए	95
पितृी ने जन्मदिन मनवाया	96
मेहनत के बाद भी वैभवता नहीं	98
अस्पताल से कल्कि जी ने घर भेजा	98
ज्वैलरी की वापसी रुकी	99
पुनर्भुगतान से राजद्वारे तक का सफर	100
बिना भाग्य के रुपया मिला	102
बोल कबोल को हल्के में न लें	103
व्यापार में रूके हुए काम पूरे करने के लिए संकल्प करके जल्द पूरा करो	102
बेटे को स्कूल में दाखिला	108
इस और उस जन्म के कर्ज चुकाने के उपाय	109
कल्कि जी ने जताया मैं हूँ तो	108
जाने अन्जाने में कल्कि जी के प्रचार के कार्यों का फल	114
अनहोनी होनी में बदली	115
जैसा काम वैसा दाम	116
जब बीमारी काबू न आए	117
जन्म-जन्म के पाप	118
हिस्सा चाहते हैं	119
मम्मी, मुझे कल्कि जी ने बचा लिया	121
बंदर मोबाइल ले चला	123
बाल की खाल	123
74. बंदर के दिखने पर	123
पितृों की रिकार्डिंग	123
में मदद	
पितृ के कढ़ी परोसने पर अपशकुन	125
पितृ को तो भाग चाहिए	126
दोतरफा पितृ दोष	127
पितृ भोग विलास मुद्रा में	129
चोरी होने से बचें	129
आओ सत्रह घंटे	130
घर का टूटा दरवाजा	131
शील भंग का प्रयास	131
जानवर द्वारा प्रहार	132
जोखिम भरा जीवन	133
धर्म के खजाने से खिलवाड़ नहीं	134
सिर कुचलने से बचा	135
संघर्षमय जीवन	136
साहित्य सृजन से आनंद	137
बैंक में नौकरी मिली	137
जब सिलैंडर छत से फेंका	138
गुमशुदा पितृ की पितृ जैसी चाहत	139
कल्कि उत्सवों में दैवीय आगमन	139
अपने काले रूप में दिखें	140
तीर्थों में भावुकता नहीं	140
बार-बार की गल्तियों से बचें	141
स्व. नेता ने स्वागत किया	141
साधु का दिखना	142
धन व जीवन की सुरक्षा	142
गंगा महारानी से रास्ता	142

विषय—सूची

जमादार का दिखना	143	काश! तुम्हारा खोजी	179
छत का पड़ना	143	21 साल पहले मिलता	
भाइयों में तनाव का दिखना	143	मेरे घर में आया कन्हैया	182
अपहरण का दिखना	144	मैं तेरी क्या तू मेरी उंगुली पकड़	183
दूसरों का अनुभव	144	बचपन के दो घंटे माला का महत्व	184
न बता पाने पर		जब संतान प्राप्ति का योग बना	186
हनुमान जी मार्गदर्शक	144	कल्कि जी के साथ विशेष एक साल	190
धोखे से बचने को	145	मुझे भी चाहिए	194
बड़ों की सलाह से सफलता	147	कल्कि जी के स्वप्नानुभव के उपचारों	
विश्वास व अच्छा सोचने में दम	147	ने मेरे सपनों को साकार किया	21
ज्यादा पाना है तो पिछला चुकाओ			
जब चकला टूटा	149		
दोस्तों को पहचानो	151	**लेख**	
बम-बारूद व आतंकवाद	153		
केंचुआ दिखना	155	आभार	238
रुके काम आगे बढ़ेंगे	156	मानूँ मैं न मानूँ	5
भावुकता की बोल कबोल लिखें	156	कल्कि अवतार अभी क्यों ?	6
पर्स में कोयला	159	स्वप्न अनुभव लीला	8
हाय रे ये अनुभव और उपचार	157	जिन्हें हम पितृ कहते हैं, विदेशी भूत	
तलाक का बंद रास्ता खुला	159	कहते हैं	11
जब सर्जन ने कहा	188	मानो तो देव वरना...	13
आपरेशन भूल जाओ		राजा रानी बनकर	15
लॉकर की चाबी का मिलना		ऊँचा उठे रहने का सरल तरीका	
रोजी-रोटी पर सावधान रहना		पितृों की स्वधा महारानी	224
अपनी बुआ को दे देना	173	जैसी करनी वैसी भरनी	222
मेरी बहन की मंगनी हुई	172	असंभव को संभव कराने का स्त्रोत	230
कल्कि जी की कृपा से	171	कल्कि अवतार न होता तो	24
सरस्वती माँ की कृपा	170	उपचारों की प्रार्थनाएं	205
		भगवान् श्री कल्कि के	
बिना घर बदले सदस्य बचा	174	दिव्य मन्दिर	231
जब प्रोपर्टी का उलझा	176	भगवान श्री कल्कि को नमस्कार	221
विवाद सुलझा		श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी	229
जब डॉक्टरों ने भी हाथ झाड़ा	177	मंत्र बॉक्स में सिद्ध मंत्र ध्वनियां	227
जब योगिनियों ने अपना भाग चाहा	169		

मानूँ मैं न मानूँ

अनुभव पढ़ने से पहले.....ध्यान योग्य

1. इस पुस्तिका में हमने सत्य अनुभव छापे हैं जो समय-समय पर श्री कल्कि जी से हमें मिले हैं। अन्य कल्कि भक्त/देवी देवता जिनका लिखने में हाथ तंग है अथवा जो पारिवारिक-व्यवसायिक व्यस्तता के कारण लिखित अनुभव नहीं भेज पाए सो श्री कल्कि के आदेशों से जो कल्कि समाज वंचित रहा उसका हमें खेद है।

2. ज्यादातर हिंदू जिन परिस्थिति विशेष के कारण सदियों से भावुक-शर्मीला-डरपोक रहा है, जैसा कि कुछ कल्कि भक्तों ने भगवान श्री कल्कि जी की अपने ऊपर कृपा बनाए रखने के लिए हमें अनुभव तो भेजे लेकिन अपना नाम व फोन नं. लिखने से मना कर दिया ऐसे में हमें जबरन वहाँ पर मामाजी, मेघना गोयल और इंदू बंसल का नाम देना पड़ा है ताकि जिज्ञासु अपनी समस्याओं का निवारण कर सकें।

3. स्वप्नानुभव दृष्टा पर पहले जाता है क्योंकि भगवान किसी न किसी रूप में आकर आपको निर्देश देते हैं। अनुभव आने पर सबसे पहले अपने आस पास की परिस्थितियों का निरीक्षण स्वयं करके जो अनुभव में दिखा है उसके अनुसार दिखने वाले को उपचार प्रार्थना बता सकते हैं। यदि आप उनको बताने की स्थिति में नहीं है तो एक दीपक जलाकर भगवान से प्रार्थना कर दें कि हे प्रभु! जिसका अनुभव है यह उन्हें ही दिखाएं मैं अभी बताने की स्थिति में नहीं हूँ। मेरे को इसके पाप से बचाएं।

4. स्वप्नानुभव में पुरूष यदि अच्छे रूप में है तो श्री कल्कि समझें और यदि स्त्री अच्छे रूप में हो तो माँ दुर्गा समझें। इससे आपको अर्थ निकालने में सुविधा होगी।

5. इन स्वप्नानुभवों के अर्थ, उपचार, प्रार्थना से सिर्फ कल्कि वाले अपना अथवा अपने परिवार समाज का अच्छा कर सकते हैं।

ध्यान रहे— अगर इनके द्वारा किसी का बुरा करने का प्रयास किया तो स्वयं करने वाले को ही परेशानी उठानी होगी।

कल्कि अवतार अभी क्यों?

—श्री महावीर चौधरी (कोलकाता)

हमारे शास्त्र प्रमाणित करते हैं—

1. अभी कलियुग चल रहा है जिसकी अवधि 4 लाख 32 हजार वर्ष है।

2. कलि के 5090 वर्ष बीत चुके हैं और अभी प्रथम चरण चल रहा है।

3. कलियुग के चौथे चरण में भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होगा जो कलियुग का नाश कर सत्युग की स्थापना करेंगे।

इसका अर्थ यह है कि भगवान विष्णु के कल्कि अवतार होने में अभी लाखों वर्ष का समय शेष है। अब प्रश्न यह उठता है कि जिस अवतार को प्रकट होने में लाखों वर्ष लगेंगे, उसको अभी क्यों मानें? उसकी पूजा क्यों करें? उसकी पूजा करके क्या मिलेगा? हम इसके विश्लेषण का प्रयत्न करते हैं—

1 यह जगत नारायण और दैवी शक्तियों का लीला संसार है। इनके द्वारा बहुत सी लीलाएं रची जाती हैं जिनमें सबसे मुख्य है नारायण का अवतार धारण करना (अवतार केवल नारायण धारण करते हैं, ब्रह्मा और शिव नहीं)। नारायण जगत के पालक हैं, धर्म के संरक्षक हैं। पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करना और भक्तों की रक्षा करना उनका प्रथम दायित्व है। इसी दायित्व को निभाने कि लिये वो अवतार धारण करते हैं। सतयुग के आरम्भ से ही उन्होंने अपने अवतार धारण करने की प्रक्रिया को एक ही प्रतिज्ञा में बांधा है जिसका उदघोष उन्होंने गीता में किया है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत
अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे

अवतार किसी समय सीमा में बंधा नहीं होता। उसके प्राकट्य के अपने माप-दण्ड होते हैं। नारायण का यह उद्घोष अधर्मी और आसुरी शक्तियों को उनकी ललकार है कि जिस क्षण तुम्हारे अत्याचारों से मेरे द्वारा स्थापित यह माप-दण्ड टूट जाएंगे (जो इस बात का प्रमाण होंगे कि पृथ्वी पाप के बोझ को और नहीं उठा सकती है तथा मेरे भक्त भी अब और अत्याचार नहीं सह सकते हैं), उसी

क्षण मैं भी समय की सभी सीमाएं तोड़कर अवतार धारण करूंगा।

आज यदि हम चारों तरफ नजर डालें तो हम देखेंगे कि शास्त्रों में कलियुग के चौथे चरण के जो लक्षण बताए गए हैं, वो सब इस प्रथम चरण में ही पूरे होने के करीब आ गए हैं। धर्म, सत्य, दया, क्षमा, पवित्रता, आयु का लोप हो गया है, धनी और पाखण्डी ही समाज में श्रेष्ठ हो गए हैं, प्रकृति असंतुलित हो गई है, कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, चारों तरफ आसुरी शक्तियों के प्रहार से हाहाकार मचा हुआ है। हर आदमी रोग ग्रस्त है, वर्ण व्यवस्था समाप्त हो रही है, धन के लिये पुत्र पिता के और भाई-भाई के प्राण ले रहा है, स्त्रियों में शालीनता और लज्जा का लोप होता जा रहा है।

ये परिस्थितियाँ इस सत्य की ओर संकेत कर रही हैं कि युगावतार भगवान श्री कल्कि के प्रकट होने का समय नजदीक आ रहा है।

1. नारायण के रामावतार और कृष्णावतार के समय इस पृथ्वी पर रहते-रहते भी इस समाज ने उन्हें भगवान नहीं माना, उनकी पूजा अर्चना नहीं की। उनके कुछ प्रिय भक्तों, ऋषि और मुनियों को ही ज्ञात था कि वह अवतार हैं। पर इस कल्कि अवतार की लीला ही निराली है। अभी वो प्रगट हुए ही नहीं है पर चारों तरफ उनके मंदिर बन रहे हैं, मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा, पूजा व अर्चना हो रही है, भक्त जुड़ते जा रहे हैं क्योंकि भक्तों की झोलियाँ भरती जा रही हैं, उनकी मनोकामनाएं पूरी हो रही हैं, इतने कम समय में जो उन्हें आज तक नहीं मिला था, कल्कि जी के नाम से प्राप्त हो रहा है। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि दैवी जगत में कल्कि अवतार हो गया है, स्वप्न, जागृत और वाणी अनुभवों के द्वारा वो भक्तों को संदेश दे रहे हैं, उनकी महाशक्तियाँ भक्तों की रक्षा के लिये इस जगत में चारों ओर फैल चुकी हैं, अब केवल प्राकट्य शेष है।

1 प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। आप कल्कि जी की लीला का अनुभव करना चाहते हैं तो उनके महामंत्र—**जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते और बीजमंत्र जय श्री कल्कि जय माता की** एक-एक माला का जाप कीजिए, प्रार्थना के साथ फल समर्पण कीजिए और आप देखेंगे, प्रत्यक्ष, स्वप्न, जागृत और वाणी अनुभवों के द्वारा महसूस करेंगे कि श्री कल्कि जी आपके मानस में प्रकट होकर आपको परेशानियों से निकलने का रास्ता दे रहे हैं, आपकी और आपके परिवार की रक्षा कर रहे हैं।

निष्कर्ष—कल्कि अवतार हो गया है, केवल प्राकट्य शेष है।

कलियुग में कल्कि जी की स्वप्न अनुभव लीला
त्रेता युग की रामायण कहलाई राम की लीला
द्वापर में कान्हा ने खेली माखन लीला

लेखिका : सुश्री इंदु बंसल

प्रश्न : स्वप्नानुभव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जब व्यक्ति विशेष भगवान कल्कि की आराधना करना आरंभ करता है तो सोते हुए स्वप्न में कुछ दिखाई देता है अथवा कोई वाणी सुनाई देती है और वह सो कर उठने के बाद भी उसे पूरी तरह से याद रहती है। इन स्वप्नों अथवा वाणी में उस व्यक्ति के जीवन में आने वाला उत्थान अथवा परेशानियों से निकलने के लिए मार्ग दर्शन छुपा होता है। कई बार भक्त की जाग्रत आँखों के आगे से कोई घटनाक्रम साकार रूप में एक झलक की तरह दिख कर अदृश्य हो जाता है। इन्हें कल्कि भक्त स्वप्न, वाणी एवं जाग्रत अनुभव कहते हैं।

प्रश्न : अनुभव बनते कैसे हैं ? इन्हें देता कौन है एवं याद क्यों रहते हैं ?

उत्तर : संपूर्ण ब्रह्मांड का संचालन करने वाली ब्रह्म शक्ति वास्तव में निराकार है जो दूसरे शब्दों में विशाल सूर्य की तरह एक चमचमाता ज्योति पुंज है। जब इस कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि (विशाल ज्योति पुंज) से भक्त की भक्ति जुड़ती है, तो वह निराकार ब्रह्म भगवान श्री कल्कि जी के निर्देश हमें संकेत के रूप में दिखाते हैं। भगवान विष्णु के पहले नौ अवतार इस बात के प्रमाण हैं। महाविष्णु के इस कलियुग के अवतार प्रभु श्री कल्कि हैं। उनका अवतार हो चुका है, प्रकट होना शेष है। जो भी भक्त उनका नाम जाप, हवन, पाठ और प्रचार का कार्य (सत्संग व साहित्य द्वारा) करता है, उसे भाग्य में लिखे हर दुख व परेशानी से बचाने व धन, सम्पन्नता, वैभवता दिलवाने के लिए, कल्कि भगवान उस भक्त को अपनी अनुभव लीला (स्वप्न, जाग्रत, वाणी अनुभव) द्वारा दिखाकर बताकर रास्ता देते हैं। भक्त अनुभव लीला द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करके पिछले जन्मों के पापकर्मों का भुगतान कर सुख-समृद्धि प्राप्त कर सके, इसलिए ये अनुभव याद रहते हैं। अत: सरल भक्त याद बने रहने और उनका अर्थ जानने व उपचार करने के लिये उसी दिन तुरंत कॉपी/रजिस्टर में लिख लेते हैं।

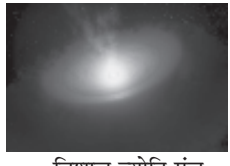
विशाल ज्योति पुंज

प्रश्न : अनुभव शरीर में कहाँ पर आता है ?

उत्तर : स्त्रियाँ जहाँ बिंदी लगाती हैं, उस जगह हर व्यक्ति का तीसरा नेत्र होता है, जो सुप्तावस्था में होता है। जब व्यक्ति युग के अवतार के प्रति भक्ति भाव से जुड़ता है तो उस त्रिनेत्र का तेज जाग्रत होने लगता है। जैस-जैसे भक्त की भक्ति बढ़ती है, वैसे-वैसे उसके तीसरे नेत्र का तेज बढ़ता है और उस तेज से पूर्ण ब्रह्म नारायण के साथ ज्योति पुंज से संबंध जुड़ने लगता है। उस ज्योति पुंज के द्वारा प्रभु स्पष्ट-अस्पष्ट अनुभव तो देते ही हैं, कभी-कभी उसी में उपचार भी देते हैं। तब प्रभु द्वारा भेजा गया संदेश स्पष्ट होने लगता है।

प्रश्न : अनुभव में जो दिखता है, वह कई बार बहुत स्प्ष्ट व अस्पष्ट होता है। मामाजी एवं अनुभव का अर्थ बताने वाले पैनल सदस्य जो अनुभव का अर्थ बताते हैं, वह द्रष्टा का मानस एकदम स्वीकार नहीं कर पाता है। ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर : श्री गुरुजी ने कई बार बताया, अनुभव रेत मिली बूरा होती है। भगवान कल्कि भक्त के कल्याण के लिए स्वयं अथवा दैवी शक्तियों द्वारा संदेश भिजवाते हैं, ताकि कलियुग की आसुरी शक्तियाँ उसमें विघ्न न डालें। इसलिए स्वप्नानुभव कई बार कोड वर्ड में भी होते हैं। (यदि हमें रेत मिली बूरा में से रेत और बूरा को अलग करना है तो उसमें पानी मिला कर कपड़े से छानना पड़ेगा)

अत: मामाजी अथवा अन्य पैनल सदस्य अनुभवों का जो अर्थ बताते हैं, उसमें उनकी अपनी मरजी या विचार नहीं होते हैं। भगवान के दिखाए गए अंतर्जगत से पहले जटिल समस्याओं में से निकालने के लिये (स्वप्न जागृत वाणी) लिखित अनुभवों के आधार पर अथवा अब के आधार पर जो अर्थ उनके मानस में शक्तियाँ देती हैं, वही बताया जाता है।

पैनल मैंबर का अंतर्जगत से संबंध

कल्कि भगवान ने यह बात कई बार अनुभवों द्वारा भी स्पष्ट की है कि जब

भक्त अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अनुभवों का गलत अर्थ बताएंगे और लगाएंगे, तो स्वप्न द्रष्टा तो गिरेगा ही, गलत अर्थ बताने वाला भी गिरेगा अर्थात् कालांतर में वह शक्तिहीन हो जाएगा। आप भी ऐसे कई सदस्यों को जानते होंगे। ऐसे पचासों उदाहरण हमारे पास हैं जिसमें जब मामाजी व अनुभव पैनल ने किसी भक्त के अनुभव का अर्थ उसकी मर्जी के विपरीत बताया तो स्वप्नद्रष्टा ने अपने जनों से नाराजगी जताई, उस अर्थ को गलत माना। बाद में बताई गई परेशानी आने पर या दोबारा उसके अथवा उसके परिवार वालों के स्वप्नानुभवों में भगवान श्री कल्कि ने उसी अर्थ की पुष्टि की। मामाजी अथवा पैनल मैंबर द्वारा बताया गया अर्थ सही था। प्यारे बच्चों मामाजी अथवा पैनल मैंबर में अनुभव देने की शक्ति तो नहीं है?

आज श्री कल्कि बाल वाटिका कल्कि जी द्वारा स्वपनानुभवों में दिए गए निर्देशों का अपनी मरजी थोपे बिना ईमानदारी से पालन कर रही है। तभी एक के बाद एक अनेकों विशिष्ट कार्य भगवान श्री कल्कि जी के पूर्ण हो रहे हैं। महाविष्णु का पहला चमत्कारी अवतार भगवान श्री कल्कि, जिनकी प्रकट होने से पहले मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है। देखते ही देखते महज 17 वर्षों में कल्कि भगवान की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैल रहा है। अनेकों सिद्धपीठों में भगवान श्री कल्कि की मूर्तियाँ लग रही हैं व विधि-विधान से पूजा हो रही है। बन पड़े तो एक बार अवश्य देखें, सुनें **www.jaikalki.com** भजन व आपबीतियों के लिये टाइप करें **merekalki on youtube.com join kalki group real on facebook** अधिक जानकारी के लिये : कुमार विष्णु 9968066625 (पुत्र सुश्री मेघना गोयल) कुमार अनिरुद्ध 9873523985 (पुत्र सुश्री पूजा गुप्ता) से संपर्क करें।

प्रश्न : दृष्टा के स्वपनानुभवों का अर्थ किस आधार पर लगाया जाता है?

उत्तर : जिस समय दृष्टा का अनुभव पैनल मैंबर एकाग्रचित्त होकर सुनता है तो उसका संबंध अंतर्जगत से होने लगता है और उसे संदेश भी मिलने लगते हैं कि इस तरह की स्थिति किस-किस भक्त के ऊपर पहले भी आई है। मामाजी के 50 साल के रिकॉर्ड रजिस्टरों में यह दर्ज है कौन से साल में कब भगवान ने इस प्रकार की परेशानी बताई/दिखाई, हल बताया और सफलता प्रदान की। इससे पैनल मैंबर द्रष्टा को सही रास्ता दे पाते हैं। भगवान श्री कल्कि किसी का बुरा नहीं करते लेकिन उपचारों द्वारा बुरों से भक्तों का बचाव अवश्य करते हैं, तभी द्रष्टा परेशानियों से बच पाता है, उनकी भक्ति सुख-समृद्धि की ओर अग्रसर होती है।

जिन्हें हम पितृ कहते हैं, विदेशी भूत कहते हैं

आज 100 में से 60 परिवारों में पितृ दोष की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। पितृों के तृप्त न होने पर, घर में कलह, बीमारी व व्यापार में परेशानियाँ आती हैं। विद्वानों द्वारा बताए गए महंगे-महंगे अनुष्ठान कर पाना हर किसी के लिये संभव नहीं है। ऐसे में जहां श्री कल्कि की आराधना से पितृ दोष के निवारण का रास्ता मिलता है, वहीं पितृों की कृपा भी मिलती है।

आज हम अपने ऋषियों, गुरुओं पर विश्वास नहीं करते। विदेशियों ने, वैज्ञानिकों ने जो कह दिया उसपर हम आँखें मूंदकर विश्वास करते हैं। तो साथियों अब हम आपको एक घटना आपबीती नहीं, जगबीती बताते हैं।

पिछले दिनों अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन से कुछ बच्चे मिलने गए। उन्होंने राष्ट्रपति से बहुत सी बातें कीं। कुछ बच्चों ने उनसे पूछा कि क्या वह भूतों में विश्वास करते हैं? इस पर उन्होंने हँसते हुए कहा कि अभी तक मैंने भूत तो नहीं देखा इसलिये मैं विश्वास नहीं करता लेकिन मेरा कुत्ता जिसे मैं रैंस कह कर बुलाता हूँ उसने भूत अवश्य देखा है। इसलिये मैं भूत में विश्वास करने लगा हूँ। बच्चों की उत्सुकता देखकर राष्ट्रपति ने उन्हें बताया कि वह वर्षों से सुनते आ रहे हैं कि व्हाइट हाऊस में अमेरिका के राष्ट्रपति लिंकन का भूत रहता है। राष्ट्रपति लिंकन का कमरा अक्सर बंद रहता है। रैम्स को जब-जब लिंकन के कमरे में भेजा जाता है तो, वह अजीब तरीके से भौंकता है, मानो कमरे में कोई है। फिर वह डरकर कमरे से बाहर आ जाता है। कई बार तो दरवाजे में से भी उस खाली कमरे को देखकर भी भौंकने लगता है। इसी से समझा गया कि रैंस लिंकन के भूत को

राष्ट्रपति लिंकन

देखता है। परिवार के लोगों ने स्वयं लिंकन के भूत के दर्शन किये हैं। राष्ट्रपति के यहाँ ठहरने वाले महमानों ने भी अक्सर लिंकन का भूत (प्रेत आत्मा) देखा है। वह किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है। कभी-कभी रात के समय दरवाजों और खिड़कियों को खटखटाता है। राष्ट्रपति रूजवैल्ट, कैनेडी और राष्ट्रपति निकसन ने भी लिंकन के भूत को अत्यंत चिंतित अवस्था में बैठे देखा है। बड़ी-बड़ी हस्तियाँ भी यह मानती हैं कि व्हाइट हाऊस में लिंकन का भूत (प्रेत आत्मा) वर्षों से विद्यमान है। जिसे हमारे ऋषि-मुनियों के शब्दों में कहें तो लिंकन को मुक्ति नहीं मिली है।

इस संदर्भ में आपने श्रीमद् भागवत में गौकर्ण और धुंधकारी की कथा अवश्य सुनी होगी कि वह बुरे व्यसनों में फँस गया था, और अंत में वैश्याओं ने राजा के डर से उसके मुँह और अंगों पर जलती हुई लकड़ियाँ दाग कर उसकी हत्या कर दी थी जिससे वह अगले जन्म में अतृप्त आत्मा (प्रेत) बन गया। गौकर्ण ने श्रीमद्भागवत की कथा सुनाकर उसका उद्धार किया था।

भगवान श्री कल्कि ने अनेक अनुभवों में बताया कि आज हम बहुत दुखी अपने पितृों से हैं, जिन्हें ब्राह्मण पितृ दोष बताकर उसका उपचार करने को कहते हैं। भगवान श्री कल्कि विभिन्न स्वपनानुभवों में भक्तों को पितृों के विकट स्वप्न अनुभव दिखाकर पितृ दोष दूर करने के उपचार तक भी बता देते हैं। उन उपचारों को करने के बाद स्वप्न दृष्टा ने अपने को विपत्तियों के जंजाल से निकलते हुए पाया है। भारतवर्ष में तो प्रति वर्ष आसोज मास के कृष्ण पक्ष में 15 दिन की अवधि पितृ पक्ष या श्राद्ध के नाम से ही जानी जाती है जिसमें पितृों का आवाहन

आपको श्री कल्कि का इशारा स्वप्न जागृत वाणी व मानसिक अनुभव मानो तो देव वरना...

—सुश्री इंदु बंसल (9818416191)

इतिहास साक्षी है कि पांडवों पर सबसे ज़्यादा मुसीबत तभी आई, जब उन्होंने प्रत्यक्ष भगवान श्री कृष्ण का इशारा नहीं समझा और कहा नहीं मानकर उस पर अमल नहीं किया और अपनी मर्जी चलाई। जैसे युधिष्ठिर का जुआ खेलना, अर्जुन से युद्ध के मैदान में कहना कि राजा के पीछे रथ को मत दौड़ाओ, योद्धा होने के अहंकार में अर्जुन द्वारा अपने पुत्र **अभिमन्यु** का गंवाना। युद्ध खत्म होने पर श्री कृष्ण की चेतावनी मौज मस्ती (मदिरा पान) को न मानना। मदिरा पान का सेवन उस पर भी श्री कृष्ण का आना और कहना कि चलो घूमने चलते हैं, इस पर द्रौपदी खुद तो पांडवों के साथ चली लेकिन श्री कृष्ण के कहने पर पांचों बेटों को ले चलने से इंकार कर दिया। परिणाम अश्वत्थामा द्वारा पांचों पांडव कुमारों का सोते हुए सिर काट देना आदि इस प्रकार की कई घटनाएं हैं।

इसी प्रकार पांडवों के साथ जो अच्छा हुआ, वह तब जब उन्होंने श्री कृष्ण की मानी और किंतु-परंतु नहीं लगाया। उदाहरण स्वरूप लाक्षा गृह से सकुशल निकलना, द्रौपदी से विवाह, खाण्डव वन से इंद्रप्रस्थ का निर्माण, राजसूय यज्ञ द्वारा पूरे आर्यव्रत में सम्मानित होना आदि इस प्रकार की भी कई घटनाएं हैं।

कौरव पक्ष में दुर्योधन, शकुनी, अश्वत्थामा अन्य लोग बहुत ही कुटिल और धूर्त प्रवृत्ति के थे, तब भी श्री कृष्ण शतरंज के बहुत ही कुशल खिलाड़ी की तरह कौरवों की दूरगामी षड्यंत्रकारी घिनौनी चालों की तह तक पहुँच जाते थे। उदाहरण स्वरूप इंद्रप्रस्थ में अपनी समृद्धिशाली राजधानी बनाकर राजसूय यज्ञ का सफल आयोजन करने के बाद पांडवों की वीरता का डंका पूरे आर्यव्रत में बज रहा था। **अर्जुन** पूरे आर्यव्रत में निर्विवाद सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के रूप में **विख्यात** था **लेकिन** भगवान श्री कृष्ण संतुष्ट नहीं थे। आने वाले ऐसे युद्ध की आशंका जो न पहले कभी हुआ और शायद ही भविष्य में हो जिसमें दोनों तरफ़ के रिश्तेदार एक दूसरे को काटेंगे-मारेंगे, जिसमें धूर्त, कुटिल और अविजयी कर्ण जैसे योद्धा, भीष्म पितामह, गुरुद्रोण, परशुराम शिष्य जैसे योद्धा सामने होंगे। सो भगवान कृष्ण ने उसे आरामगृह से निकालकर स्वर्गलोक जाकर अपने औरस पिता इंद्र से दिव्यास्त्र लाने

को कहा। इस पर इंद्र ने अर्जुन से कहा कि वह तो दिव्य अस्त्रों के महज संरक्षक हैं इसके लिये तुम महादेव को प्रसन्न करके मेरे द्वारा दिव्यास्त्र पाशुपास्त्र प्राप्त करने के अधिकारी हो सकोगे।

इसपर अर्जुन ने महादेव को प्रसन्न करने के लिये ऐसी कठोर तपस्या की जो उसके व्यक्तित्व को समष्टि (संसार की भलाई) की ओर विकसित (बढ़ोतरी) करती है। उसकी तपस्या एवं शुभभावना से शंकर भगवान एक भील (किरात) का रूप धारण करके अपने धनु कौशल से अर्जुन के श्रेष्ठ धनुर्धर होने के अहंकार का नाश (ग्रास) करके उसे पाशुपास्त्रा के रूप में आर्शीवाद प्रदान करते हैं। तब यही पाशुपास्त्र महाभारत युद्ध में अर्जुन के काम आया।

हमारा आपसे अनुरोध है कि भगवान श्री कल्कि समस्त 23 अवतारों की विशेषताएं अपने में संजोए अवतरित हुए हैं।

अत: हर अनुभव (स्वप्न, जागृत, वाणी व मानसिक) को लिखकर जल्द से जल्द संकल्प करके उपचार करते रहना। इससे आप परेशानियों से निकलते जाओगे एवं देखते-देखते जैसा सोचते थे उससे भी ज्यादा निहाल होते हुए वैभवता की सीढ़ी पर चढ़ते हुए अपना यह लोक व परलोक बनाओगे।

जरा सोचो, द्वापर में मजाक में द्रौपदी के मुँह से दुर्योधन के लिये सत्य लेकिन कड़वे शब्द निकल गए ''अंधों का अंधा'' (पिता अंधे, पानी नहीं है तो बच रहा है और पानी है तो उसमें घुस रहा है), कितना बड़ा महाभारत हुआ जो युगों तक जाना जाएगा। अब तो हम कितनी ऐसी कलियुगी शक्तियों से घिरे हैं। प्रभु श्री कल्कि का नाम, जाप, ध्यान, पूजा करके ही उनके स्वप्न जागृत वाणी मानसिक अनुभवों द्वारा बचने का सुगम रास्ता हर कल्कि भक्त को मिल सकता है।

आप अपने हर स्वपननानुभव को लिखो, संकल्प 1 रुपये 2 बताशे से जितना जल्द हो कर दो। अगर कलियुग परेशानी के कारण जल्दी नहीं करने दे तो मानसिक रूप से चलते फिरते कर दो। रात तक जब मौका मिले जल हाथ में लेकर कर देना। उपचार जितना जल्दी बन पड़े 1 रुपया 2 बताशे से कर देवें। देखना आप जीवन की प्रतिदिन की परेशानियों से निकलकर स्वयं अर्जुन की तरह कृष्ण (कल्कि) को अपने साथ पाओगे। ठट्ठा ठिठौली में भूमि का भार उतर जाएगा और भगवान श्री कल्कि प्रगट हो जाएंगे।

पुनर्भुगतान (repayment) करके राजा रानी बनकर ऊँचा उठे रहने का सरल तरीका

—श्री महावीर चौधरी, सुश्री श्रुति चौधरी

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, श्री हनुमान जी एवं चमत्कारी श्री कल्कि जी की कृपा से स्वप्न, जागृत, वाणी, मानसिक अनुभवों द्वारा मैंने 50 साल में अपने साथ अनेक बार असंभव को संभव होते देखा। वैसा ही मैंने अपने साथियों से करवाया जिससे वो भी कहीं से कहीं पहुँच गए। आज वह उसे कल्कि जी की कृपा न मानकर अपना भाग्य मान बैठें कि यह तो हमारे भाग्य में था।अनुभवों का सही अर्थ उपचार न करके अर्न्तजगत से जो कल्कि जी द्वारा लोन की वापसी वाला रूप दिखता है, उसका सही अर्थ बताने पर जो कि उनके मन माफ़िक नहीं होता, उसका उलाहना तो मामाजी को सीधा या किसी के माध्यम द्वारा सुनना लाजमी है, ''मामाजी के भाव अच्छे हैं परन्तु बोल अच्छे नहीं हैं, मामाजी का स्क्रू लूज़ है, पूरे दृष्टांत सुनाते हैं, प्रवचन करते हैं, बहुत ज्यादा बोलते हैं, मामाजी के शब्द अनगड़ (तराशे हुए नहीं) हैं, मामाजी कल्कि का नाम लेकर स्वप्न अनुभवों के अर्थों से डराते हैं आदि....

अपने साथियों को ऊँचा ही ऊँचा उठा देखने की चाह वाले मामाजी ने इसके लिये कोलकाता के श्री महावीर चौधरी का सहारा लिया जो उनके कड़वे बोलों को कुनेन की तरह उन पर चीनी चढ़ाकर आपके सामने अब संक्षिप्त रूप में पेश कर रहे हैं।

इसी प्रकार स्वप्नानुभव के अर्थ मामाजी जब फोन पर बताते हैं तो उस समय अर्न्तजगत से जो विभिन्न संदेश आते हैं मामाजी उन्हें सामने वालों को समय के अभाव में तुरंत जवाब चाहने वालों को बिना तराशे बोलों में बता देते हैं।6 जनवरी 2013 को स्वपनानुभव विज्ञान पुस्तक का विमोचन कल्कि परिदृश्य के सत्संग सुधा में होने जा रहा है, जिसके द्वारा भक्तों को अपनी परेशानियों का हल मिल सकेगा। मामाजी के अनगढ़ शब्दों को सुंदर शैली में पिरोने में सहयोग दे रही है सुश्री संगीता गर्ग और सुश्री मेघना गोयल।

मामाजी की तरह श्री कल्कि जी द्वारा नव-निर्माण (new formation) को स्थायी (permanent) बनाने के लिये पुनर्भुगतान (repayment)में लापरवाही न करें वरना कलियुग की मायावी शक्तियों द्वारा छले जा सकते हैं।

विज्ञान क्या है ?

विज्ञान यानि किसी भी विषय का विशेष ज्ञान, चाहे वह भौतिक जगत का हो या दैवीय जगत का।

विज्ञान किसी भी तकनीक को आज के अनुरूप और अधिक उन्नत बनाकर मनुष्य को अधिक सुविधा प्रदान करता है। ज्ञान के इस सफर की कोई मंजिल नहीं है। इसलिये यह कभी नहीं रुकता है, केवल आगे बढ़ता जाता है। विज्ञान भविष्य में तकनीक के आज के स्वरूप को इतना बदल देता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। परन्तु यही विज्ञान का सत्य है। वो मनुष्य से आज कल्पना कराता है, सपनों में आकार देता है और भविष्य में प्रत्यक्ष करता है। हम कुछ उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न करते हैं।

1. मोबाईल फोन:- वर्षों पहले मनुष्य केवल landline फोन तक ही सीमित था। दूर किसी से बात करनी हो तो सब काम छोड़कर फोन पर बैठो, कॉल मिलने पर बात करो। उस समय कल्पना करना भी मुश्किल था कि भविष्य में कोई एसी तकनीक (device)विकसित होगी जो चलते फिरते मनुष्य को पूरी दुनिया से जोड़ देगी। मोबाईल फोन और सैटेलाइट के माध्यम से आज यह सम्भव हो गया है।

2. कम्प्यूटर:- इसने इंटरनेट और सैटेलाइट के जरिये एक चमत्कार कर दिया है। क्या कभी कोई सोच सकता था कि केवल एक बटन दबाने से कोई भी सूचना वेबसाइट और डॉट कॉम के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने से मंगाई या भेजी जा सकती है। कम्प्यूटर पहले डैस्कटॉप था फिर लैपटॉप हुआ और अब टैबलेट हो गया है। पहले इंटरनेट फिक्स था जिसमें हम एक जगह बैठकर काम करते थे वो अब वायरलेस और 3जी हो गया है।

हम बैंक एकाऊँट का एक उदाहरण देते हैं— पहले बैंक के किसी भी एकाऊँट को इस्तमाल करने के लिये बैंक की उसी शाखा में जाना पड़ता था। लेकिन आज कम्प्यूटर, इंटरनेट, डॉट कॉम के माध्यम से हम अपने bank account के Id और पासवर्ड के माध्यम से विश्व के किसी

भी कोने से उस बैंक की website पर जाकर अपने एकाऊँट को इस्तमाल कर सकते हैं, उसी तरह अर्न्तजगत (दैवीय जगत) में जो भी लैपटॉप या उन्नत तकनीक है वो मानसिक उर्जा से चलती है। शक्तियों को केवल नाम सोचना पड़ता है और उस नाम से सम्बन्धित सभी सूचना (इस जन्म और पिछले जन्मों की), उनके screen पर flash (दिखने) करने लगती है। हर जीव के प्रत्येक जन्म के हर सैकेन्ड के पाप-पुण्य कर्मों का हिसाब दैवीय जगत में चित्रगुप्त रखते हैं, जो उनके data card में store होकर माइक्रोचिप्स में परिवर्तित होकर शक्तियों के लैपटॉप पर forward होता रहता है। इस तरह प्रत्येक दैवीय शक्ति की जानकारी में ये सारे हिसाब रहते हैं।

अब हम भगवान श्री कल्कि की कृपा से एक चित्रण प्रस्तुत करते हैं—

दैवीय जगत में एक विभाग होता है जो पाप-पुण्य के हर हिसाब को बीजों (seed)में परिवर्तित करके उगने के लिये भेज देता है। जिस तरह से हम यहाँ फल-फूल और सब्जियां उगाते हैं जो ऋतुओं के हिसाब से अपने समय पर फलती हैं, उसी तरह से पाप और पुण्यों के यह बीज कई जन्मों में फलित होते हैं। बोल चाल की भाषा में यदि किसी के साथ कोई दुर्घटना घटती है तो वह बोलता है कि पता नहीं किस जन्म में मैंने क्या पाप किया था जो मेरे साथ ऐसा हुआ। इस जन्म में तो मैंने कुछ किया ही नहीं। यदि हम किसी दुर्घटना से बच जाते हैं तो हम कहते हैं कि पता नहीं किस जन्म में क्या पुण्य किया था जो बच गये। कहने का तात्पर्य यह है कि कर्म फलेंगे और उनका भुगतान करना होगा यह निश्चित है जिसे हम इस तरह भी प्रस्तुत कर सकते हैं—

जैसा पाप का भार, वैसा उसका आकार, उसके अनुरूप दुःखों और कष्टों का प्रहार।

जैसा पुण्यों का प्रभाव, वैसा सुख और वैभव का अविर्भाव (मिलना)॥

अब हम श्री कल्कि और कलियुग पर आते हैं—

शास्त्रों के अनुसार भगवान श्री कल्कि भगवान श्री विष्णु के चौबीसवें और मुख्य अवतारों में दसवें और अंतिम अवतार हैं जो कलियुग का अंत करके सत्युग की स्थापना करेंगे। प्रत्येक अवतार की शक्ति उसके भक्त होते हैं जिसे कलियुग अच्छी तरह जानता है। कलियुग ने अपने लैपटॉप को श्री कल्कि के नाम से इस तरह जोड़ दिया है कि ज्यों ही इस पृथ्वी पर कोई भक्त श्री कल्कि का नाम लेता

है उसका नाम कलियुग (कलि राक्षस) के screen पर flash (दिखने) करने लगता है और वह तुरन्त उस मनुष्य के उन सभी पापों का हिसाब करने लगता है जिसका फल शायद उस मनुष्य को अभी नहीं कुछ सालों अथवा जन्मों के बाद मिलना था। इस list को final करके वो कल्कि जी के पास भेज देता है कि मुझे इस मनुष्य के इन-इन पापों का भुगतान चाहिये।

अब हम कल्कि जी की कार्य पद्धति पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करते हैं:-

आज का यह युग विज्ञापन का युग है। किसी भी चीज़ को बाज़ार में स्थापित करने के लिये केवल विज्ञापन का सहारा होता है। हर चीज़ हर जगह मिल रही है, किसी भी नई चीज़ को मनुष्य क्यों स्वीकार करेगा? मल्टीनेशनल कंपनियाँ अपने किसी भी उत्पादन को बाज़ार में चलाने के लिये, उसे बाज़ार के अन्य उत्पादनों की तुलना में बहुत कम दाम में उपलब्ध कराती हैं, नई-नई तरह की स्कीमें देती हैं, लाखों रुपये उसके विज्ञापन पर खर्च करती हैं कि वो उत्पाद बाज़ार में स्थापित हो जाए। हमारे कल्कि जी भी अभी यही कर रहे हैं, वो अपने साथ पुण्यों की अथाह दौलत लेकर अवतरित हुए हैं। जो भक्त कल्कि जी का नाम लेता है कलियुग (कलि राक्षस) पिछले कई जन्मों का खाता खोल-खोल कर कलियुग उसका भुगतान कल्कि जी से मांगता है। कल्कि का नाम लेने वालों की रक्षा के लिये कल्कि जी **अपने खाते से उन पापों का भुगतान करते हैं क्योंकि पापों का धर्म ही है भुगतान लेना चाहे वो भुगतान उन्हें कोई भी दे** (जैसे हम मारकेश की दशा में पण्डित जी से जाप कराके भोले नाथ से आयु प्राप्त करते हैं) यादि किसी भक्त का 100 का भुगतान है तो कल्कि जी उसके 90 के कष्ट और पीड़ा को अपने ऊपर लेकर अपने खाते से उसका भुगतान करते हैं। भक्त को केवल 10 के बराबर कष्ट और पीड़ा का भुगतान कल्कि के नाम लेने वाले को करना पड़ता है। उसके संचित पुण्यों का फल यदि 100 मिलना है तो कल्कि जी अपने नाम का creditcard उसे प्रदान करते हैं जो उसे 10,000/- के बराबर सुख और वैभव प्रदान करता है। लेकिन बैंक की तरह किसी भी दैवीय शक्ति के पास bad investment के लिये धन नहीं है। **उसको हर हाल में repayment (पुनर्भुगतान) चाहिये। भगवान श्री कल्कि भी अपने भक्तों से भी यही चाहते है कि मैंने तुम्हारा असम्भव कार्य सम्भव किया अब तुम मेरे प्राकट्य के लिये मेरे जरूरत के काम (मेरे साहित्य का, प्रचार का और मूर्ति स्थापना**

का) करो। जिस तरह हम बैंक से overdraft लेते हैं या उसके creditcard से कोई सामान खरीदते हैं तो बैंक के नियमों के अनुसार हमें उसका भुगतान करना पड़ता है वरना बैंक हमें कानूनी चिट्ठी भेजता है। हम सावधान नहीं होते हैं तो बैंक कुर्की ले आता है, जो हमारे पास है वो भी चला जाता है। उसी तरह यदि कोई भी कल्कि भक्त सुख, वैभव और ऐश्वर्य पाकर अपनी अज्ञानता में कल्कि जी की प्रसन्नता के इन कार्यों को नहीं करता है तो कल्कि जी उसके भाग्य से **जो भी अधिक सुख और वैभव उसे अपने creditcard के माध्यम से दिया है, सिर्फ उसे ही वो बिना ब्याज के वापस ले लेते हैं।** इस तरह के कई उदाहरण हम मामाजी श्री ओ. पी. गुप्ता से ले या प्रत्यक्ष देखने जा सकते हैं। जो कल्कि जी की कृपा से उठे।

अब मैं मामाजी श्री ओ. पी. गुप्ता से सम्बोधित होता हूँ। वो इसी बात को अपनी खरी और खड़ी भाषा में कहते हैं। वो जो भी बोलते हैं आपबीती, आँखों देखी और भक्तों की भलाई के लिये बोलते हैं। परन्तु उनके भाव लोगों को समझ में नहीं आते, चुभते हैं और इस बात पर बहुत विवाद है।

भक्त कहता है कि मैं रोज पूजा, जप और हवन पूरी निष्ठा से करता हूँ। प्रचार और साहित्य बच्चों को संस्कार आदि करने के लिये मुझे जो भी मिला है कल्कि जी की कृपा से मिला है, वह मेरे भाग्य में था इसलिये मिला है। मामाजी ऐसा कैसे बोल सकते हैं कि यदि ऐसा नहीं करोगे तो कल्कि जी सब वापस लेकर मुझे बर्बाद कर देंगे। कोई भी भगवान वो चाहे भोलेनाथ, दुर्गा मां, श्याम बाबा, श्री कृष्ण, हनुमान जी इत्यादि भक्तों को देकर वापस नहीं लेते न वो ये कहते हैं कि इस तरह से मेरा काम करो वरना मैं तुम्हें बर्बाद कर दूँगा फिर क्या कल्कि रूप में हम किसी Don (दादा) के चंगुल में फँस गये हैं कि उनके कहे अनुसार नहीं करेंगे तो बर्बाद हो जाऐंगे। जब कोई भी मनुष्य दु:खों और कष्टों से निकलकर वैभव में जीने लगता है तो उसे यह बात बहुत चुभती है।

परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है। **कोई भी दैवीय शक्ति मनुष्य को उसके भाग्य से अधिक नहीं देती है इसलिये वापस लेने का प्रश्न ही नहीं उठता है,** परन्तु कल्कि जी इनसे अलग हैं। उन्हें अवतार धारण कर प्रगट होना है। सुक्ष्म जगत में उनके अवतार धारण करने की प्रक्रिया पूर्ण हो गई है पर प्रगट होने के लिये उन्हें सवा लाख भक्तों की आवश्यकता है इसलिये कल्कि जी अपने भक्तों को अपने

खाते से भुगतान कर उनके भाग्य से बहुत अधिक दे रहे हैं कि वो पूरा मन लगाकर उनके प्रचार का, साहित्य का, मूर्ति स्थापना का कार्य करें जिससे अति शीघ्र सवा लाख भक्तों की यह गिनती पूरी हो, और वो प्रगट होकर कलियुग का नाश कर सत्युग की स्थापना कर सकें।

नोट:- मामाजी को भगवान श्री कल्कि जी ने विदेशों की यात्रा करवाई। केन्द्रीय सरकार व दिल्ली सरकार से 11 निर्यात पुरस्कार दिलवाय जिसमें से एक पुरस्कार प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी से भी दिलवाया। लेकिन जब लापरवाही और अज्ञानतावश उन्होंने कल्कि जी के प्रचार कार्यों तथा पूजा हवन से पल्ला झाड़ा तो **1986-87 में वो समय भी आया जब उनके कनस्तर में आटा नहीं रहा।** मामाजी की यह आपबीती कल्कि जी के बदलते तेवर जिसकी उन्हें अनूभूति है उसके अनुरूप और भक्तों पर परेशानियाँ बीतनी शुरु हो गई हैं अन्य कल्कि भक्तों पर नहीं बीतें (इसलिये मामाजी इतनी स्पष्ट, सही (कड़वी पर खरी) बात कहते हैं।

हम जो चाहते हैं वह नहीं होता,
होता वह है जो कल्कि जी चाहते हैं।
इसलिये यदि हम वह करें जो कल्कि जी चाहते हैं,
तो कल्कि जी भी वही करेंगे जो हम चाहते हैं॥

कल्कि जी के स्वप्नानुभव के उपचारों ने मेरे सपनों को साकार किया

—सुश्री रमणी अग्रवाल (9212216251)
जर्मन टीचर जी.डी.गोयनका स्कूल

तीन साल पहले जब मैंने कल्कि भगवान की स्वप्न अनुभव लीला के महत्व को समझा तब से ही मेरे जीवन में कल्कि जी ने एक के बाद एक चमत्कार करने शुरु कर दिये। मैं स्कूल व कॉलेज के दिनों से ही जी.डी. गोयनका स्कूल के बारे में सुनती आई थी। एक दिन बस स्टॉप पर खड़े हुए मैंने जी. डी. गोयनका स्कूल की बस को देखकर इतनी प्रभावित हुई और मन में विचार आया कि क्या कभी मैं भी इस स्कूल में जा सकूँगी।

सुश्री रमणी (बाएं) जर्मनी में

मेरी शादी के बाद श्री कल्कि जी का नाम मुझे अपनी सास से मिला, जिन्होंने बचपन से ही कल्कि जी की आराधना की है। कल्कि जी के अनुभवों का समय से अर्थ समझकर व तत्काल उपचार करने से असंभव और अनेकों रास्ते खुलते गए जिसके फल स्वरूप 19 जुलाई 2010 को मुझे जी. डी. गोयनका स्कूल में जर्मन अध्यापिका की नौकरी मिल गई।

यह तो शुरूआत थी फिर दोबारा यही अनुभव आने शुरु हुए कि जर्मन भाषा ही आगे* **ऊँचाइयों (हाईट ऑफ ग्लोरी) पर ले जाएगी और लापरवाही की तो जमीन भी चटा देगी। मैं स्वप्न अनुभवों के अनुरूप लगातार उपचार करती रही और गुरु जी (रामकृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी), हनुमान जी, सरस्वती जी, गाय माता, सूर्य भगवान व कल्कि जी की आठ बार की नमस्कार में रास्ता मांगती रही। हवन, भगवान श्री कल्कि की आराधना (माला, पूजा, हवन) व उनके उत्सवों में नियमित जाती रही। जब जब मुझसे इस संबंध को निभाने में चूक होती तो श्री कल्कि जी स्वप्नानुभव द्वारा मार्गदर्शन करते थे और मैं उस निर्देश को परेशान होते हुए भी पूरा करके घर परिवार और नौकरी तीनों मोर्चों पर विजयी हो रही हूँ।**

श्री कल्कि जी की अहैतु की कृपा ने मामाजी की तरह अचानक 10 नवंबर 2010 को मेरी मुलाकात एक पुरानी जानकार जर्मन अध्यापिका से करवाई, जिन्हें मैं बहुत समय से संपर्क करने की कोशिश कर रही थी। उनसे मिलना कल्कि जी ने मानो चुटकी में संभव करा दिया। मेरी यह जर्मन टीचर अब इंडो जर्मन टीचर एसोसिएशन की महासचिव है। उन्होंने मुझे भी इस एसोसिएशन का तुरंत सदस्य बना दिया। कल्कि जी का चमत्कार देखिए कि यही टीचर मेरे स्वप्नानुभव में सकारात्मक शक्ति के रूप में दिखती थीं जिनसे आगे मुझे रास्ता मिला। फिर तो मैं कई बार अंतराष्ट्रीय सैमिनार में उनसे मिली। स्कूल के बच्चों को मैंने जर्मन भाषा का अंतराष्ट्रीय पेपर भी दिलवाया जो कि सिर्फ कल्कि जी की कृपा से संभव हो पाया था।

मुझे मैक्समुलर भवन, जर्मन एंबैसी द्वारा जर्मनी के लिए एक महीने की स्कॉलरशिप मिली। यह दिन मेरी जिंदगी का सबसे खुशी का दिन था क्योंकि जब मैं जर्मन सीखने जाती थी तब भी मेरा एक ही सपना था कि मुझे जर्मनी घूमने जाना है पर **अपने पैसो से नहीं सरकार के खजाने से (स्कॉलरशिप पर)।** यह सपना 2 जनवरी 2012 को पूरा हुआ जब मैं जर्मनी जाने के लिये हवाई जहाज में बैठी। जैसा मामाजी से सत्संग में श्री कल्कि जी के लिए सुना था सच कहती हूँ आज **मेरी आत्मा के रोम-रोम से सिर्फ कल्कि जी के लिये बहुत-बहुत आभार प्रकट हो रहे थे।**

आभार का यह सिलसिला जारी रहा। मैं सरस्वती मां से निरंतर जर्मनी में भी प्रार्थना करती रही कि माँ मेरे पूरे जर्मनी प्रयास में मुझे सफलता दिलवाइये। इस पाश्चात्य देश में भी मैंने कल्कि जी की माला व पानी वाले हवन को करना जारी रखा। इन 25 दिनों में अपने परिवार (बेटी, पति, सास, ससुर) से दूर हर पल मुझे भगवान श्री कल्कि की कृपा का अहसास होता रहा, परिणामस्वरूप मुझे वहाँ के टीचर्स द्वारा ना केवल मेरे जर्मन ज्ञान के लिए प्रशंसा मिली बल्कि मुझे वहाँ श्री कल्कि जी ने ऐसे रिमार्कस दिलवाए जो कि बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। एक दिन जर्मनी में मुझे वाणी अनुभव हुआ ,''तुम हमेशा जर्मनी जाने के सपने को सकारात्मक सोचती थीं,'' **इसी लिये ब्रह्माण्ड में इसकी बनावट उसी दिन से शुरु हो गई थी। श्री कल्कि जी स्वप्नानुभवों द्वारा तुम्हारे पिछले जन्मों के पापों को दिखा कर, तुम्हारे ,द्वारा निष्ठा से अनुभवों का सही समय पर उपचार करने से और कल्कि जी के आदेशों की गंभीरता समझने से तुम्हारा**

यह सपना पूरा हुआ है ।

मैं जब भी कल्कि जी की कृपा का गहराई से मनन करती हूँ तो आँखों में आँसू आ जाते हैं कि मेरे यह चमत्कारी श्री कल्कि जी मुझे पहले क्यों नहीं मिले? जर्मनी जाना, वो भी स्कॉलरशिप पर शायद मेरे लिये एक सपना ही बनकर रह जाता अगर कल्कि जी और गुरु जी (हनुमान जी, रामकृष्ण परमहंस जी) का दिखाया रास्ता नहीं मिलता। इस जर्मन ट्रिप ने न केवल मुझे बल्कि मेरे समस्त परिवार को मान व प्रतिष्ठा दिलवाई। मेरी अंतरात्मा से गुरु जी के यह बोल निकलते हैं—

मना तेरी बन जाएगी, बना ले कल्कि नाम से।
वो बातें सूझेगीं तुझे जो, नहीं सुझाई देती हैं।
जिसको जाने बिन दुनिया सब, लूट कमाई लेती है।
अंधे कहलाते जिसके बिन, ध्यान लगा उस नाम से।

कल्कि अवतार न होता तो हिन्दू डोडो पक्षी की तरह इतिहास के पन्नों में रह जाता

वेदों, पुराणों, शास्त्रों में जो परमात्मा ने मनुष्य को जीने की कला सिखाई है उसी के अद्‌भुत ज्ञान से यह दुनिया चलती है। शुरु से विप्रों ने गहन अध्ययन से कंठस्थ करके समाज को खुले दिल से कुटियाओं में रहते हुए आयाचित जो मिला, परमात्मा के सहारे उस पर सब्र करते हुए प्रजा को महलों में आनंदपूर्वक रहने, फलने-फूलने के आशीर्वाद दिये अत: सृष्टि के आरम्भ से संसार में ब्राह्मणों, विद्वानों का प्रभुत्व रहा।

उदाहरण के लिये आपने चाणक्य (ब्राह्मण) को देखा जिसने नंद वंश से अपने अपमान का बदला लेने के लिये चंद्रगुप्त बालक को शास्त्रों की विद्या के द्वारा तैयार करके अपने लक्ष्य को पाया। ऐसे ही महाराष्ट्र की जीजाबाई ने रामायण, श्रीमद्‌भागवत के ज्ञान द्वारा शिवाजी को पोषित (पाल) कर मुगलों (मुसलमानों) से हिन्दू जाति के अपमान का बदला लिया।

1857 में एक मंगल पाण्डे द्वारा सैनिक छावनी में केवल यह तथ्य उजागर करने पर विद्रोह हुआ कि कारतूस चलाते वक्त मुँह से एक चमड़े का छर्रा खींचना पड़ता है, जिसमें हिन्दुओं की बंदूक में गाय की चर्बी और मुसलमानों की बंदूकों में सुअर की चर्बी लगी होती है। यह बात अचानक उभर के आने पर विद्रोह हो गया। विद्रोह का असली कारण आर्थिक न था बल्कि धार्मिक भावनाओं पर प्रहार था। अंग्रेजों की ही भारतीय फौज़ों ने अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण जहां कही अंग्रेज मिले उन्हें गाजर मूली की तरह काट लैम्प पोस्टों तक पर लटका दिया।

इस प्रथम धार्मिक स्वतंत्रता संग्राम को अंग्रेजों ने गद्दारी का नाम दिया और अपने देश के विचारकों (Thinkers & Thoughters) के गहन परीक्षण, निरीक्षण करने के बाद यह फैसला लिया कि अब हमें भारतीयों पर हकूमत करने के लिये इन्हें अपने जैसा बनाना होगा।

जिन गौ-ब्राह्मणों गुरुकुलों की वजह से इन में नैतिकता, शक्ति ज्ञान बुद्धि बल बढ़ता है उन्हें खत्म करना होगा और इनकी निगाह से इन्हें गिराना होगा। इसके लिये रिटायर्ड चीफ जस्टिस लॉर्ड मैकाले ने ईस्ट भारत में स्कूलों की नींव रखी और अपने पिता को एक पत्र द्वारा सूचित किया कि हमारे अंग्रेजी स्कूलों की बड़ी

आश्चर्य जनक प्रगति हो रही है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिन्दू अपने धर्म में विश्वास नहीं रखता है। अब हम हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही अपना मकसद सिद्ध कर सकते हैं। धर्म के नाम पर अब हमारा पहले (1857) की तरह कोई विरोध नहीं होगा। अर्थात् अपने त्योहारों के दिन ही इन्हें इनके देवी-देवता याद आऐंगे व सत्कर्म जप पूजा व्रत करेंगे। दूसरे शब्दों में अंग्रेजियत इनके दिलों में उतर गई है।

1947 में फिरंगियों (अंग्रेजों) ने जब भारतवर्ष से विदाई ली तो उन्होंने अपनी गहन कूटनीति से फूट डालो (Divide & Rule) शासन करो की नीति के अनुसार भारत के दो टुकड़े किये। मुसलमानों के लिये पाकिस्तान और हिन्दुओं के लिये हिन्दुस्तान। दोनो जातियों के खैरनुमा तब से ही नहीं आज दिन तक बने हुए हैं। प्रत्यक्ष में न दिखते हुए पीठ पीछे से किस प्रकार हिन्दू बाहुल्य ब्राह्मणों-गाय का सर्वनाश किया है, **जिस कारण हिरण्यकश्यप को मारने वाले भगवान विष्णु ने समय से पहले श्री कल्कि अवतार लिया है।**

900 वर्ष तक हम मुसलमान विदेशियों के शासन में रहे 150 वर्ष अंग्रेजों के और अब काले अंग्रेजों के गुलाम हैं। 1947 में ब्रिटेन जाते हुए अंग्रेज हमारे भारत के दो टुकड़े कर गए। हिंदुओं (वैश्य, गुजराती, मराठी, सिंधी, पंजाबी, बिहारी, बंगाली, मलयाली आदि) के लिए हिंदुस्तान और मुसलमानों के लिए पाकिस्तान यह सभी को ज्ञात है कि किस तरह पाकिस्तान से हिंदुओं को खदेड़ा गया जो बचे भी उनकी लड़कियों को उठा कर जबरदस्ती विवाह करवा कर उनका धर्म परिवर्तन करवाया गया, और करवा रहे हैं। ऐसे में किसी हिंदू का वहाँ के प्रशासन में आने का तो सवाल ही नहीं उठता। दूसरी तरफ हिंदुस्तान में से मुसलमान जब पाकिस्तान वापिस भेजे जा रहे थे तब गांधी जी ने भाईचारे की दुहाई देकर जो मुसलमान नहीं जाना चाहते थे उन्हें अपना सुरक्षा कवच प्रदान करके रोक लिया। हमारी धार्मिक मान्यताएं प्रभु श्रीराम की तरह एक पत्नी व्रत हैं जबकि उनकी मान्यताओं में बहु पत्नी प्रथा है।

भारत सरकार द्वारा आबादी का नियंत्रण करने के लिए परिवार नियोजन की नीति को बढ़ावा दिया गया जिसके तहत हर परिवार में एक या दो बच्चों का प्रचार किया गया जबकि उनका धर्म इसको नहीं मानता इसका परिणाम यह हुआ कि हम अपने ही हिंदुस्तान में बहुसंख्यक (Maority) से अल्पसंख्यक (Minority) होते जा रहे हैं। जिसका उल्लेख माननीय हाई कोर्ट ने अपने फैसले में इस प्रकार कहा—

5 अप्रैल 2007 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा कि यू.पी. में मुसलमान अब अल्पसंख्यक नही हैं। लोकसभा में जो सबसे ज्यादा सीटें रखता है वह आज मुस्लिम बाहुल्य राज्य है। आमदनी के हिसाब से भी देखें तो हिन्दू और मुसलमान आज भाई-भाई हैं। सालाना खर्च के मामले में राष्ट्रीय स्तर पर औसतन मुसलमान परिवार हिन्दू परिवार से ज्यादा खर्च करता है। औसत मुसलमान का लगभग खर्चा 40,327 रुपये है जबकि हिन्दू परिवार को खर्च 40,009 रुपये है। ग्रामीण इलाकों के मुसलमान भी खर्च के मामले में हिन्दुओं से आगे हैं।

आज मुस्लिम और ईसाइयों का दबदबा इस प्रकार है कि ओ.बी.सी. कोटे पर अल्पसंख्यक के नाम पर तमिलनाडू सरकार ने सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में सिर्फ मुसलमानों व ईसाइयों (Muslims & Christians) के लिये एक्सक्लूसिव की घोषणा की है, जबकि अम्बाशंकर कमीशन का गठन राज्य में हिन्दू-मुस्लिम-इसाई समुदाय के पिछड़े वर्ग के लोगों की संख्या का पता लगाने के मकसद से किया गया था।

आज हमारे देश में एक अनोखी घृणित स्वार्थ की राजनीति चल रही है। हमारे नेता अल्पसंख्यक (Minority) राजनीति के नाम पर देश को आधार बनाकर यदि यही गंदी राजनीति करते रहे तो हिन्दू तो रहेगा ही नहीं, वह दिन दूर नहीं जब पूरा देश अग्निकुण्ड में होगा और कोई चाह कर भी इस देश को नहीं बचा सकेगा।

ऐसे में जो ब्राह्मण, विद्वत समाज ये कह रहे हैं कि अभी कल्कि अवतार कैसे? और क्यों? वह तो 4,32,000 वर्ष बाद होना है तो साथियों तब तक की इंतज़ार तो क्या करोगे, हमारे हिसाब से 200-300 वर्ष बाद ही हिन्दूजाति का व उसका स्वरूप ही शेष नहीं बचेगा। हमारे हिन्दू समाज में तो यदा-कदा वीर राणा प्रताप-शिवाजी-रानी झांसी- तात्यां टोपे-वंदा वैरागी निकल कर आते हैं बाकि तो हिन्दू ही अपने को हिन्दू कहने से भी डरते हैं, जरा अपने सीने पर हाथ रखकर तो देखो, वह बिलकुल डोडो पक्षी की तरह है। हिन्दू तो सिर्फ इतिहास के पन्नों में मलेशिया के नीचे दिखाए डोडो पक्षी* की तरह देखने को रह जाता यदि अब श्री कल्कि अवतार न होता।

अंग्रेजों ने हमारे व्यापार पर अधिकार किया, दस्तकारियों पर अधिकार किया, किसान की सारी कमाई पर अधिकार किया। अंत में खेती के धंधों पर कब्जा कर भारतवर्ष को जेल खाने के कैदियों की तरह राशन से तोलकर 7 छंटाक (500 ग्राम गेहूँ) रोटी और नाप कर कपड़ा देकर सारी कमाई इंग्लैंड भेजने का

विचार कर रहे थे कि हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के सर्वनाश का ऐसा उपक्रम (तैयारी) देखकर इस देश के सच्चे स्वामी, हिरण्यकश्यप, रावण, कंस को मारने वाले, गौ ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग-युग में अवतार लेने वाले, क्षीरसागरवासी महाविष्णु गोपाल कृष्ण ने कल्कि रूप को धारण करने का संकल्प करके श्री बालमुकुंद जी के रूप में ब्राह्मण के घर श्री हनुमान जी को जन्म दिया और अपने अवतार धारण करने की रहस्यमयी लीला का अनुभव दिया। कलियुग की बची खुची शेष आयु को काटने के लिये कल्कि भगवान का पूजन व नामोच्चारण और प्रचार करने का आदेश देकर, कल्कि भगवान के नूतन आश्वासन की प्रसन्नता का नगाड़ा बजवाया। भारतवर्ष के महामहिमापूर्ण प्राचीन तीर्थ, पदम् पुराण में वर्णित इंद्रप्रस्थ में हनुमान जी के द्वारा कल्कि भगवान की मूर्ति के पूजन का श्री गणेश करवाया।

अत: हमारा भविष्य उज्वल है कि हम हनुमान जी एवं महा विष्णु के 24 वें, बड़े अवतारों में दसवें अवतार भगवान श्री कल्कि के संरक्षण में हैं जिनकी आराधना (नाम जाप पूजन हवन आदि) से आज के शासकों एवं उनके आकाओं की दमनपूर्ण (Destructive) घृणित, कूटनीतिक, कुचालों (Policies) से बचकर उन्हीं के बनाए सनातन धर्म के सहारे हम रास्ता पा सकेंगे। क्योंकि—

धर्म प्यारा है उन्हें, भक्त प्यारे हैं उन्हें, भक्तों ने ही तो जमी पर उतारा है उन्हें,
देख सकते वह कभी भक्तों को मजबूर नहीं, कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

अत: अपने में हौंसला (हिम्मत) लाओ कल्कि जी पर विश्वास (Trust him) रखो उन्होंनें तुम्हारे सारे काम ठीक कर दिए हैं और करेंगें।

**डोडो पक्षी मलेशिया में सदियों पहले समुद्र के तट पर पाया जाता था जहाँ मछलियाँ प्रचुर मात्रा में इसे उपलब्ध होती थी जिसका परिणाम यह हुआ कि यह पक्षी बिना परिश्रम के ही शरीर से भारी हो गया। जब कोई उसे पकड़ने जाता तो अपना बचाव नहीं करता था बल्कि गर्दन झुका देता था। इस पर उसकी गर्दन मरोड़कर उसे पकाकर खाया जाता था।*

भगवान श्री कल्कि को नमस्कार करने का तरीका

जो नमन करें प्रत्येक याम
यश कीर्ति बढ़े हो पूर्ण काम

जो बाल, वृद्ध स्त्री, पुरुष हर तीन घन्टे बाद भगवान् श्री कल्कि को एक दिन मे नमस्कार करता है उसका यश और नाम बढ़ता है तथा उसके रूके हुऐ काम पूरे हो जाते हैं। हर तीन घन्टे बाद अथवा प्रतिदिन सुबह जागने के बाद श्री कल्कि जी के आगे किसी भी दिखाये नमस्कार के तरीके से एक बार में ही हर पहर का ध्यान करते हुये कहें—''हे कल्कि भगवान् मेरा (1) प्रात: चार बजे का नमस्कार, (2) प्रात: सात बजे का नमस्कार, (3) प्रात: दस बजे का नमस्कार, (4) दोपहर एक बजे का नमस्कार, (5) सायं चार बजे का नमस्कार, (6) सायं सात बजे का नमस्कार, (7) रात दस बजे का नमस्कार, (8) मध्यरात्रि एक बजे का नमस्कार स्वीकार कीजिए।

इसके बाद प्रार्थना करें—''हे श्री कल्कि भगवान! मेरी आठों बार का नमस्कार का फल आपके चरणों में समर्पण है। गउ, विप्र, धर्म और सज्जन लोगों की रक्षा कीजिए। भूमि का भार उतारिए। कलियुग का नाश किजिए। शीघ्र प्रकट हो जाईए।''इसके बाद यदि आप किसी शंका का समाधान चाहें या कुछ माँगना चाहें तो भगवान से माँगें। आप स्वयं ही चमत्कार देखेंगे कि भगवान् कैसे-कैसे अनुभव देकर या प्रत्यक्ष में उसे पूरा करते हैं। कभी स्वप्न अनुभव में कुछ गलत अथवा अच्छा देखें तो उसका उपचार करके बुरा दूर करें, अच्छा पायें यह हम प्रत्यक्ष देख रहें है। जिन कल्कि भक्तों के साथ ऐसा हुआ है ज्यादातर उनके नाम व मोबाईल नंबर लिखकर आपबीतियों में व स्वप्नानुभवों में देते हैं ताकि जिज्ञासु संपर्क करके चमत्कारी श्री कल्कि जी की कृपा से लाभांवित हों।

आभार

स्वप्नानुभव एक संपदा का एक स्वप्नानुभव

यह अमूल्य पुस्तक भाग्यवान कल्कि भक्तों के लिए ही एक संपदा नहीं अपितु पितृ लोक की भी चाहत है। प्रस्तुत है 26 दिसंबर 2012 का एक स्वप्नानुभव—

प्रातः 5 बजे के सम्मोहक वातावरण में 200 गज के अंडाकार (oval) गंगा तट पर जहाँ किनारे पर अस्थियाँ पड़ी हैं दो सायुज्य शक्तियों (श्री सत्यनारायण गुप्ता एवं सुश्री सरला देवी) ने एक बहुत बड़ी डिबेट सभा का आयोजन किया है। अपने सामने ही उन्होंने दो आसन 10 गज की दूरी पर बिछा रखे हैं जिसमें उन्होंने मुझे (मामाजी) और मेघना गोयल को आमंत्रित किया है। हम दोनों आकर अपने अपने आसन पर बैठ जाते हैं।

अर्थ : डगमगाती व्यवस्था में इस पुस्तक का छपना असंभव लग रहा था, जैसा कि एक स्वप्नानुभव में यह संकेत मिला था कि स्वप्नानुभव पुस्तक नहीं छपेगी, लेकिन पितृ शक्तियों (तृप्त, नरक में पड़ी , अतृप्त शक्तियां) ने गंगा महारानी एवं सायुज्य शक्तियों से संपर्क करके हमें हौंसला देते हुए सफलता पाने का आश्वासन दिया। 27 दिसंबर 2012 को कलियुग ने एक बार फिर प्रकाशक द्वारा इस पुस्तक की कुछ लाइनें पढ़कर इसे अभी नहीं छपवाने की सलाह दी लेकिन तभी पितृ शक्तियों ने एक और स्वप्नानुभव याद दिलवाया कि अच्छे और ज्यादा को छोड़कर चाहे 150 पृष्ठों की हो एक पुस्तक तो निकालो इसके बाद तो रैक के रैक भर जाएंगे। सो इस पर मैंने (मामाजी) ने मीटिंग में पांच लोगों से आग्रह किया कि इस पुस्तक को तो ऐसे ही छपने दें। आगे के संस्करण में संशोधन कर देंगे।

श्री कल्कि बाल वाटिका (समस्त) की शत प्रतिशत सहायता से जिन विद्वजनों ने और भाग्यवान दृष्टाओं ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष मदद की है बाल वाटिका के सदस्यों ने मनोयोग से हमारी सहायता की है, उनके प्रति हम धन्यवाद स्वरूप नतमस्तक हैं।

अन्य सदस्यों सुश्री संगीता गर्ग (माता सुश्री रमणी अग्रवाल), सुश्री पूजा गुप्ता, सुश्री मेघना गोयल, सुश्री रश्मि गुप्ता (बहन श्री अजय गुप्ता)

सुश्री सुषमा गोयल ने टाइपिंग, डिजाइनिंग व प्रूफ रीडिंग में जो सहायता प्रदान की उसके लिए हम उनके आभारी हैं। अपने अपने कर्तव्य में जो तत्परता उन्होंने बरती उस से ही यह प्रकाशन संभव हो सका।

हम प्रवेक कल्प के श्री अजय गुप्ता, श्री ओम प्रकाश शर्मा, श्री सोमवीर सिंह, श्री सुनील कुमार, एवं प्रकाशक श्री हेमंत गुप्ता एवं श्री विजय शर्मा के अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने हर तरह से मामाजी, मेघना गोयल एवं रश्मि जी का सहयोग किया।

अंत में हम अपनी त्रुटियों और व्यवहार-दोष के लिए सबसे क्षमा प्रार्थना करते हुए, भगवान श्री कल्कि की स्वप्नानुभव लीला पर आधारित इस पुस्तक का प्रथम अंश सहृदय श्रद्धालु पाठकों के कर कमलों में समर्पित कर कृतकृत्य हैं।

—मामाजी

कल्याण नवंबर 2012 में छपा लेख

श्री हरि का कल्कि रूप में अवतरण एवं गोसंरक्षण

(पं लक्ष्मीनारायण जी)

यद्दोर्दण्डकरालसर्पकवलज्वालाज्वलद्विग्रहाः
नेतुः सत्करवालदण्डदलिता भूपाः क्षितिक्षोभकाः।
शश्वत् सैन्धववाहनो द्विजजनिः कल्किः परात्मा हरि
पायात्सत्ययुगादिकृत्स भगवान्धर्मप्रवृत्तिप्रियः॥
(श्री कल्कि पुराण)

भयंकर अत्याचार से पृथ्वी की शांति का नाश करने वाले राजाओं को अपनी भयंकर भुजाओं रूपी भुजंगों की विष की ज्वाला से भस्म करेंगे, जिनकी भयंकर तलवार की तेज धार से घोड़े की सवारी करने वाले सत्यादि युगों में अवतार लेनेवाले, धर्म की प्रवृत्ति जिन्हें प्रिय है, वे भगवान कल्कि परमात्मा हरि रक्षा करें। भारत एक कृषि प्रधान देश है, ऋषियों मुनियों की तपोभूमि है। गाय और बैल कृषि के साथ साथ आध्यात्मिकता और हमारे दैनिक जीवन से भी जुड़े है। सनातन धर्म में तो द्वापर युग में गै माता और भगवान कृष्ण का इतना स्नेह संबंध रहा कि कृष्ण ने बाल्यकाल से ही गैया चराई और उनका नाम भी गोपाल पड़ गया।

गो सेवा से राष्ट्र की सुरक्षा एवं सुख संपन्नता संभव है। इतिहास साक्षी है कि जब तक भारत में गौ सेवा रही तब तक भारत भूमि सुरक्षित एवं सुख संपन्न बनी रही।

इसी कारण हम प्राचीन गुरूकुल में गौ सेवा को आवश्यक रूप से पाते हैं। गौ सेवा के माध्यम से बालक गौ मूत्र, गोबर और गौ दुग्ध से बनने वाल विभिन्न उत्पादो से परिचित हो जाते थे। अर्थात् कठिन से कठिन परिस्थिति में भी गौ धन से परिवारों की जीविका चल जाती थी इससे आत्महत्या जैसा घिनौना कदम उठाने की आवश्यकता ही नहीं थी।

गाय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बाँझ होकर, बूढ़ी होकर भी अनुपयोगी नहीं है। बूढ़ी गाय भले ही दूध देना बंद कर दे पर उसके मूत्र और गोबर से अनेक उत्पाद बनाए जा सकते हैं। गाय के गोबर में माँ लक्ष्मी का और मूत्र में माँ गंगा का वास होता है। गाय में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास होता है। गाय के मस्तक से पीठ तक हाथ फेरने से ह्रदयाघात, ब्लड प्रैशर (बी.पी.) ओर तनाव (डिप्रैशन) जैसी बीमारियों से बचे रह सकते हैं।

विदेशियों की कूटनीति ने हमारे नेताओं (शासकों) को ऐसा समझाया कि सूखा पड़ने पर गाय का चारा कहाँ से लाएं इसलिए इन्हें काटा जाए इस दुष्कृत्य के लिए गाय काटने की मशीनें विदेशों से मंगावाई गईं।

और तब से शुरू हुआ यह घिनौना खेल अब तक भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। आजादी से अब तक यदि इन 50 करोड़ गायों को बचा लिया जाता तो आज हमारा भारत देश गाय के मूत्र, गोबर और दूध के उत्पादों से ही इतना समृद्ध राष्ट्र होता कि वह **उधार लेने वाले देशों में से नहीं उधार देने वाले देशों में अग्रणी होता।** हमारे देश में जहाँ गाय की पूजा होती थी वहाँ कितनी नृशंसता से आज वह कटती हैं इस बात का अंदाजा इस सत्य को सुनकर लगाया जा सकता है। कातिल ओर व्यापारी पशुओं को ट्रक में भर कर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और उन्हें इस तरह तड़पाकर मारा जाता है कि कुंभीपाक नरक का वर्णन भी फीका पड़ जाता है। हत्या घर की क्षमता से तीन गुणा अधिक पशु यहाँ कटते हैं। यही मांस पाँच सितारा होटलों में परोसा जाता है।

विदेशों में हमारी गऊ माता के साथ एक और चाल चली गई कि मृत और अक्षम गायों को मार कर पीस कर उनके चूर्ण को जीवित गायों के भोजन में मिला कर खिलाया गया ताकि उनसे ज्यादा दूध प्राप्त किया जा सके। गाय को शाकाहारी से मांसाहारी बना दिया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशों में मैड काऊ बीमारी फैलने लगी जिसके निवारण के लिए मैड काऊ की दवाई का इंग्लैंड में अविष्कार हुआ।

द्रौपदी ने जब राजसभा में अपने पाँचो पतियों को लाचार पाया तो कृष्ण को दोनों हाथ उपर उठाकर पुकारा तब नारायण ने वस्त्रावतार लेकर द्रौपदी की रक्षा की। आज द्रौपदी की तरह लाचार यह गाय माता अपने कृष्ण (कल्कि)की ओर निहार रही हैं कि वह आकर इनकी सुध अवश्य लेंगे। और कृष्ण कल्कि रूप में अपनी प्यारी गऊओं की सुध लेने को अवतार ले चुके हैं। निरंतर धर्म का ह्रास होने से 5098 वर्ष में देखते देखते ही गऊ, विप्र, धर्म व सज्जन लोगों रक्षा के लिए श्री हरि कल्कि को अवतरित होना पड़ा।

भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते का कम से कम 21 बार जाप करके प्रार्थना करें कि हे **श्री कल्कि भगवान गौ विप्र धर्म की रक्षा कीजिए, भूमि का भार उतार दीजिए। कलियुग का नाश करके सत्युग की स्थापना कीजिए। श्री कल्कि की पुकार ही एक रास्ता है गाय माता,देश और धर्म को बचाने का।**

असमान्य बालक-असहाय माँ की आप बीती

-संकलनकर्ता मीनाक्षी गुप्ता (09811242748)

5 दिसम्बर 1989 को मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, हमारे परिवार में आनन्द की हिलोरे उठने लगी लेकिन कुछ ही हफ्तों में हमें यह समझ आ गया कि हमारा यह बालक सामान्य नहीं है। वह मानसिक व शारीरिक दोनों रूप से पीड़ित है। जैसी समाज की रीत है जिसने हमें जो बताया हमने वही किया परन्तु मेरे बेटे की हालत बद-से बदतर होती गई। उसके सही होने के लिये शायद ही मैंने कोई पूजा, पाठ,दान, पुण्य, अच्छा पंडित-ज्योतिषी छोड़ा होगा। कुछ विद्वान् तो मेरे बेटे को देख कर डर जाते थे और कहते थे इसके संस्कार ही ऐसे है इसको विष (Poison)

का टीका लगवाकर इसकी जीवन लीला खतम करवा दो इससे दोनों ही मुक्त हो जाओगे। अपने बेटे के बारे में सुन-सुनकर इसकी दिन पर दिन बुरी हालत को देखकर मेरी, मेरे पति व बच्चों की छाती दुःख दर्द से छलनी हो जाती थी। मेरा बेटा पागलों की भाँति अपना सिर दीवार में मारता-भयानक चीखें मारता-दिन में कई बार पौटी (Latrine) करके उसे पूरे शरीर पर लगाता व खाता था। माँ होने के नाते मैंने 19 साल तक बिना घिन्न (Hate) के उसकी पौटीं (Latrine) साफ की, मगर जब वह दीवारों में सिर मारकर नीला कर लेता था और भयानक रूप से चीखता था तब वह दुःख मुझ से सहन न हो पाता था।

जब वह 8 वर्ष का था तब मैं 7000 रू. जमा करा कर उसे एक स्कूल में छोड़ आई लेकिन फिर किसी का भी दिल नहीं माना, दो दिन बाद उसे मैं ले आई। 16 वर्ष की उम्र में हम दोनों ने उसे धीमा विष (स्द्यश2 क्ष्ब्द्वह्यद्वश्ठ्ठ) देने का विचार बनाया परन्तु हमारी अन्तर आत्मा इसको स्वीकार नहीं कर पाई। धीरे-धीरे मैं और मेरा परिवार निराशा की गिरफ्त (पकड़) में जकड़ता गया।

5 मई 2008 को मेरी बात एक कल्कि भक्ता से हुई जिसने मुझे बताया कि भगवान श्री कल्कि विष्णु जी के 24वें अवतार हैं जो कलियुग में प्रगट होंगे एवं उसने मुझे कल्कि जी को नमस्कार, पूजा, हवन, नाम जाप, उपचार आदि की विधि समझाई और मुझे श्री कल्कि जयन्ती महोत्सव में आने के लिये कहा कि वहाँ श्री कल्कि बाल वाटिका के अन्य सदस्य व मामाजी मिलेंगे।

वहाँ जब मैं मामाजी से मिली तो उन्होंने मेरे बेटे के बारे में जानकर बड़े सौम्य शब्दों में कहा कि आप नाहक परेशान हो रही हैं, आप के कुल में भगवान ने योग भ्रष्ट योगी को भेजा है जिसे आप असमान्य बालक कह रही हैं। आप भगवान श्री

कल्कि का सिद्ध मन्त्रों का यन्त्र बाक्स ले जाएं और इसमें से सिर्फ यही ध्वनि **करत करत तव चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई, कल्कि जी मैंने तुम्हारी शरण लई** इस बालक के कमरे में 24 घन्टे हल्की-हल्की चलने दें। यह जल्द ही अपनी परम गति को प्राप्त कर लेगा। **गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन के प्रश्न करने पर उससे कहा है—हे अर्जुन! योग भ्रष्ट प्राणियों को मैं श्रीमान् कुलीन घरों में जन्म देकर उनका तप पूरा करवाकर उन्हें परम गति प्रदान कराता हूँ।**

मेरे मन को कुछ सन्तुष्टि सी तो हुई लेकिन परेशान थी तुरन्त मन में विचार आया कि यह शायद इनका मन्त्र का डिब्बा बेचने का तरीका है। खैर मैंने मन्त्र का एक डिब्बा लाकर उसके कमरे में, ''करत करत तव चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई, कल्कि जी मैंने तुम्हारी शरण लई'' चला कर रख दिया।

उस यन्त्र बॉक्स की ध्वनि के प्रभाव से मैं तो हक्की बक्की रह गई मेरा बेटा जो बहुत उग्र रहता था, भयंकर चीखता था व अपना सिर दीवार से दे देकर मारता था, अब वह पूर्ण रूप से शान्त होकर लेटा रहता मानो वह ध्यान योग में समाधिस्थ है। अब विष्ठा भी दिन में 2-3 बार त्यागता था लेकिन फिर न शरीर पर लपेटी न ही खाई। शान्त रूप से लेटे लेटे उसकी आंखों से अश्रुधारा बहती थी जो पहले कभी भी 18½ सालों में नहीं बही। अत: मैं ही नहीं मेरा सारा परिवार साक्षी है और कहेगा कि हमारे लिये भगवान श्री कल्कि चमत्कारी हैं।

चमत्कारी मन्त्र के साथ जो मैंने श्री कल्कि जी के मन्त्रों की माला, हवन, जाप, गऊ माता की रोटी, भैरो बाबा के मन्त्र का हवन, श्री कल्कि पुराण-श्री कल्कि जी की प्रेरणादायक कहानियों का पाठ-उपचार (दान पुण्य) जो सखी से पूछकर किये, इस आप बीती के अन्त में लिख रही हूँ। इनके प्रताप से मेरा पुत्र जो 19 वर्ष से नारकीय जीवन का दु:ख भोग रहा था, 17 मई, 2009 को जिस दिन श्री कल्किनारायण ने उसे अपने में विलीन किया मुझे सुबह से एहसास हो गया और मेरा दिल बार-बार भर कर आ रहा था। उसने मेरी गोद में श्री कल्कि पुराण का पाठ सुनते हुए तुलसी पत्र-गंगाजल ग्रहण करते हुए देह त्यागा।

अब मैं कल्कि जी के आशीर्वाद से अपने पति व बच्चों के साथ कल्कि जी की सेवा में लगी हुई हूँ। हम श्री हरि के कोटि-कोटि आभारी हैं जो वह हमें संभाल रहे हैं क्योंकि अब यह सब घटा ।

(1) वर्षो से लगता था कि घर में कुछ उलझन है

(2) घर में 24 घन्टे एक अजीब सी दुर्गन्ध का रहना

(3) घर में बीमारी व तनाव का वातावरण रहना

(4) बेटे की तरह (भयानक रूप में) एक बार मैं भी जब सोती हुई अचानक चीखकर चिल्लाने लगी कि बाबा आ गये उससे डर समा गया था।

उपचार : रुपयों के मैं पहले बेटे का हाथ लगवा लेती थी—

(1) गणेश जी को नमस्कार, गुरुजी को नमस्कार, दुर्गा जी को नमस्कार, हनुमान जी को नमस्कार, कल्कि जी को नमस्कार।

एक 50 रू. का नोट हनुमान जी के चरणों में रखा, हाथ में जल व चावल लेके प्रार्थना करी हे हनुमान जी यह 50 रू. मैं आपके योगी-योगनियों के हाथ लगा रही हूँ जो मेरे बेटे को, मेरे घर में व हमारे व्यापार में परेशानियाँ पैदा कर रहे हैं, हे हनुमान जी आप उन्हें उनका भाग दे दीजिये व उनसे मेरे बेटे, घर व व्यापार की रक्षा कीजिये। मैं इससे आपका प्रसाद चढ़ाऊँगी व खुले पैसे भिखारियों को बाँटूगी। मुझे रास्ता दीजिये हमें कल्कि जी का काम करना हैं।

नोट : इन 50 रू. में से 25 रू. के बूंदी के लड्डू का मंगल या शनिवार को हनुमान जी का भोग लगाया व 25 रू. के 1-1 या 2-2 के सिक्कों का चिल्लड़ करवाके वह लड्डू व सिक्के भिखारियों में बाँट दिए प्रसाद घर में नहीं लाई।

सब देवी देवताओं को नमस्कार जैसे ऊपर लिखा है करके अन्त में कहा— भैरों जी को नमस्कार

एक 20 रू. का नोट कल्कि जी के चरणों में रखा व प्रार्थना करी हे भैरों बाबा! मैं यह 20 रू. आप के रोट के संकल्प हाथ लगा रही हूँ, मैं आपको रोट चढ़ाऊँगी। हे भैरो बाबा मेरे घर, व्यापार व बेटे पर जो भी दुराचारी, आसुरी कलियुगी, अधोरी शक्तियाँ कब्जा करके बैठ गई हैं उन्हें उनका भाग देकर मेरे घर, व्यापार एवं बेटे में से इन्हें निकालिये। हमें रास्ता दीजिये हमें कल्कि जी का काम करना है।

नोट : यह 20 रू. वाला संकल्प पहले 5 दिन किया। उसके बाद रोज़ एक रू. का सिक्का व 2 बताशे का संकल्प करके वही प्रार्थना की। रोट शनिवार के दिन भैरो जी को चढ़ाया। आटे में चीनी, सौंफ व घी डालकर मोटे पराँठे बनाऐ थे। 5 दिन के पाँच रोट, हर एक रोट पर 20 रू. रखकर अर्पण किया। मंदिर में चढ़ाने जाने से पहले बेटे के हाथ लगाए।

(3) काली माँ को नमस्कार

हे काली माता! मैं यह 20 रू. आपके प्रशाद व दक्षिणा हेतू आपके श्री चरणों में अर्पण कर रही हूँ। इन्हें स्वीकार कीजिये। वही प्रार्थना की जो भैंरो बाबा से की। उसी तरह 5 दिन तक पहले 20 रू. के संकल्प लिए उसके बाद 4 बताशे + 1 रू का संकल्प रोज़ किया।

5 दिन के 100 रू. में से 75 रू. के बूँदी के लड्डू + 25 रू. उस पर दक्षिणा रखें। बेटें का हाथ लगवा कर मंदिर में काली का भोग लगा कर सब वहीं दे दिया। न तो प्रसाद खुद लिया उसमें से ना घर लाई।

दुर्गा महारानी—

हे दुर्गा महारानी मैं यह 50 रू. हाथ लगा रही हूँ। जो आपकी योगिनियाँ सड़क पर बीमारी फैलाती हैं और मनुष्यों को उनके पाप कर्मों के अनुसार फल देती हैं उन्हें उनका भाग देकर उनसे मेरे परिवार व मेरे बेटे अंकित की रक्षा कीजिये। मैं भिखारियों में आलू की सब्जी और कचौरी व खुले सिक्के बाटूँगी। उससे उनको उनका भाग दे दीजिये। हमें रास्ता दें हमें कल्कि जी का काम करना है।

50 रू. में से तीस रू की कचौरी-आलू की सब्जी व बीस रू. के 1-2 के सिक्के बाँटें।

(5) 1/2 कटोरी गाय का दूध +1 चम्मच दही + 1/4 चम्मच शहद +घी-2 बूंद +1/4 चम्मच बूरा + 2 चम्मच गंगाजल + दो तुलसीपत्र मिला कर पंचामृत बनाया। उससे कल्कि जी के चित्र पर 1-2 बार उंगली से लगाकर फिर उसे उसे परिवार में सब को दिया। हल्का सा छींटा घर में लगाया व बेटे के बिस्तर के आस-पास भी छींटा लगाया । ऐसा रोज़ किया।

भगवान श्री कल्कि बच्चों के साथ

—सुश्री कामिनी जैन (9811203366)

17 फरवरी, 2009 की शाम छह बजे अचानक मेरे घर के फोन की घंटी बजी और खबर मिली कि मेरे पापा जो मोटर साइकिल चला रहे थे उसे पीछे से एक वाहन ने टक्कर मारी है और उनके सिर में गंभीर चोटें आई हैं। मेरी मम्मी, दादाजी, ताऊजी आदि सभी के अस्पताल पहुंचने से पहले पापा के सिर से काफी खून बह चुका था। दिमाग में बहुत ज्यादा गहरी चोट थी। डॉक्टरों ने 72 घंटे तक कुछ भी कहने से मना कर दिया। 72 घंटे तक पापा को होश नहीं आया। इसी तरह इंतजार करते हुए पाँच दिन बीत गए। पांचवे दिन पापा ने बस ये शब्द बोले ''वो दस रुपए माँग रहा है।''मैंने श्री कल्कि बाल वाटिका द्वारा लिखे उपचार व प्रार्थनाओं के लिए लेख पढें। पैनल के सदस्यों से बात की तो उन्होंने मुझे हनुमान जी की योगी योगिनियों को प्रसाद के साथ 10 रू. के खुले सिक्के देने को कहा। मेरे पूरे विवरण बताने पर उन्होनें कहा तुम जैन धर्म के अनुयायी हो अगर बड़े एतराज न करे तो कुछ भाग अन्य देवी देवताओं को भी दे दें। उन्होंने दुर्गा जी, काली जी की योगनियों का व 5 रु. यमुना महारानी का पापा के हाथ लगवाकर प्रार्थना करने को बताया। मेरी मम्मी ने फौरन यह उपचार करने शुरू कर दिए और प्रतिदिन के हिसाब से रु. निकाल कर पापा के हाथ लगवाए। इधर मैं और मेरे भाई-बहनों ने मिलकर नाना जी द्वारा बताए भगवान श्री कल्कि से घनवंतरी वैद्य की सहायता दिलवाने के लिए, ''हक् अनीह निष्कलंक गोरंडा दुष्टहा नाशनम् पापहा के हवन किए।'' फिर उसी रात पहले मेरी मम्मी को स्वप्नानुभव हुआ कि मम्मी और मैं एक कार में जा रहे है, कार रास्ते में उलट गई। मम्मी ने हिम्मत करके अकेले ही गाडी को सीधा किया और हम गाड़ी में दुबारा बैठकर चलने लगे। रास्ते में कूडा करकट है लेकिन हमें रास्ता मिलता जा रहा है। श्री कल्कि बाल वाटिका पैनल को अनुभव बताने पर उन्होंने कहा कि आप घबराएं नहीं हिम्मत रखें।

इसका मतलब है रास्ता अवश्य मिलेगा। अब नाना जी ने शनिवार को भैरों जी के रोट व, काली जी का उपचार भी करवाया। इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप पापा को होश आ गया लेकिन दिमाग में फ्रैक्चर आने की वजह से उनकी याददाश्त चली गई। पापा को I.C.U. मे 17 दिनों तक रख कर वार्ड मे भेजा गया। डाक्टरों का कहना था कि इतनी बडी सड़क दुर्घटना से उबरने में भगवान ने ही

कलावे से प्रार्थना करवाने को बताया। 23 दिन तक अस्पताल में रहने के बाद जब मेरे पिताजी मम्मी के साथ बाहर निकले तो गेट पर बैठा चौकीदार मम्मी से बोला—बहनजी Neuro ICU साक्षात काल का प्रतीक है। आप भाग्यशाली हैं कि आपके पति अपने पैरों पर चलकर घर जा रहे हैं। पापा घर आए लेकिन उनकी याददाश्त जा चुकी थी। अस्पताल से घर आने पर पापा को दरवाजे पर कुछ आदमी औरत माँगते हुए फिर दिखे लेकिन वो बोले कि मेरी पत्नी ने तुम्हारा हिसाब कर तो दिया है। यह हनुमान जी के योगी योगिनी थे जिनका उपचार अभी तक चल रहा था। अपनी परीक्षाओं के चलते हमने अब हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनम् पापहा की एक माला का हवन करना बन्द कर दिया था। लेकिन घर पर आने के बाद पापा की याददाश्त के लिए घनवंतरी जी के 11 हवनों का संकल्प लिया। पापा भी हमारे साथ हवन मे बैठे। पहले दिन जब पापा सो कर उठे तो उन्हें अपने काम के बारे में याद आया। दूसरे दिन पापा को दुर्घटना वाले दिन की बाते याद आई। तीसरे दिन श्री कल्कि भगवान ने एक ऐसे प्रश्न का उत्तर दिया जो हम सभी के मन में उठ रहा था कि आखिर हमारे इतने अच्छे पापा के साथ ऐसा क्यों हुआ? मेरे पापा को अनुभव आया कि पिछले जन्म में जब वो 22 साल के थे तो उन्होंने अपनी लड़की की हत्या करवाई थी। इसी पाप का फल इन्हें इस रुप में मिला है। मैने कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों से बात की तो उन्होंने हमें बताया कि अब आप पापा से नित्य सत्संग करे और उसका फल समर्पण श्री कल्कि भगवान को करके कहे कि, हे कल्कि भगवान यह जो सत्संग मैने किया है इसके द्वारा मेरे पिछले जन्म के पाप की सजा काट कर मुझे मेरे पुण्यों का फल दिलवाइए, मुझे अपने कर्तव्यों की निभाते हुए अपनी गृहस्थी को संभालना है, मुझे श्री कल्किजी आपका काम करना है। (बाकी उन्होने पिछले रिकार्ड देखकर बताने की कहा) मुझे अटूट विश्वास है कि मेरे पापा पूरी तरह से ठीक होकर पहले की तरह अपना काम संभालेगें और हमारे घर की खुशियाँ जरुर लौटगी। दान पुण्य कर्म उपचार व प्रार्थनाएं जो हमने करी:-

(1) 20 रु.—दुर्गा जी की योगिनियाँ—10 रु. की कचौड़ी सब्जी व 10 रु. के सिक्के भिखारनियों को बांटे।

(2) 20 रु.—हनुमान जी की योगी योगिनियाँ—10 रु. के बेसन के लड्डू या नुक्ती 10 रु. के सिक्के लेकर मांगने वाले

प्रार्थना—हे हनुमान जी! दुर्गा जी! यह आपके योगी योगिनियों का भाग दे

रहे हैं। मेरे पापा के रास्ते से इन्हे हटाइए। उन्हें जीवनदान दिलवाइए स्वास्थ्य दिलवाइए। इन्हें कल्कि जी का काम करना है।

(3) 5 रु. यमुना जी—हे मां! इसके द्वारा जिसका जो भाग है उन्हें दिलवा दें। मेरे पापा को यम की शक्तियों से बचाइए, इन्हें जीवनदान दिलवाएँ। हमें अपने पापा के साथ कल्कि जी का काम करना है।

''हक् अनीह निष्कलंक गौरडहा दुष्हा नाशनम पापहा'' के हवन प्रार्थना—हे कल्कि भगवान! हमारे पापा को धनवंतरी वैद्य जी की सहायता दिलवाइए वह होश में आ जाएं, उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करवाइये। हमे अपने पापा के साथ कल्कि जी का काम करना है।

(4) भैरों जी का 20 रु. का संकल्प रोट देने को—हे भैरो बाबा जो कलियुगी आसुरी तांत्रिक शक्तियां मेरे पापा को स्वस्थ नहीं होने दे रही उन्हें उनका भाग देकर हमारे पापा को उनके चंगुल से निकलिए उन्हें कल्कि जी का काम करना है।

(5) काली जी—हवन में सामान डलवाया 11 लौंग के जोड़े, 2 इलायची छोटी, 1 कपूर की डली, 1 जायफल, 2 सुपारी साबुत व मेवा के छोटे-छोटे टुकड़े प्रार्थना—भैरो जी वाली ही इसमें कराई।

(6) यमुना महारानी जी का समान—धोती, कुर्ता, बनियान रुमाल गिरी गोले पर कलावा लपेट कर, छोटा धूप का खुला पैकेट संकल्प का 5 का सिक्का रखकर पापा के हाथ लगाकर गौरी शंकर मंदिर में यमुना महारानी जी को यम की शक्तियों तक पहुचाने को चढ़ाया।

प्रार्थना—हे यमुना महारानी जी यह समान आपकों भेट कर रहे हैं जो भी यम की शक्तियाँ है उनको उनका भाग दिलवा दीजिये पापा जी को जीवन दान दिलवा दीजिए इन्हें कल्कि जी का काम करना है।

(7) श्री कल्कि भगवान के हक् अनीह निष्कलंक गौरडहा दुष्टा नाशनम पापहा के 11 हवन के संकल्प आधी कटोरी चीनी पर 5 रु. का सिक्का रख कर घनवतरी जी के लिये संकल्प।

प्रार्थना—हे कल्कि भगवान धनवंतरी वैद्य की कृपा मेरे पापा को दिलवाइए जिससे उनकी याददाश्त वापस आ जाए, उनके दिमाग में लगी चोटो को जल्दी ठीक करवाकर उन्हें स्वास्थ्य दिलवा दीजिए। उन्हें अपने कर्त्तव्य व गृहस्थी संभालते हुए श्री कल्कि जी आपका काम करना है।

बुद्ध ग्रह के प्रभाव से पति-पत्नी में कलह

—सुश्री मीनाक्षी गुप्ता (9811242748)

मेरे पिताजी ने बचपन से मुझे सिखाया कि भगवान श्री कल्कि की भक्ति महाभाग्यवानों का सौदा है। जिस आध्यात्मिक परिवेश में मेरी परवरिश हुई, उसमें अपने माता पिता के स्नेह को पाकर स्वयं को अब मैं महाभाग्यवान समझ रही हूँ। शादी होकर ससुराल में जब एक नए परिवेश में प्रवेश किया तो भगवान श्री कल्कि की अनंत कृपा का अहसास मुझे 3 साल बाद पग-पग पर प्रतीत हुआ।

पिछले दिनों मेरे जीवन में एक ऐसा मोड़ आया कि मेरा मन चीत्कार उठा। बेवजह के पारिवारिक क्लेशों ने मुझे अंदर तक तोड़ दिया। एक हारे हुए जीव की तरह मैंने अपने स्वपनानुभव, समस्याएँ किसी को न बताकर जो ठीक समझा उपचार करती रही और भगवान श्री कल्कि जी से रास्ता माँगती रही।

मेरे व मेरे पति के बीच बेवजह के क्लेश दिन प्रतिदिन तूल पकड़ते जा रहे थे। मैं इतनी परेशान थी कि किसी से कुछ भी बताने को मन नहीं होता था और मैं अंदर ही अंदर घुटती जा रही थी। किंतु कल्कि जी (ऊँ रहस्यानां रहस्याय नमः— रहस्यों के रहस्य खोलने वाले) ने मुझे रहस्यमयी व चमत्कारी अनुभव देकर शंकर जी की विशेष कृपा दिलवाकर मेरे पति के कुंडली के दोषों को दूर करवाया।

मुझे सबसे पहले स्वप्नानुभव हुआ—कुंडे वालान (अजमेरी गेट,दिल्ली) का श्री कल्कि विष्णु मंदिर दिखा जहाँ स्वर्गीय पंडित श्री प्रभुदयालजी ने मुझे ग्यारह भिंडी (उपर से टोपी कटी हुई) शंकर भगवान की पिंडी पर चढ़ाने को दी। मंदिर में बड़े-बड़े बर्तनों में शंकर जी के अभिषेक का जल रखा है उन्होंने मुझे लोटा भर के जल भी चढाने को दिया। पीला चंदन भी पुजारी जी ने मुझे शिवलिंग पर चढ़ाने को दिया। सौभाग्य से उसी दिन मेरा श्री गौरीशंकर मंदिर जाना हुआ। मैंने वहाँ शंकर जी का अभिषेक करके उन्हें चंदन समर्पित किया, लेकिन भिंडी का अर्थ न समझ पाने के कारण भिन्डी नहीं चढ़ा पाई।

मुझे पुनः अनुभव हुआ—श्री कल्कि विष्णु मंदिर में पुजारी जी ने मुझसे व मेरे बड़े भाई (योगेश गुप्ता) से शंकर जी की पूजा करवा कर बेलपत्र चढ़वाए और विधि विधान से पूजा करवाई। मेरी स्वर्गवासी माताजी (सुश्री सरोज गुप्ता) भी मंदिर में बैठी हुई दिखाई दीं। उपचार में मैंने भगवान शंकर

का रूद्राभिषेक व अपनी स्वर्गीय माता जी का सीधा निकाल कर स्वधा महारानी को अर्पण कर दिया।

स्वप्नानुभव में मेरे पतिदेव को शंकर जी की पिंडी पर रूपये चढ़ाते हुए उनका मित्र दिखा। तब जाकर मैंने बाल वाटिका के अनुभव पैनल की सदस्या से बात की तो उन्होंने बताया कि निरंतर किसी देवी देवता की पूजा करते हुए अनुभव में दिखना, किसी आने वाले भयंकर कष्ट का सूचक है। अतः श्रावण मास का लाभ उठाते हुए भोले नाथ के 20 रूद्राभिषेक के संकल्प ले लेवें व 'ऊँ त्रयंबकम् यजामहे सुगंधिम पुष्टि वर्धनम उर्वारूकमिव बंधनान् मृत्योंमुक्षीय मामृतात्' **के मंत्र की 11 मालाओं के हवन का संकल्प लें।**

प्रार्थना—**हे भोले नाथ, कलियुग की जो भी दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी शक्तियाँ व आपके गण मेरे घर, परिवार व व्यापार में तबाही की लीला का प्रचंड तांडव रच रहे हैं, आप उनको उनका भाग देकर उनके स्थानों पर भेजने की कृपा करें। मैं सपरिवार स्वस्थ शरीर से वैभवतापूर्वक, सुखीभाव से कल्कि जी के प्राक्टय के प्रचार के कार्य करना चाहती हूँ।** इसी बीच एक विद्वान ब्राह्मण ने हमें बताया कि शंकर जी को भिंडी बुध ग्रह की शांति के लिए चढ़ाई जाती है। मेरे पतिदेव की कंप्यूटराइज्ड पत्री देखने पर पता चला कि जाती हुई बुध ग्रह की दशा पारिवारिक क्लेश के रूप में अशुभ फल प्रदान कर रही है। इसके उपरांत हमने भोले बाबा को स्वपनानुभव में दिखाए अनुसार ऊपर से टोपी काटकर ग्यारह भिंडी भी अन्य उपचारों के चलते चढ़ानी शुरू की। साथियों, पापा की तरह अगर मेरी रूचि भी अनुभव गोष्ठियों,सत्संग में जाने की होती **तो मैं भी पहले ही दिन गौरीशंकर मंदिर में भगवान श्री कल्कि के अनुभव के अनुसार भिन्डी चढ़ा देती तो कितनी ही परेशानियों से बच जाती। अब देखते ही देखते पुनः मेरी खुशियाँ लौट आई जैसे पहले कुछ हुआ ही नहीं था। अब मैंने अनुभवों को समझने में लापरवाही में कुछ कमी कर दी है और कल्कि जी के संदेश गंभीरता से लेती हूँ। कल्कि जी के सत्संग में भी कभी-कभी जाना शुरू किया है जिनसे मैं हमेशा कतराती रही। पूजा हवन नियमित करने में तो मुझे अब आनंद आने लगा है।**

तांत्रिक जादू से कीला घर व्यापार आजाद

—उपासना गोयल (9136377829)

22 मार्च, 2009 को मुझे स्वप्नानुभव हुआ कि हमारे घर अनुभव गोष्ठी हो रही है। हमारे यहाँ मम्मी की एक सहेली, मेरी मौसी और मेरी मम्मी आंगन में बैठे हैं। उनके साथ एक अनन्य कल्कि भक्त (कलि राक्षस बहरूपिए के रूप में) भी बैठा है और कहता है कि मेरे पास बहुत सारे अंगरक्षक हैं। वह उनमें से एक को बुलाता है और कहता है कि इसका नाम सम्राट है, यह मेरे कहने पर चलता है। सम्राट मेरी मौसी को मार देता है। यह देखकर मम्मी को गुस्सा आता है और वह सम्राट को भला बुरा कहती हैं। इस पर वह मम्मी को भी मार देता है। यह देखकर वह कल्कि भक्त सम्राट से कहता है कि यह तूने क्या किया? सम्राट हँसते हुए कहता है कि जो मुझे ललकारेगा उसे मरना ही होगा। तभी वह कल्कि भक्त एक फिल्मी विलेन के रूप में बदल जाता है और हमारी दीवार पर पहले से लगी कील को ठोकने लगता है।

इस स्वप्न अनुभव को देखकर मुझे जो समझ आया मैंने (ICU Treatment) उसके उपचार तुरंत कर दिए। दो दिन बाद ही मुझे दूसरा अनुभव हुआ कि मेरे पिता के व्यापार में उनका बेईमान साझेदार जो हमें तीन बार धमकियाँ दे चुका था, चौथी बार उसकी धमकी पर मेरी मम्मी गुस्से में फोन करती हुई कहती हैं कि इस बार तेरा अन्याय नहीं सहूंगी और न ही चुप बैठूंगी, तेरे फोन की शिकायत अब करनी पड़ेगी।

24 मार्च, 2009 को मुझे फिर अनुभव हुआ कि बहुत सारे आतंकवादी हमारे घर आए हैं और लगातार गोली चला रहे हैं। इससे पूरा आंगन काला हो गया है। इतने में मम्मी के साथ नानाजी (मामाजी) आते हैं जिन्होंने रथ यात्रा वाला पट्टा गले में पहना है। वह कमरे में आकर सभी लाईटें बंद करा देते हैं और हमें लेटने के लिये कहते हैं। वह सुरक्षा कवच की तरह हमारे सामने खड़े हो जाते हैं। वह ताली बजाकर भजन गाते हैं, फिर मंदिर के आगे खड़े होकर पूजा करने लगते हैं। तभी आतंकवादी नानाजी और मम्मी को गोली मार देते हैं। हम लोग बचकर भागते हैं और मैट्रो स्टेशन पर पहुँचते हैं। वहाँ पहले से ही आतंकवादी हैं। हम पुलिसवालों से कहते हैं तो पुलिस कहती है कि हम इन्हें ही मार रहे हैं और वह उन पर धनुष से प्रहार करते हैं। एक वैन आती है, हम उसमें बैठ जाते हैं। पीछे पुलिस हमारी सुरक्षा के लिये चल रही है।

अर्थ—जिस प्रकार छद्म रूप में रावण ने साधु का भेष बदलकर सीता का हरण किया उसी प्रकार षड्यंत्रकारी कलियुगी शक्तियाँ अपनों का रूप बनाकर तुम्हारा अनिष्ट करने आई हैं। तुम्हारा घर पहले से ही तुम्हारा अहित करने वालों ने कीला हुआ है। अत: यहाँ आपको सुख ऐसे ही मिले होंगे जैसे पक्षी को भूले से भूसे में कभी-कभी दाना खाने को मिल जाता हो।

अब आपके जीवन में सुखद बदलाव की घड़ियाँ आई हैं लेकिन कलियुगी, राक्षसी, दुष्ट शक्तियों को यह मंजूर नहीं, वह भगवान श्री कल्कि के पास आपके पिछले जन्मों के पापों का चिट्ठा लेकर पहुँच जाती है कि प्रभु अपने इस भक्त परिवार को वैभवता तो अवश्य प्रदान करें, इनसे जरा पहले हमारा पुराना पापों का हिसाब तो चुकता करा दें।

साथियों, कल्कि जी भी मजबूर हैं क्योंकि उनका यह निष्कलंक अवतार है उन्हें तो सीमा में रहकर राक्षसों व देवताओं के साथ न्याय करना है। उन्होंने उसे आपको परेशान करने की इजाजत तो दे दी लेकिन तत्काल ही आपको स्वप्न अनुभव भी दे दिया। अर्थात—**चोर से कहना चोरी करना, शाह से कहना जागते रहना।** आसुरी, राक्षसी, दुष्ट शक्तियाँ छद्मवेशी रूप में सम्राट जैसी विघटन (तोड़ फोड़) करने वाली शक्तियों द्वारा आपके परिवार में अकाल मृत्यु का योग पैदा करेगी जिन अहित करने वालों (बुरा करने वाले षड्यंत्रकारियों) ने आपके घर को कीला है उन्होंने ऐसी मजबूती से कीला है ताकि आप कोर्ट (कचहरी) भारत सरकार की परेशान करने वाले डिपार्टमेंट अथवा परिवार के लोगों द्वारा अधिक से अधिक तिरस्कृत व पीड़ित किए जाएं।

कल्कि बाल वाटिका पैनल के अनुसार स्वप्न अनुभव के उपचार तब तक चलेंगे जब तक आपको (सरला बहिन जी की तरह)सकारात्मक अनुभव न आ जाए वरना.....

उपचार—20 रुपये से बगुलामुखी मां का प्रसाद 15 रुपये की पीली बर्फी, 5 रुपये दक्षिणा।

संकल्प व प्रार्थना—हे मां जो कलियुगी, आसुरी, षड्यंत्रकारी शक्तियाँ पहले से ही मेरे घर व व्यापार को कीले हुए हैं, अब तो उन्होंने मेरे घर को और मजबूती से कील दिया है। इन शक्तियों को इनका भाग देकर हमें इनके चंगुल से छुड़ाइये। हमें रास्ता दीजिये। हमें सपरिवार सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य के लिए प्रचार का काम करना है।

यही प्रार्थना इन उपचारों के साथ भी की (1) गऊ माता की रोटी, (2) सूर्य भगवान को जल (3) 1 रुपये 2 बताशे से भैंरों जी का, (4) सरस्वती जी की आरती करके उनसे नियमित प्रार्थना, (5) हनुमान जी की आरती के साथ प्रार्थना। उपचार व प्रार्थनाएं लगातार करने के फलस्वरूप तारीख 11 अगस्त, 2009 को मेरी मम्मी को एक सकारात्मक स्वप्न अनुभव (सरला बहिन* जी की तरह) हुआ—

हमारे घर पर एक अत्यंत विशिष्ट एवं सुन्दर रूप में एक बड़ा बंदर शुभ फल देने की इच्छा से प्रविष्ट हुआ है। उसके हाथ में सफेद कीलों (स्टील की) का डिब्बा है, वह लाकर उसने मेरे बेटे के हाथ में दे दिया। हमें एक-एक कील उसे देकर जय श्री कल्कि बोलना है और वह वानर (साक्षात हनुमान जी) उन कीलों के द्वारा हमारी छत पर जय श्री कल्कि जय माता दी लिखकर उन्हें ठोक रहा है।

सुबह उठने पर मेरे मन में निर्भयता व प्रसन्नता की एक अनोखी लहर थी। इस स्वप्नानुभव का फल प्राप्त करने के लिये मैंने सपरिवार हनुमान जी को उनकी प्रिय बूंदी का भोग लगाकर प्रार्थना की—हे हनुमान जी महाराज स्वप्नानुभव में दिखाए अनुसार गुरु के रूप में जिस प्रकार हमें कलियुगी, आसुरी शक्तियों के चंगुल से निकालने के लिये आपने हमारे घर को जय श्री कल्कि जय माता दी के मंत्र से कीला है, इसे प्रत्यक्ष में सत्य कीजिये। हमें कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का काम करना है।

**उनकी खूबी थी कि तब तक नाम, जाप, प्रार्थना और उपचार करती थीं जब तक सकारात्मक अनुभव न आ जाए।*

पावरफुल कलि का पावर से झटका

—सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

मुझे 18 सितम्बर, 2009 को स्वप्न अनुभव हुआ कि हमारे घर के आगे एक बिजली का तार आकर गिरा है उसपर मैंने संभल की माटी डाली है। तभी एक दैवीय शक्ति मिठाई के डिब्बे में संभल की माटी लेकर आई है और कह रही है कि जहाँ-जहाँ जरूरत होगी उसके लिये मेरे पास संभल की माटी है।

इस स्वप्न अनुभव के उपचार हेतु मैंने संभल की माटी अपने घर के ही कोने में डाल कर भगवान श्री कल्कि से अपने घर व व्यापार की प्रगति के मार्ग खोलने की प्रार्थना की।

2 अक्टूबर को हमारे घर के आंगन में करंट आ गया। बिजली कंपनी व

प्राइवेट एजेंसियों को बुलाकर चैक कराया, कोई भी कारण न बता सके। उस दिन घर में न खाना बना न ही समझ आया कि क्या करें, कहाँ जाएं? मकान मालिक से मुकदमें बाजी के चलते हुए भी उन के पास भी गए, उन्होंने आकर चैक किया। आखिर में शाम को मालूम चला कि नीचे मकान मालिक के गोदाम की लोहे की कड़ी से एक बिजली का तार छू रहा है जिस कारण घर में करंट आ गया है।

उसी दिन किसी दैवीय शक्ति ने मदद की और मकान मालिक ने हमसे मकान के लेन-देन के लिये बात की। 19 अक्टूबर 2009 को हमने मकान खाली करके कोर्ट-कचहरी से मुक्ति पाई और कुछ दिनों के लिए नया मकान लेने हेतु दूसरे किराए के मकान में चले गए।

पित्रों का स्वप्नानुभव दिखने पर सावधानी से विशलेषण करके उपचार करें

—सुश्री नलिनी गुप्ता (011-42463741)

6 मई 2010 को एक विशिष्ट कल्कि भक्त को स्वप्नानुभव हुआ कि एक सक्रिय कल्कि साहित्य प्रचारक भक्त अस्पताल में है। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है। किसी भी समय उसकी मृत्यु का संदेश मिल सकता है। अस्पताल की लॉबी में असमय मृत्यु को प्राप्त हुए स्वर्गीय रामेश्वर दास गोयल, मनोकांत जी तिवारी, सरला बहन जी और कुछ अन्य विशिष्ट कल्कि भक्त व मृत्यु शय्या पर पड़े भक्त की रिश्तेदार (सुश्री राधा रानी) भी बैठी है। सरला बहन जी इंतजार करके चली गईं कि जब मौत की खबर आएगी तब मैं दोबारा आ जाऊँगी। विशिष्ट कल्कि भक्त ने श्री गोयल साहब से पूछा कि यह कल्कि नाम प्रचारक भक्त अभी क्यों मर रहा है। उस पर गोयल साहब ने कहा यह तेरी आवली में शरीर छोड़ रहा है अर्थात जो जो सम्पन्नता व वैभवता तेरे भाग्य में थी वह सब उसे मिली है।

अर्थ—इस गंभीर स्वप्नानुभव में जो कल्कि प्रचारक अस्पताल में मृत्यु शय्या पर है। इनके लिये इस तरह के और भी कई अनुभव इस समय आ रहे थे क्योंकि यह इन दिनों श्री गुरुजी की 'महाक्रांतिकारी की खोज' (जो पहले नीली किताब के नाम से जानी जाती है) उनके भजनों के सरल अर्थ में पूर्ण रूप से कार्यरत थे। लेकिन यहाँ विशिष्ट कल्कि भक्त की आवली में प्रचारक का जाना एक गंभीर संदेश है।

इस तथ्य को असमय गए श्री कल्कि अवतार के नींव के पत्थर कल्कि भक्त (पितृ) समझा रहे हैं कि जिस तरह लापरवाह, आलसी, बातूनी काम करने वालों

को मालिक मौका देखकर हटा देता है।'' वैसे ही स्वप्नानुभव देखने वाले विशिष्ट भक्तों की आत्मा असमय गए पितृों से ज्यादा तेजवान है तभी यह कालग्रसित पितृों से अधिक ज्ञानवान, भाग्यवान, साधनवान और धनवान है। इसलिये उसे श्री कल्कि जी को प्रकट करने के लिए उनके प्रचार के कार्यो से कल्कि समाज को अवगत करवाने के लिये भेजा गया है। यदि वह आलस्य,लापरवाही, शर्म, भावुकता, की वजह से उन कामों को करने में असमर्थ हो रहा है (जो मृत्यु शैय्या पर पड़ा प्रचारक दिख रहा है) तो कल्कि जी को उनकी जगह किसी और को लाना होगा, उन्हें तो प्रगट होने के लिए प्रचार का काम चाहिये।

सरल शब्दों में, असमय गए पितृ एवं रिश्तेदार जो कल्कि जी की भक्ति करते थे इस विशिष्ट कल्कि भक्त को चेता कर असमय जाने का संदेश दे रहे हैं। कल्कि जी के प्राकट्य के लिए प्रचार का काम करो, उनके पास वैभवता की कमी नहीं तुम आगे बढ़ो तो।

इस स्वप्नानुभव का गंभीर विश्लेषण करने के बाद (गत वर्षों में कल्कि भगवान के अमूल्य भक्त जिन्हें समय से पहले संसार से जाना पड़ा) अनुभव पैनल के वरिष्ठ सदस्य स्वयं विशिष्ट कल्कि भक्त के घर पर इस अनुभव के अर्थ व उपचार बताने गए ताकि कलियुग अब की बार इस तेजवान रूह पर हाथ न साफ कर जाए।

उपचार—इस स्वप्नानुभव की गंभीरता को समझते हुए सकारात्मक अनुभव आने तक यह सारे उपचार आवश्यक हैं— (1) 5 रुपये यमुना महारानी जी प्रतिदिन। (2) यमुना महारानी जी वस्त्र-धोती, कुरता, बनियान, अंगोछा, कलावा, सूखा नारियल, एक सीधा, पानी, धूप, 5 रुपये। (3) स्वप्नानुभव में दिखे पित्रों के सीधे स्वधा महारानी जी (यह पित्रों की देवी हैं) का संकल्प करके।

(4) गाय माता, सूर्य भगवान, श्री कल्कि जी की आठ बार की नमस्कार व आरती में नीचे लिखी प्रार्थना करनी है। (5) कल्कि भगवान का प्रतिदिन 200 बार आभार प्रकट करना है (जो कल्कि जी ने उनके साथ अच्छा किया है)

प्रार्थना—हे यमुना महारानी! मेरे को जीवन दान दीजिये, यमराज की मारक शक्तियों से मुझको बचाइये। मुझको कल्कि जी के प्राकट्य के लिए प्रचार का काम करना है।

प्रार्थना—स्वधा महारानी! हे मां मैं यह सीधा निकाल रहा हूँ, इसके द्वारा

पितृ-पितृी को उनका भाग देकर उनके लोकों में भेजिये, इन्हें संतुष्ट करें कि मुझको असमय नहीं मरना, मुझ को कल्कि जी के काम पूरा करने का आर्शीवाद दें। गाय माता, सूर्य भगवान, नमस्कार में भी जीवन दान की एवं वैभवता प्राप्ति की प्रार्थना निरंतर करते रहें।

इन उपचारों को लगातार करते रहने के उपरांत

24 जून 2010 को विशिष्ट कल्कि भक्त को स्वप्नानुभव हुआ, धर्मशाला में कल्कि भगवान का कीर्तन होकर चुका है। उसके बाद लोग सो रहे हैं। वह अपनी चप्पल ढूँढ रहा है। ढूँढते-ढूँढते अंदर जाता है तो आचार्य प्रभाकर मिश्रा एक विद्वान के साथ बैठे सत्संग कर रहे हैं।

अर्थ—उत्सव के बाद सोना उत्सव की निष्क्रियता दर्शाता है। चप्पल ढूँढना अर्थात प्रगति के मार्ग में भावुकता, आलस्य जीवन की अव्यवस्था (Misplannings) के कारण रुकावटें दर्शाता है। आचार्य प्रभाकर मिश्रा के साथ विद्वान बताता है कि सत्संग जाग रहा है (एक कहावत सुनी होगी सत्संग दो का) अर्थात कल्कि जी के प्राकट्य के लिए कीर्तन सत्संग के बिना अधूरा है, प्रचार के लिए सत्संग की भी सख्त ज़रूरत है। कीर्तन से भक्तों को सहारा मिलता है, भगवान का स्वरूप खिलता है, शरीर में भक्ति का संचार होता है, तेज मिलता है,किन्तु सत्संग सहित कीर्तन से अथवा कीर्तन में ही किसी विद्वान (जलता हुआ बल्ब) द्वारा **सत्संग से भक्तों के मन में बरसों से पनप रहे संशय सुलझते हैं व भगवान से मिलने की राह आसान हो जाती है।** श्री गुरुजी के समय (सातों दिन) में सिर्फ बुधवार को 3-4 घंटे का संकीर्तन होता था और वह बाकी समय माला, शास्त्रों का पाठ, सत्संग करते थे।

योग संन्यस्त कर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम्।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय॥
(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 41)

जिसने कर्मयोग द्वारा अपने सभी कर्म भगवान के आगे समर्पित कर दिये, सत्संग द्वारा जिनके समस्त संशय नष्ट हो गए ऐसे शुद्ध अंत:करण वाले व परमात्मा का चिंतन करने वाले भक्त को कर्म नहीं बांधते।

असम्भव को सम्भव करने वाले चमत्कारी भगवान श्री कल्कि

अमरीका में कार ड्राइवर फ्री

—श्रुति सर्राफ (कोलकाता)

मैं बोस्टन अमरीका पढ़ने गई। पैरों* की वजह से आम लोगों की तरह मैं गाड़ी नहीं चला सकती हूँ। मैं एक ऐसे परिवार से हूँ जहाँ हमेशा गाड़ी-ड्राइवर की सुविधा रही। पर जब बोस्टन में एक जगह से दूसरी जगह जाने की बात हुई तो मैं घबरा गई कि मैं कैसे यात्रा करूँगी ? अपने सीधे पैर में लंबा जूता पहनने के कारण भारी सामान उठाकर चलने में मुझे अक्सर समस्या महसूस होती है। टैक्सी का किराया अमरीका में देने की हिम्मत नहीं पड़ती। भारी बैग उठाकर तो क्या मैं ठंड, बरसात, बर्फ में कैसे चल पाऊँगी ? यह सोचकर ही मन कमज़ोर पड़ रहा था। फिर मुझे पता चला कि पूरे **अमरीका में एम ए ही एक ऐसा शहर** है जहाँ विशेष लोगों के लिये कार सुविधा है। पर वह सुविधा मिलना अंतर्राष्ट्रीय लोगों के लिये अंसभव है। मैंने किसी तरह कार सुविधा का फार्म इंटरनेट से निकाला, तो क्या देखती हूँ कि उसमें अमरीका के किसी डॉक्टर का हस्ताक्षर भी चाहिये। आश्चर्य की बात यह है कि कुछ ही दिन पहले मेरी एक व्यक्ति से दोस्ती हुई जो डॉक्टर है। इस डॉक्टर ने लिख दिया कि मुझे यह सुविधा मिलनी चाहिये। अब फार्म को पास कराने की ज़िम्मेदारी थी। मैं कल्कि जी का नाम लेकर उस कार सुविधा के ऑफिस में गई। उसके रूल बुक में लिखा था कि 21 दिन के बाद ही आपको पता चलेगा कि आपको यह सर्विस मिली कि नहीं।

मुझे साक्षात्कार के लिये बुलाया गया। एक काली महिला मेरा साक्षात्कार ले रही थी। कुछ देर मेरे साथ बात करने के बाद वह अपने अंदर वाले केबिन में गई और मेरी गाड़ी ड्राइवर के प्रार्थना पत्र पर स्वीकृति की मोहर लगाकर दे दिया। मैं सोच में डूबी थी कि तभी उस महिला ने आकर मुझसे कहा कि तुम्हारा फार्म मैंने स्वीकृत कर दिया है। मैं हक्की-बक्की थी कि यह नामुमकिन काम मेरे कल्कि जी ने कैसे करा दिया। अमरीका में गाड़ी ड्राइवर होना एक सपना है, ऐसा वहाँ के लोग कहते हैं कैसे कहूँ उस अंजाने देश में मेरे कल्कि जी ने मुझे हथेलियों पर रखा।

* बचपन से एक पैर छोटा होने के कारण मैं एक लंबा जूता पहनती हूँ।

डांवाडोल के बाद भी आपरेशन टला

–सुश्री मुक्ता गोयल (09350946057)

(शुरू से मेरा भाव श्री कल्कि जी के कीर्तन और नाम जाप में ज्यादा रमता है। और इसी से मुझे लगता है कि कल्कि जी सब ठीक कर देंगे। लेकिन अनुभवों से भी मुझे परहेज नहीं है। यदा कदा कोई टेढ़ा मेढ़ा आता है तो मैं कल्कि पैनल से पूछकर उपचार कर देती हूँ।)

15 जून, 2010 को मेरी मम्मी को दिखा कि मेरी भाभी के पेट में दर्द है और उसे किसी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहाँ उनका ऑपरेशन भी किया गया है। उन्होंने यह बात घर में बताई पर उसपर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसके 10 दिन बाद रात से भाभी को उलटियाँ लग गईं और अगले दिन से उनकी हालत खराब होने लगी। न तो वह पानी पी रहीं थी और न ही दवाई। अब पेट के दर्द से भी पीड़ित होने लगीं। डॉक्टर के पास जाने पर उन्होंने तुरन्त अल्ट्रासाउंड करा कर बताया कि उनकी आँतों में रुकावट (Blockage) आ गई है। उन्हें अस्पताल में 2 दिन के लिये भर्ती कर लिया गया कि यदि वह ठीक हो गईं तो छुट्टी दे देंगे वरना उनका ऑपरेशन करना पड़ेगा। यहाँ उन्हें ग्लूकोस के साथ कुछ दवाइयाँ मिलाकर देना शुरु कर दिया।

अगले दिन श्री कल्कि बाल वाटिका की अनुभव गोष्ठी मीटिंग में मेरे भाई का बार–बार फोन आने पर कि भाभी की हालत खराब है, मामाजी से पूछकर बताओ कि क्या करना है। ICU* ईलाज की तरह मामाजी ने 129 रुपये हनुमान जी की योगी योगिनियों के हाथ लगवाकर शाम तक प्रसाद बाँटने को कहा क्योंकि पहली बार मैंने उपचार करने में कुछ दिन लगा दिये थे। भाई को मैंने बता दिया। उसके बाद उसका फोन आया कि तबीयत ठीक नहीं हो रही, मामा जी से फिर पूछकर बता क्या करना है ?

मामाजी और बच्चों के अनुभवों के जवाब दे रहे थे सो उन्होंने मुझे मेघाजी से बात करने को कहा जो कि जटिल बीमारी में अनुभव उपचारों द्वारा हाल ही में पड़ने से बच गई थीं। उन्होंने मुझे अपनी आपबीती का पेपर दिया कि मैंने यह उपचार किये हैं, तुम भी समझ कर अपने भाई से करा दो। भाई के फोन से और उसकी परेशानी से जब मैं मेघा बहन के पेपर से संतुष्ट नहीं हुई तो मेरी परेशानी को देखकर मामाजी ने मेघा का पेपर अपने हाथ में लेकर कहा कि द्वुष्ट उपचार तो मैंने तुम्हें अभी बताया था। आगे के उपचारों के लिये आपके यहाँ जो भी अनुभव

एक-डेढ़ महीने से अब तक हुए हों वह आप पहले मुझे बताएंगे तो ही मैं आपको प्रभु श्री कल्कि की कृपा से सही उपचार बता कर सही रास्ता दे पाऊँगा।

पहले तो मैं मेघा का कागज देखकर सकपकाई थी, अब मैं मामाजी की बात सुनकर और ज्यादा सकपका गई। मैंने दिमाग पर ज़ोर दिया तो याद आया कि मम्मी ने 10-15 दिन पहले मुझे भाभी के ऑपरेशन वाला अनुभव बताया था, उस पर मामाजी ने 5 रुपये का सिक्का व चीनी, धनवंतरी के 5 हवन व माला की प्रार्थना बताई। मेरे पीछे ही मेरी माताजी बैठी थीं वह बोलीं कि मुझे मेरी सास, जेठानी व दो अन्य औरतें दिखी जो अब नहीं हैं, वे मुझे 4 साड़ियाँ दे रहीं हैं जिसमें से मुझे एक साड़ी पसंद करनी है। उसमें एक हरे रंग की साड़ी भी थी जो मुझे पसंद थी। वह मैंने लेनी चाही परन्तु मेरी सास ने वह मुझे नहीं दी। उस पर मामाजी ने बताया कि आपको पितृियों को 4 साड़ियाँ देनी पड़ेंगी, जिसमें एक हरे रंग की साड़ी भी देनी है। हरा रंग तांत्रिक शक्ति को दर्शाता है। मेरे पूछने पर मामाजी ने पितृों की प्रार्थना तुरन्त लिखवा दी जो मैंने मम्मी द्वारा बाल वाटिका में ही भगवान के आगे करा दी। मामाजी ने यह भी बताया कि इनकी पत्री तुरन्त किसी पंडित को दिखाओ कि इन्हें कौन सा ग्रह परेशान कर रहा है, तो हमें उस ग्रह की शांति के लिये भी कल्कि जी का आधार लेकर उपचार कराना पड़ेगा। भाई के पूछने पर उसकी पत्री में शनि की ग्रह दशा बताई और कहा कि मैंने शनि के लिये 500 रुपये हाथ लगा दिये हैं। शनिवार को उपचार करा दूँगा। मामाजी ने कहा कि **शनि देव को रुपये नहीं सामान चाहिये।** हम पर सिविल नहीं मिलिट्री के नियम लागू होते हैं कल्कि जी के केस में हमारे यहाँ सब दिन मान्य हैं। आप तुरंत भइया को बोलकर काला कपड़ा, लोहे की कील, काली उड़द और जो भी मिले वह हाथ लगाकर शनि देव से प्रार्थना कर दें कि आप अपना भाग लीजिये, इन्हें कल्कि जी का काम करना है, और किसी भी शनि मंदिर में चढ़वा दें।

इस प्रकार के दो मरीज़ों के और केस भी मामाजी के सामने आ चुके थे। उस पर उन्होंने रामकृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी द्वारा बताया उपचार कि उनकी रीढ़ की हड्डी पर तिल के तेल की ऊपर से लेकर नीचे तक मालिश करें, (इसके करने से जो गर्मी आएगी उससे गैस व मल निकलने में नसों को पूरी मदद मिलेगी।) पहले दिन तो हमने सरसों के तेल की मालिश की लेकिन दूसरे दिन मामाजी को बताया तो उन्होंने कहा कि मेरे बताने में कोई गलती हो गई होगी आप तिल के तेल की मालिश करो। इस अस्पताल में हमें

अच्छा नहीं लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि मानो हमारे कमरों में आसुरी शक्तियाँ बहुत परेशान कर रही हैं। भाई को भी यहाँ आराम से सोने में परेशानी हो रही थी। जब ऊँ नम: कल्कि फट स्वाहा का मंत्र बॉक्स चलता था तभी वह सो पाता था। बाकि समय हमने करत करत जब चरण वंदना बिगड़ी बनत गई कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई चला रखा था। हम परमानंद अस्पताल में आ गए। कल्कि जी के उपचारों के कारण डॉक्टर ने हमें दो दिन उनकी देखरेख में अस्पताल में रहने को कहा और उसके बाद ऑपरेशन के बारे में सोचने को कहा।

हम कल्कि जी के उपचार करते रहे और श्री गुरुजी द्वारा बताए तिल के तेल की मालिश भी अब शुरु कर दी थी। शाम को ही भाभी को दस्त हुआ और काफी गैस पास हुई। कल्कि जी की कृपा से अगले दिन वह घर पर आ गईं। भगवान श्री कल्कि जी की कृपा से भाभी का पहले जो वैष्णों देवी जाने का जो कार्यक्रम रद्द हो चुका था कल्कि जी की कृपा से वह भी वैष्णों देवी हमारे साथ गईं।

उपचार संकल्प व प्रार्थना—

(क) 20 रुपये दुर्गा जी की योगिनियों के 8 दिन तक निकालें।

(ख) एक बार 129 रुपये हनुमान जी की योगी योगिनियों के-अस्पताल से सकुशल घर आने के लिए।

(ग) 5 रुपये यमुना महारानी-5 दिन, जब तक अस्पताल में रहीं।

(घ)11 माला का हवन-हक् अनीह् निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा

(ड) पत्री में आया था कि पेट के ऑपरेशन का योग-शनि की दशा से है सो 11 शनिवार उपचार करें। शनि महाराज के रुपये निकाल दिये, फिर पहला काम तो काले कपड़े में थोड़े से काले उड़द, काले तिल, दक्षिणा, सरसों के तेल की शीशी बंद करके भाभी के हाथ लगवाकर शनिदेव के मंदिर में चढ़वा दी।

(च) पितृों के रुपये व सीधे के हाथ लगवाकर सीधा निकालें।

(छ) पितृियों की साड़ी व रुपये निकाल कर स्वधा महारानी से प्रार्थना की।

(ज) पंचामृत के साथ 5-5 रुपये से शंकर भगवान के 2 अभिषेक पहले किसी अनुभव में भूलचूक होने पर क्षमा याचना के करें।

निष्कर्ष—प्रभु श्री कल्कि बड़ी मुश्किल से रण भूमि छोड़कर हमें अनुभव देते हैं। यह सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि हमारे श्री कल्कि अपने भक्तों का चिंतन हर समय करते हैं। बहुत ही भाग्यशाली हैं वो भक्त जिन्हें प्रभु ने कलियुग के दुष्ट इरादों व प्रहारों को विफल करने के लिये अनुभवों जैसा शस्त्र दिया है।

मामाजी को ही नहीं हमें भी कोई नहीं छोड़ता

प्रश्न— मेरे से सत्संग, संकीर्तन में प्रश्न पूछा गया कि जब आपकी भाभी और अन्य भक्त दोनों लगभग एक ही बीमारी से ग्रसित थे सो उनको आपने उपचार कराके इस परेशानी से क्यों नहीं मुक्त कराया?

उत्तर—इस पर मैंने जवाब दिया कि उनसे हमने उपचार तो कराए थे लेकिन उनके अनुभव उपचारों पर हमने इतना गौर नहीं किया जितने अंतर्जगत में मामाजी जाते हैं।

मेरी भाभी के केस में आसुरी शक्तियों, पितृों व देवी देवताओं को अनुभव के हिसाब से उनका भाग (Share) मिल गया।

विशेष—यहाँ मैं अपनी भाभी से पुनः अनुरोध करूँगी कि अन्य भक्त को डॉक्टरों ने जो इस बीमारी से बचने के लिये सलाह दी है उसे समझकर उस पर चलते हुए भगवान श्री कल्कि जी का नाम जाप, पूजा, हवन करते हुए स्वप्न अनुभव लिखे व उनका उपचार करते रहें। वह यह न माने कि अभी वह संकट से पूर्ण निकल चुकी हैं।

उदाहरण के तौर पर–यमुना जी का 5 का सिक्का एक बार हाथ लगाकर हम महीनों, वर्षों के लिये यमराज के चंगुल से नही निकलते हैं। यदि वह अनुभव लिखकर उनका उपचार एवं होम्योपैथिक डॉक्टर की सलाह पर चलती रहीं तो कलियुग उनका बाल भी बाँका न कर पाएगा। मिलट्रियन को हमेशा सावधान रहना पड़ता है। सावधानी हटी दुर्घटना घटी।

इसी प्रकार स्वप्न, जागृत, वाणी, मानसिक अनुभव कभी किसी को अच्छा बुरा जैसा भी हो, समझ नहीं आने पर उसका ढ्ढष्ट उपचार तुरन्त कर दें। इसके बाद अनुभव पैनल के सदस्यों से पूछकर उचित उपचार करने से जिस प्रकार बिना ऑपरेशन के मेरी भाभी रोग मुक्त हो गईं, कल्कि जी की आराधना करने वालों को फायदा निश्चित मिलेगा।

*मर्ज चाहे जो भी हो आपातकालीन वार्ड में पहुँचता है तो उसे ऑक्सीज़न, गुलुकोस आवश्यकता के अनुसार डयूटी डॉक्टर तुरन्त देना शुरु कर देता है। इसके बाद मरीज का हाल जानकर अथवा रिपोर्ट देखकर सम्बंधित डॉक्टर को बुलाया जाता है ताकि मर्ज की गंभीरता को समझते हुए उसे दवाइयाँ देकर ठीक करें। बच्चों दवाइयों की दुकान में दवाइयाँ तो बहुत होती हैं लेकिन मर्ज को समझकर और उसकी गंभीरता को देखकर चतुर डॉक्टर कब कितनी दवाई देनी है, बताता है।

असाध्य रोग से मुक्ति

—सुश्री मुक्ता गोयल (09910291711)

हमारे प्रभु श्री कल्कि ब्रह्माण्ड नायक हैं। ब्रह्माण्ड उनके आधीन है। सफलता-असंभव को संभव करने का एक ही आजमाया हुआ मार्ग है कि सिर्फ एक बार ही अपनी परेशानी या जैसा-जो आप चाहते हैं श्री कल्कि जी से कहें। इसके तुरन्त बाद से हँसते रहिये-और सोचें-महसूस करें जो मैंने चाहा है, मांगा है वह मुझे **मिलने लगा है-मिल रहा है-मिल गया है।**

(सावधान-अवसर आने पर आलस्य, लापरवाही न करें (भगवान ने अथवा उनकी कृपा से जो तुम्हारा अच्छा हुआ है उसका दिन में कम से कम 200 बार आभार प्रकट करें चाहे तो 101 रुपये की अभिमंत्रित छड़ी खरीद कर मुट्ठी में दबा लें-उससे भी आभार माला की तरह मुँह से निकलने चालू हो जाते हैं।) आपको आपका चाहा, मांगा अवश्य मिलेगा। सुबह पलंग से उठने से पहले भी हँसते हुए यही विचार रखें। भगवान कल्कि जी के आभार प्रकट करते हुए हँसते हुए ज़मीन पर पैर रखें। इसे कहते हैं सकारात्मक विचार जिससे आप असंभव को संभव कर पाएंगे। कम्पयूटर की तरह ब्रह्माण्ड के दिमाग नहीं होता। जैसा कम्पयूटर में आप चढ़ाओगे वह वही नोट करेगा। उदाहरण के लिये कोई व्यापारी गलत चढ़ाए कि मैं तबाह हो गया, मुझे इस-इस का लाखों देना है आदि जबकि देना नहीं है तो कम्पयूटर तो नोट कर लेगा। इस मैसेज से आपका मुनीम लोगों का भुगतान भी करना शुरु कर देगा और देखते ही देखते वह व्यापारी दिवालिया हो जाएगा। इसी तरह से आप जैसा सोचोगे ब्रह्माण्ड भी वही चीजें आपको भेजेगा। धन मांगोगे-सोचोगे तो धन, सुख मांगोगे-सोचोगे तो सुख, बीमारी सोचोगे तो बीमारी, परेशानी सोचोगे तो परेशानियाँ-क्योंकि ब्रह्माण्ड के पास अनंत है जो चाहोगे वह मिलेगा लेकिन बच्चों ब्रह्माण्ड के पास सोचने की शक्ति (दिमाग)नहीं है। ज्यादा क्या कहूँ यदि सारा विश्व भी ब्रह्माण्ड से बहुत कुछ मांगे तो वहाँ कमी नहीं है। सब को देने के बाद भी उसके पास बहुत है। इसी अच्छी सोच की मैं आपको एक सच्ची घटना बताती हूँ।)

श्री कल्कि बाल वाटिका की एक बालिका 8 महीनों से जोड़ों के दर्द से पीड़ित थी। किसी भी डॉक्टर को उसका मर्ज समझ नहीं आ रहा था। कल्कि भगवान ने उसे गंगाराम अस्पताल में एक डॉक्टर के पास भेजा। उन्होंने जाते ही बीमारी को समझ लिया और बुखार आदि लक्षण को देखते हुए उसके पिता को

ल्यूकीमिया (कैंसर) जैसे भयंकर रोग होने का शक प्रगट किया। डॉक्टर ने उन्हें Bone Marrow Test कराने को कहा। इससे पहले कराए गए सभी टेस्ट उसने सही बताए। प्यारे बच्चों ल्यूकीमिया कैंसर की पहली स्टेज होती है जिसकी कीमोथैरेपी 3-4 साल करानी पड़ती है। कल्कि बाल वाटिका के अनुभव पैनल से पूछकर उस परिवार ने उपचार व प्रार्थनाऐं शुरु कर दिए। उस परिवार की सोच हमेशा यही रही कि हमारे कल्कि भगवान उनके साथ यह अनहोनी होने नहीं देंगे, वह तो सूली का काँटा बनाने वाले हैं। हमारे साथ सब अच्छा (positive) होगा। वह यही सोचते व बोलते रहे कि उनकी बेटी ठीक है। उन्होंने टेस्टिंग की रिर्पोट आने तक कल्कि भगवान के समक्ष अखण्ड ज्योत जगाई और साथ ही अपनी सोच को सकरात्मक (positive)रखा। जब भी कोई नकारात्मक विचार आता वह ज्योत के दर्शन कर जाती। अनंतकोटी ब्रह्मांड नायक श्री कल्कि भगवान की असीम कृपा से कराए गए टेस्ट की रिर्पोट नार्मल आई। डॉक्टर ने कहा कि अब उनकी बेटी का इस बीमारी से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है।

आरती करते हुए ज्योत का बुझना

—कुमारी उपासना गोयल

छात्रा (कैमिस्ट्री ऑनर्स) द्वितीय वर्ष

भगवान की आरती करते समय यदि आरती की ज्योत बुझ जाए तो दोबारा ज्योत को जगाकर आरती करें। उसके बाद 1 रूपया, दो बताशे अथवा (एक चौथाई कटोरी चीनी/बूरा) से भैरों बाबा का संकल्प लेकर प्रार्थना करें—हे भैरों बाबा, जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, तांत्रिक, अघोरी शक्तियाँ किसी भी प्रकार से हमारे घर या व्यापार में अनिष्ट करना चाह रही हैं, उन्हें उनका भाग देकर ऐसा करने से रोकिए। हमें अपना सुरक्षा कवच प्रदान कीजिए, हमें रास्ता दीजिये, हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

नोट—यहाँ हम आपको पुन: सत्संग में बताई गई चर्चा याद दिलाना चाहेंगे कि जिस देवता का आपने उपचार किया है यदि उसका मंदिर आपके नज़दीक नहीं है तो विष्णु भगवान (श्रीराम, श्रीकृष्ण अथवा कल्कि जी) के मंदिर में भगवान को देकर प्रार्थना कर दें जैसे—हे प्रभु! इसे भैरो जी के पास भिजवा दीजिये। यह सब भगवान कल्कि जी की कैबिनेट के सदस्य हैं।

रूके हुए उपचार पापों में परिवर्तित होकर नव शक्ति का सृजन भी रोकते हैं

—सुश्री पूजा गुप्ता (9811858723)

पिछले एक डेढ़ साल से मेरे पास भैंरो जी, दुर्गा जी और शंकर जी के पंचामृत के अभिषेक के रूपए संकल्प करके रखे हुए थे, लेकिन घरेलू कार्यों में व्यस्त एवं कुछ नहीं होता है कि भावना से प्रेरित होकर व **आलस्यवश** मैं यह उपचार नहीं कर पा रही थी। मन में यह दुविधा थी कि भैंरो जी के रोट और 26 पूरी हलवे के यह सारे उपचार करने के लिए पूरा समय चाहिए कैसे होगा कुछ सूझ नहीं रहा था। इसी दौरान मामाजी से और अपनी सहेली से मैंने कई बार सुना कि उपचारों को रोकना नहीं चाहिए जितना जल्द बन पड़े कर देने चाहिए।

एक दिन मैंने दृढ़ संकल्प लेकर सारे उपचार कर ही दिए फिर भी पंचामृत के अभिषेक नहीं कर पाई। उसी रात्रि मुझे स्वपनानुभव हुआ कि मामाजी मेरे घर आए हैं, मैं उनके लिए दूध नाश्ते का प्रबंध कर रही हूँ। मैंने फ्रिज़ खोला तो देखा कि दूध तो बहुत सारा था लेकिन फ्रिज़ बंद पड़ा था। मैं परेशान हो गई कि इतना सारा दूध खराब हो जाएगा। मामाजी ने मुझसे कहा कि फ्रिज़ का कनैक्शन चैक करो जैसे ही मैंने तार हिलाई तो फ्रिज़ चल पड़ा। लेकिन मामाजी ने दूध ग्रहण करने से मना कर दिया। मैं घर के बाहर तक मामाजी के पीछे गई किंतु उन्होंने दूध नहीं लिया।

अगले ही दिन मैंने अनुभव पैनल से संपर्क किया तो उन्होंने बताया कि इस अनुभव के अनुसार आपने जो उपचार इतने समय से रोके हुए थे अब कर दिए हैं तो दैवीय शक्तियों ने उन्हें ग्रहण कर लिया है। अब आप खुद समझ लीजिए कि अगर यह उपचार सही समय पर होते तो निश्चित ही आपकी प्रगति के मार्ग शीघ्र खुल गए होते। मामाजी के द्वारा दूध ग्रहण न करना दर्शाता है कि अभी भी आप लापरवाही बरत रही हैं अत: पंचामृत के रूके हुए उपचार भी पूरे करें। अगले ही दिन मैंने शंकर जी के अभिषेक भी कर दिए।

जब सिद्ध मंत्र उपचार इंटरनेट बने

—सुश्री रमणी अग्रवाल, जर्मन टीचर (9212216251)

मेरे पति अपने काम के सिलसिले में कुछ महीनों के लिए विदेश गए हुए थे। उनका बहुत मुश्किल से वहाँ जाना हो पाया परन्तु कलियुगी शक्तियों ने वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। वहाँ मेरे पति की तबियत खराब होने लगी, गला बहुत खराब हो गया, खाँसते-खाँसते अचानक गले से खून भी आने लगा। वहाँ डॉक्टर से पूछने पर उन्हें फूड इंफेक्शन बताया। हम यहाँ चिंता में पड़ गए कि सात समुद्र पार वह कैसे ठीक हों। फिर अनुभव पैनल से उपचार पूछने पर मैंने दुर्गा जी की योगनियों का 20 रूपये से **उपचार किया और हक अनीह निष्कलंक गोरण्डा दुष्टहा नाशनम् पापहा की एक माला के हवन के बाद** धनवन्तरि वैद्य जी से उनके स्वास्थ्य, खासकर गले की प्रार्थना की। लेकिन मंत्र बॉक्स में **करत-करत तब चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई** लगाना फिर भी भूल गई। मेरे पति की हालत पहले से ठीक तो हुई, पर गले से खून फिर भी आ रहा था। मेरी 4 साल की बेटी, जो मंत्र बॉक्स को सुनना बेहद पसंद करती है, पर कभी छेड़ती नहीं है। उसने अगले दिन खेलते-खेलते आकर करत-करत तब चरण वन्दना वाला मंत्र लगा दिया और उस पर डांस करती रही। पहले तो मैंने ध्यान नहीं दिया, मुझे लगा ऐसे ही खेल-खेल में छेड़ रही है। अगले दिन जब उस मंत्र बॉक्स के पास मैं बैठी हुई थी, तो मुझे ध्यान आया कि यह मंत्र तो पैनल मैंबर ने मुझे बताया था मैं लगाना ही भूल गई। उस समय ऐसा लग रहा था मानो स्वयं श्री कल्कि नारायण ने मेरी बेटी से वह मंत्र चलवाया था। तब से मेरे पति जो दूर विदेश में है उनके स्वास्थ्य में पहले से अत्याधिक सुधार आ गया।

हैं! सिद्ध मंत्र इतने प्रभावशाली

एक कल्कि भक्त के घर के कमरे के विशेष कोने में उन्हें एक आसुरी शक्ति की उपस्थिति का जाग्रत अनुभव हुआ। उन्होंने उस स्थान पर ''ॐ नमः कल्कि फट स्वाहा'' की ध्वनि लगा कर श्री कल्कि मंत्र बॉक्स को रख दिया। फलस्वरूप उसी रात्रि उन्हें स्वप्न अनुभव हुआ कि वह कल्कि भक्ता और उनकी तेजवान

पुत्री (कल्कि भक्ता जिसने उन्हें श्री कल्कि मंत्र बॉक्स का उपाय बताया था) मिलकर दोनों उसी स्थान पर हवन कर रही हैं।

नोट:- ''**ॐ नमः कल्कि फट स्वाहा** के एक उच्चारण से 37,500 आसुरी शक्तियों का दमन होता है।''

आसुरी शक्तियों में तू-तू मैं-मैं

जब आसुरी शक्तियाँ घर में या किसी कमरे में ज्यादा हों रात को नींद बार-बार उछटती रहती हो तो सिद्ध मंत्रों वाले यंत्र में से **ॐ नमः कल्कि फट् स्वाहा** की ध्वनि बहुत हल्की रखकर इस प्रकार चलाए कि वह सोते हुए आपके कानों में न लगे। इस प्रकार वह ध्वनि आपके कमरे से अतृप्त एवं आसुरी शक्तियों को बाहर करेगी। 4-5 दिन बाद आपको स्वतः मालूम चलेगा कि परेशानियाँ कम होनी शुरू हो गई हैं। स्वपन अनुभव में यदि कोई दान पुण्य का निर्देश आए तो वह कर देने से रास्ता निश्चित मिलेगा। बिना वजह दिमाग परेशान पहले अथवा एक दो दिन होम्योपैथिक की दवाई की तरह अगर परेशानी जरा बढ़े तो घबराये नहीं क्योंकि यह दर्शाता है कि राहू-केतू कि ग्रहों की तरह जाते-जाते बुरी शक्तियाँ ठोकर मारकर जा रही हैं।

मंत्र बाक्स चोरों पर मोर

—सुश्री रश्मि गुप्ता, टीचर रामजस स्कूल (9873345859)

मैं सिद्ध कल्कि मंत्र बाक्स में से '**ॐ नमः कल्कि फट् स्वाहा**' की ध्वनि उस समय लगाती थी जब मैं घर को ताला बंद करके जाती थी। एक बार 6-7 घंटे बाद जब मेरा परिवार घर वापस पहुँचा तो घर के ताले में एक बार में चाबी नहीं लग पा रही थी। बहुत प्रयास करने पर भी जब ताला नहीं खुला तो मैंने देखा कि ताले को तोड़ने की कोशिश की गई थी, लेकिन श्री कल्कि मंत्र बाक्स के मंत्र के प्रभाव से चोर ताला नहीं तोड़ पाए और वह अनहोनी होने से बच गई।

सिद्ध मंत्र ने अनिष्ट से बचाया

मुझे यह स्वप्नानुभव हुआ कि मेरे घर के नीचे से निकल रहे ट्रक में भीषण आग लग गई, जो मेरे घर तक पहुँच रही है। इससे घबराकर मेरे परिवार ने हार मान कर, एक जगह खड़े होकर मरने की तैयारी कर ली। लेकिन कुछ नहीं होने पर हमने पुनः अपने घर में जाकर देखा तो पाया कि मंत्र बॉक्स पर महामंत्र ''**जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते**'' की ध्वनि चल रही थी जिस की

वजह से हमारा परिवार अप्रत्यक्ष रूप से क्रूर मृत्यु जैसी अनहोनी से बच गया।

जब सिद्ध मंत्र ने बदला पत्नी के खाने में स्वाद

श्री कल्कि मंत्रों के यंत्र में से ''राम कहो कृष्ण कहो और कहो कल्कि कल्कि का नाम है धार गंगाजल की'' की ध्वनि रसोई घर में निरंतर चलाने से आप पाएंगे कि तीसरे दिन से रसोई घर में भोजन सामग्री में बरकत तो मिलनी शुरू हो ही जाएगी साथ ही ग्रहणी द्वारा बनाए गए भोजन का स्वाद भी पहले से अधिक स्वादिष्ट हो जाएगा। जो भोजन सामग्री पहले बेकार हो जाती थी वह स्वत: ही प्रयोग में आने लगेगी अर्थात् माँ अन्नपूर्णा की प्रसन्नता व लक्ष्मी जी की कृपा दोनों मिलेगी।

धोखेबाजों से बचो

षड्यंत्रकारी, धोखेबाज, मक्कार, आस्तीन के सांप, चालबाज लोगों के बीच तनाव भरी जिंदगी, इस कलियुग का ऐसा ही चक्रव्यूह है जिसमें आज सीधे, सरल, सज्जन सात्विक व्यक्ति अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह में फंसे जीवन जी रहे हैं।

यदि आप भी ऐसे भीषण चक्रव्यूह के शिकार हैं और बाहर निकलने के सभी रास्ते बंद लग रहे हैं, दिमाग काम नहीं कर रहा है तो ऐसे में सिद्धमंत्र ध्वनि नं. 5 ''कल्किजी ने किया है कल्कि जी करेंगे गुरू जी ने किया है गुरू जी करेंगें'' की ध्वनि चला कर उसका फल श्री कल्किजी को समपर्ण करके उनसे रास्ता मांगें। आप उस दिन से ही पायेंगे कि आपके मन से अनावश्यक बोझ तो घट ही रहा है साथ ही कॉटों से भरी राह पर भी चलने का रास्ता भी मिलना शुरु हो जाएगा।

समस्या से बाहर निकली

—सुश्री मीनाक्षी गुप्ता (9811242748)

कीर्तन व सतसंग से भक्तों का उद्धार होता है यह बात भगवान श्री कल्कि महिमा की सी.डी. ने भी सिद्ध कर दिया है। मेरे घर में कुछ ऐसी समस्या आ गई जिसका कोई निवारण या रास्ता नहीं मिल रहा था। तनाव और चिंता ने मुझे चारो ओर से जकड़ रखा था। लेकिन अपने विश्वास को मैने डिगने नहीं दिया और निर्णय लिया कि मैं कल्कि महिमा* सी.डी. प्रतिदिन दो घंटे सुनूंगी। आठ दिन तक लगातार यह सी.डी. सुनकर भगवान का भजन

रटलो भाइयो कल्कि नाम, इससे बनेंगे बिगड़े काम

और इस भजन से पहले सतसंग सुधा सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो इसे प्रभु श्री कल्कि ने मेरे उद्धार के लिये ही बनवाया है। जो समस्या मेरे साथ चल रही थी उससे बाहर आने का मुझे प्रत्यक्ष रास्ता मिला जो मुझे असम्भव लगता था।

उस दिन से मैंने अपने परिवार पर आई समस्या को समस्या न मानकर ईश्वर का संदेश माना। उस दिन से मुझे जीवन को नये नज़रिये से देखने की दृष्टि मिली। यह परम सत्य है कि प्रभु श्री कल्कि पग-पग पर अपने भक्तों की सहायता करते हैं। उनकी बातों पर विश्वास मानकर उपचार, नाम जाप, हवन, पाठ करने वालों की तरह वो मुझे भी आगे बढ़ने का रास्ता दे रहे हैं। मुझे श्री कल्कि महिमा एम.पी. 3 भाग 1 का भजन न० 20 बोलो जय-जय श्री कल्कि पिता, बोलो जय-जय कल्कि माता सुनना बहुत अच्छा लगता है। और मैं सी.डी. में पुनः पुनः चलाकर इस भजन को सुनती हूँ।

* न मिलने पर चमत्कारी श्री कल्कि जी मेरे दोस्त सुन सकते हैं।

जब बेटे पर से दोहरी मारकेश टली

–सुश्री रश्मि गुप्ता (9873345859)

मेरे बेटे को बार-बार लग रही चोटों से परेशान होकर मैंने पंडित जी को उसकी पत्री दिखाई तो उन्होंने कहा कि आपके बेटे को दोहरी मारकेश की ग्रह है। मेरे तो पैरों के नीचे से मानो जमीन ही निकल गई कि मेरा एक ही बेटा है, अब मैं कहाँ जाऊँ, किससे अपनी मन की व्यथा कहूँ? मेरे पूछने पर पंडित जी ने मुझे सवा लाख जाप, हवन और कुछ दान बताए और कहा कि यह कर दो बाकी ईश्वर की इच्छा है। क्योंकि ग्रह दोहरी मारकेश की थी। उन्होनें कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया। मैं तो जैसे टूट सी गई।

फिर मैंने श्री कल्कि बाल वाटिका अनुभव पैनल से बात की तो उन्होंने कहा कि इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। भगवान श्री कल्कि ने स्वपनानुभव में बताया है कि दिन में जब समय मिले कच्चे दूध में काले तिल मिलाकर महामृत्युंजय के जाप की एक माला का यज्ञ प्रतिदिन शंकर जी की पिंडी पर चढ़ाते हुए करें (काले तिल मिले दूध को शंकर जी की पिंडी पर एक मंत्र बोलते हुए आधा चम्मच दूध इस प्रकार चढ़ाएं मानो यज्ञ कर रहे हों) और अंत में प्रार्थना करें—हे शंकर भगवान मेरे बेटे पर जो दोहरी मारकेश की ग्रह है उसे इस ग्रह से बचाकर जीवनदान दीजिए, किसी भी होने वाले अनिष्ट से उसे बचाइए, उसे कल्कि जी का काम करना है। इस क्रूर ग्रह के समय को वह सरलता से पार कर गया। विस्तार से पढ़ें श्री कल्कि जी की प्रेरणादायक कहानियाँ पृष्ठ 271

कल्कि जी बहुत करते हैं

–सुश्री रमणी अग्रवाल जर्मन टीचर (9212216251)

मुझे स्वपनानुभव हुआ कि मेरे पति की भयंकर दुर्घटना होने वाली है मेरी बेटी की मृत्यु का भी अनुभव हुआ। मैंने श्री कल्कि बाल वाटिका पैनल की सदस्या सुश्री मेघना गोयल, सुश्री पूजा गुप्ता से बात करके काली जी व यमुना महारानी का उपचार कर दिया। कुछ ही दिनों बाद मेरे पति को भयंकर दुर्घटना का सामना करना पड़ा जिसमें उनकी गाड़ी ने तीन पलटियाँ खाई और गाड़ी चकनाचूर हो गई। लेकिन उन्हें एक खरोंच तक नहीं आई। इस घटना के बाद मेरे को भगवान श्री कल्कि के स्वपनानुभवो की महत्ता का आभास हुआ और मैं स्वपनानुभव लिखकर उपचार करने लगी। आज मेरे पास लिखे हुए लगभग 400 अनुभव हैं उसमें से कई कल्कि समाज के लिए आवश्यक अनुभव इस पुस्तक में छपे हैं। मेरा रोम-रोम भगवान श्री कल्कि के प्रति कृतज्ञ है कि भगवान श्री कल्कि ने मेरे

परिवार के लिए प्रगति के कई नए सुन्दर मार्ग खोल दिए हैं।

एक बार तो (मेघा दीदी और पूजा दीदी द्वारा स्वपनानुभवों उपचारो की महत्ता को जानकर) तेज़ बुखार में मैंने वासुकि जी को 250 बेसन के लडडू हलवाई से लाकर उनके 5-5 टुकड़े करके अपनी बेटी का हाथ लगाकर मंदिर में चढ़ाए। पाँच महीनों के दौरान में ही वर्षों से नौकरी की तलाश कर रही मुझ श्री कल्कि भक्ता को कल्कि जी ने जी.डी. गोयनका वर्ल्ड स्कूल में जर्मन टीचर की नौकरी के साथ उस डिपार्टमेंट की हैड बनने के सुअवसर के साथ-साथ दो बार भारत सरकार के खर्चे पर श्री कल्कि ने मुझे जर्मनी भी भेजा।

जब अकाल मृत्यु टली

—सुश्री रचना गर्ग (9990485395)

मुझे स्वपनानुभव हुआ कि मेरे घर एक कलियुगी (आसुरी) शक्ति मुँह पर हनुमान जी का सिंदूर लगा कर आई और खाना माँग रही है। इसके उपचार दान हेतु मैंने दो संकल्प लिए—1 हनुमान जी के योगी योगिनियों का दूसरा दुर्गा जी की योगिनियों का व प्रार्थना की हे हनुमान जी महाराज। हे दुर्गा महारानी जी यह रुपये हाथ लगाकर संकल्प ले रही हूँ गरीबों को लड्डू व कचौरी सब्जी बाटूँगी इसके द्वारा अपने योगी योगिनियों को उनका भाग देकर मेरे परिवार का अनिष्ट करने से रोकिए हमें कल्कि जी का काम करना है।

अगले ही दिन मैंने यह उपचार इस प्रकार पूरा भी कर दिया। 15 रुपये के लडडू लेकर हनुमान जी का भोग लगाकर 1-1 के पाँच सिक्कों सहित गरीबों में बांटा और 15 रुपये की कचौरी सब्जी लेकर 1-1 के पाँच सिक्के लेकर गरीबों में बांट दिए। ठीक एक सप्ताह के बाद भगवान श्री कल्कि ने एक अद्‌भुत चमत्कार मेरे साथ किया। मेरी बेटी जब अपने ऑफिस जा रही थी। उस दिन तेज बारिश थी। रास्ते में एक जगह सड़क पर पानी ही पानी था। उसने जैसे ही पैर जमा कर रखा तो वह नीचे धंसती ही चली गई। दरअसल वह एक गहरा नाला था। वह गर्दन तक डूब चुकी थी लेकिन प्रभु की कृपा से पीछे चल रहे एक सज्जन ने बिना देर लगाए मेरी लड़की का हाथ पकड़ कर खींच लिया। उसकी चप्पलें व सामान उस नाले में बह गईं क्योंकि **समय पर किए गए उपचार की वजह से जो शक्तियाँ अनिष्ट करने आई थीं वो अपना भाग लेकर जा चुकी थीं।** इस तरह मेरी बेटी अकाल मृत्यु के ग्रास से बच गई। मैं कण-कण से श्री कल्कि जी की आभारी हूँ और सोचती रहती हूँ कि सही समय पर किए गए सही उपचार (दान) से मेरी मासूम बेटी की जान बच गई।

दसवीं कक्षा में 9.4 सी.जी.पी.ए. मिला

—उपासना गोयल (7503215558)

मैंने पिछले वर्ष ही दसवीं कक्षा के बोर्ड के पेपर दिए । तीन महीने की जी तोड़ मेहनत व समय समय पर भगवान श्री कल्कि द्वारा दिखाए गए स्वपनानुभवों के सही उपचार करके जहाँ एक ओर मैंने 90 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त किए वहीं माँ सरस्वती की साक्षात कृपा का अनुभव भी मुझे आभास हुआ। पेपरों से चालीस दिन पहले मैंने गौरीशंकर मंदिर में प्रतिदिन जाना शुरू किया और मैं माँ सरस्वती के साथ श्री कल्कि जी के साथ सभी भगवानों से यह प्रार्थना करती थी कि मुझे 90 प्रतिशत से ज्यादा नंबर दिलवाकर अपनी कक्षा में प्रथम स्थान दिलवाइए। मैं अपने जीवन के लक्ष्यों को कल्कि जी की भक्ति व उनका कार्य करते हुए सफलता पूर्वक प्राप्त करना चाहती हूँ।

भक्तवृन्द जिस दिन मेरा बोर्ड का रिज़ल्ट आया तो मैं हैरान थी कि मेरा C.G.P.A 9.4 था। मैंने अपनी कक्षा में ही नहीं पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मेरा रोम-रोम अपने इस अद्‌भुत रिज़ल्ट के लिए भगवान श्री कल्कि व माँ सरस्वती का आभारी है कि उन्होंने अपनी कृपा से मुझे वो दिलवाया जो मैंने सपने में सोचा था या कहूँ मेरा सपना सच हुआ।

कल्कि जी का लॉकेट सुरक्षा कवच है

राहुल अग्रवाल 9871187718

मेरे जीजाजी अस्पताल में थे। उनकी हालत ब्लड प्रेशर ज्यादा होने की वजह से खराब होती जा रही थी और हालत में सुधार आशा के अनुरूप नहीं हो रहा था। मैने उनके गले में कल्कि जी का लॉकेट डाला और उनकी हालत ठीक होती चली गई।

दूसरी घटना स्वयं मेरे साथ घटी जब मैंने अपने गले से लॉकेट निकालकर किसी दोस्त को परेशान होते हुए देख कर उसे दे दिया। लेकिन श्री कल्कि विष्णु मंदिर (अजमेरी गेट) से 10 रुपये का लॉकेट मंगाना भूल गया। तीसरे दिन मेरा पैर ऐसा मुड़ा कि मुझे एक सप्ताह घर पर आराम करना पड़ा।

कल्कि वालों की लड़कियों की शादी जल्दी

—नलिनी गुप्ता 01142463741

(भगवान कल्कि के मानने वालों की लड़कियों की शादी औरों के मुकाबले जल्दी होती है बशर्ते उसमें बेकार के किंतु परंतु ज्यादा न लगाए जाए। यह बात मैं पापा के मुँह से बहुत बार सुन चुकी थी।)

15 जून 2005 में माताजी के देहावसान के बाद पापा और योगेश भाई ने मेरी शादी के लिए लड़का देखने से पहले ज्योतिष विज्ञान के धनी श्री अनूप कमल जी को मेरी पत्री दिखाई। वह बोले अभी इसकी शादी का कोई योग नहीं है। आप जून 2006 के बाद इसकी पत्री निकालना, पापा ने कहा कि ठीक है आप हमें इतना बता दीजिए कि कौन से ग्रह इसकी शादी के कार्य में रुकावट (उलटा असर) डाल रहे हैं। पापा ने घर आकर अपने अनुभव रजिस्टरों से प्रतिकूल ग्रहों का समन्वय करके और कल्कि जी का आधार लेकर मुझसे प्रतिदिन यह उपचार करवाए:-

भगवान शंकर का गाय के दूध से अथवा गंगाजल से घर पर ही एक माला का अभिषेक (ओम् नम: शिवाय मंत्र बोलते हुए चम्मच से दो चार बूँद शिवलिंग पर डालते रहें, इसके बाद ऊँ त्रयंबकम् यजामहे सुगन्धम् पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव वंधनान् मृत्योर्मोक्षिय मामृतात का हवन। उसके बाद पहले आरती भगवान शंकर जी की फिर कल्कि जी की आरती व प्रार्थना) करवाई।

इस बीच जो स्वपनानुभव आते रहे उन्हें पहले लिखकर उसका अर्थ पापा से समझ कर कॉपी में लिखकर तत्परता से उनका उपचार करती रही। देखते ही देखते 12 अक्टूबर 2005 को मेरा रोकना हुआ और 10 दिसंबर 2005 को शादी हो गई। वैसे शादी के लिये 21 जनवरी 2006 का टेंट बुक हो चुका था। लेकिन लगातार चल रहे उपचारों के चलते बानक कुछ ऐसे बने कि 10 दिसंबर 2005 को ही मेरी शादी हो गई।

चमत्कार—दिल्ली में एक कल्कि भक्ता को यह स्वपनानुभव हुआ कि नलिनी की शादी 30 वर्ष की उम्र में होगी जबकि 2005 में मेरी आयु 22 वर्ष की ही थी। एक और अनुभव कोलकाता में श्री वरूण चौधरी (जिन्होंने अपने परिवार सहित कोलकाता में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगवाकर कल्कि जी के कार्य करने का बीड़ा उठाया हुआ है और आजकल संभल महात्तम के कार्य में रत हैं) को हुआ जिन्होंने न तो पापा को कभी देखा था और न ही उन्हें कोई जानकारी थी कि उनके कितने बच्चे हैं। उन्हें मेरे लिए स्वपनानुभव हुआ कि ओम मामाजी की

छोटी बेटी नलिनी की शादी कल्कि भगवान ने करवाई है।

अब आप ही बताइए बच्चों 30 वर्ष की उम्र में होने वाली शादी को मात्र 22 वर्ष की उम्र में करवाने वाले प्रभु श्री कल्कि कितने चमत्कारी हैं।

जब टीचर अंधी हुई

—नलिनी गुप्ता (011-42463741)

मैं जब छोटी थी तो प्रतिदिन नियम से भगवान श्री कल्कि को आठ बार की नमस्कार करके स्कूल जाती थी कि टीचर से डाँट न पड़े। ऐसी प्रार्थना से मेरे क्लास में पूरे नंबर आते थे। क्लास टीचर ने मेरा एक गणित का सही सवाल काट दिया जिसमें मेरे 10 में से 9 नम्बर आए। मैंने घर में घुसते ही कहा मम्मी आज मेरी टीचर अंधी हो गई। मम्मी खाना बना रही थीं। सकपका के बोलीं कैसे अंधी हो गई? मैंने कहा सुबह मैं कल्कि जी की आठ बार की नमस्कार करके पूरे नम्बरों की प्रार्थना करके गई थी देखो टीचर ने मेरा सही सवाल गलत कर दिया। मुझे 10 में से 9 नम्बर दिये हैं। अब मेरे भी बच्चे हो गए हैं मेरी आत्मा से निकलता है और दिन भर हंसती हुई दो लाइनें गुनगुनाती रहती हूँ—

रट लो भाइयों कल्कि नाम, इससे बनेंगे बिगड़े काम।
रटा गया जब कल्कि नाम बिगड़े बनने लग गए काम॥
जब देवन की पंगत बैठी हरि अमृत आप परोस रहे।
उन लाभ लहैं है जीवन में जो उनके आस भरोस रहे॥

19 वर्ष उपरांत संतान की प्राप्ति

—इंदु बंसल (9818416191)

(हमारे चमत्कारी प्रभु श्री कल्कि असंभव को संभव करते हैं। बस आवश्यकता है उन्हें सच्चाई के साथ हृदय में विराजमान करने की, कलियुगी छल कपट एवं कुटिलता से अपने आपको बचाएं, ईमानदारी से अपने कर्तव्य एवं जिम्मेदारी को निभाएं और श्री कल्कि जी का नाम जाप करते रहें।)

मेरी एक अत्यंत प्रिय सरल हृदया सखी है। सन् 2000 में मेरी उससे दोस्ती हुई। उसी समय में मैं भी श्री कल्कि जी से जुड़ी थी और अपनी सखी को भी कल्कि जी के बारे में बताया था। उसने सरल हृदय से श्री कल्कि को अपने दिल में बसाया एवं कल्कि जी के महामंत्र की मालाएं करने लगी। उसे मेरी तरह जरा कम स्वप्न अनुभव होते थे। जब कभी ज्यादा परेशान होती थी, तभी फोन करके उपचार पूछती थी और उसे एक दो बार उपचार करने से ही आराम आ जाता था। दो तीन बार बड़ी दुर्घटनाएं

भी उसके साथ हुईं। लेकिन प्रभु श्री कल्कि जी की कृपा से उनका निवारण हो गया। कल्कि कल्कि करते हुए उसने अपना कठिन समय भी काट लिया। उसके व्यक्तित्व की खास बात यह है कि वह बहुत सरल हृदय एवं मीठे स्वभाव की है। उसके पति भी बहुत सज्जन व्यक्ति हैं। एकदम से पता भी नहीं लगा, इन 11 वर्षों मे कल्कि जी की अहेतू की कृपा उन पर बरसी। 11 वर्ष पूर्व उनकी सोने चांदी की छोटी सी दुकान हुआ करती थी जहाँ अब ज्वैलरी के एक प्रसिद्ध मॉल में उनका डबलस्टोरी शोरूम है। 11 वर्ष पहले उनका छोटा सा मकान था, जहाँ अब बहुत अच्छी सोसाइटी में उनका बड़ा सा घर है।

सबसे विशेष बात—मेरी सखी की को गर्भ धारण करने में काफी अड़चनें थी। उन्होंने बहुत उपचार कराए पर शादी के 19 साल तक उनके कोई संतान नहीं हुई। और एक साल पहले तक वह सन्तान की आशा छोड़ चुके थे। पर 10 महीने पहले कल्कि जी की असीम कृपा बरसी और बिना किसी इलाज के उनके घर एक तेजस्वी कन्या ने जन्म लिया। इन दिनों मेरी उससे ज्यादा बात नहीं होती थी क्योंकि वह काफी दूर रहने चली गई थी। जब उसने मुझे यह खुशखबरी भेजी तो मैं उससे मिलने गई।

ममता के गौरव से उसका पवित्र चेहरा दमक रहा था। पूछने पर उसने बताया मैं नियमित कल्कि जी का जाप करती थी। कम से कम 11 माला तो थी हीं पर कई बार 21 मालाओं का जाप भी करती थी। दीदी मैंने श्री कल्कि भगवान से लड़की मांगी थी क्योंकि एक लड़का उन्होंने गोद ले लिया था। चमत्कारी श्री कल्कि जी ने असंभव को संभव कर दिया। क्यों धन्य हैं न मेरे श्री कल्कि जी।

जो कोई कर न सके वह कल्कि करते, हम अब ऐसा कहते हैं
कल्कि कल्कि रटते रटते हम अब सुख से रहते हैं।'

झांसे से हड़पा घर श्री कल्कि जी ने दिलवाया

आपबीति—सुश्री हनी गुप्ता (011-27651681)
संकलन कर्ता—सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

मार्च 2011 के महीने में मेरी मौसी की लड़की का फोन मेरे पास आया, वो बहुत दुखी लग रही थीं। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि जीजाजी के एक दोस्त ने उनके साथ धोखा किया है। उसने उनके जीवन की जमा पूंजी यह झांसा दे कर हड़प ली कि फ्लैट दोनों के नाम में मिलकर खरीदेंगे। अब जबकि फ्लैट में पैसा लग चुका है उसने उसे चुपके से अपने नाम करवा कर हमारा पैसा और फ्लैट कुछ भी देने से मना कर दिया है। समस्या गंभीर थी। दीदी के दोनों ही बच्चे शादी

लायक हैं। ऐसे में जीवन की जमा पूंजी का गंवाना किसी बड़े हादसे से कम नहीं था? दीदी ने यह भी बताया कि जीजाजी का दोस्त तो बात तक करने को तैयार नहीं है। कल्कि बाल वाटिका पैनल की सलाह के अनुसार दीदी को भैरों जी का 20 रूपए और चार रोट वाला उपचार फौरन करने को कहा गया। साथ ही, ये भी कहा कि इससे आपको स्वपनानुभव अवश्य आएगा और बेईमान दोस्त से बात भी आगे बढ़ेगी। दीदी ने यह उपचार उसी दिन कर दिया।

रात को ही उन्हें स्वपनानुभव हुआ कि **जीजाजी का दोस्त खुद ही बात करने आया है।** इस स्वपनानुभव के बाद दीदी को आशा की किरण जागी। क्योंकि इससे पहले तो वो बात करने को भी राजी नहीं होता था? उससे बात करने के बाद यह बात सामने आई कि उसकी नीयत में खोट आ गया है। उसने बात तो अवश्य की लेकिन पैसे या फ्लैट देने को तैयार नहीं है।

अब दीदी को मैंने पैनल से पूछकर कुछ उपचार बताए कि यह उन्हें लगातार करने होंगे।

1. वासुकि जी का एक बेसन का लड्डू व सिक्का लेकर लड्डू के पाँच टुकड़े करके वासुकि जी को चढ़ाकर प्रार्थना करें–हे वासुकि जी जो सर्प रूपी शक्तियाँ (बेइमान दोस्त का नाम) के मस्तिष्क पर विराजमान होकर हमारा रूपया हड़पना चाह रही हैं उन शक्तियों को उनका भाग देकर व उसके मुँह मस्तिष्क वाणी को बंद करके हमारा रूपया या फ्फ्लैट हमें वापिस दिलवाइए। हमें सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी का काम करना है।

2. भैरों जी का 20 रूपए चार रोट का संकल्प लेकर प्रार्थना– हे भैरों बाबा जो कलियुगी आसुरी दुराचारी शक्तियाँ (दोस्त का नाम) के मस्तिष्क पर विराजमान होकर हमारा रूपया हड़पना चाह रही हैं उन शक्तियों को उनका भाग देकर व उसके मुँह मस्तिष्क वाणी को बंद करके हमारा रूपया या फ्लैट हमें वापिस दिलवाइए। हमें सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्रचार का काम करना है।

3. बगुलामुखी माता का 20 रूपए से पीली बर्फी या बेसन के लड्डू के प्रसाद व दक्षिणा (15 रू का प्रसाद 5 रू दक्षिणा) का संकल्प करके प्रार्थना– हे माँ जो कलियुगी.....

4. काली जी का 20 रूपए से सफेद बर्फी या पेड़े के प्रसाद का संकल्प करके प्रार्थना– हे माँ जो कलियुगी.....

5. दुर्गा जी का 26 पूरी हलवे का एक-एक रूपए के तीन सिक्कों से संकल्प लेकर प्रार्थना हे माँ मैं दस दस छह पूरी हलवा आपको चढ़ाऊँगी आप कलियुगी..... इन सभी उपचारों के साथ साथ गाय माता की रोटी, सूर्य भगवान को जल, और कल्कि जी की आराधना में भी यही प्रार्थना करवाई गई।

स्वपनानुभव-2 दीदी को यह स्वपनानुभव हुआ कि एक लोहे का दरवाजा जो बंद पड़ा है दीदी उसके सामने खड़ी हुई हैं और रामायण की चौपाई गा रही हैं **अब विलंब केहि कारण स्वामी**

अर्थ-इस स्वपनानुभव का अर्थ है लगे रहो जो दरवाजे बंद हैं उन्हें खोलने के लिए निरंतर उपचारों व प्रार्थनाओ से ही रास्ता मिलेगा।

उपचार- इस ही चौपाई की एक माला करके दीदी जीजाजी से प्रार्थना करवाई कि हे कल्कि भगवान अब हमें हमारा हक दिलवाने में विलंब मत कीजिए हमारे बंद रास्ते खोलिए हमें आपका सुखी भाव से वैभवतापूर्वक प्रचार का काम करना है।

स्वपनानुभव-3 जीजाजी को यह स्वपनानुभव दिखा कि एक पिंजरें में बहुत मात्रा में छोटे बड़े सांप बंद हैं। वो बाहर निकल रहें हैं और जीजाजी के हाथों पर चिपट रहे हैं। जीजाजी उन्हें हटा कर वापस पिंजरे में डाल रहे हैं।

अर्थ- इस स्वपनानुभव का अर्थ था कि जीजाजी चालबाज, मक्कार, धोखेबाज लोगों के चंगुल में अपनी भावुकता व गल्ती से फंसे हैं जिसका परिणाम अब उन्हें भुगतना पड़ रहा है।

अत: वासुकि जी का उपचार निरंतर करना पड़ेगा तभी इन सर्प रूपी शक्तियों के चंगुल से निकल सकते हैं। उनके मन में डर भी समा गया था। सो मैने ई मेल से गुरू जी की किताब **2-इन-1** से **भजन नं. 23 जय हो भय के भय कल्कि जय असुरन के क्षय कल्कि** इसका पाठ व अनुवाद प्रतिदिन पढ़ने को कहा। इससे उनके मन का भय भगवान श्री कल्कि की कृपा से दूर हो गया।

यह सभी उपचार करने के लिए दीदी जीजाजी हर सप्ताह गुलाबी बाग मंदिर जाते थे और प्रार्थना भी रोज करते थे। किंतु इस स्वपनानुभव के बाद उन्हें न तो कोई और स्वपनानुभव आया यदि आया भी हो तो शायद आखिरी स्वपनानुभव का कड़वा अर्थ सुनकर उन्होनें बताना ठीक न समझा होगा और स्वयं उपचार कर दिया होगा।

मेरा दीदी से इस बीच कभी कभार ही संपर्क हुआ तो बस वह इतना कहती

थी कि बातचीत चल रही है। इस पर हमेशा मेरा एक ही विश्वास दिलाना होता था कि दीदी आप अपनी तरफ से प्रयास, उपचार मत छोड़ना कल्कि जी की कृपा से जीत आपकी ही होगी।

एक दिन अचानक दीदी का फोन आया कि कल्कि जी की कृपा से हमारे फ्लैट की रजिस्ट्री हो गई है, बस पेपर एक सप्ताह के बाद मिलेंगे और तभी कब्जा मिलेगा।

मुझे भगवान श्री कल्कि की कृपा पर पूरा भरोसा तो है ही दीदी के ये शब्द सुनकर मन में प्रसन्नता का अनुभव हुआ। **तब दीदी ने पूछा कि यह सारे उपचार जो चल रहे हैं वह कब तक करने हैं।** इस पर मैंने दीदी को यह बताया कि जब तक रजिस्ट्री आपके हाथ में न आ जाए और फ्लैट का कब्जा न मिल जाए तब तक अपने कार्य को पूरा मत समझिएगा, उपचार निरंतर चलते रहेंगे। जिस दिन कब्जा मिल जाए उस दिन सभी देवी देवताओं का आभार का उपचार करके बंद कर दें। दीदी जीजाजी को उनके फ्लैट का कब्जा मिल चुका है उनकी मेहनत की कमाई जिसे वो गंवा बैठे थे और सब्र भी कर लेते लेकिन भगवान श्री कल्कि के निरंतर उपचारों से रास्ता मिलता चला गया।

कल्कि जी हैं बड़े भोले भलों के वास्ते
पर खिलाड़ी हैं खलों के वास्ते,
यह समझ लो वह तीतरों में बाज हैं

मैंने प्रचार के लिए दिया था रकम नहीं ब्याज तो लौटाओ

—सुश्री श्रुति सर्राफ, कोलकाता (09830157545)

मेरा जन्म कोलकाता के संपन्न व्यवसायिक परिवार में हुआ है। जन्म से ही मेरे एक पाँव में कमी थी और मैं calliper (long artificial shoe) पहनती हूँ। मेरे माता पिता ने मेरी बहुत ही उत्तम परवरिश की। पर मेरी शादी की चिंता उन्हें बहुत व्याकुल कर रही थी। मेरे माता पिता बहुत ही धार्मिक विचारों के और अत्याधिक पूजा पाठ करने वाले हैं। मेरी माता के पाँव में बहुत दर्द रहता है। पर मेरी ममता से वशीभूत होकर किसी के बताने पर 7 साल तक एक आसन पर बैठ कर 108 हनुमान चालीसा केपाठ और सुंदरकाण्ड का पाठ करती रहीं। मैं भी शुरु से नियमित पूजा - पाठ - व्रत आदि करती थी। मेरे पिता शंकर भगवान के अनन्य भक्त हैं। इन सब के बावजूद मेरी शादी के सारे रास्ते बंद नजर आते थे। कहीं से भी कोई आशा की किरण नजर नहीं आती थी।

फिर 31 अक्टूबर 2006 को मेरी जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन आया अर्थात मेरी, मेरे माता पिता की भक्ति - प्रार्थना फलीभूत हुई। **मुझे श्री कल्कि नाम मिला।**

दिल्ली से मेरी बुआ सुश्री इंदू बंसल कोलकाता आईं। उनकी बेटी की शादी पक्की हुई थी। इन्दु बुआ ने मुझसे कहा मेरी बेटी की शादी कल्कि भगवान ने कराई है। तुम भी उनकी आराधना करो, वे अपने भक्तों के लिये नई formation भी करते हैं कल्कि जी तुम्हारी शादी अवश्य कराऐंगे। बुआ की बात सच हुई। तीन वर्ष तक मैंने और मेरे परिवार ने तन-मन-आत्मा से कल्कि भगवान की पूजा की। **बहुत से अनुभव आए। दैवी शाक्तियों ने प्रति पग मार्ग दर्शन किया।** मेरे आराध्य, मेरे कल्कि भगवान की कृपा से 27 नवंबर, 2009 को मेरे फेरों की रात आ गई। आज मैं अपने सर्वगुण सम्पन्न पति के साथ सुखपूर्वक रह रही हूँ। *(यह हुई पुर्नजन्म का भुगतान करके श्री कल्कि से प्राप्त मनचाही मुराद*

कल्कि नाम है तलवार की धार,
पर इस पर चलो तो होगी मन की कामना पूरी बार-बार लगातार
मेरे जीवन में मेरे कल्कि जी ने किये चमत्कार बार-बार

जिसमें मामाजी की बात कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार की जो वो कहते थे समझ नहीं आती थी सो अब काफी कुछ समझ आने लगी है)

ओम मामाजी और इन्दु बुआ ने मुझसे कहा है कि यदि तुम प्रभु की कृपा पिछली सही सलामत रखने हेतु और नई पाने हेतु चाहती हो तो कल्कि भक्तों का साक्षात्कार कराओ तो कल्कि जी कृपा पाओगी। इसलिये मैं आप से अपने जीवन की कुछ घटनाओं को बाँटना चाहूँगी, जब कल्कि जी ने चमत्कारिक रूप से मुझे भीषण कठिनाइयों से बचाया।

जिन्दगी में कई चुनौतियाँ, **(मैं हर अनुभव को बहुत गंभीरता से लेती और नियम-पूर्वक दिल्ली फोन करके अपनी बुआ सुश्री इंदू बंसल अथवा जब उन्हें भी समझ नहीं आता था तो मामाजी से अनुभव का अर्थ समझती और जो उपचार (संबंधित शक्तियों का भाग - दान पुण्य आदि) वे बताते उसे सही ढंग से करती। इसमें मेरे पिता ने मेरी बहुत मदद करी)** सामने है, पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने प्रभु की कृपा और जीवन साथी की मदद से मैं हर चुनौती का सामना डटकर कर पाऊँगी और विजयी होऊँगी।

कल्कि जी की कृपा से मैं अमरीका घूमने गई। 8 महीने बाद मेरी वापस आने की टिकट हुई। मैं फिलाडेलफिया एयरपोर्ट पर जहाज पकड़ने के लिये अपना पासपोर्ट देती हूँ चैक-इन काउंटर पर मुझे बताया जाता है कि मैं यात्रा नहीं कर सकती क्योंकि मेरा वीजा एक दिन पहले ही खत्म हो चुका है। मैं अमरीका से तो जा सकती हूँ पर यू.के(London) में नहीं रुक सकती (मेरी connecting flight London से थी)। अत: मुझे न्यूयार्क जाकर वीजा बढ़वाना पड़ेगा। यह सुनकर मानो मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई क्योंकि मैं Philadelphia में थी। न्यूयार्क जाने में 2.30 घंटे थे न जाने कब Appointment मिले और मेरी बहन जो वहाँ रहती थी Boston Shift होने वाली थी, उसका सारा सामान बोस्टन चला गया था। मैं तो समझो एकदम अचंभित हो गई थी कि अब क्या होगा, कैसे काम होगा? एयरपोर्ट कर्मचारियों ने कुछ भी सुनने से साफ इन्कार कर दिया था। मेरी बहन इधर-उधर कोशिश कर रही थी उनसे बात करने की। मैं चुपचाप कोने में जाकर कल्कि जी का नाम ले रही थी और काली मां, भैरों जी का संकल्प मन में करते ही **मानो जैसे चमत्कार हुआ। एक लंबा चौड़ा ब्लैक ऑफिसर जो हमारी सारी बातें सुन रहा था, वह अपने आप आगे आया और बोला मैं कोशिश करता हूँ और उसने लंदन एयरपोर्ट फोन लगाया। फोन पर बात**

करने के बाद कहा कि आप जा सकते हो पर गारंटी नहीं है अगर किसी एयरपोर्ट अधिकारी ने आपका पासपोर्ट चैक कर लिया तो समस्या हो सकती है। यह सुनकर हमने थोड़ी राहत की सांस ली और मैंने कल्कि जी का नाम लेकर अपना सफर पूरा किया। लंदन एयरपोर्ट में मुझे कहीं कोई परेशानी नहीं हुई। मैं बड़े आराम से कोलकाता आ गई।

मैं और कंप्यूटर कभी नहीं कभी नहीं

—सुश्री मेघना गोयल (9968066625)

प्यारे बच्चों, जैसा कि आप शीर्षक पढ़ रहे हैं आज से दो वर्ष पूर्व कंप्यूटर का काम मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर हुआ करता था। माँ सरस्वती की कृपा से इन दो वर्षों में ऐसा चमत्कार हुआ कि आज न केवल मैं हिंदी टाइपिंग कर सकती हूँ बल्कि कंप्यूटर पर डिजाइनिंग का कोर्स भी पूरा सीख लिया है।

आज से दो साल पहले मैं अपनी सहेली के साथ गौरी शंकर मंदिर नियमित जाती थी। मामा जी की सलाह पर मैं सरस्वती जी से प्रार्थना करती थी **माँ मुझे कंप्यूटर का काम सिखा दीजिए, मुझे कल्कि जी के साहित्य का कार्य करना है।** बस एक धुन सवार थी, सो प्रतिदिन रटी रटाई प्रार्थना माँ से कर देती थी।

चमत्कार यह हुआ कि माँ सरस्वती ने अपनी कृपा प्रदान करके पहले मेरी सहेली जो मेरे साथ मंदिर जाती थी उसे हिंदी की टाइपिंग सिखाई, उसी सखी से मात्र पाँच दिनों में मैंने भी हिंदी टाइपिंग सीख ली। कंप्यूटर पर डिजाइनिंग का कोर्स करने के बाद वो काम जो मुझे बहुत भारी लगते थे अब तो मेरे बेटे के सहयोग से पूरे हो जाते हैं।

सच में मैं तो यही कहूंगी कि कल्कि जी की भक्ति की बदौलत ही माँ सरस्वती ने मुझे अपनी कृपा प्रदान करके आधुनिक पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिला कर चलना सिखा दिया। अब मैं गर्व से कह सकती हूँ कि कंप्यूटर मेरे लिए अब काला अक्षर भैंस बराबर नहीं है बल्कि इसने मुझे श्री कल्कि की तरह एक नए जगत से मिलवा दिया।

अक्टूबर 2010 के अंक में छपी **मेरी बेटी** उपासना गोयल की आपबीती पढ़ने का मौका मिले तो आप पढेंगे कि किस प्रकार माँ सरस्वती की कृपा से उसने **दसवीं कक्षा में 9.4 सी.जी.पी.ए. प्राप्त करके अपने स्कूल में प्रथम स्थान पाया।**

भैरों बाबा कैसे कलियुगी, जादू, टोना, तांत्रिक, अघोरी, से बचाते हैं

—सुश्री रमणी अग्रवाल, जर्मन टीचर
9212216251 (जी.डी. गोयनका स्कूल)

श्री कल्कि जी चमत्कारी भगवान हैं। उनका हर पल कलियुग के साथ युद्ध है, वह अपने भक्तों की रक्षा उन्हें स्वपन अनुभव देकर करते हैं। भक्तजन स्वपन अनुभव का सही अर्थ समझकर जादू, टोना, टोटका, अघोरी, तांत्रिक शक्तियों का समय पर उपचार करके इन कलियुगी शक्तियों के चंगुल में फंसने से बच जाते हैं। कल्कि जी द्वारा बारह देवी देवताओं का जो सुरक्षा कवच प्रदान किया गया है। उनमें से आपको अपने अनुभवों के माध्यम से भैरों जी ने कैसे हमारे परिवार को बचाया है वह मैं आप को बताती हूँ—

भगवान श्री कल्कि जी से जुड़ने पर मुझे व मेरे परिवार में सभी को ज्यादा अनुभव होने लगे। कलियुगी आसुरी शक्तियाँ खूंखार कुत्तों के रूप में हम पर प्रहार कर रही थीं। वह शक्तियाँ हमारी प्रगति के सभी मार्ग बंद करके खड़ी थीं।

कल्कि बाल वाटिका के अनुभव पैनल से पूछने पर मुझे बताया गया कि पाँच बुधवार का भैरों जी के 20 रू व चार रोट का प्रति बुधवार के हिसाब से संकल्प लेकर प्रार्थना करें—हे भैरों बाबा जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी तांत्रिक, अघोरी शक्तियाँ हमारे परिवार का अनिष्ट करके हमें घर और व्यापार में नुकसान पहुँचा रही हैं उन्हें उनका भाग देकर हमें बचाइए। हमें अपना दिव्य सुरक्षा कवच प्रदान कीजिए, हमें सहपरिवार कल्कि जी के प्राक्टय के प्रचार का कार्य करना है।

इस प्रार्थना के साथ प्रतिदिन मेरा परिवार संकल्प के हाथ लगाता और बुधवार को 20 रूपए दक्षिणा के साथ चार रोट नजदीक के भैंरो मंदिर में चढ़ाते थे।

प्यारे बच्चों, 5 बुधवारों में जो मेरे साथ घटित हुआ वह किसी वैज्ञानिक अनुसंधान (Scientific Research) से कम नहीं था। जो कुत्ते खूंखार होकर बार बार हम पर हमला करके घायल कर रहे थे, अब दिखने लगा कि वह हम पर हमला तो करना चाहते हैं, लेकिन जंजीरों से बंधे हुए हैं। मेरी चार साल की

बेटी को स्वपनानुभव में एक छोटा सफेद रंग का पालतू कुत्ता दिखा। वह कुत्ते की पूँछ पकड़कर हिला रही है और मैं कुत्ते के चारों पैर बाँध रही हूँ।

इन सारे स्वपनानुभवों का अर्थ यह है कि जो आसुरी शक्तियाँ पहले हम पर खूंखार (प्रबल) होकर प्रहार कर रही थीं, लगातार भैरों बाबा के उपचार करने से, वह शक्तियाँ अपना भाग ले लेकर, अंत में थक कर हार गईं और मैंने उन शक्तियों को अर्थात् कुत्ते के चारों पैर बाँध दिये। कलियुगी आसुरी शक्तियाँ जो हमारे घर और व्यापार में निरंतर नुकसान पहुंचा रही थीं असफल हुई। अब हमारा घर और व्यापार उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर है।

जब सीलिंग टली

–श्री गौरव ओचानी (9213255908)

श्री श्याम बाबा एकादश 9–10 अप्रैल 2011 के महोत्सव के लिये भगवान श्री कल्कि जी के 250 डबल शीशे वाले चित्रों का आर्डर गुप्ता जी (मामाजी) द्वारा मिला। मैंने 148 चित्र तैयार करके गुलाबी बाग चौथी मंजिल पर बनाकर डिब्बे में ले जाने के लिए पैक करके रखे। एकाएक खटापट सबने शटर डाऊन करके ताले लगाकर आगे की भागे कि एम.सी.डी. का सीलिंग दस्ता आ गया। मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। आखों के आगे **अंधेरा सा छा गया*** अब क्या होगा। गुप्ता जी से भी कुछ एडवांस लाकर माल बनाया है। 100 पीस का माल कटा पड़ा तो चित्र पर महामंत्र से पहले मैंने लिखा **चमत्कारी श्री कल्कि** तो मेरे मुँह से बार–बार यही निकल रहा था कि **हे चमत्कारी कल्कि मुझे बचा लो** मुझे कुछ नहीं पता।

साथियों सच कहता हूँ कि एक–डेड़ घंटे बाद सीलिंग वाले यह कहकर चले गए कि कल आएंगे। मैंने दिल से कल्कि जी का धन्यवाद किया। तुरन्त अपनी घरवाली दोनों लड़कों को जो 10–12 साल के हैं बुलाकर काम पर लगाया–148 पीस गुप्ता जी के कहे अनुसार गड़ौदिया जी के घर तुरन्त छोड़कर आया। दोपहर 12 बजे से सुबह 8 बजे तक हम चारों ने बाकी पीस बनाकर कैसे गड़ौदिया जी के भेजे हैं हमें नहीं पता **यह चमत्कारी श्री कल्कि जी जानते हैं।** मैं तो कहूँगा उन्होंने मुझे ही नहीं मेरे साथ मेरी गली के सब दुकानदारों को भी बचा दिया।

पिताजी मर कर जिन्दा हुए

—श्री दीवान सिंह (करावल नगर) - 9013565682,

(संदीपन गुरुपुत्र की तरह श्री दीवान सिंह के मृतक पिता 2 घंटे बाद फिर कल्कि जी की कृपा से जिंदा हुए)

(मेरे बच्चे और मैं करावल नगर बाल वाटिका में प्रतिमास आते थे मेरे बच्चों ने बाल वाटिका नाटकों व उत्सवों में भी कई बार हिस्सा लिया। उससे मेरा कल्कि जी में मन लगा। मैं उत्साह से श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना करवा रहा था कि बच्चे जैसे कहते हैं कलियुग ने मुझे भी भटका दिया और कमाल है कल्कि जी ने कैसे मेरी मुराद पूरी की है)

3 अप्रैल 2011 रविवार को श्री दीवान सिंह जी 10 अप्रैल रविवार 2011 को राजपुर रोड अॅथारटी वाले मंदिर में सब कल्कि भक्तों को करावल नगर में अगले दिन श्री कल्कि जी की शोभा यात्रा व मूर्ति स्थापना के लिये निमंत्रण देकर गए। 4 अप्रैल 2011 को उनके गाँव से फोन आया कि उनके पिताजी का शरीर पूरा हो गया है, वह तुरन्त आऐं। उन्होंने अपने साथियों से सलह करके अपनी जगह दूसरे परिवार को श्री मनोज पांडे के साथ नियुक्त करके गाँव चले गए। रास्ते में उन्हें गाँव से फिर फोन आया कि पिताजी जिंदा हो गए हैं मत आओ।

जैसा उन्होंने 10 अप्रैल 2011 को मूर्ति स्थापना के बीच लगभग 179 कल्कि भक्त समूह के बीच बताया कि मैं दिल्ली वापिस न लौटकर गाँव गया कि कहीं एक दो घंटे बाद फिर न साँस आनी बंद हो जाए। सुबह जब उन्होंने उनके सामने भोजन ग्रहण कर लिया तब मैं दिल्ली के लिए वापिस लौटा। करावल नगर दिल्ली में 10 अप्रैल को भगवान श्री कल्कि की शोभा यात्रा व प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से संपन्न हुई इसके उपरांत 22 अप्रैल 2011 को वह परमधाम सिधारे।

राक्षसी कलियुगी शक्तियों ने तबाही में कसर न छोड़ी प्रभु श्री कल्कि ने मुझे तबाही से बचाने में कसर न छोड़ी

* *मैं किसी के अधीन काम कर रहा था, पैसों की बेहद तंगी थी ऐसे में सीलिंग वालों को देखकर मुझे लगा मैं तो लुट गया।*

भरोसा टूटने पर श्रीकल्कि जी ने थामा

— सुश्री मेघना गोयल (9811830603)

मेरा परिवार (ससुराल) हरियाणा रोहतक के पास अटायल गाँव में है। हमारे कुल देवता दादा देईपाल हैं और कुल देवी माँ भीमेश्वरी बेरी वाली माँ है। हम प्रतिवर्ष अपने कुल देवता व कुल देवी के दर्शनों के लिए सपरिवार जाते रहे हैं।

पिछले दो साल से कल्कि जी की कृपा से हमारे पूरे परिवार को अपने कुल देवता की प्रसन्नता मिली है। आप सबकी तरह मैंने भी अपने कुल देवता की प्रार्थना में कल्कि नाम का गंगाजल मिलाया और यह लाइन जोड़ दी कि **हमें सपरिवार सुखीभाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी का काम करना है।**

यह बात आज से दो वर्ष पूर्व की है (देखें मासिक पत्रिका का फरवरी अंक 2010) जब मैंने कल्कि जी की कृपा से अपने नए घर की रजिस्ट्री करवाई थी। अगले ही दिन जब हम अपने कुल देवता के दर्शनों के लिए गए, वहाँ कल्कि जी ने पहले से पंचायत कमेटी के सदस्य को हमारे आने का स्वपनानुभव दे रखा था। उन्होंने हमें दादा देईपाल का एक चित्र भी दिया और उनकी मूर्ति लगवाने की बात कही। मेरे पतिदेव ने मूर्ति लगवाने की स्वीकृति भी दे दी। लेकिन दिल्ली आकर अपनी व्यस्तता के कारण वह भूल गए। आठ महीने बाद हमे अपने गाँव जाने का पुन: अवसर मिला तो वहाँ जाकर पता चला कि किसी और सज्जन ने दादा देईपाल की मूर्ति वहाँ लगवा दी है लेकिन खंडित हो गई है। अत: पंचायत समिति से हमें पुन: यह संदेश मिला क्योंकि मूर्ति लगवाने का आदेश आपके परिवार के लिए है सो आप मूर्ति शीघ्र लगवा दें।

इस घटना चक्र को भी 6 महीने बीत गए। इस बार पंचायत ने थोड़ा कड़ा रुख अपना कर हमसे कहा कि आप हाँ या ना में जवाब दें। इस पर हमने कहा कि हम 1 महीने में मूर्ति बनवा देंगे। गाँव से हम दादा से प्रार्थना कर आए कि आप यह कार्य हमसे शीघ्र पूरा करवा दीजिए। हमें कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार का काम सुखीभाव से करना है।

दिल्ली आते ही तो मानो चमत्कार हो गया। मेरे पति के एक जानकार ने हमें जयपुर के जिस मूर्तिकार से मिलवाया वह पहले से ही भगवान श्री कल्कि जी की मूर्तियाँ बना चुके थे। कल्कि भगवान का नाम सुनकर उन्होंने अपना मेहनताना अपने आप ही कम कर दिया। मूर्ति एक महीने में बन कर तैयार हो गई। मूर्ति बनने के बाद जैसे ही हमने गाँव में फोन किया कि मूर्ति बनकर तैयार है हम ला

रहे हैं, हमें जवाब मिला कि आपने मूर्ति भारी बनवा ली है। यह बात सुनकर हमारे तो हाथ पैर फूल गए। हम अगले दिन सुबह 6 बजे गाँव के लिए रवाना हो गए। 9 घंटे की लंबी मशक्कत के बाद भी हम गाँव वालों को यह नहीं समझा पाए कि मूर्ति यहाँ लगाई जाए। हम अपना सा मुँह लेकर वापस लौट आए। हमने कल्कि जी से गुहार लगाई कि प्रभु आपके नाम के गंगाजल से ही तो यह कृपा मिलने जा रही थी, अब हम क्या करें, कहाँ जाएं? अनुभव पैनल मैंबर सदस्या होने के नाते मैंने यह उपचार तुरन्त किये—(1) वासुकि जी—20 रू से संकल्प (2) भैंरो जी—20 रू (3) बगुलामुखी माँ—20 रू और हवन का।

प्रार्थना—जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, षड्यंत्रकारी शक्तियाँ मूर्ति लगने के कार्य में रोड़े अटका रही हैं उन्हें उनका भाग देकर ऐसा करने से रोकिए। हमें सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राक्टय के प्रचार का कार्य करना है।

उसी रात को 10.30 बजे मेरी जेठानी का फोन आया और उन्होंने कहा कि हमने गाँव में बात कर ली है, कल पंचायत के लोगों को और गाँव के बड़े-बूढ़ों को बुलाया है। हम सब कल साथ चलेंगे। हमारे मन को बहुत बल मिला। अगले दिन पूरे रास्ते कल्कि जी के महामंत्र **जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते** के मंत्र का जाप करते हुए हमने जैसे ही गाँव में दादा देईपाल के मंदिर में प्रवेश किया तो गाँव वालों ने एक स्वर में हमारा स्वागत करते हुए कहा कि दादा की मूर्ति उनके मंदिर में जहाँ आप चाहते हैं वहीं लगेगी।

पहले दिन कलियुगी शक्तियों का धमाल
अगले ही दिन दैवीय शक्तियों का कमाल!
वाह मेरे कल्कि जी आपकी लीला अपरंपार।

24 जनवरी का दिन स्थापना का निर्धारित हुआ। बहुत सी परेशानियाँ अब भी मुँह बाए खड़ी थीं। लेकिन हमने कल्कि जी का पल्ला पकड़े रखा। लगातार उपचार, प्रार्थनाएँ, माला, हवन करते रहे।

24 जनवरी का वह शुभ दिन आया और 250 लोगों की उपस्थिति में सफलतापूर्वक मूर्ति स्थापना का कार्य संपन्न हुआ। इस एक महीने के अंतराल में जो कुछ हुआ वह अंतर्जगत का ऐसा अनोखा खेल था जो मेरी आँखों के सामने साक्षात घट रहा था। इस अनुभूति को भगवान श्री कल्कि ने एक स्वपनानुभव के द्वारा प्रमाणित भी किया—

30 जनवरी, 2012 को मुझे स्वपनानुभव हुआ कि कुछ नकारात्मक शक्तियाँ

हमारे परिवार का अनिष्ट करने की बात कहकर हमें डरा रही हैं। इस पर मैं बिना डरे कहती हूँ मुझे बगुलामुखी माता के हवन करने हैं। अगले दिन वह शक्ति दोबारा आती है लेकिन बिना कुछ करे लौट जाती है। फिर मुझे वाणी अनुभव होता है— **24 जनवरी, 2012 का उत्सव बिना किसी विघ्न, बाधा, क्लेश के कल्कि जी की विशेष कृपा से संपन्न हुआ है।**

निष्कर्ष : कल्कि भगवान का नाम एक पारसमणि के रूप में हमें मिला है जिसमें हम कुछ भी अच्छा सोचते हैं वह मिल जाता है। बस हमें कल्कि जी की इच्छा के अनुरूप उनके प्रचार के कार्य ईमानदारी से करने होंगे। महामंत्र का जाप, माला, हवन और कल्कि साहित्य का पाठ उनसे संबंध बनाए रखने की अकाट्य कड़ी हैं।

जब 8 अप्रैल के कल्कि साहित्यिक कार्य करने पर मेरी चाहत पूरी हुई

—सुश्री इंदु बंसल (9818416191)

स्वप्नानुभव :— एक जिज्ञासु महिला को मैं तेज शब्दों में जवाब देते हुए बोली कि जब भी जिस अवतार का प्राकट्य हुआ है उनके पास कभी भी हजारों लाखों की भीड़ नहीं रही। वह लोग महाभाग्यशाली होते हैं जो लोग अवतार के प्राकट्य के उदेश्य को पूरा करने में भगवान के सहभागी होते हैं। हम सब कल्कि वाले यही काम तो कर रहे हैं कि कल्कि जी के उत्सवों में उनके भक्तों की सहभागिता बढ़े और जब ऐसा होगा तो हमारा काम पूरा हो जाएगा इसलिये अभी कल्कि जी के उत्सवों में भीड़ नहीं।

(मेरी प्रबल हार्दिक इच्छा थी कि ठाकुर रामकृष्ण परमहंस जी की कृपा से, मामाजी द्वारा मिले कल्कि जी के सत्संग से जिस तरह मुझे कई परेशानियों से निकलने के रास्ते मिले, उसके आभार स्वरूप मैं मामाजी के पुराने राजपुर रोड वाले बंगले पर श्री कल्कि महोत्सव करवाने को कहती रहती थीं। उस पर मामाजी मात्र मुस्करा देते थे।)

रविवार 8 अप्रैल, 2012 को वह शुभ दिन आया कि मेरा सपना साकार हुआ जो मैं मामाजी को आभार स्वरूप समर्पित कर पाई।

अच्छा सोचो तो सही तमन्ना पूरी होगी

नवंबर 2009 में श्री गौरी शंकर मंदिर चांदनी चौक में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना की पूर्व संध्या पर निकली शोभा यात्रा में खड़े **श्री रघुबीर गुप्ता ने मन ही मन सोचा कि हे कल्कि प्रभु! क्या कभी मुझ से भी ऐसे ही प्रतिष्ठित होओगे ?**

और ऐसा हुआ भी। 6 फरवरी, 2011 में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना सदर बाज़ार मंदिर गिंदियोड़ियान में श्री रघुबीर गुप्ता के द्वारा संपन्न हुई। हमारे कल्कि जी ने इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए उन्हें अपने 30 निष्ठावान भाग्यशाली साथियों के सहित अपनी मूर्ति प्रतिष्ठित करवाने का **अगला अवसर जून 2012 में श्री हनुमान मंदिर, गेट नं. 6 मॉडल बस्ती, फिल्मिस्तान सिनेमा के सामने, दिल्ली में भी करवा दी।**

जीवन के सारे दुखों का अंत हो जाएगा

—मेघना गोयल (9136377829)

एक कल्कि भक्ता को 12 फरवरी 2011 को स्वपन में वाणी अनुभव हुआ कि कल्कि भक्तों के समूह के साथ लौटते हुए भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति जो चंदौसी में लगने जा रही है, उसकी चर्चा चल रही है। इतने में ही रास्ते में भगवान श्री कल्कि की चंदौसी में लगने वाली दिव्य मूर्ति सभी देखते हैं। तभी उस कल्कि भक्ता का बेटा दौड़ता हुआ आता है और कहता है कि माँ भगवान श्री कल्कि की इस मूर्ति को पास से तो देखो **जीवन के सारे दुःखों का अंत हो जाएगा।**

अर्थ : 14 जनवरी, 2011 को श्री अनिल गड़ोदिया जी के यहाँ श्री रघुबीर जी, बारा टूटी चौक सदर बाजार और सुश्री रश्मि गनेरीवाला, (कोलकाता) व गुरु जी की मूर्ति बनने का आर्डर मूर्तिकार को आर्डर दे रहे थे कि तभी चंदौसी से **श्री विनय राज एडवोकेट, फव्वारा चौक, जिला संभल चंदौसी, यू.पी. का फोन आया** कि मुझे कल्कि जी की एक मूर्ति चाहिए, जल्दी से जल्दी बनवाकर दिलवा दीजिए। मूर्तिकार वहीं बैठा था। सो श्री विनय जी के आश्वासन पर मूर्तिकार को एक और मूर्ति की अग्रिम राशि दे दी गई। यह सभी मूर्तियाँ 31 जनवरी को बनकर दिल्ली आ गईं और 3 फरवरी 2011 को श्री विनय राज जी भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति अपनी इंडिका गाड़ी में रखकर चंदौसी ले गए।

दूसरे शब्दों में जब मूर्ति हँसी (योगमाया मन्दिर, कुतबमीनार, महरौली) की तरह चंदौसी में भी चमत्कारी श्री कल्कि जी की शक्ति पहुँची हुई है।

इसका ज्वलंत उदाहरण अब 4 दिसंबर 2012 को यही श्री विनय राज एडवोकेट महाभाग्यवान भगवान श्री कल्कि की तीन फुट की मूर्ति नैनीताल, (मुक्तेश्वर मंदिर) के लिए ले गए हैं जो जल्दी ही श्री कल्कि भक्त वाराणसी की तरह प्रतिष्ठित करके आएंगे।

—श्री मनोज पांडे

बड़ी से बड़ी दुर्घटना से बचाती हैं माँ काली

—सुश्री मधु गर्ग (लैक्चरार श्रीराम कॉलेज) (011-27940911)

—सुश्री निशी गर्ग (011-27940911)

श्री कल्कि बाल वाटिका अनुभव पैनल के सदस्य के पास गत वर्ष एक कल्कि भक्ता का फोन आया कि उन्हें सुबह दिल्ली से बाहर यात्रा पर जाना है। उन्हें स्वपनानुभव हुआ है कि एक बस जो सड़क पर जा रही है वह दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। उसमें बैठै सभी लोग मारे गए हैं, सब तरफ खून ही खून बिखरा हुआ है, हालांकि इस स्वपनानुभव में मैंने खुद को नहीं देखा है पर फिर भी मन बहुत घबरा रहा है कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाए।

एक और कल्कि भक्त का फोन आया कि वह खाटू जी जा रहे हैं लेकिन दो दिन से बुरे विचार मन में आ रहें हैं दुर्घटना, मृत्यु आदि के बारे में सोच कर मन घबरा रहा है।

उपचार जो दोनों को बताए गए—1. काली जी के सफेद बर्फी के प्रसाद के लिए 20 रूपए हाथ लगाएं जिसमें से 15 रूपए की सफेद बर्फी और 5 रू दक्षिणा चढ़ाकर प्रार्थना करें :- हे माँ काली जो कलियुगी आसुरी शक्तियां हमें दुर्घटनाग्रस्त करना चाह रही हैं, हमारा अनिष्ट करना चाह रही हैं ऐसी शक्तियों को उनका भाग देकर हमें बचाइए, हमें अपना दिव्य सुरक्षा कवच प्रदान कीजिए, हमें कल्कि जी के प्राक्टय के प्रचार का काम करना है। **2. जमुना महारानी जी** के परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा पाँच रूपए हाथ लगाकर प्रार्थना करें हे माँ इसके द्वारा जिसका जो भाग है दिलवाकर, हमें यम की शक्तियों से बचाइए, हमें जीवनदान दीजिए, हमें कल्कि जी का काम करना है।

दोहते की शादी के अवसर पर
स्व. नानी ने अपना वायदा निभाया

—सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)

स्वप्नानुभव—22 जनवरी 2012 को मेरी ताईजी जिनका डेढ़ साल पहले निधन हो गया था वह मुझे स्वप्न में दिखाई दीं। वो मुझे मेवा, केले व सेब देती हैं। मैं उनसे अपनी बुआ की लड़कियों की शिकायत कर रही थी। वो मुझे समझाती हैं और कहती हैं जाने दे वो तो ऐसी ही है। मैंने ताईजी के लिए एक सीधा निकालकर स्वधा महारानी से प्रार्थना की कि वह मेरे परिवार पर कृपा बनाए रखें, क्लेशों से निकालें मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का काम करना है और यह सब लिखने का एक कारण है कि— मेरे बेटे की शादी 3 फरवरी 2012 की थी और मेरी ताईजी मुझ से हमेशा कहती थीं तू लड़के की शादी कर ले। मैं हँस कर कहती थी शादी में काम कौन संभालेगा? इस पर वो हमेशा कहती थीं मैं चार दिन पहले आ जाऊँगी तू शादी कर तो सही। इसी बीच वह नहीं रहीं और मेरे बेटे की शादी तय हो गई। शादी की अफरा तफरी में मेरे पति एक लाख रुपये कहीं रखकर भूल गए। हमने बहुत तलाशा पर नहीं मिले तो हमने मन को समझाया कि कहीं खर्च हो गए होंगे? पर मन से हम सब परेशान थे, मन नहीं मानता था। **जिस रात मुझे अपनी ताईजी स्वप्न में दिखाईं दीं उसके अगले दिन मैं अपनी अलमारी ठीक कर रही थी कि कपड़े के नीचे 50-50 हजार की दो गड्डियाँ निकलीं।** तुरन्त मुझे ताईजी द्वारा स्वप्न में दिये सेब और केले और मेवा की याद भी आई कि वो इस तरह मेरे पुत्र की शादी में हाथ बँटाने आई और उन्होंने अपना वादा पूरा किया। शादी से पहले आकर हमारे तनाव को भी ना के बराबर कर दिया। शादी भी बहुत शानोशौकत से हुई, जिसके लिए मुझे रामकृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी के भजन की लाईन याद आती है **रट लो भाइयों कल्कि नाम इससे बनेंगे बिगड़े काम।**

जब मैंने मौत को सुना नहीं नजदीक से देखा

—शालिनी पांडे धर्मपत्नी श्री मनोज पांडे (9212703815)

(मैं सपरिवार श्री कल्कि महोत्सव में मार्च 2011 में असरोही गई हुई थी जहाँ मुझे यह अनुभव हुआ)

स्वप्नानुभव : प्रातः चार बजे मैंने देखा कि एक मंदिर में बहुत सारी सीढ़ियाँ

हैं। जब मैं उन सीढ़ियों को चढ़कर ऊपर भगवान के दर्शन करने गई तो मुझे वहाँ पर अपने जानने वाले दिखाई दिए। उन्होंने पूछा मनोज भाई और बच्चे कहाँ हैं तो मैंने कहा वो भी अभी दर्शनों के लिए आ रहे हैं। फिर मैंने दर्शन किए और देखा कि एक औरत सबको प्रसाद बाँट रही है। उस औरत ने मेरे हाथ में भी प्रसाद दिया। जैसे ही मैंने प्रसाद खाया तो किसी ने एक दूसरी औरत के बारे में पूछा तो मैंने उसको बताया कि वह दूसरी औरत तो अभी-अभी प्रसाद खाकर गई है परन्तु तभी, सभी उस दूसरी औरत के बारे में कहने लगे कि वह तो मर गई। मुझे समझते देर न लगी कि वह दूसरी औरत इसलिए मरी है क्योंकि प्रसाद में विष मिला हुआ है। मैं इससे पहले कि संभल पाती मेरे गले में अजीब सा अवरोध उत्पन्न हो गया। मेरे पैर लड़खड़ाने लगे। मंदिर में पास में पड़े एक पलंग की तरफ मैं गिरने लगी। **गिरते हुए मैं सोचने लगी कि मेरे प्राण निकल रहे हैं और मेरे पास मेरे पति और बच्चे भी नही हैं।** फिर मैंने सोचा कि काश मैं मरते समय भगवान श्री कल्कि के दर्शन कर लेती। मैं चारो ओर कल्कि भगवान की मूर्ति देखने लगी मगर मुझे मूर्ति कहीं नहीं दिखाई दी। फिर मैंने कल्कि भगवान का एक चित्र देखा जो कि पलंग के सामने एक दीवार पर दशावतार का एक चित्र लगा है जिसके बीच में श्रीकल्कि जी हैं। मैं बहुत मुश्किल से अपने गले को पकड़कर बोल पा रही थी- जय कल्कि भगवान की। मेरी आवाज़ बहुत मुश्किल से निकल रही थी। शरीर से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई शक्ति इकट्ठी होकर मुख के मार्ग से निकल जाने को है मुझे ऐसा भी लग रहा था कि यदि वह शक्ति मेरे शरीर से निकल गई **तो मैं मर जाऊँगी। शरीर में अजीब सा खालीपन महसूस हो रहा था जा सिर्फ महसूस किया जा सकता है लिखना या बताना है।** मैं सोच रही थी कि अन्त समय में यदि भगवान कल्कि का महामन्त्र ''जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते'' भी कोशिश करके बोल लूँ तो अच्छा है। फिर मैं अपना गला पकड़कर पूरी कोशिश करके महामन्त्र बोलने लगी। मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। मैं मुँह से जब यह मन्त्र बोल रही थी, मेरे पास लोगो की भीड़ थी मगर **मेरे पति और बच्चे फिर भी नहीं दिख रहे थे**। सामने भगवान कल्कि का चित्र था और शरीर में कुछ छूटता सा महसूस हो रहा था। महामन्त्र बोलते- बोलते मेरी आँख खुल गई। मेरे गालो पर आँसू अब भी थे और मैं जागने पर भी जोर-जोर से महामन्त्र बोल रही थी। जैसे ही मैं उठ गई तो मेरी आवाज से मेरे बराबर में लेटी हुई रमा बहन भी जाग गईं और वो मुझसे घबराकर पूछने लगी कि तुम्हें क्या हुआ है ? पर मैं उन्हें

बिना कुछ बताए जहाँ पर असरोही में भगवान का दरबार है वहाँ पहुँच गई। वहीं पर मुझे मेरे पति और मामाजी बैठे दिखाई दिये जिन्हें मैंने घबराहट में अपना पूरा हूबहू अनुभव सुनाया।

अर्थ : इस स्वपनानुभव का अर्थ था कि इस कल्कि भक्त परिवार को अपने परिवार की स्थिरता (अर्थात् यही स्त्री चाहिए तो) के लिए भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापनाओं के संकल्प लेने चाहिए कि वह तन मन और अपनी सामर्थ्य अनुसार धन का सहयोग दें वरना...। इन्होंने ऐसा किया ठीक एक साल बाद असरोही में श्री कल्कि महोत्सव के दौरान ही कल्कि भक्ता के पति को यह अनुभव हुआ—

अनुभव 2 : 15 मार्च सुबह 5:20 पर मैंने देखा कि मैं एक खेत में खड़ा हुआ हूँ जो नीचे से आधा हरा है और ऊपर की फसल आग की तरह चमचमा रही है, बीच-बीच में उसमें आग के पतंगे से निकल रहे हैं। तभी मैंने देखा कि सामने से एक घोड़ा आ रहा है जिसकी मुझे दूर से चमकती हुई आँखें दिखाई दे रही हैं और ऊपर से बाल लहराते हुए दिखाई दे रहे हैं।

अर्थ : इस स्वपनानुभव में हराभरा खेत इनके (महिला के पति) द्वारा किए गए निष्ठा से भगवान श्री कल्कि के कार्यों को दर्शाता है। ऊपर उठते हुए पतंगे यह बता रहे हैं कि उनकी पत्नी बच तो गई है लेकिन अभी खतरे से बाहर नहीं है। आधा हरा खेत कल्कि जी के प्रचार कार्यों को करने के कारण शुभ का संकेत दे रहा है। आग की तरह चमचमा रहा आधा खेत अभी परेशानियां लिए हूए है। घोड़े की चमकती आंखे यह संकेत दे रही हैं कि हिम्मत से लगे रहो। कल्कि जी तुम्हारे साथ हैं। पूर्ण सही आने पर मूर्ति का काम रोक सकते हैं।

श्री कल्कि महोत्सव की पितृलोक में हलचल

—डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता (01123936187)

हमारा (मामाजी के भाई) पूरा परिवार ही पिछले 50 वर्षों से कल्कि भगवान की पूजा करता है। लेकिन हमारे घर में कल्कि भगवान का कोई उत्सव नहीं हुआ। पिछले 3-4 सालों में कुछ स्वप्न अनुभव लीला इस तरह से घटित हुई कि हम सभी भाई अपने परिवारों के साथ कल्कि भगवान से ज्यादा जुड़े और हमने कल्कि भगवान की उपचार प्रणाली को अपनाया। इसके फलस्वरूप हमारे परिवार में कई शुभकारी घटनाएं घटीं।

कल्कि जी का कीर्तन कराने की तिथि 8 अप्रैल, 2012 की निश्चित हुई। यह

तारीख निश्चित होने के बाद मुझे प्रात: 5 बजे स्वप्नानुभव हुआ—जैसे हम कुछ जने बैठे हैं और बातचीत हो रही है। मेरे स्वर्गीय बड़े भाई साहब श्री सत्यनारायण जी आए और उन्होंने कहा—आप कीर्तन का इंतजाम अच्छी तरह कराओ। इसके बाद उन्होंने एक पेपर पर अपने आने के दस्तखत करके दिए।

अनुभव पैनल से बात करने पर यह अर्थ मिला कि हमारे परिवार द्वारा उठाए गए इस कल्कि महोत्सव की खुशियों की हलचल देवलोक में ही नहीं पितृलोक में भी हुई है। इस कल्कि महोत्सव से कल्कि नाम से अनभिज्ञ बहुत से देवी-देवताओं को शक्ति मिलेगी। हमारा तो भाग्य उदय होगा ही होगा और भी जो हमें देखकर श्री कल्कि जी की महिमा को जानेंगे और मानेंगे उनका भी भाग्योदय सुनिश्चित है।

उपचार के लिए सीधा स्वधा महारानी का निकाला कि यह भाई साहब को मिले व अन्य पितृ-पितृियों के साथ श्री कल्कि महोत्सव की सफलता का हमें आर्शीवाद दें ताकि हमारा परिवार स्वस्थ, सुखी भाव से वैभवतापूर्वक श्री कल्कि जी के प्राकट्य के लिये प्रचार का काम करता रहे।

जब मकान से प्रेत शक्तियाँ भागीं

—श्री पियुष गुप्ता (डायरेक्टर डी.एस. ग्रुप) (011239886162)

लगभग 43 वर्षों से हम राजपुर रोड के मकान में रह रहे हैं। अक्सर रात को 12 बजे से प्रात: 4 बजे तक छत से आवाजें आती थीं जैसे घुंघरू की, भागने की, चलने की, लोहे की गेंद से खेलने की आवाज़। इसके अलावा चलता हुआ आदमी देखना, उसका द्वारा मेरा पीछा करना और उसका गायब होना आदि। बड़े-बड़े ज्ञानी पण्डितों को बुलाकर हमने यह घर दिखाया, सब बताया। सबका कहना था कि यहाँ पर एक बूढ़ा पगड़ी वाला सरदार एक विधवा औरत, एक सिर कटा जवान लड़का (शादी में अकाल मृत्यु ग्रस्त) और एक बच्चे की आत्मा विराजमान है। लेकिन यह हमारे परिवार का बुरा नहीं करेंगी। उन्होंने हम से विभिन्न प्रकार के खर्चीले उपाय कराए लेकिन कुछ भी फर्क नहीं पड़ा।

रक्षाबन्धन के दिन हम सब बैठे थे। ओमो चाचाजी (मामाजी) घर पर आए हुए थे। उनसे हमने इसकी चर्चा की। इस पर हमारे डॉक्टर चाचा जी बोले कि जब वह प्रेत शक्तियां बुरी नहीं है तब आपको किस बात की चिंता है। इस पर ओमो चाचाजी बोले कि क्या तुम एक साँप का जहर निकालकर खुला छोड़कर अपने घर में आराम से रह सकते हो? उन्होंने कहा क्योंकि अब आप सब कल्कि जी को

निष्ठा से मानते हो और आपने जिज्ञासा जताई है सो उन्होंने एक उपचार बताया जिसे मेरी माताजी ने पूरी श्रद्धा के साथ परिवार से कराया। इसके परिणाम स्वरूप 43 साल पुरानी आवाजों पर पूर्ण विराम लग गया मानो वो आवाजें कभी आती ही नहीं थीं।

उपचार—यमुना महारानी जी का (देखें इसी पुस्तक में पृ.)

जब रोग से छुटकारा मिला

मेरे छोटे भाई को स्वप्न अनुभव हुआ कि हम डॉक्टर के पास बैठे हैं। डॉक्टर ने मेरी हालत को लेकर कुछ चिंता व्यक्त की। यह अनुभव लेकर मेरी माताजी ओमो चाचाजी (मामाजी) के पास गईं। उन्होंने मुझे कुछ उपचार बताए और सुश्री इंदु बंसल को मेरे ऊपर निरीक्षक नियुक्त किया। मैंने बहुत लगन से वो उपचार तो किए लेकिन इस दौरान इंदु दीदी से बहुत डांटे भी खाईं।

कुछ समय पश्चात मुझे सपने में वही छोटा भाई दिखाई दिया और उसने कहा ओ.के.। जब मैंने चाचा जी को यह अनुभव बताया तब उन्होंने कहा कि अब तुम आजाद हो और तुम कलियुगी शक्तियों के मकड़ जाल से निकल आए हो। अब भविष्य में कलियुग की कुचालों से बचने के लिये सावधान रहकर श्री कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार के कार्य करते रहना ताकि कलियुगी (राक्षसी) शक्तियाँ कुछ बुरा न कर सकें। भविष्य में स्वपनानुभवों के प्रति सजग रहें।

कल्कि वालों के लिए शेर का दिखना शुभ नहीं है

—सुश्री सुधा गुप्ता (0954000085)

मैं काफी समय से कल्कि भगवान से जुड़ी हुई हूँ। एक बार मुझे स्वप्न अनुभव में संदेश मिला था कि मुझे **ऊँ परमात्मा श्री कल्कि सदा सहाय** को पूरे रजिस्टर में लिखना है। कल्कि भगवान की स्वप्न अनुभव लीला सच में कमाल की है। स्वप्न में जो दिखता है उसका सही ढंग से उपचार कर दिया जाए तो बड़े से बड़ा अनिष्ट भी टल जाता है।

मेरे जेठ जी के आकस्मिक निधन के बाद बनारस से आए व्यास जी धार्मिक पुराण का पाठ कर रहे थे। एक दिन धार्मिक ग्रंथ के पाठ के पश्चात् मैंने उनसे पूछा कि मुझे रात को छत्त की मुण्डेर पर बैठे दो शेर दिखे थे, इसका क्या अर्थ हुआ? इस पर उन्होंने कहा कि शेर दुर्गा जी का वाहन है और यह अच्छा है।

मैंने पास बैठे हुए अपने देवर ओमो भैया (मामाजी) से पूछा कि भइया

आपके हिसाब से क्या है ? तो उन्होंने कहा क्योंकि आप कल्कि जी को मानती हैं उसके हिसाब से यह अनिष्ट (परेशानी) दर्शाता है। इसके लिये आप शंकर भगवान के दो अभिषेक का संकल्प लें और प्रार्थना करें कि हमारा बुरा होने से बचाए हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिये प्रचार का कार्य करना है। मैंने उसी दिन शंकर जी के दो अभिषेक का संकल्प लिया। अगले दिन दोपहर को नीचे हॉल में व्यास जी द्वारा पुराण का पाठ चल रहा था और ऊपर पहली मंजिल में बिजली का शार्ट सर्किट होकर आग लग गई। सारा घर धुएं से भर गया। बहुएं अपने सोते हुए बच्चों को लेकर भागीं और सारे घर में अफ़रा तफ़री मच गई। उसी अफरातफरी में मेरी नन्द (सुनीता जी) के पैर में फ्रैक्चर भी हो गया।

यह आग जो दोपहर में लगी यदि रात को सोते समय लगती तो पता नहीं कलियुग मेरे यहाँ कितनी जान माल का नुकसान करने में सफल होता। यह सत्य है स्वप्न अनुभव का सही ढंग से उपचार कर दिया जाए तो इससे बड़े से बड़ा अनिष्ट टल जाता है और आगे का रास्ता मिलता है।

1971 में कल्कि जी 23 रुपये से 2,100 रुपये महीने वाले किराए के मकान में लाए

—ओमो (मामाजी) 01123973383

अगस्त 2011 में अपनी हकीकत 23 रुपये महीने के किराए वाले मकान में जो नावल्टी सिनेमा के पास है में दिखायी थी। आज अपने समस्त परिवार के सहयोग से इस महोत्सव में आप यह बंग्ला देख रहे हैं। इसकी पहली और दूसरी मंजिल में कल्कि जी 1971 में मुझे यहाँ लाए थे। इतने बड़े मकान में लंबे समय तक मैं और मेरी पत्नी यहाँ अकेले रहे। योगेश बाबू का जन्म भी यहीं हुआ था। मेरे भाईयों और माताजी का कहना बिलकुल सच था कि इतने महंगे मकान में हम नहीं जाएंगे। मानो आज आपका बेटा जो आपके साथ 2,000 रुपये महीने के मकान में रह रहा हो और उसके आगे दो जीरो लगाकर अर्थात 2 लाख रुपए महीने किराए के मकान में जाता है तो आप भी उसको मेरी माताजी व भाईयों द्वारा नहीं स्वीकारेंगे। लेकिन चमत्कारी भगवान श्री कल्कि जी ही मुझे इस मकान में लाए। आज मुझे बहुत आनंद मिलता है जब मैं अपने पूरे परिवार को यहाँ रहता देखता हूँ।

विशेष : इस बंग्ले के बाद सिविल लाइन्स के घर में जहाँ अब मैं रह रहा हूँ वह भी कल्कि जी, पदमा जी (माँ लक्ष्मी का अवतार) ने दिलवाया है। यह

आपको योगेश बाबू के साक्षात्कार से स्पष्ट हो जाएगा।

लक्ष्मी जी (पद्मा जी) जब सुरंग से मुझे नए घर में लाई

—श्री योगेश गुप्ता (सचिव श्री कल्कि बाल वाटिका)

1984 में जब मैं 12 वर्ष का था तब मुझे स्वप्न अनुभव हुआ कि ऊँची सी सुरंग से लक्ष्मी जी मुझे अपने साथ किवाड़ खोलकर मुझे एक फ्लैट में लाईं। अचम्भा मुझे जब हुआ जब रविवार के दिन माताजी, पिताजी, नीलू, मिनाक्षी के साथ मैं इस घर में आया और मालूम चला कि पापा ने यह नया मकान खरीदा है। पापा अपने साथ बैठने को चांदनी और नाश्ता भी लाए थे हमने यहीं बैठकर नाश्ता खाया। तभी मुझे वह स्वप्नानुभव याद आया जिसमें लक्ष्मी जी मुझे एक गहरी सुरंग से इसी मकान में लाईं थी। तब मैंने वह सुरंग दिखाई जो बिल्डर ने लिफ्ट के लिये बनाई हुई थी।

उपचारों से ज्वैलरी, अपना घर मिला

—सुश्री रेनू बंसल-श्री अजय गुप्ता (नोयडा — ग्रीनपार्क) 9818000004

नोयडा से मैं अपने परिवार के साथ तीन दिन के लिए घूमने पहाड़ों पर गई थी। वापिस जब घर आई तो देखा अलमारी के दरवाजे खुले पड़े थे। सारा जेवर गायब था। मरे परिवार के सभी सदस्यों को यही लग रहा था कि अब कुछ मिलने वाला नहीं है। लेकिन मैंने यही कहा कि मेरा सारा जेवर मिल जाएगा और देखना कल्कि जी दिलवाएंगे। मैं उपचार करती रही। सब लोग मेरा उपहास कर रहे थे जो मैं शब्दों में नहीं बता सकती। मैंने कल्कि जी के पैनल सदस्या से पूछा और उपचार किए। तीन दिन के अंदर मेरा सारा जेवर चमत्कारी श्री कल्कि जी ने ऐसा का ऐसा दिलवा दिया। तब से आज तक मेरे पति, भाई, परिवारजन सभी कल्कि जी की महिमा समझने लगे हैं। स्वप्नानुभव व उपचारों के द्वारा ही आज मैं मान प्रतिष्ठा के साथ अपनी ग्रीनपार्क की कोठी में पुन: वापिस भी आ गई, जहाँ शादी करके आई थी। अब श्री कल्कि जी की कृपा से वैभवतापूर्वक यहाँ रह रही हूँ।

परेशानियों से निकलने के रास्ते मिले

—सुश्री रीता गुप्ता (धर्म पत्नी डॉ. वी.पी. गुप्ता) 01123936187

शादी के बाद मैंने इस परिवार में श्री कल्कि भगवान की फोटो तो कई जगह लगी देखी लेकिन मेरा इनसे कोई भाव नहीं जुड़ा। मैं एक प्रतिष्ठित डॉक्टर की पत्नी होने के कारण कुछ ज्यादा ही व्यस्त रही। पिछले दो साल में मेरी जिन्दगी में

ऐसे पल आए कि मैं अपने परिवार की सुरक्षा के लिए ज्यादा चिंतित हो गई। उन दिनों मेरा श्री कल्कि भगवान से भाव जुड़ा और सौभाग्य से मुझे गिरिराज जी (गोवर्धन) में कल्कि जी का दिव्य सत्संग मिला। कल्कि जी के प्रति मेरे हृदय में प्रेम भक्ति और श्रद्धा का संचार हुआ। अपनी परेशानियों के अनुकूल मैंने कल्कि भगवान के उपचार किए। फिर तो मैं दो तीन बार दिल्ली से बाहर मैं कल्कि जी के महोत्सवों में गई जिससे मेरा कल्कि जी से बहुत भाव जुड़ा। फिर तो मुझे कल्कि भगवान की स्वप्नानुभव लीला द्वारा पग-पग पर परेशानियों से निकलने के रास्ते मिलने लगे। उससे मुझे अपने आप में और अपने परिवार में बहुत सुरक्षा और संतुष्टि मिलने लगी। मैं कल्कि भगवान की बहुत बहुत आभारी हूँ।

मेरी तो दुर्गा माँ

—सुश्री साक्षी गुप्ता (धर्मपत्नी योगेश गुप्ता) 9310833445

मैं शादी से पहले से दुर्गा जी की उपासक थी। शादी के बाद मुझे कल्कि नाम मिला और यह भी पता चला कि माँ वैष्णो तीन युगों से भगवान श्री कल्कि की प्रतीक्षा में तप कर रही हैं। कठिन समय में मैंने कल्कि जी के महामंत्र की 21 माला के जाप का 15 दिन का संकल्प लिया। कमाल है यह असंभव कार्य कल्कि जी ने मात्र 10 दिन में ही पूरा करवा दिया।

वाकई कल्कि जी चमत्कारी हैं

—सुश्री पूजा गुप्ता (धर्मपत्नी, श्री पीयूष गुप्ता डायरेक्टर डी.एस. ग्रुप) 9891000063

श्री कल्कि बाल वाटिका की जनवरी मास की पत्रिका में लिखा था कि गोवर्धन में श्री कल्कि जी का सत्संग रात दो बजे तक चला। मैंने साक्षी गुप्ता के 21 माला के महामंत्र के संकल्प के बारे में पढ़ा कि किस तरह भगवान श्री कल्कि ने उनका असंभव कार्य 15 दिन की बजाय मात्र 10 दिनों में पूरा करा दिया।

मैंने मात्र सात माला का संकल्प लिया कि हे कल्कि भगवान! मेरे भी असंभव कार्य को संभव करा दीजिए। मैंने यह माला आसन पर बैठ कर नहीं कीं अपितु जहाँ समय मिला कार आदि में भी पूरी कीं। बस मैंने मां दुर्गा, माँ वैष्णो माता के ध्यान के साथ (करोड़ीमल कॉलेज वाली मूर्ति, हनुमान मंदिर कॅनाट प्लेस मूर्ति का ध्यान करके) अपनी माला पूरी की और मेरे देखते ही देखते मेरा असंभव कार्य संभव हो गया। अब मेरे मन से यह बार-बार निकलता है कि कल्कि जी वास्तव में आप चमत्कारी भगवान हैं।

जब स्व. पिताजी को प्रसन्नता व स्वास्थ्य मिला

—श्री विपुल गुप्ता 981000045 (अनुज, श्री पीयूष गुप्ता, डायरेक्टर डी.एस. ग्रुप)

15 मई, 2005 को मेरे पिताजी के आकस्मिक निधन के लगभग डेढ़ महीने बाद मुझे स्वप्न अनुभव हुआ जिसमें मेरे पिताजी बीमार दिखे। मैंने चाचाजी (मामाजी) से पूछा कि इसका मतलब क्या हुआ? इस पर उन्होंने कहा, वह दुखी हैं। उपचार में उनका एक सीधा दे दो। जय श्री कल्कि जय माता की एक माला का फल स्वधा महारानी (पित्रों की अधिष्ठात्री देवी) को अर्पण करें और कहें कि इसका फल मेरे पिताजी को मिले। वह जिस बीमारी (परेशानी) में हैं उससे उन्हें निकालें।

कमाल है मुझे पांच दिन बाद दोबारा पिताजी स्वस्थ हंसते हुए दिखे। मुझे बड़ा अचंभा हुआ कि कितने सटीक हैं श्री कल्कि जी के उपचार जिसने उन्हें स्वास्थ व प्रसन्नता प्रदान करा दी।

अचानक बीमारी के चंगुल में मेरा बेटा फँसकर निकला

—सुश्री रश्मि गोयल (बहन, श्री अजय गुप्ता, डायरेक्टर डी.एस. ग्रुप) 09891355625

2010 के कॉमन वैल्थ खेलों में मेरा बेटा वालन्टीयर चुना गया था। लेकिन शुरू होने के पहले ही दिन वह बीमार पड़ गया। मैंने अनुभव पैनल सदस्या से बातचीत की। उन्होंने मुझे धनवंतरी जी, हनुमान जी व दुर्गा जी की योगिनियों का उपचार बताया। कमाल की बात यह है चमत्कारी कल्कि जी की कृपा से वह अगले दिन बिलकुल ठीक हो गया और कॉमन वैल्थ खेल में चला गया।

प्रचार से बहन की शादी

—श्री अंकुर गोयल (जेमोलोजिस्ट जी.आई.ए.) 09818522778

वर्ष 2009 से 2011 की अगस्त तक मेरा परिवार बहुत ही संघर्ष में रहा। हमारे पार्टनर द्वारा सताया जाना, शोरूम का सील होना, जादू टोना व तांत्रिक शक्तियों ने घर परिवार सबको अपने अजगर पाश शिकंजे में ऐसा कस लिया था मानो अब इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। मैंने पुन: कल्कि नाम का सहारा पकड़ा। पत्रिका में छपी सुश्री इंदु बंसल द्वारा लिखी गई लाईन दिमाग में बैठी कि **तुम मेरे प्रचार का काम करो मैं तेरे सारे काम करूंगा।**

मौसाजी से बात करके मैंने और गरिमा ने दो बाल वाटिकाओं (गगन विहार और सब्जी मण्डी) में मौसाजी की तरह बेसुध (किसी की व किसी काम की

परवाह किए बिना जो करना है सो करना है) रूप से मन से कार्य करना शुरु किया तुरंत मेरे व्यापार ने चाल पकड़ी। हमने सब्जी मण्डी बालक बालिकाओं से जून 2011 में मौसाजी के पुराने किराए के घर पर नाटक भी करवाया और सबको **मौसाजी की हकीकत से वहाँ रूबरू करवाया** कि कैसे कल्कि जी की माला, हवन, पूजा, उनके स्वप्न अनुभव का पूरी तरह पालन करने से मौसाजी यहाँ से कहाँ तक पहुँचे। आज भी कल्कि जी व्यापार, समाज, परिवार व कल्कि जी के प्राकट्य के कार्यों में मौसा जी को पग-पग पर कैसे संभाल रहे हैं।

मैं और मेरा परिवार बहन की शादी के लिए बहुत चिंतित थे कि इन सभी झमेलों के चलते इसकी शादी कैसे होगी। इस संदर्भ में मुझे भगवान श्री कल्कि जी ने एक अनुभव दिया जिसमें उन्होंने यहाँ तक कि लड़के का नाम तो क्या उसके साथ उसकी कंपनी का नाम एवं कैसे उस शादी में होगा सब दिखाया।

कमाल जब हुआ जैसा मुझे शादी का अनुभव दिखाया था बैसे का वैसा ही सब मेरे परिवार के साथ घटित हुआ। अब की बार मेरा परिवार खास तौर पर मेरी बहन (गरिमा) अनुभव और उपचारों के प्रति बहुत सावधान रही। भगवान ने उसकी शादी के लिए उससे 700 रुपए अनुबन्ध (एग्रीमेन्ट) के मांगे। उसने वह मौसाजी को 20 नवंबर को गिरिराज जी (गोवर्धन) में दिये। कमाल है मेरे प्रभु श्री कल्कि जी ने मेरी बहन की शादी ऐसी करवाई जिसमें 1,500 करीब बराती दोनों तरफ़ के मेहमान थे। ऐसे शानोशौकत से शादी हुई की आज भी याद करते ही मैं रोमांचित हो जाता हूँ।

जब महा शक्तियों ने कहा कि तुमने हमें तांडव नहीं करने दिया

—श्री अर्चित गुप्ता (डायरेक्टर मल्टीप्लैक्स कारपोरेशन) 9810000046

आज से कुछ वर्ष पूर्व जब मैं हौलेंड में पढ़ रहा था, एक स्वप्न अनुभव में चाचाजी (मामाजी) से पिताजी ने कहा कि मुझे कुछ नहीं दिख रहा जबकि चाचाजी ने कहा मुझे साफ दिख रहा है। पिताजी को चाचाजी ने कहा कि आपका धन गटर में भरा है सो अब गायब होना शुरू हो रहा है।

हमने अन्य कल्कि (मानूं मैं न मानूं) भक्तों की तरह साधारण रूप में इसे लिया। उसका परिणाम यह निकला कि हमारी नोयडा की फैक्ट्री में ऐसा अग्नि कांड हुआ कि जिसमें गाटर तक भी पिघल गए।

2011 में भी हमारी नोयडा में फोम के गद्दे बनाने की फैक्ट्री में अचानक

अग्नि कांड हुआ। रात को 11 बजे हमारे यहाँ फोन आया कि हमारे गद्दे की फैक्ट्री में आग लग गई है और उसकी लपटे तीसरी मंजिल तक पहुँच रही हैं। क्योंकि एक टी. वी. चैनल हमारी फैक्ट्री के बराबर ही है उसने वह लपटे टी. वी. में दिखानी भी चालू कर दीं। सब टी.वी. वालों ने भी हमारे जाने से पहले वह लपटें जनता को दिखानी शुरु कर दीं।

माताजी पिताजी ने चाचाजी से पूछकर तुरन्त उपचार किये और चाचाजी भी नोयडा पहुँच गए। अवस्था के अनुकूल मामाजी ने 3-4 उपचार और कराए।

बहुत आश्चर्य है कि किस प्रकार वहाँ कैमिकल और फोम के बीच भड़की आग में दमकलो और हमारे स्टाफ की तत्परता से आग पर काबू पाया गया। 2 घंटे बाद जब चाचाजी दिल्ली के लिये वापस लौटे तो रास्ते में साँवले रंग की 5 देवियाँ जो अधिक डायमंड ज्वैलरी पहने हुए थी जिसमें एक देवी के साथ एक कौआ भी था और वह गुस्से की मुद्रा में उल्हाना स्वरूप चाचाजी की तरफ प्रश्नात्मक दृष्टि से घूर रही थी कि तुमने हमें यहाँ **(अग्नि कांड में) तांडव** नहीं करने दिया।

चाचाजी ने जब यह जागृत अनुभव अगले दिन सुनाया तो यह किसी को मालूम नहीं चला कि कौए वाली देवी कौनसी है। गीता प्रेस गोरखपुर की महाविद्याओं की पुस्तक से ज्ञात हुआ कि कौए वाली देवी **भूमावती** है जो भूख लगने पर अपनी भूख को शांत करने के लिये अपने पति को ही खा गई थी। मैं तो यह कहना चाहूँगा कि चमत्कारी भगवान श्री कल्कि का नाम जाप, हवन, पूजा से हमें स्वप्न, जागृत, वाणी, मानसिक अनुभव तो होते हैं लेकिन इन्हें लिखकर समय पर उपचार करने से इसका सटीक फल मिलता है।

प्रार्थना—पाँचो देवियों के 20 रू निकालकर प्रसाद दक्षिणा दुर्गा जी को दे दीं।

निष्कर्ष : हमारे प्रभु श्री कल्कि हमें तबाही से बचने का इशारा देकर बचाना चाहते हैं। मर्जी हमारी है बचें या न बचें क्योंकि हम में अहम्, आलस्य, अधिक आत्मविश्वास है।

जिद्दी और मूर्ख बच्चे होशियार बनें

—कुमारी शिखा जिंदल (अमरीका)

संकलनकर्ता : सुश्री रेखा गुप्ता 09910177918

माना कि पितृ भगवान नहीं होते लेकिन उनकी बताई हुई बातें, जो बेहतरीन टोटके से हैं चाहें तो आजमाकर देखें। उनकी बताई हुई बातें अब तक हमने सत्य पाईं हैं। देश-विदेश की शादी में पितृ शक्तियों ने अनहोनी को होनी में बदलकर,

कितने ही परिवारों की खुशियों को महज समय पर किये उपचारों (दान-पुण्य-कर्म) से मदद की। जिस प्रकार हमारा भौतिक संसार में तालमेल होता है वैसा पितृलोक में भी होता है। पितृ से मिले कुछ टोटके (सलाह)—

1. इस जगत में कोई भी काम असंभव नहीं है।

2. पितृ देखता बोलता है (समझता है) सुन नहींसकता।

3. तेज (शक्ति, प्रतिभा) के लिए प्रतिदिन सूर्य को जल चढ़ाओ।

4. सिर में प्रतिदिन तेल लगाएं, चाहे कुछ बूंद ही सही।

5. सुहागन स्त्री को पति की आयु के लिए प्रतिदिन आवश्यक श्रृंगार- सिर में तेल (बेशक मामूली), चूड़ी, सिंदूर, बिंदी लगानी चाहिए।

6. भगवान श्री कल्कि की पूजा करते समय एक गिलास जल उनके सामने रखकर प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान! मैंने जो यह जल रखा है, इसे अपनी शक्ति प्रदान करें ताकि इस जल की छींटों से मेरा घर पवित्र हो और यहाँ का वातावरण शुद्ध बना रहे। पूजा ही दुखों का निवारण व कल्याण करेगी।

7. नियम रखें, नियम न तोड़ें, नियम पर चलें।

8. भगवान हर मनुष्य को प्रतिदिन एक सुख किसी भी रूप में देता है। जबकि उनके हिसाब से एक गलत शब्द बोलना, गाली देना, आम भाषा में बात करना (मूर्ख है, गधा है, मरता भी नहीं) एक गलत शब्द का अर्थ एक सुख खोना है। अत: अच्छा बोलकर प्रतिदिन सुख इकट्ठा करें, खोएं नहीं।

9. अब पितृ के बताए अनुसार सिर्फ दो सप्ताह तक गलत न बोलकर देखो तो सही कि आपके जीवन में कितना परिवर्तन आया क्योंकि पितृ सत्य मार्गदर्शन करते हैं।

10. मरे हुए व्यक्ति के लिये बुरा बोलना व कुछ कहना, करना पाप है, उसका प्रभाव बोलने वाले के शरीर पर आएगा।

11. जो बच्चा कन्ट्रोल से बाहर जाता नजर आ रहा है, उसे कल्कि जी की आरती में सुबह*-शाम अवश्य बैठाइये। आरती की जोत या घंटी उसे अवश्य दें। आरती के बाद दो भजन कोई से भी कल्कि जी के नियम से गायें। 4-6 सप्ताह में स्वयं परिवर्तन देख लें।

निष्कर्ष:- पत्री में वर्णित ग्रह भी इसके करने से बदले।

* सुबह स्कूल की वजह से संभव नहीं है तो कोई बात नहीं जिस दिन घर में

हो तो सुबह भी कराएं।

दैवी शक्तियों द्वारा चोरी हुए कागज मिले

—सुश्री मेघना गोयल 9911830603

भगवान श्री कल्कि की कृपा के ऋणी बनकर यदि प्रभु की कृपा का वर्णन किया जाए तो यह पूरा जन्म भी कम है किंतु कल्कि जी की कृपा निरंतर पाने के लिये उनके प्राकट्य के प्रचार का काम बहुत सहायक है। कुछ अभिभूत करने वाली घटनाएं भक्तों के साथ मैं बाँट रही हूँ। 9 अप्रैल 2007 को भगवान श्री कल्कि ने हमारे परिवार व व्यापार पर कृपा की।

मुझे दोपहर 3 बजे यह स्वप्नानुभव हुआ— मेरे पतिदेव की दुकान पर काम करने वाले कर्मचारी ने इनकी जेब पर हाथ मारा है।

अर्थ— व्यापार में अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है।

उपचार—अगले दिन व्यस्तता के कारण मैं पूजा और उपचार करने में असमर्थ रही लेकिन मन में चिंता जरूर बनी रही कि उपचार करने हैं।

10 अप्रैल 2007 को शाम के 4 बजे मेरे पति का फोन आया कि स्वप्न अनुभव के अनुसार ही हमारी दुकान पर काम करने वाले एक कर्मचारी ने सुबह-सुबह दुकान से जरूरी कागजात उठा लिए हैं। उन्हें बनवाने में चालीस हजार रूपए का खर्चा आएगा। तभी मैंने अपने मंदिर में ज्योत जगाकर ये प्रार्थना व संकल्प किए :—

संकल्प— भैरों जी 1 रुपया 2 बताशे, काली मां का बीस रुपये का संकल्प बगलामुखी मां का 20 रुपये का संकल्प।

प्रार्थना— हे भैरों बाबा! काली मां! बगलामुखी मां जिन कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, दोगली, मक्कार, षड्यंत्रकारी शक्तियों ने हमारे कर्मचारी के मस्तिष्क पर सवार होकर यह चोरी करवाई है, इन शक्तियों को उनका भाग देकर उसके मस्तिष्क को बन्द कराकर हमारे जरूरी कागजात वापिस दिलवाइये। हमें कल्कि जी के प्राकट्य कि लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

मेरे पति ने इस बीच उस व्यक्ति के पास कई फोन किये, लेकिन उसने साफ इंकार कर दिये कि मैंने कोई दस्तावेज के कागज नहीं लिये हैं। 10 अप्रैल 2007 की रात तक कोई काम नहीं बना लेकिन सुश्री रेनू बंसल (नोएडा-ग्रीन पार्क) की तरह मुझे पूरा विश्वास था कि भगवान अवश्य ही मार्गदर्शन देकर हमारा काम बनवाएंगे। उसी रात मुझे पुनः अनुभव आया कि जिस व्यक्ति ने हमारे कागजात

लिये हैं, उसके घर मेरे पिताजी (मायके वाले)की उठावनी हो रही है। उसका मेरे घर पर पोस्टकार्ड आया है जिसपर लिखा है—

खुशखबरी..... की उठावनी दिनांक.....को होगी।

मैं इस परचे को पढ़कर हैरान हो रही हूँ कि उठावनी भी है और खुशखबरी भी लिख रहे हैं। इस अनुभव के अर्थ में मेरे स्वर्गीय पिताजी हमारी सहायता करना चाह रहे हैं। अत: मैंने 11 अप्रैल की सुबह 7 बजे पुन: भैरों जी/काली जी/ व बगुलामुखी माता के लिये संकल्प लिये व साथ ही पताजी का सीधा निकालके स्वधा महारानी जी से प्रार्थना की— हे स्वधा महारानी! यह अपने पिताजी (मायके वाले)के लिये सीधा निकाल रही हूँ। इसके द्वारा उन्हें उनका भाग पहुँचा दें, वह जो हमारी सहायता करनी चाह रहे हैं, हमें मिल सके व हमारा बुरा होने से बचें। उन्हें उनके लोक में भेजिए। हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

इसके बाद मेरे पतिदेव ने पुन: उस व्यक्ति के घर फोन किया और ठीक 15 मिनट बाद, वह व्यक्ति सभी कागजात लेकर हमारे घर आ गया और इनसे माफी मांगने लगा। मेरे पतिदेव ने पूरी घटना के बाद यह कहा कि इस कर्मचारी ने जो काम किया वह इस प्रकार का व्यक्ति है ही नहीं मैं उसे कई वर्षों से जानता हूँ। मेरा यह कहना था कि एक भले व्यक्ति से, बुरी शक्तियाँ गलत कार्य करवा सकतीं हैं तो वह उपचारों द्वारा गलत शक्तियों से अच्छी शक्तियों द्वारा सही भी करा सकती हैं। अत: हमें कल्कि भगवान का धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने हमें इस अप्रिय घटना से पहले आगाह किया, और देर से उपचार करने के बाद भी समस्या से निकलने का रास्ता दिया।

जब पितृ ने जन्मदिन मनवाया

—मामाजी

(मेरे 74 वर्षीय भाईसाहब जिनकी फैक्ट्री नोएडा में है जिसे वह और उनका सुपुत्र सुचारू रूप से चला रहे हैं। उन्हें मार्च 2006 में पहला हृदय आघात हुआ, जिसे स्वप्नानुभवों व उपचारों से जीवन मिल गया।)

खिला फूल उपवन में टूटा, एक पवन के झोकें से
मिट्टी में मिल गया, रुका न रोके से
जिसको कल आँखों से देखा उसका आज निशान नहीं

दुनिया में अपने और पराय की होती पहचान नहीं

इस जगत में कोई बिरला ही लाभ उठाए मौके से।

13 मई 2006 की प्रात: 5.30 बजे भगवान श्री कल्कि की माला करते हुए सुश्री सरोज (मेरी स्वर्गीय पत्नी) ने 35 वर्षीय रूप में आकर, अपने प्रत्यक्ष रहने का शक्तिमय आभास मुझे जागृत अवस्था में दिया। मैं एकदम सकपकाया कि क्या बात है ? भाई साहब को 11 मई 2006 को अस्पताल से सकुशल छुट्टी करा लाए हैं, फिर सरोज क्यों दिखी ?

(पितृ का दिखना सदैव मंगल, अमंगल अथवा उनसे निकलने के लिये होता है। बन पड़े तो एक सीधा दें। सादा जल समर्पण, अगर विशेष अनुभव है तो हथेली में ही 10-15 दाने तिल, चावल, जौं लेकर पितृ का नाम लेकर तीन बार कहें श्राद्ध समर्पण, इससे रास्ता मिलने लगता है। यदि कर सकें तो, प्रतिदिन स्नान करते समय जल समर्पण कर दें। इससे पितृ बहुत संतुष्ट होते हैं। क्योंकि पितृलोक में जल नहीं मिलता।)

माला के बाद योगा जाने के लिये मैंने वहाँ से जल्दी निकलकर राजपुर रोड जाने का मन बनाया कि आज भाईसाहब को देखता हुआ आऊँगा। जैसे ही मैं राजपुर रोड पहुँचा सुभाष जी (अलमारी वाले भैया- सरल निष्पक्ष व्यक्तित्व वाले) से मालूम चला कि भाई साहब को हृदय आघात हुआ है, और अभी उन्हें अस्पताल ले गए हैं। तुरंत मैं भी परमानन्द अस्पताल से भाई साहब के साथ गंगाराम अस्पताल गया। उसी दिन मैंने सरोज को तिल, जौं, चावल से श्राद्ध समर्पण किया व सीधा निकालकर स्वधा महारानी से प्रार्थना की कि सरोज को उनके लोक में भेजें। भाई साहब को स्वास्थ्य व जीवन प्रदान कराएं।

15 मई 2009 की सुबह जब मैं योगा से आया तो उर्वी (पौत्री) बोली कि दादा आज शुभम (पौत्र) का जन्मदिन है। हम सब शुभम के स्कूल सामान बांटने जा रहे हैं और श्री कल्कि भगवान के मंदिर जाएंगे। मेरा माथा तुरंत ठनका अरे 13 मई 2009 की प्रात: सरोज क्या इसलिये आई है। खैर उन्हें जो-जो अच्छा लगता था मैंने योगेश (पुत्र) से कहा तुम अपने कार्यक्रम में सरोज की प्रसन्नता वाली चीजें भी जोड़ लो। जैसा कि बच्चों में किंतु-परंतु लगाने की आदत होती है, बावजूद उसके उसने उस दिन के कार्यक्रम में वह सब चीजें भी जोड़ लीं।

प्रिय बच्चों 16 मई को सुबह 11 बजे मेरे छोटे भाई डॉ० वी. पी. गुप्ता का रूंधे गले से फोन आया कि बड़े भाई साहब को तेज हार्ट अटैक आया और वे हमें

छोड़कर चले गए।

विशेष : यह जागृत अनुभव अपने में कई रहस्यमयी अनुभव व लीला संजोए हुए है जिसे कल्कि जी ने कृपा करी तो आप जल्द ही पढ़ेंगें।

जब मेहनत के बाद भी वैभवता नहीं

—मामाजी

मेरे बेटे को भगवान ने स्वप्नानुभव में दिखाया कि तुम जो भी व्यवसाय में रुपया लगाते हो या किसी से लेकर लगाते हो वह सब यहीं खत्म हो जाता है, कितनी भी मेहनत के बाद वह बढ़ता नहीं है। इसका **अर्थ—** वहाँ की पृथ्वी सोई हुई है। पुरानी जगहों में जहाँ पुण्य कर्म नहीं हुए होते वहाँ असुर शक्तियां जागृत हो जाती हैं, जो शुभ फलों का भक्षण कर लेती हैं।

उपचार— इसके लिये भगवान शंकर का रुद्राभिषेक सर्प-सर्पिणी का जोड़ा रखकर पूजा भी कराई जाती है जिससे वहाँ की पृथ्वी जागृत हो जाती है।

अत: हमने आचार्य प्रभाकर मिश्रा द्वारा रुद्राभिषेक के समय सर्प पूजा भी कराई। कटोरी में सर्प-सर्पिणी को बैठा कर उन पर फूल चढ़ाए गए। भगवान शंकर की आरती के बाद सर्प, सर्पिणी आचार्य जी को दे दिए। अगले दिन उसी स्थान (पूजा स्थल) पर जिंदा ढाई फुट का काला सांप स्टाफ ने देखा। उसे वहीं मार कर मुंडेर पर गिरा दिया जिसे चील उठा कर ले गई। इसके बाद इसी संदर्भ में दो और अनुभव आए, और सालों से चल रही परेशानियाँ धीरे-धीरे खत्म हुईं।

जब अस्पताल से कल्किजी ने घर भेजा

–विनोद कुमार गुप्ता हाथी दांत वाले 09211470752

(मैं विनोद कुमार गुप्ता आपको भगवान श्री कल्कि जी के चमत्कार की सच्ची घटना बताता हूँ)

मुझे ई.एस. आई अस्पताल में हाई ब्लड प्रेशर, अथवा हाई शुगर होने की वजह से भर्ती किया गया। वहाँ दिन पर दिन मेरी हालत बिगड़ती चली गई, कोई भी सुधार नहीं हो रहा था। भगवान श्री कल्कि जी की कृपा से मुझे फोर्टिस नोएडा में रेफर कर दिया गया। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने मुझे आई. सी. यू. में भर्ती कर दिया, और चैकअप के बाद बोले कि मेरा दिल और किडनी ठीक ढंग से काम नहीं कर रहे हैं। यह सुनकर परेशानी से मुझे पूरी रात नींद नहीं आई। जब मैं बिस्तर पर बैठा था तब वहाँ के एक डॉक्टर श्री शेखर मुझसे बोले आप सोते क्यों नहीं, मैंने कहा घबराहट की वजह से मुझे नींद नहीं आ रही। फिर डॉ० शेखर से

कल्कि भगवान के विषय में बहुत समय तक चर्चा चली, कुछ देर बाद डॉ० साहब ने मुझे नींद की गोली दी और चले गए। मेरी आँख लग गई।

स्वप्नानुभव में भगवान श्री कल्कि ने मुझे दर्शन दिये और कहा, कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, मुझे सब ज्ञात है तुम यज्ञ मंत्र की दो माला करके एक नींबू अपने पर से सात बार घुमाकर इसी यज्ञ में डाल दो। जब सुबह मेरा बेटा (हितेश गुप्ता) आया तो उसे मैंने अपना स्वप्न सुनाया तथा एक नींबू लाकर उसे अपने ऊपर से सात बार उतारने को कहा, और एक हवन आयोजित करने को कहा। और हवन मंत्र— ' ओम् नमः श्री कल्कि भगवते, म्मलेच्छ दल हंत्रे फट स्वाहा। ' इस मंत्र की दो माला के साथ हवन करके और वह नींबू जो मुझपर से सात बार वारा गया था वह हवन कुण्ड में डालने को कहा। मेरे सुपुत्र ने जैसा मैंने कहा वैसा ही किया। बोलो श्री कल्कि भगवान की जय। शाम को जब डॉ० आए तो उन्होंने कहा आपका दिल और किडनी दोनो ही सही स्थिति में हैं, कोई परेशानी वाली बात नहीं, बस एक चैकअप होना है और कहा कि किडनी दवाइयों द्वारा ही ठीक हो जाएगी। अगले ही दिन मुझे छुट्टी दे दी गई तथा 15 दिन बाद पुनः चैकअप कराने को कहा। यह चमत्कार भगवान श्री कल्कि जी की कृपा से ही संभव हुआ। अंत में मैं सब भक्तों से अपने अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूँ कि, दो माला '' जय श्री कल्कि जय माता की '' का जाप करने से और परेशानी की अवस्था में हवन करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

जब ज्वैलरी वापिस आनी रूकी

—कुमारी गरिमा गोयल (9999133046)

हमारा ज्वैलरी का काम है। हम अपनी आमदनी में से भगवान श्री कल्कि का प्रतिशत (.01) निकालते हैं लेकिन हमारे काम में ज्वैलरी वापिस भी आती है। यह बात मैंने मौसाजी से पूछी कि हमारे काम में सेल तो बढ़ी है लेकिन जो जवैलरी वापिस आ रही है, उसका हिसाब कैसे करूँ। मेरा भाई बोला कि भगवान को दिए रूपए में से रूपए निकालना मुझे सही नहीं लगता। इसपर मौसाजी ने कहा कि नारायण एक परफेक्ट व्यापारी हैं, आप सेल में से हजार रुपये अगर भगवान के निकाल रहे हैं और वापिस आने की वजह से भगवान के मान लो तीन सो रुपये कटने चाहिऐं तो भगवान के हजार रुपये नहीं सात सौ रुपये निकालें। (जब तक उनके रुपये नहीं कटेंगे वो अपना दर्द कैसे समझेंगे) आप भगवान के रुपये काटिए आपकी वापसी अपने आप रुक जाएगी। मौसाजी के कहने के बाद हमने ऐसा ही

किया और चमत्कार हो गया कि जो ग्राहक हमारी चीजें वापिस कर गए थे उनका दो दिन बाद फोन आया कि हम अपना पूरा सामान लेने आ रहे हैं। इस तरह हमारी वापसी कल्कि जी की कृपा से कम हुई या कहूँ रूक गई।

नोट:- जिस प्रतिशत में आप भगवान का रुपया निकाल रहे हैं वापसी आने पर उसी प्रतिशत में ही रुपया वापिस ले सकते हैं।

पुनर्भुगतान से राजद्वारे तक का सफर

—श्री राजन चौधरी कोलकाता (09830012386)

मेरे चाचा मोहनलाल जी का देहांत हुए 5 साल हो चुके हैं और जब तक वे जीवित रहे केवल मेरा और मेरे पूरे परिवार का बुरा चाहते थे। मूल रूप से वो बहुत ही दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति थे और अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को तकलीफ देकर उन्हें आनंद आता था। पिछले दो महीने से वो तीन चार बार मेरे स्वपनानुभव में आए और हर बार मुझसे लड़ाई-झगड़ा किया। ये बात मैंने अपनी बहन सुश्री इंदू बंसल को बताई और उसने मुझे कहा कि आप कुछ दिनों के लिए उनका पितृ-तर्पण करें। मैं कुछ दिनों से पितृ-तर्पण कर रहा था। उस समय मुझे यह अनुभव आया। आज से दस वर्ष पूर्व हम लोगों का संयुक्त परिवार था और समस्त व्यापार का नियंत्रण मेरे चाचा मोहनलाल जी के हाथों में था। वो अपने सामने किसी को कुछ समझते नहीं थे। उसी अवधि में मैंने उनका सामना किया, व्यापार अपने हाथों में लिया और फिर कुछ दिनों बाद उन्हें उनका हिस्सा देकर सारा व्यापार अपने नियंत्रण में कर लिया।

मैंने अनुभव में देखा कि जिस कुर्सी पर मेरे चाचा मोहनलाल बैठा करते थे मैं उसी कुर्सी पर बैठा हूँ और मेरे बगल में 500-1000 के नोटों की गड्डियाँ रखी हुई हैं। लेकिन मैं 5-5 के तीस-चालीस नोटों को गिन रहा हूँ। उससे मेरे शरीर में शक्ति का संचार हो रहा है। (जब-जब मोहन बाबू दिखते थे मेरी बहन सुश्री इंदू बंसल मेरे से सीधा और पानी की बोतल निकलवाती थी) इतने में मोहन बाबू ऑफिस में मेरी चाची के साथ आते हैं। (मेरी चाची अभी जिंदा हैं।) मेरी चाची बोलती हैं, मेरे चाचा से कि देखिए आपकी कुर्सी पर बैठा है। मोहन बाबू बड़ी तेजी से मार-पीट करने के उद्देश्य से बढ़ते हैं। मैं भी उसी तेजी से उनकी ओर बढ़ता हूँ और उनसे पंजे से पंजा मिलाकर और छाती से छाती मिलाकर उनसे कहता हूँ कि आपको झगड़ा करना है या समझौता करना है। बस इस बात पर मोहन बाबू अपनी पत्नी के साथ चुपचाप वापिस चले जाते हैं। उसी वक्त मेरे एक

और चाचाजी जिनका नाम मुरली बाबू है, जिनको मरे हुए तीन साल हो चुके हैं बगल की कुर्सी पर बैठे हुए दिखाई देते हैं। और जब मोहन बाबू शांत होकर जा रहे हैं तब मुरली बाबू दिखते हैं और वो मोहन बाबू को भड़काने की चेष्टा करते हैं । मैं उनका मुँह पकड़कर दबाते हुए बोलता हूं कि जब झगड़ा खत्म हो गया है तो आप इसको क्यों बढ़ा रहे हैं। जब ये चाचाजी से मेरा झगड़ा हो रहा था बगल में मेरे भाई खड़े हैं, कोई हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। मैं वैसे बहुत निडर आदमी हूँ और मुझे रात के 2 बजे शमशान घाट जाने में भी डर नहीं लगता, लेकिन इस अनुभव के बाद मैं बहुत डरा हुआ महसूस कर रहा था। मेरे दोनों हाथों में जिससे मैंने मोहन बाबू को पकड़ा था इस तरह का अहसास था कि जैसे दोनों हाथों ने बहुत मेहनत वाला काम किया है। और अधिक श्रम के कारण बेजान से लग रहे थे। अब मुझे डर के कारण नींद नहीं आ रही थी। एकाएक मेरा मस्तिष्क अपने आप **गायत्री मंत्र और कल्कि महामंत्र का जाप करने लगता है।** और मेरा डर अपने आप दूर हो जाता है और मैं गहरी नींद में सो जाता हूँ।

स्वप्नानुभव : मैं देखता हूँ कि एक बहुत बड़े राजनीतिक नेता से मिलने गया हूँ और वहाँ भी रात के 2–3 बजे हैं। मैं नेता के घर से निकलता हूँ और अपने भाई के साथ उसकी गाड़ी में बैठ कर चल देता हूँ मध्यरात्रि का समय है और सड़कें सुनसान है मुझे एकाएक ध्यान आता है मैं तो अपनी भी गाड़ी लेकर आया था और मेरी गाड़ी और ड्राइवर तो मैं नेता के घर के नीचे छोड़कर आ गया। वैसे अभी मेरे पास सैंट्रो गाड़ी है और मैं स्विफट डिजायर लेने की सोच रहा हूँ। अनुभव में मुझे लगता है कि मेरे पास डिजायर गाड़ी है जो नेता के घर के नीचे खड़ी है। मैं अपने भाई के ड्राइवर को बोलता हूँ कि गाड़ी वापिस लेकर चलो, हमारी गाड़ी वहीं रह गई है। ड्राइवर गाड़ी घुमाता नहीं है बल्कि बैक करके ही ले जा रहा है। अब मैं देखता हूँ कि गाड़ी के पीछे दो बदमाश आदमी आ रहे हैं और उनके आगे दो कुत्ते चल रहे हैं। कुत्ते मेरे देखते ही देखते शेर में बदल जाते हैं। मुझे अनुभव में बहुत डर लग रहा है। उसके बाद मैं नेता के घर पहुँचता हूँ तो देखता हूँ कि मेरे ड्राइवर का झगड़ा वहाँ बदमाश आदमी से हो रहा है। तब मैं उस बदमाश आदमी को धमकाता हूँ कि मुझसे जबरदस्ती का मत उलझ नहीं तो बहुत पछताएगा। और फिर बात खत्म हो जाती है।

इस अनुभव के बाद मैंने अपने चाचा के 4 वस्त्र और सीधा, पानी की बोतल और फिर प्रतिदिन उनका तर्पण करता रहा। ये तर्पण मैंने नवरात्रि की अष्टमी 19

अक्टूबर 2007 तक किया और फिर बंद कर दिया।

5 दिन के बाद मैंने अनुभव देखा कि हमारा 4 मंजिला पुश्तैनी मकान है। पहली मंजिल पर हम रहते हैं, दूसरी मंजिल पर मुरली चाचाजी और तीसरी मंजिल पर मोहन चाचाजी का परिवार रहता है। चौथी मंजिल पर छत है जो कॉमन है। मैं अनुभव में अपनी छत की ओर जा रहा हूँ जिसके लिए तीसरी मंजिल से होकर गुजरना पड़ेगा। मेरे मन में एक शंका है कि कहीं मोहन चाचाजी मुझे अपनी मंजिल के आगे न मिल जाएं। तीसरी मंजिल का मेन गेट खुला है, पर मुझे वो नजर नहीं आते तो मैं खुश हो कर छत की ओर बढ़ता हूँ , (अभी तक मेरे चाचाजी मुझे जब भी दिखते हैं तो बड़ी शान और शौकत से दिखते हैं और उग्र रूप में नजर आते हैं) अब मैं देखता हूँ कि मोहन चाचाजी छत के गेट पर बड़े मैले कुचैले कपड़ों में बैठे हैं, सिकुड़ कर छोटे हो गए हैं और बड़ी कमजोर स्थिति में हैं। मैं उनसे पूछता हूँ क्या खबर है मोहन बाबू तो वो बोलते हैं कि छत पर रिपेयर करवा रहा हूँ। अब मुझे छत के गेट से सामने का दृश्य नजर आता है। पीले रंग का दैवीय प्रकाश फैला है। सैकड़ों मजदूर काम कर रहे हैं। किसी बड़े निर्माण की प्रक्रिया चल रही है और उस प्रकाश को देख कर मुझे एक सुखद अनुभूति हो रही है।

मैंने अपनी बहन सुश्री इंदू बंसल को ये अनुभव बताया उसने फिर सीधा, पानी की बोतल, और 5 रू का सिक्का निकलवाया और कहा कि मोहन चाचाजी अब कमजोर हो रहे हैं। आप फिर तर्पण चालू कर दीजिए जिससे वो आगे आपको तंग न कर सकें।

बिना भाग्य के रूपया मिला

— श्री दीपक गुप्ता (9810880470)

मेरी शादी 10 दिसम्बर 2005 में हुई थी। मेरी पत्नी कल्कि जी का नाम शादी से पहले ही लेती थी। मुझे 15-16 जनवरी 2006 को अनुभव हुआ कि मेरी पत्नी के हाथ में एक थाली है जिसमें 5 रोटियाँ रखी हैं। उसमें से एक रोटी उसकी बड़ी ताई ले लेती हैं। मैंने अनुभव अपनी पत्नी को बताया। उसने मुझे कल्कि बाल वाटिका में संपर्क करने के लिये कहा। श्री ओ.पी. गुप्ता जी ने अनुभव को सुनते हुए बताया कि आपका रूपया कहीं अटका हुआ है वह मिलने वाला है जो कि आपके भाग्य में नहीं है, परन्तु कल्कि जी उसे आपको दिलवाना चाहते हैं।

बहुत ध्यान किया फिर भी कहीं कुछ ऐसा याद नहीं आया, फिर एकाएक याद आया कि पिछले 5-6 साल से हम एक कोर्ट केस लड़ रहे थे जिसकी

सुनवाई करीब 2 साल पहले पूरी हो चुकी थी। जज 2 साल से हर सप्ताह फैसला सुनाने के लिए तारीख़ लगाता है। परंतु टालमटोल करके अगले सप्ताह की तारीख़ दे देता है। हमारा वकील भी यही कहता कि हमारा केस मजबूत है, घबराओ नहीं हम ही जीतेंगे लेकिन हमने रूपया मिलने की आस छोड़ दी थी। मैंने यह बात गुप्ता जी को बताई तब उन्होंने उपचार व प्रार्थना बताई।

उपचार:- सिर्फ 5 हवन ''ऊँ नम: श्री कल्कि भगवते म्मलेच्छ दल हन्त्रे फट स्वाहा'' क्योंकि श्री कल्कि जी का नाम अभी मैंने नया नया लेना शुरू किया था।

17 जनवरी से मैंने मन में विश्वास रखकर प्रतिदिन एक हवन शुरु किया। चौथा हवन मैंने घर में शादी होने के कारण मिस कर दिया। मैंने पत्नी से पूछा कि इकट्ठे दो हवन कर सकता हूँ क्या? उसने कहा हाँ। मैंने अगले दिन दो हवन करके, 5 हवनों का संकल्प पूरा किया।

2 फरवरी को पुराने घर से मेरे दोस्त का फोन आया कि हमारी कुछ डाक उसके घर पर पड़ी है। क्योंकि हमारा और उनका पता कुछ-कुछ एक जैसा था। मैं पुराने घर गया तब मैंने पत्र खोला तो उसमें जज का फैसला था जो उसने हमारे पक्ष में किया था। फैसला 31 जनवरी का था यानी हवन के तुरन्त बाद ही जज ने फैसला लिखना शुरु कर दिया था।

जब मैंने वह फैसला अपने वकील को दिखाया तो उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं क्योंकि उसको भी ऐसे फैसले की आस नहीं थी। तब एडवोकेट ने कहा कि मैं सिर्फ आपको तसल्ली देता था, मैं भी अंदर से निराश हो चुका था। मुझे भी उसकी नीयत पर शक था क्योंकि दो साल तक कोई भी जज फैसला नहीं रोकता, उसके मन में हमें कुछ भी पैसा नहीं देने की थी। इतना पैसा तो सचमुच चमत्कार है, भगवान को धन्यवाद दो। मैंने तुरन्त कल्कि जी को धन्यवाद दिया।

बोल-कबोल को हल्के में न लें

—गीता गड़ौदिया (9313040701)

एक दिन जैसे बाँके बिहारी जी का बँगला सजता है और बिहारी जी झूले में बाहर आते हैं उसी प्रकार बिहारी जी झूले में बैठे हुए हैं। मैं उनके पास बैठी हूँ। मैंने घर में सबको आवाज लगाई कि दर्शन करलो, सब आए, दो तीन लोग तो दर्शन करके चले गए। मैंने कहा सब दस-दस रुपये चढ़ा दो तो किसी ने मुझसे कहा मां दस रुपये से क्या होगा? इस पर मैंने कहा कि अभी बच्चे हो जब बड़े होगे तो ज्यादा चढ़ा देना। तीन लोगों ने दस - दस रुपये चढ़ाए। मैंने सोचा औरों ने चढ़ाए

कोई बात नहीं। मैंने सुबह 100 श्याम बाबा के चढ़ा दिये। उसी दिन वंदना (मेरी बहू) ने मुझसे दिन में कही कि माताजी मैं जब बीमार थी तब मेरी भाभी ने 181 रुपये श्याम बाबा के उठा कर रखने को कहा था मैं देना भूल गई। मैंने उसी समय 181 रुपये वंदना का हाथ लगवा कर उठा कर रख दिये।

अर्थ : देवी देवता बड़े ही भावुक होते हैं अत: सोचने कहने से पहले विचार करो फिर किसी देवी देवता को जो करना है करो। संकल्प करके रुपए लिख कर रख दो ताकि याद बनी रहे। देवी देवताओं की प्रवृत्ति बच्चों जैसी बहुत नाजुक होती है। इनका भाग नहीं मिलने पर यह जिसके लिए बोला है उसको परेशानी में डालते हैं, जिसने बोला है उसको परेशानी में डालते हैं, जो उस परिवार में तेजवान है उसको दिख जाता है। भगवान श्री कल्कि की यह चमत्कारी स्वप्नलीला है जो वह कृपा करके हमें अनुभव में बता देते हैं।

अत: आप 30 रु और 100 रु बांके बिहारी जी के, 181 रु अपनी बहू वंदना के हाथ लगवाकर 2-2 बताशे साथ रखवाकर अगर अभी तक न दिए हों तो मंदिर में तुरंत चढ़वा दें और प्रार्थना कर दें कि हमारी भूल क्षमा करें हमें कल्कि जी के प्राकटय का प्रचार का काम करना है।

स्वप्नानुभव : मेरे सुन्दर बच्चा हुआ है, और मैं उसे यमुना जी में बहा आई हूँ, पर वह थोड़ी देर में वापस आ गया। फिर दिखा कि वहाँ मेरे ससुराल व मेरी मां की तरफ केसभी लोग हैं। सब ने कहा कि यह बच्चा रो रहा है। एक बार इसे दूध पिला दे। मैंने उसको अपना दूध पिलाया और उन सब से कहा कि अब मैं क्या करूँ? धर्म का पालन करूँ या इस बच्चे को पालूँ ? मेरे से इतना नहीं होता। मैं तो इसको यमुना जी छोड़ आई थी। यह फिर वापस आ गया। मैंने माँ होकर भी ऐसा किया पर क्या करूँ? इतना कह कर मैंने बच्चे को गोद में ले लिया और सब आदमी आपस में बातें करने लगे। यह क्या करे इसको बताना पड़ेगा? बच्चे को पाले या धर्म निभाए।

अर्थ : आपको दोनों हाथों से तलवार चलानी पड़ेगी। ठीक है आपके तीनों बच्चों के भी बच्चे हो गए हैं फिर भी इन तीन लड़कों को आपके बिना चैन नहीं है, न ही आपको। क्योंकि आपकी भक्ति मां अनुसूया जैसी निश्छल है। आप भगवान श्री कल्कि की भोली भाली भक्ता हैं जिन्होंनं श्याम बाबा के ही नहीं कल्कि जी के असंभव कार्य संभव करने में मदद की है। मन में मरने की बारे में हारी बात कभी भी मत आने दें। जब आए 20 रुपए अपने पर जुर्माना करके शुभ के डिब्बे में डाल

दें, जिसमें 10 रुपए गऊ माता के और 10 रुपए साहित्य के इससे आप बनी रहंगी एवं गृहस्थ व भगवान दोनों का आनंद लें पाएंगी। भगवान से अपने परिवार के स्वास्थय की कामना करती रहें ताकि सुख भी भोगें और भगवान का अच्छे से कार्य भी करें।

उपचार : श्याम बाबा, कल्कि जी का 20-20 रुपए से धन्यवाद का प्रसाद चढ़ाएं।

प्रार्थना : हे श्याम बाबा, हे कल्कि जी, मुझे स्वास्थय व जीवन दान दें। मैं सुखी भाव से स्वस्थ शरीर से सपरिवार वैभवता पूर्वक श्याम बाबा की गौरी शंकर मंदिर में मूर्ति लगवाऊँ एवम् भगवान श्री कल्कि के प्रगट करने के लिए उनके प्रचार का कार्य करूं। मुझे रास्ता दीजिए।

5 अप्रैल रात को 11:15 बजे स्वप्नानुभव : जैसे ओमो भइया ने मुझसे कहा कि बहन 1100 -1100 रुपये के दो जोड़ी कपड़े मर्दाने—एक जीजा की, एक और। मैंने कहा भइया 1100 -1100 रुपये तो बहुत ज्यादा हैं इस पर आपने कहा मैं बता दूँगा।

अर्थ : यह दोनों आपको निकालने पड़ेंगे। शुभ के डिब्बे में रुपए कम हैं तो 1100 का 5 प्रतिशत 220 रुपए निकाल दें। इसके मर्दाने वस्त्र के साथ सीधा, पानी की बोतल, दो जगह एक जीजाजी की और दूसरी मर्दानी शक्ति जो स्वप्नानुभव में दिखी थी।

कुछ दिन बाद ही मैं बहुत बीमार हो गई, मुझे अस्पताल में ले गए। वहाँ डॉक्टर ने कहा बीमारी बड़ी है पर मैंने कहा मैं दवाई नहीं लूँगी, मैं तो भगवान के नाम की दवाई लूँगी। इतने में इन्होंने (मेरे स्वर्गीय पतिदेव ने) मेरे मुँह में आकर कुछ डाला। उसके बाद मैं बिल्कुल ठीक हो गई। मेरे कोई बीमारी नहीं रही, डॉक्टरों ने कहा कि यह तो चमत्कार है, जो कोई भी बीमारी नहीं है।

निष्कर्ष : समय पर किए गए उपचार ने बीमारी से तो बचाया ही अस्पताल के मोटे बिल से भी बचा दिया। बन पड़े तो 129 रूपए हनुमान जी के योगी योगिनी के लगाकर धन्यवाद स्वरूप बाँट दें।

संकल्प करके उसे जल्द पूरा करो वरना सफलता असफलता में बदल जाएगी

— सुनील गुप्ता

मैं दुर्गा जी की 10-10-6 पूरी हलवे का संकल्प रोज लगाता था। आलस्य की वजह से संकल्प पूरे नहीं कर पा रहा था। करीब-करीब 250 संकल्प इकट्ठे हो गये। फिर भी मैं टालता रहा यह मेरी बहुत बड़ी भूल थी। उस भूल का नतीजा यह निकला मैं भारत सरकार द्वारा एक ऐसी परेशानी में पड़ गया जिससे शायद ही कोई निकल पाए। 6 महीने पहले परेशानी जरा छोटी थी पर फिर भी मुझे समझ में नहीं आया। मैं संकल्प पर संकल्प करता रहा परन्तु उसे पूरा नहीं किया। 6 महीने बाद उस परेशानी ने विकराल रूप ले लिया तब मैं हिल गया और सोचने लगा अब कुछ नहीं हो सकता। अब हम नहीं बचेंगे। मैंने कल्कि बाल वाटिका से संपर्क किया। गुप्ता जी ने कहा घर में जितने भी संकल्प हों पहले वो निकालो। जब मैंने उन्हें बताया कि 250 संकल्प हैं तब उन्होंने एक संकल्प करवाया कि हे दुर्गा महारानी आपके जो भी संकल्प हैं मैं जल्द से जल्द पूरे करूंगा, मुझे अपना बालक समझ कर क्षमा करें। मुझे कल्कि जी के प्राकटय का प्रचार का कार्य करना है। उस दिन से मैंने संकल्प पूरे करने शुरु कर दिये। जैसे ही संकल्प पूरे होने लगे वैसे ही शक्तियों को उनका भाग मिलने लगा। इतनी बड़ी परेशानी कब चली गई पता ही नहीं चला। भगवान श्री कल्कि की कृपा से हमारा बाल भी बाँका नहीं हुआ।

जब कल्कि जी ने स्कूल में बेटे का दाखिला करवाया

— दीपक गुप्ता (9810880470)

जब मेरा बेटा 3 साल का हुआ तो हमें उसके दाखिले की फिक्र होने लगी। हमने 7 स्कूलों में दाखिले का फार्म भरा। परन्तु हम सिर्फ 2 स्कूल में से किसी एक में उसका दाखिला चाहते थे। पहला के. आर. मंगलम और दूसरा मैक्स फोर्ट। जब लिस्ट आने वाली थी तब मेरे दोस्त से मेरी बात हो रही थी तब उसने पूछा कि कौन से स्कूल में दाखिला करवाना चाहते हो। मैंने दोनों स्कूलों का नाम लिया। उसने कहा कि मैक्स फोर्ट में यदि नंबर न आए तो बता देना उसका मालिक मेरा दोस्त है। अगले दिन पहली लिस्ट निकली के. आर. मंगलम की। उसमें हमारा नाम नहीं था। परन्तु हमें हमारे पड़ोसी से पता चला कि उनका नाम तीसरी लिस्ट में आया था। हमारे बिलकुल साथ वाले घर के बच्चे भी के. आर. मंगलम में जाते

हैं। इस तरह मन में था कि हमारा नाम भी आ जाएगा।

अगले दिन मैक्स फोर्ट की लिस्ट आई जिसमें हमारे बच्चे का नाम था। (हम हैरान थे क्योंकि साक्षात्कार के दौरान हमारे बच्चे के हाथ में टॉफी थी। वह उसे स्कूल की प्रिंसिपल के लिये लेकर गया था। जब प्रिंसिपल ने टॉफी मांगी तो बच्चे ने फेंक कर दी जो प्रिंसिपल के मुँह पर लगी थी। हमें लगा था कि अब तो यह हमारा नाम लिस्ट में से काट देगी। हमने तय किया था कि मैक्स फोर्ट में दाखिला करवा देते हैं। अगर के. आर. मंगलम में नंबर आ गया तो के. आर. मंगलम में करवा देंगे। फीस खराब होगी तो हो जाएगी। हम बाकी 5 स्कूलों में देखने भी नहीं गए कि हमारा नम्बर आया है या नहीं।

3 दिन बाद हमने बच्चे का दाखिला मैक्स फोर्ट में करवा दिया। मन में फिर भी था कि दूसरी या तीसरी लिस्ट में के. आर. मंगलम में नंबर आ जाएगा। ऐसा लगने लगा कि मैक्स फोर्ट में तो किसी का भी दाखिला आराम से हो जाता है और ऊपर से मेरे दोस्त ने कहा था कि स्कूल अच्छा नहीं है। हम इसी उलझन में थे।

उसी रात भगवान कल्कि ने हमें अनुभव दिया जैसे मैक्स फोर्ट स्कूल में सिर्फ एक कैन्डिडेट की जगह है और दो कैन्डिडेट हैं। एक वही दोस्त का बच्चा जो मुझे कह रहा था कि मैक्स फोर्ट का मालिक मेरा दोस्त है और दूसरा बच्चा मेरे उस दोस्त का था जिसका बड़ा बेटा पहले से ही मैक्स फोर्ट में पढ़ रहा है और मेरा दोस्त मुझसे कह रहा है कि अपने दोस्त दीपक को समझा कि वो अपने बेटे का नाम हटा ले ताकि मैं अपने बच्चे का दाखिला करवा सकूँ क्योंकि वहाँ एक सीट है और दो बच्चों का दाखिला हैं।

निष्कर्ष : भगवान श्री कल्कि ने बताया कि जो दोस्त इतनी बड़ी बातें कर रहा है कि मैक्स फोर्ट का मालिक मेरा दोस्त है वो खुद तुमसे अपने बच्चे को मैक्स फोर्ट में करवाने के लिये मदद मांग रहा है और दूसरा दोस्त अपना दूसरा बच्चा भी मैक्स फोर्ट में करवाना चाह रहा है। उसे पहले वाले बच्चे की पढ़ाई से संतुष्टि है तभी तो वह दूसरा बच्चा भी वहीं करवा रहा है।

उस दिन के बाद हमने अपने मन से के. आर. मंगलम का विचार निकाल दिया। हम दूसरी और तीसरी लिस्ट भी देखने नहीं गये।

उस और इस जन्म का कर्जा चुकाने का उपाय

—सुश्री ऊषा गोयल (9819522778)

मुझे अनुभव हुआ कि मैं कल्कि जी के कीर्तन में बैठी हुई हूँ। उसमें कल्कि मण्डल के लोग हैं। मैं कीर्तन से बाहर भण्डारे वाली जगह पर जाती हूँ। मैं कहती हूँ कि मैं और मेरी बेटी आजकल एक ब्राह्मण के घर रह रहे हैं। इस पर मेरी सखी थोड़ा आश्चर्य से कहती हैं कि आप लोग ब्राह्मण के घर रह रहे हैं लेकिन उनके घर का तो पानी पीना भी आपके लिये सही नहीं है। स्वप्न में ही मेरे मन में संशय चल रहा है कि ब्राह्मण के घर रहने से मेरे पति और बेटे को खाना कौन खिला रहा होगा? फिर मैं खुद ही सोचती हूँ कि बहू तो है वह खिला रही होगी। मैं बोलती हूँ, ''हमें तो पता नहीं था कि ब्राह्मण के घर का खाना पाप है।'' इस पर मेरी सखी कहती है कि अगर ब्राह्मण के घर कुछ खा लो तो पैसे देने ही पड़ते हैं। मैं बोलती हूँ कि जब से मैं ब्राह्मण के घर रह रही हूँ तब से मेरे दाँत में दर्द है, अब क्या करूँ? सखी ने कुछ हिसाब लगाया और कहा—बहन आप 60 परांठे, अरहड़ की बनी दाल और एक मटके में पानी दे देना, आपका और आपकी बेटी का कर्जा चुक जाएगा। मुझे कुछ परेशानी सी लगी तो वह कहती है, बहन आप 5 रुपये का संकल्प लेकर निकालिएगा सब ठीक होने लगेगा।

संकल्प—5 रुपये के सिक्के से संकल्प किया कि मैं जो परेशानियों के चंगुल में फँसी हुई हूँ, मुझे मेरे पति को रास्ता ही नहीं सूझता, लड़की की शादी कैसे करें? उसमें सब तरफ से अड़ंगे लग रहे हैं। जादू-टोने की शक्तियाँ पीछा नहीं छोड़ रही हैं। कल्कि भगवान मैं 60 परांठे, अरहड़ की दाल, मटके में पानी दूंगी। हम छः जनो के इस जन्म के व पिछले जन्म के कर्ज रूपी पाप दूर कराइये। पति-बेटे का व्यापार सही कराइये। बेटी की शादी कराइये। मुझे स्वस्थ शरीर से सपरिवार सुखीभाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी का प्रचार का कार्य करना है। हमें रास्ता दीजिए।

भगवान श्री कल्कि का अवतार गौ, विप्र, धर्म व भक्तों की रक्षा व सतयुग की स्थापना के लिये महज 5090 वर्ष में हुआ है जो चार लाख बत्तीस हजार में होना था। जिस प्रकार मिल्ट्री की नौकरी देते समय यह बौन्ड भरवा लिया जाता है कि देश में जिस समय आपातस्थिति (emergency) आएगी आपकी छुट्टियाँ कैंसिल मानी जाएंगी, आपका चाहे कोई भी कितना आवश्यक कार्य आपके शहर में रुका हो, उसको छोड़कर आपको तुरंत डयूटी पे हाजिर होना पड़ेगा।

प्यारे बच्चों, ऐसे ही किसी भी युग में भगवान का एवं समाज के लिये जिसने भी अच्छे कार्य किये हैं भगवान श्री कल्कि जी ने आपात समय में उन्हें इस धराधाम पर जन्म दिया है। उन्हीं (कहीं भी जन्में पल रहे ऋषि-मुनि, देवी-देवताओं) को हमें श्री हनुमान जी, श्री रामकृष्ण परहंस देव की घोषणा (संदेश) पहुँचाना है कि श्री कल्कि जी ने गौ, विप्र, धर्म, भक्तोंकी रक्षा के लिये अवतार लिया है। आप सब मन से कल्कि को पुकारो। इसके लिये वह आपके असंभव काम संभव (भाग्य में न होते हुए भी दिलवाते) कराते हैं। यह संदेश कल्कि जी के प्रचार, साहित्य, कीर्तन, हवन, सतसंग, मूर्ति स्थापना, लीफलेट, कल्किपुराण, मासिकपत्रिका, आपबीतियाँ, सहस्त्रनामावली, लेखनी आदि मंदिर उत्सवों में स्टॉलों द्वारा जो श्री कल्कि जी के काम के लिये आए हैं उन तक यह पहुँचाने हैं।

निष्कर्ष : भगवान ने आपके असंभव कार्य संभव करे हैं। उनका भुगतान करने मे एवं बोल कबोल पूरी करने में आपसे चूक हुई है। आपने झटके पड़ने पर कुछ भुगतान भगवान श्री कल्कि जी का कर दिया होगा क्योंकि आपके परिवार के चार सदस्य अपने घर में रह रहे हैं। आप दो अभी ब्राह्मण के घर में हैं। सो आप 5 रुपये का संकल्प करके 60 परांठे, अरहड़ की दाल, मटके (मिट्टी के किसी भी पात्र) में पानी देकर फिलहाल परेशानी से निकलें।

अनुभव जो आगे आए उसमें अपने मन से सोचकर नहीं उन पैनल मैंबर से बात करें जो इस परेशानी को झेलकर निकले हों। लापरवाही, लालच छोड़ें, सफलता अवश्य मिलेगी। ब्राह्मण के घर रहने का मतलब है कल्कि जी जो स्वयं ब्राह्मण हैं का पूरा भुगतान नहीं हुआ। आप दोनों का बाकी है। सो परेशानी तो आएगी, फिलहाल 60 परांठे खुद घर में बना कर दें, बाहर से न बनवाएं।

परिणाम—ऐसा करने से घर में डेरा गेरी परेशानियाँ हटीं, स्वास्थ्य सुधरा, बेटी की शादी हुई। असंभव कार्य संभव भाग्य में न होते हुए भी होने लगे।

अगर कलियुग के प्रभाव में आने पर सही शेयर न दे पाएं तो जिज्ञासू नीचे लिखे विवरण से धर्म के रूपए की गति का सही आकलन कर पाएंगे न समझ आने पर सम्पर्क हेतू फोन—9312533445

उपयुक्त स्वप्न अनुभव में दिखाए अनुसार घर में ऐसी बीमारियाँ दर्शाता है जो डॉक्टरों के भी समझ नहीं आती हैं। डॉक्टरों के पास मरीज की सन्तुष्टि के लिये उनकी हैसियत (पैसा खर्च करने की शक्ति) के अनुसार विभिन्न प्रकार की टैस्टिंगों के अलावा कोई रास्ता नहीं है। टैस्टिंग रिपोर्ट देखने के बाद खुश रहने

हँसने की सलाह, ताकत की दवा सन्तुष्टि मात्र के लिये लिखकर दी जाती है। घर में बेवजह के क्लेश व बनते कामों में रुकावट (बच्चों की शादी आदि अन्य व्यापारिक/सरकारी कार्यों में)। उपर्युक्त उच्च शिक्षित वैभवशाली परिवार भी अनुभव पैनल सदस्यों के द्वारा पूछे गए अपने अनुभवों (पूर्वाभास) के अर्थ उपचारों पर सहमत न थे, लेकिन दृष्टा और उसका परिवार इन सब परेशानियों से भलीभांति जूझ रहा है।

अत: कल्कि जी के शुभ का रुपया भगवान के संकल्प (बोल कबोल) के रुपयों को जितना जल्द बन पड़े बिना कौमा इन्वर्टिड कौमा के उसके स्थान पर भेजें ताकि श्री कल्कि जो भूमि भार उतारने आए हैं उनका कार्य आगे बढ़े।

श्री कल्कि जी का शुभ / साहित्य का खजाना

1. घर के सभी सदस्यों की भागीदारी —*पुरूष अपनी आमदनी में से, स्त्रियाँ घर खर्च के लिये मिले रुपयों में से, बच्चे अपनी पॉकेटमनी (माता-पिता, रिश्तेदारों से मिले रुपयों) में से कम से कम 100 रुपए पर 1 रु. अधिकतम 10 रु. के हिसाब से निकाल कर अलग-अलग अपनी गुल्लकों (डिब्बी/डिब्बों) में डाल दें। परिवार के किसी भी सदस्य को धर्म के कार्यों में रुपया लगाते समय सभी गुल्लकों में से थोड़ा-थोड़ा रुपया लेकर लगाने से परिवार के सभी सदस्यों को वैभवता तो मिलेगी ही, आमदनी भी स्वत: बढ़ेगी। परिवार की आमदनी के भी नए स्त्रोत दैवी शक्तियाँ स्वयं खोलेंगी बशर्ते अनुभव दिखने अथवा अवसर मिलने पर आलस्य, प्रमाद, संकोच न करना। भगवान श्री कृष्ण ने कर्म को प्रधान माना है। श्री कल्कि बाल वाटिका के कई सदस्य इसे अपनाकर वैभवता की ओर बढ़ चुके हैं एवं बढ़ रहे हैं।*

दिवाली से दिवाले तक का सफ़र

2. धर्म का रुपया अपने पास ज्यादा दिन नही रोकें अन्यथा यह पाप में परिवर्तित हो जाता है—*कल्कि जी के शुभ का खजाना कल्कि जी के प्रचार के कार्यों में लगाते रहें। श्री कल्कि बाल वाटिका धर्म के रुपए के द्वारा कल्कि जी के विभिन्न प्रकार के साहित्य प्रचार सामग्री , सिद्ध पीठों, (सनातन धर्मी समाज) में श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना, बालक-बालिकाओं को धार्मिक संस्कार देने हेतू जगह-जगह पर प्रति माह वर्कशॉप (पूजा, हवन, नृत्य नाटक, छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाकर सत्संग, अल्प प्रसाद आदि का) आयोजन करने का भरसक प्रयास लगभग 25 वर्षों से कर रही है। किसी प्रोजेक्ट में फंड की कमी होने पर यदि*

उधार लेकर भी कार्य को पूरा किया गया है तो हमने पाया है कि भगवान श्री कल्कि ने विशेष कृपा प्रदान करके उधार का रुपया भी शीघ्र चुकवा दिया। पहले आपने भी और हमने भी सुना है कि नया बाज़ार (अनाज मण्डी) कपड़े की कोठियों (दुकानों, प्रतिष्ठानों) में धर्म का (मुनाफे पर) 1-2 प्रतिशत रुपया खातों में निकाला जाता था/है। सरकारी हिसाब के कारण घर खर्च, ब्याह-शादी का खर्चा तो खातों (एकाउन्टस) में लिखते रहने से मालिकों के खाते तो पर्याय शून्य हो जाते थे/हैं। सनातन धर्म और उसकी गतिविधियों में सत्संग की कमी अथवा व्यस्तता के कारण धर्म का रुपया खर्च करने पर गौर नहीं किया। धार्मिक कार्यों, रामलीला जैसे उत्सवों पर भी जब कई जने आए तो उन्होंने भगवान के लिये श्रद्धा से नहीं आने वालों की इज्जत के अनुकूल 2/4 हजार रुपया दे दिये। लिहाजा व्यवसाय में रकम धर्म की ही लगी रही। जो कि पाप में परिवर्तित हो जाती है। आम सुनने में आता है कि अनाज वालों व कोठियों में ज्यादा दिवाला निकल गया ***सो अब स्वप्न अनुभवों के आधार पर इसका कारण समझ में आया है।*** *सो जब हम अपने-अपने परिवार के ऊपर खर्चें में नहीं सोचते तो भगवान के सनातन कार्यों में भी खुल कर भगवान का नाम लेकर रुपया खर्च क्यों नहीं करते। अरे वह तो हमें निहाल कर देंगे। विदेशी धर्म वाले आज हमारे देश में आकर अपने धर्म के रुपयों से हिन्दूओं तक का भी धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। हमारे ही देश में हमारी गऊएं कट रही हैं। बंगलादेश में खाने के लिये तस्करी हो रही है। हम सिर्फ अफसोस जताकर शान्त हो जाते हैं।*

है धर्म कसौटी काँटे में, होंगे इंसाफ सपाटे में
गाफिल मत रहना घाटे में, कल्कि जी कर में तोल रहे।

3. शुभ के डिब्बे से उधार लेना या देना — *शुभ के डिब्बे में पर्याप्त राशि न होने पर कल्कि जी के कार्यों में रुपया अपने पास से लगाकर उधार दिया यानि (+) की पर्ची डाल दें। कभी किसी परिस्थिति में शुभ में से उधार रूपया लेना पड़ जाए तो (-) की पर्ची डाल दें। उधार यदि लंबे समय तक का रहे तो कुछ अधिक रुपए ब्याज सहित शुभ के डिब्बे को वापसी कर दें।*

4. निरंतर प्रगति के लिये कुल सेल्स, रोज की आमदनी, या टर्नओवर ज्यादा होने पर भगवान का खजाना कैसे निकालें— *ऐसी स्थिति में जबकि आमदनी और खर्चों का हिसाब रखना कठिन हो या टर्नओवर ज्यादा हो मुनाफा ठीक-ठाक हो (किसी आइटम में कम किसी में ज्यादा, इस पापी मन द्वारा कौमा*

इन्वर्टिड कौमा ज्यादा न लगाएं।) तब 100 रुपए पर 1 प्रतिशत के बजाए (.1) प्रतिशत या (.05) प्रतिशत के हिसाब से कल्कि जी के शुभ का खजाना निकालें। उदाहरण के तौर पर कुल सेल्स रोज की 10,000 रुपए होने पर 1 प्रतिशत यानि 100 रु. रोज ज्यादा सेल्स कम मुनाफे की स्थिति में .10 प्रतिशत 10 रु. रोज भी निकाल सकते हैं।

5. संकल्प बोल-कबोल के रूपए और शुभ के रुपए में अंतर—*जब हमारा कोई काम अटक जाता है अथवा जिसमें बीच-बीच में रुकावट पड़ने की संभावनाएं हैं तब हम परिस्थिति अनुकूल 1 से अधिकतम 5 प्रतिशत तक का, मानसिक अथवा 5 रु के सिक्के से संकल्प लेते हैं। बन पड़े तो लिखकर पर्ची अवश्य रख लें। कालांतर में सत्यनारायण व्रत कथा की तरह हम भूल जाते हैं। इस संकल्प को देसी भाषा में बोल-कबोल भी कहते हैं। कार्य पूरा होने पर संकल्प का रुपया शीघ्रता के साथ भगवान कल्कि के तत्काल, चालू (current) प्रोजेक्ट (प्रचार कार्यों) में लगाने के लिए भेज दें। यह रूपया कल्कि जी द्वारा दिए गए स्वप्नानुभवों के उपचारों या कोई अन्य सनातन धर्म के कार्यों में नहीं दे सकते। प्रस्तुत हैं कुछ कल्कि भक्तों के साथ विभिन्न परिस्थितियाँ—*

1. एक कल्कि भक्त ने अपनी प्रापर्टी का बयाना आने पर कल्कि जी का 5 प्रतिशत हिस्सा श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी को कल्कि जी के प्रोजेक्ट में लगवाने के लिए भिजवा दिया। किसी कारण वश बयाना दो-तीन दिन बाद वापिस लौटाना पड़ा। वह कल्कि भक्त यह बात बताने में दुविधा महसूस कर रहा था लेकिन यह तथ्य पता लगने पर बाल वाटिका प्रभारी द्वारा उन्हें यह राशी लौटा दी गई कि (जब आपकी प्रापर्टी बिकेगी तब आप भगवान का हिस्सा) निकाल दें।

2. एक कल्कि भक्त की 10 लाख रुपए की पेमेंट रुकी हुई थी जिसे उसने यह मानकर कागज फाड़ दिए (बट्टे खाते में डाल दिया) कि अब यह रकम नहीं आएगी। उस सज्जन ने कल्कि पैनल मैंबर के परामर्श पर कल्कि जी को 5 प्रतिशत देने का संकल्प लेकर उपचार व प्रार्थना की। कुछ समय बाद ही उस पेमेंट में से उन्हें 3 लाख रुपए मिले। उन्होंने कल्कि जी का हिस्सा यह सोच कर नहीं निकाला कि जब पूरा रुपया आएगा तब निकाल देंगें। इसके फलस्वरूप उनका रुपया तो आना बंद हुआ साथ ही जरा काम में रुकावट भी आई। उसने कल्कि पैनल से विचार किया। पैनल मैंबर ने बताया कि श्री कल्कि जी को किसी

का अहसान नहीं चाहिए। यह कल्कि अवतार भगवान श्री कृष्ण की तरह नीति वाला अदले का बदला (जैसे को तैसा) जैसा है। तब उन्होंने आए हुए 3 लाख रुपए का 5 प्रतिशत निकाल कर भगवान के प्रचार कार्यों के प्रोजेक्ट लगाने के लिए भेजा। उन्हें आगे की पेमेंट तो मिली ही अड़ंगा भी हट गया अर्थात् जिस अनुपात में रूका हुआ रूपया आता रहे उसी अनुपात में भगवान का रुपया निकालकर भेजते रहें, उसे रोके नहीं।

इसी प्रकार का एक प्रकरण एक कल्कि भक्ता के ज्वैलरी केस में हुआ तो वहाँ भी पैनल मैंबर की राय थी कि उसकी कीमत ऑकलन करके कल्कि जी का शेयर दे दें। रुपया न हो तो ज्वैलरी का थोड़ा सा भाग काटकर उसका भुगतान करें।

6. शुभ के रुपए का 25 से 35 प्रतिशत साहित्य के कार्य में लगाएं— *भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना-साहित्य सृजन, बालक बालिकाओं में संस्कार हेतू 25 से 35 प्रतिशत रुपया अवश्य* ***लगाने का प्रयास करें।*** *जरूरी नहीं कि आप दूसरों से प्रचार कार्यों में लगवाएं। जब आप बड़े-बड़े एंपायर चला रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपके पास पूर्ण क्षमता और साधन हैं।*

अत: आप भी मामाजी की तरह आज से खुद श्री कल्कि जी के प्रचार का कार्य शुरु तो करें। देखें आप देखते ही देखते आप भी निहाल हो जाओगे, युगावतार श्री कल्कि जी का प्रचार करें।

भोजन तो नारायण हर प्राणी को दे रहे हैं। जमीन खोदने पर उसके नीचे रहने वाले कीड़े-मकौड़ों को भी भगवान खाना पहुँचा रहे हैं। श्री कल्कि जी को प्रकट करने के लिये भोजन पर हम आवश्यक खर्च करते हुए अधिकतम साहित्य, प्रचार सामग्री पर, बालक बालिकाओं में सनातन धर्म के संस्कार रोपने हेतु वर्कशॉप्स में रुपया लगाएं। इससे सनातन धर्म, कल्कि समाज जागरुक होगा। सब भगवान श्री कल्कि को जिह्वा के साथ आत्म ज्ञान द्वारा आत्मा से पुकारें। भक्तों को साधन ही नहीं साधन प्राप्त कराने के तरीके सिखाएं।

भगवान श्री कल्कि का अवतार और प्राकट्य जो 4 लाख 32 हजार साल बाद होना था, आज महज 5090 वर्ष में हो रहा है। अपने इस छोटे-छोटे 25 से 35 प्रतिशत सहयोग से श्री कल्कि जी के प्रचार द्वारा जहाँ भी जैसे भी हो प्रकट करने का प्रयास करते रहे। इसमें आपको श्री हनुमान जी, श्री रामकृष्ण परमहंस देव की निरंतर कृपा मिलती रहेगी। उत्सवों में रंग लगाना चाहते हैं तो कल्कि जी के साहित्य के द्वारा बालक-बालिकाओं को, समाज को, देश को जागरुक बनाएं

जिससे अधिक से अधिक देवी-देवता, ऋषि-मुनि कल्कि जी को पुकारें। श्री कल्कि बाल वाटिका के पास जो भी लिखित सामग्री है आप पैन ड्राईव कुमार विष्णु गोयल (7503215553)के पास भेजकर स्वयं छपवाने के लिये मैटर, कल्कि जी के विभिन्न चित्र फ्री प्राप्त कर सकते हैं। यह सच्चा काम है। आप छपवाएं, काम आगे बढ़ाएं, निहाल हो जाएंगे।

जब कल्कि जी ने जताया 'मैं हूँ तो'

—अंकुर गोयल जेमोलोजिस्ट (9818522778)

मैं गाड़ी चला रहा हूँ और गाड़ी में कल्कि महिमा सी.डी.1 का भजन न० 20 ''कल्कि पिता कल्कि माता'' चल रहा है, तभी मेरी गाड़ी के चारो ओर सुदर्शन चक्र घूमता हुआ एक सुरक्षा कवच की भांति उसे ढक लेता है। मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे स्वयं श्री कल्कि नारायण ने अपना सुरक्षा कवच मुझे दिया है और मैं निर्भय महसूस कर रहा हूँ।

अब, जब भी मैं यह भजन सुनता हूँ तो मुझे अपना यह स्वप्न अनुभव जागृत रूप में दिखने लगता है और मैं भावविभोर हो जाता हूँ।

अर्थ:- इसमें आपको प्रभु श्री कल्कि ने दिखाया है कि आपके अंदर जो डर बैठा हुआ है वह प्रभु के सुमिरन/गायन से चला जायेगा। अब आप डर और आलस्य को त्याग कर निर्भीकता से काम करके धन अर्जित करें। संशय को त्यागें, परिवार को आगे बढ़ाएं। बन पड़े तो अबकी बार श्री कल्कि जी को गोली मत देना।

उपचार:- 20 रुपये का संकल्प करके 15 रुपये का प्रसाद और 5 रुपये दक्षिणा किसी भी कल्कि मंदिर में चढ़ा दें। और प्रार्थना करें हे श्री कल्कि जी! आपने मुझे जो अपने प्रचार का कार्य करने पर जो दृढ़ता और निर्भीकता दी है वह बनी रहे और मैं आपके प्रचार के कार्य पहले की तरह करवाएं और आप मेरे परिवार-व्यापार को निरंतर आगे बढ़ाएं, झटकों से बचाएं।

जाने अंजाने में किए कल्कि जी के कार्यों से पाया

—सुश्री रेनू बंसल (9818000004)

ठीक से तो याद नहीं किंतु जो याद है बताती हूँ। बीच में से कुछ बातें भूल गई हूँ। मेरा चचेरा भाई बैठा है और उसके बराबर में मेरे पापा पीठ करके बैठे हैं। वहाँ मैं भी हूँ और मेरी बड़ी दीदी भी हैं। अचानक कोई बात करते हुए मेरे चचेरे भाई को गुस्सा आ गया और वह जोर से बोला मुझे अपनी बहन और भाई पर बहुत गुस्सा आता है, जब वह किसी और से कुछ भी मांगते हैं। मेरे तन बदन में आग सी लग जाती है, जब वह परिवार के दूसरे सदस्यों से मदद के लिये कहते हैं। मुझसे कहें जो भी जरूरत है। मैं और दीदी बोले चुप रहो पापा सब सुन रहे हैं, उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। मगर वह बहुत गुस्से में था और कहता रहा।

अर्थ:- यह सत्य है कि गंगा महारानी की कृपा से आपके पिता के पास अतुल्य धन वैभवता आई जिससे वे परिवार का व समाज का कार्य कर रहे हैं। लेकिन आपके चचेरे भाई यह सब कुछ न करते हुए भी अनजाने में कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार के कार्य में सहयोग दे रहे हैं। इसकी वजह से यहाँ उनके आत्मबल में वृद्धि हो रही है। आपके पिता के सामने कहे हुए शब्द उनके आत्मबल को दर्शा रहे हैं। अंतर्जगत धन व शारीरिक बल नहीं आत्मबल पर अधिक आधारित होता है।

उपचार:- आप अपने और परिवार से एवं अपने चचेरे छोटे बहन-भाई से अगर कह सकते हैं तो कहें वरना दीपक जलाकर भगवान से कह दे कि उनका अनुभव उन्हें ही दें । वह कल्कि को पहले तो मान रहे थे अब क्या किसी दूसरे धर्म को मान रहे हैं? बन पड़े तो 20 रुपये कल्कि जी, 20 रुपये दुर्गा जी का संकल्प करके गलती मानते हुए कल्कि जी का सुरक्षा कवच मांगे। इनका और आपका परिवार परेशानियों से घिरने वाला है। अभी तो कल्कि जी कह रहे हैं मैं हूँ नहीं तो फिर उन्हें कोर्ट कचहरी डॉक्टरों के यहाँ घूमना पड़ेगा।

प्रार्थना:- जाने अनजाने में हमारी गलती क्षमा करें। आलस्य प्रमाद दूर करके हमारी परेशानी बताकर इन्हें दूर करें। हमें आपके प्रचार का काम करना है हमें रास्ता दें।

जब अनहोनी होनी में बदली

—सुश्री श्रुति सर्राफ (कोलकाता)

यह अनुभव मुझे मेरी शादी के दस दिन पहले आया था कि कुछ कलियुगी आसुरी शक्तियाँ लड़कियों के रूप में अमित (मेरे होने वाले पति) के पीछे पड़ी हुई हैं। उससे फोन पर बात कर रही हैं और सारी बातें मुझे रिकार्ड करके सुना रही हैं। अमित एक पुतले की तरह खड़ा है। एक लड़की मुझे बोलती है कि अमित दूसरी लड़कियों को सुन्दर बोलता है, तुझें नहीं बोलता। तभी एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति सफारी पहने हुए, हाथ में छड़ी लिये हुए, मक्कार सा दिख रहा है। वह भी बोलता है, **''तू तो मेन बीवी नहीं होने वाली थी। तू तो कॉंप्लीमेन्ट्री टाईप होने वाली थी। तू तो मेन तभी हो सकती है, अगर बीच में कोई पुलिस केस (** दुर्गा जी 26 बताशे, तीन सिक्के 1-1-1 प्रतिदिन संकल्प **) नहीं हो तो।''** बोलकर वह हंसने लगता है। जैसे मजा ले रहा हो। तभी एक वैसा ही दूसरा बूढ़ा बोलता है कि उसके साथ गलत संबन्ध रखने के लिये अगर मैं हाँ बोलती हूँ तो वह **मुझे हथेलियों पर रखेगा।** कोई तीसरा बोलता है- **क्यों नहीं रखेगी, जरूर रखेगी।** उतनी देर में लगता है कि हमारा घर **हिलकर उल्टा हो रहा है।** मैं कल्कि जी कल्कि जी चिल्लाती हूँ।

उसके बाद 5-6 बूढ़े मेरे मान-प्रतिष्ठा पर प्रहार करना चाहते हैं।

उपचार:-

1. सीधा देवी स्वधा, और भोले बाबा के नाम प्रार्थना, उन 6 बूढ़ों का अतृप्त आत्माओं का भाग उन तक पहुँचाओं। वो मेरे मान-प्रतिष्ठा पर प्रहार न कर सकें। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

2. भोले बाबा का अभिषेक, 6 बार वैसी ही प्रार्थना।

3. 20 रुपये योगमाया महारानी का और प्रार्थना कि दैवी शक्तियों को प्रेरित करो कि मेरे होने वाले पति को दूसरी लड़कियों की तरफ आकर्षित न होने दें।

4. 20 रुपये काली मां के- हे काली मां! उन कलियुगी दुराचारी मक्कार आसुरी शक्तियाँ जो मेरे विवाह में बाधा डालना चाहती हैं, मुझे अपमानित करना चाहती हैं, उनको उनका भाग देकर, मुझे उनसे छुटकारा दिलवाइये।

5. 20 रुपये बगुला मां- हे मां कलियुगी, षडयंत्रकारी शक्तियों को उनका भाग देकर उनका मुख मस्तिष्क वाणी को बंद करो। जो मेरी शादी में बाधा डालना चाहते हैं और मेरे मान-प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना चाहते हैं।

6. 20 रुपये विश्वकर्मा जी- मेरे घर को गिरने से बचाओ।

7. चार दिन तक हलवा-पूरी दुर्गा मां का और प्रार्थना हे दुर्गा मां- जो पुलिस की कलियुगी, तांत्रिक, जादू-टोनो की शक्तियाँ, मुझे कल्कि जी द्वारा दिया गया मान नहीं लेने दे रही हैं, उनको उनका भाग देकर मुझको वैभवता पूर्वक अपने पति की मेन पत्नि बनने का पूर्ण सौभाग्य प्रदान करो। मैंने यह सारे उपचार किये और कल्कि जी की विशेष कृपा से मेरा विवाह निर्विघ्न संपन्न हुआ।

विशेष:- जैसा आपके साथ हुआ वह आपने अपनी बुआ के कहने पर घोर तप करके सावित्री की तरह पति-समाज में इज्जत वैभव पाया है लेकिन कमजोर ग्रहों से आप अभी ग्रसित हैं। इसके लिये निरंतर आप पति-पत्नी 10-10-6 बताशे तीन 1-1-1 के सिक्के महीने के शुरु में एक बार संकल्प कर दो और दुर्गा मां (काली मां) से प्रार्थना करें, मेरे पिछले खातों की पाप कर्मों की भारत सरकार की दंडनीय शक्तियों-यम की दंडनीय शक्तियों, कलियुग की शक्तियों की पूर्ति कराकर मैं मेरे परिवार को स्वास्थ्य सुखीभाव वैभवता दिलवा दें। (प्रतिदिन की दोनो की परेशानी जोड़ती रहें और परेशानी निकलने पर हटाती रहें) मुझे जब जैसे ही कल्कि जी मौका देंगे बिना आलस्य प्रमाद के, अहंकार को हटाते हुए गोली दिये बिना श्री कल्कि जी के प्रचार का कार्य करूंगी, हमें रास्ता दें।

हे मां! मेरे नए जीवन की शुरुआत में मेरा सहारा आप और श्री कल्कि प्रभु हैं- मुझे, मेरे परिवार को ऐसी शक्ति दो कि हम पहले से अधिक असंभव कार्य कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार से संभव करें। ताकि आप दोनो हम दोनो के साथ हर दम बने रहें- हम सब जगह पहले की तरह विजयी हों।

जैसा काम वैसा दाम

—मामाजी (9911830603)

एक कल्कि भक्त को स्वप्न अनुभव में एक सदस्य से किसी ने कहा कि 10 रुपये रोज पुलिसवाले को दिया करो, वह आपका ध्यान रखेंगे। उसके मन में आए दिन गिटपिट रहती थी कि चलो दे दूंगा।

एक दिन ऐसा अवसर आया कि किसी पुलिस ऑफिसर से बातों बातों में रुपये देने की बात चली। फिर तो उसके दिमाग में रुपये देने की बात आई और उसने बैठा ली।

कुछ दिन बाद उसे दूसरा स्वप्न अनुभव हुआ, जिसमें उसे पुलिस से कुछ काम कराना था। दो पुलिसवाले बैठे हैं, उसने उनसे कहा मेरा काम करा दो, मैं

आपकों नज़राना तो देता हूँ। उस पर वह पुलिसवाला बोला वह तो हमारी जानकारी का है, अगर अलग से काम का न दोगे तो जैसे औरों का हम हाथ मरोड़ते हैं, ऐसे ही तेरा भी मरोड़ देंगे, और उन्होंने उसका हाथ मरोड़कर नमूना दिखा दिया।

निष्कर्ष:- कल्कि भक्त सुगमता से जिसका जो भाग था देता हुआ, आगे बढ़ता चला गया। यहाँ भगवान ने भ्रम दूर किया कि मेरे हो तो मेरी बात तरीके से समझकर, इस कलियुग में आसुरी शक्तियों को उनका भाग समय-समय पर देकर उनका भुगतान करें। यदि सावधानी से उनका भुगतान न किया तो अर्जुन-द्रौपदी (अर्जुन, द्रौपदी के पाँचों पुत्रों का व अभिमन्यु का मारा जाना) की तरह अपनी अज्ञानता, आलस्य को दोष देना, मुझे नहीं।

जब बीमारी काबू न आए*

—मामाजी (9911830603)

एक सदस्य अपनी बीमारी के लिये उपचार कर रहा था, जिसमें धनवन्तरी जी से प्रार्थना, संकल्प के बाद ''हक् अनीह् निष्कलंक गौरण्डहा दुष्टा नाशनं पापहा।'' के उसने कई बार पांच-पांच हवन भी किये। एक स्वप्न अनुभव में उसे एक डॉक्टर दिखा, और कहा कि अब आपकी बीमारी पहले से अधिक बढ़ गई है, अब दवाई की मात्रा तीन गुणा बढ़ानी पड़ेगी। जबकी पहली बार की दवाई से ही वह घबरा गया था।

अर्थ:- वर्तमान की स्थिति तो ठीक दान-उपचार से संभली लेकिन कलियुगी शक्तियाँ उसके पुराने पापों का चिट्ठा लेकर भगवान के पास पहुँची कि यह सुखी कैसे रहेगा? इसके इतने ज्यादा पाप तो पहले के हैं, इससे वह तो भुगतवाओ। सो दोस्तों यहाँ भगवान ने स्वप्न अनुभव द्वारा चेताया है कि अब धनवंतरी जी के हवन का संकल्प तो करें, लेकिन मामला पुलिसवालों की तरह गंभीर है, लेन-देन बढ़ाना पड़ेगा जैसे:-

उपचार:- हनुमान जी की योग-योगनियों का संकल्प 129 रुपयों का करें, कि हनुमान जी मुझे स्वास्थ्य दें, डॉक्टरों, अस्पतालों के चक्करों से बचाएं, मैं आपका प्रसाद चढ़ाकर खुले सिक्के आपके योगी-योगनियों को बाटूंगा, मुझे रास्ता दें, मुझे कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

2. दुर्गा जी की योगी-योगनियों का 20-20 रुपयों का 5 दिन का संकल्प कि मैं कचौड़ी-आलू का साग सिक्कों के साथ आपकी योगनियों को बाटूंगा जो सड़क पर बीमारियाँ फैलाती हैं और मनुष्य को उसके पिछले जन्मों के पाप कर्मों का फल

भुगतवाती हैं। मुझे बचाएं, मुझे रास्ता दें, मुझे कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

3. प्रतिदिन 108 श्री कल्कि सहस्त्र नामों का पाठ भगवान को सुनाकर उन्हें फल अर्पण करते हुए कहें कि मैंने यह सतसंग आपके साथ किया, इससे मेरे पिछले जन्मों के पाप काँटें, मुझे रास्ता दें, मुझे सुखीभाव से आपका काम करना है। श्री कल्कि महिमा की सी.डी. में से 15 मिनट सत्संग सुनकर भी यही प्रार्थना करें।

*शर्म व डर से हिंदू जाति को बहुत धक्का लगा है। यहाँ आवश्यक जिज्ञासु के लिए लेखक की जगह * लगाया है वहाँ हमने पैनल मैंबरों के नाम दिए हैं जो आपको संबंधित अनुभव मैंबर का नंबर दे देंगे।

पिछले जन्म के पापों ने अपना भाग लेकर छोड़ा

—संकलनकर्ता मेघना गोयल (9911830603)

अपने पड़ोसी के लिये मुझे अनुभव आया कि हमारे घर की सीढ़ियों पर एक अजनबी सा दिखने वाला आदमी, हमारे पड़ोसी अंकल के कंधे पर आकर गिरा और एक दैवीय शक्ति रोते हुए कह रही है कि किसी और की आफत इनके सिर पर आ गई। अंकल के सिर पर शिखा देखकर मैं मन में सोच रही हूँ कि कितने सात्विक व धार्मिक हैं, फिर भी क्यों परेशानी में आ गए? ''

मैं असमंजस में थी कि इस अनुभव का क्या अर्थ हो सकता है? मैं इससे पहले कुछ समझ पाती की अगले ही दिन अंकल के घर पुलिस आ गई कि आपके नौकर ने एक व्यक्ति पर हमला किया है। उस व्यक्ति ने आपका नाम शिकायत में लिखवाया है, सो आपको थाने चलना पड़ेगा। अंकल बेगुनाह तो थे ही इसलिये वो थाने नहीं गए।

दो दिन बाद इस घटना ने उग्र रूप ले लिया और बात इतनी बढ़ गई कि उनके वकील ने उन्हें कुछ दिन घर पर न रहने की सलाह दी। मैं अपने स्वप्न का जिक्र इसलिये नहीं कर रही थी, क्योंकि हमें यहां आए केवल दो सप्ताह ही हुए थे, और हमारे पड़ोसी कल्कि जी के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे। पता नहीं वो कैसी प्रतिक्रिया देंगे, यह सोचकर मैं चुप रही।

एक दिन आंटी बाहर खड़ी थीं तो मैंने उन्हें संक्षेप में स्वप्नानुभव लीला के बारे में बताते हुए कहा कि आंटी यदि आप ठीक समझे तो दुर्गा जी का 10-10-6 पूरी हलवे के उपचार का 5 दिन का संकल्प लें। कल्कि जी विष्णु भगवान ही हैं, जरूर रास्ता देंगे। आंटी ने उसी दिन से ही दुर्गा जी का 10-10-6 पूरा हलवे के

उपचार का 5 दिन का संकल्प लेकर प्रार्थना करनी शुरु कर दी। साथ ही गाय माता व सूर्य भगवान से भी प्रार्थना की। मैंने श्री कल्कि जी का साहित्य भी उनके परिवार में पढ़ने के लिए दिया। पांचवे दिन आंटी को वाणी अनुभव हुआ, '' **नगर मंदिर में करोड़ों की चोरी हुई** '' इस का अर्थ था कि अभी यह मामला आसानी से हल होने वाला नहीं है। भारी मन से मैंने आंटी से कहा कि अभी आपको कुछ और उपचार करने होंगे। उन्होंने अपनी सहमती जताते हुए कहा कि, '' मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यह सुनकर मेरी आत्मा ने स्वीकार कि आंटी दिव्यात्मा हैं।

अब मैंने उन्हें शंकर जी का पंचामृत का अभिषेक, भैरों बाबा का रोट व 10-10-6 पूरी हलवे का उपचार पुन: बताया। साथ ही श्री कल्कि सहस्त्रनामावली में से 108 नाम पढ़कर कल्कि जी से उन्होंने 7 दिन तक लगातार यह उपचार व प्रार्थना की।

सांतवें दिन अंकल झूठे मुकदमे से बरी होकर अपने घर वापिस आ गए। मेरी आँखों से बरबस ही भगवान श्री कल्कि के प्रति आभार के आँसू निकल आए कि हे कल्कि भगवान आप कितने अच्छे हो। अंकल व आंटी ने सभी देवी-देवताओं का पुन: धन्यवाद का उपचार भी किया।

उपचार व प्रार्थना:- 10-10-6 पूरी हलवे का संकल्प 1-1-1 रुपये के तीन सिक्कों को हाथ

लगाकर **दुर्गा जी से प्रार्थना** हे माँ! कलियुग ने भारतीय सरकार द्वारा दण्डनीय पुलिसवालों के द्वारा मेरे पतिदेव को झूठे मुकद्दमें में फँसवा दिया है, उन्हें सुरक्षा कवच प्रदान करके इस मुकद्दमे से निकलवा दीजिए, हमें रास्ता दीजिए। मुझे कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

शंकर भगवान का अभिषेक करते हुए:- हे शंकर भगवान! जो आपके गण, कलियुगी, आसुरी शक्तियाँ मेरे पतिदेव को झूठे मुकद्दमे में फँसाना चाह रही है उन्हें उनका भाग देकर उनके स्थानों पर वापिस भेजिए, हमें रास्ता दीजिए मुझे कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

गाय माता, सूर्य भगवान से भी यही प्रार्थना नियमित जारी रही, कल्कि सहस्त्रनामावली में से प्रतिदिन 108 नाम पढ़कर कल्कि जी से भी यही प्रार्थना की। आंटी के मुख में हमेशा यही जाप चलता रहता था। उन्होंने कल्कि जी का महामंत्र, जय कल्कि जय जगत्पते। पद्मापति जय रमापते। भी कंठस्थ कर लिया व उसकी माला भी करने लगी।

मम्मी मुझे कल्कि जी ने बचा लिया

—रमणी अग्रवाल-रवि अग्रवाल (9899076251)

14 मई 2009 को मेरे पति को स्वप्नानुभव हुआ कि एक भयंकर दुर्घटना में उनके दोनों पैर कट गए। स्वप्न अनुभव का उपचार अनुभव पैनल के सदस्यों से पूछकर 17 मई 2009 को मैंने अपने पति से करा दिया। 18 मई 2009 को मुझे दिखा कि हमारे घर के सामने वाले पार्क में एक महिला अपनी बेटी को बहुत प्यार कर रही है, जिसको देखकर मैं अपनी बेटी को याद करके रो रही हूँ। अनुभव पैनल से पूछकर मैंने अपनी बेटी से यमुना महारानी से जीवन दान देने की प्रार्थना व उपचार करवाया।

24 मई 2009, रविवार को मुझे मेरे पति व बेटी को एक समारोह में दिल्ली से बाहर जाना था, लेकिन उसी दिन मेरी बेटी को अचानक तेज़ बुखार आ गया, जिस कारण मेरे पति को अकेले ही बाहर जाना पड़ा। मैं और मेरी बेटी घर पर ही रहे। रात को उत्सव से लौटते समय मेरे पति, जो एसटीम कार चला रहे थे, उसे एक बहुत तेज़ी से आती हुई सी. आर. वी. गाड़ी ने धौला कुआँ पर पीछे से ज़ोर से टक्कर मारी। मेरे पति की गाड़ी ने तीन पलटी खाई और एस्टीम गाड़ी सड़क के दूसरी तरफ जाकर गिरी।

कुछ देर बाद मेरे पति ने आँख खोली और अविश्वास की मुद्रा में अपने हर अंग को छूकर देखा और तसल्ली हुई कि हर अंग सही सलामत है। उन्होंने सबसे पहले घर पर माता जी को (सास को) फोन किया कि, ''आज तो मुझे कल्कि भगवान ने बचा लिया। मेरी गाड़ी पूरी तरह से क्षति ग्रस्त हो चुकी है। '' मेरे ससुर ने मेरे पति को कहा कि, '' मैं तुझे वहीं पर लेने आ रहा हूँ। लेकिन वह तो कल्कि भगवान की कृपा से अभिभूत खुशी और उल्लास से भरे थे सो बोले पापा इसकी कोई आवश्यकता नहीं है मैं ऑटो से स्वयं घर आ रहा हूँ।

मेरे श्री कल्कि अकाल मृत्यु हरणं हैं। यदि मैं और मेरी बेटी भी उस दिन कार में होते तो क्या होता? मेरी बेटी को अचानक जो बुखार चढ़ा था वह भी उसी रात क्यों उतर गया? मानो भगवान श्री कल्कि ने हम दोनों को जाने से रोकने के लिए कोई लीला की थी।

24 मई की रात्रि से तो मुझे भगवान श्री कल्कि के अनुभवों व उपचारों पर अटूट विश्वास हो गया।

जब बंदर मोबाइल लेकर चला

—मामाजी (9911830603)

एक कल्कि भक्त को यह अनुभव हआ कि बंदर उनका मोबाइल फोन लेकर चला गया।

अर्थ:- इसका अर्थ हुआ कि आसुरी शक्तियाँ उनका अंतर्जगत से संबंध तोड़ना चाह रही हैं। क्योंकि बंदर आसुरी शक्ति का प्रतीक है।

उपचार:- दुर्गा जी का 26 पूरी हलवा (10-10-6) 1 का सिक्का।

प्रार्थना:- हे दुर्गा महारानी! जो आसुरी, राक्षसी शक्तियाँ मेरा अंतर्जगत से संबंध खत्म कराना चाहती हैं, उनको उनका भाग दिलवाकर मेरा आंतरिक जगत से संबंध बना रहने दीजिए। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

भैरों बाबा:- हे भैरों बाबा! कल्कि जी ने आपको 4 रोट और दक्षिणा चढ़ाने को बताया है। मैं वैसा ही करूंगा। जो दुराचारी, तांत्रिक शक्तियाँ मेरा आंतरिक जगत से संबंध तोड़ना चाह रही हैं उनको उनका भाग दीजिए। मेरा आंतरिक जगत से संबंध विच्छेद न हो, मुझे सुखी भाव से कल्कि जी का कार्य करना है।

योगमाया जी:- हे योगमाया महारानी! मैं यह प्रसाद और 20 रुपये दक्षिणा हाथ लगा रहा हूँ। जो आसुरी शक्तियाँ मेरा आंतरिक जगत से संबंध विच्छेद करवाना चाह रही हैं, उनको उनका भाग देकर उनकी बुद्धि भ्रमित करके उनको हटाएं, मेरा संबंध विच्छेद न हो, मुझे कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

निष्कर्ष:- इसका निष्कर्ष यह है कि कुछ भाग्यवान लोगों को आपने जो कल्कि जी का सत्संग दिया, उन भक्तों का विश्वास जमा, इससे कलियुग की बेचैनी और बढ़ गई और उसने आपके पिछले जन्मों की फाइल निकाली और चिट्ठा कल्कि जी के पास ले गये कि आपको वैभवशाली नहीं बनने दिया जाये एवं आपका संबंध दैवी जगत से खत्म कर दिया जाये। उन्होंने आपका संबंध दैवी जगत से विच्छेद करने की अनुमति मांगी। भगवान ने आपके पापों की गठरी देखकर उन्हें यह अनुमति दे दी। क्योंकि भगवान का ये निष्कलंक अवतार है, वह राक्षसों और देवताओं में मतभेद नहीं रखते हैं। उन्होंने उधर तो आसुरी शक्तियों को अनुमति दी और इधर मोबाइल दिखाते हुए मुझे स्वप्न अनुभव दिया कि आसुरी शक्तियाँ मेरा दिव्य जगत से संबंध खत्म करवाना चाह रही हैं, तुरंत एक्शन लो और सावधान हो जाओ।

निष्कर्ष—स्वप्न अनुभव वाले ने तुरंत एक्शन लिया और उन्हें रास्ता मिल गया। और बच्चों देखो वह आगे बढ़ते ही जा रहे जिसमें सभी शर्ते लागू भी हैं।

बाल की खाल

—मामाजी

स्वप्नानुभव—नाई खाल पर से बाल काट रहा है। कल्कि नाम से उसे तरक्की मिली। उसने प्लानिंग के साथ दुकान बंद की। उस दुकान का ढाँचा ओवल शेप का दिखा।

अर्थ:- इसका अर्थ यह है कि पढ़ा लिखा समाज जो बाल की खाल निकालता है, आगे चलकर वह कल्कि जी का प्रचार का कार्य करेगा, तो ऊँचा उठता चला जाऐगा।

उपचार:- योगमाया/सरस्वती जी/गणेश जी/का हे योगमाया महारानी/विश्वकर्मा जी मेरी बुद्धि भ्रमित न हो। मैं भगवान के साहित्य के प्रचार का जो कार्य कर रहा हूँ, वह निर्विघ्न मुझसे संपन्न करवाइये, मुझे, मेरे परिवार को स्वास्थ्य, सुखी भाव, वैभवता प्रदान कराइये, मुझे रास्ता दीजिए, जैसा मुझे दिखाया है विश्वकर्मा जी से मेरे व्यापार में प्रगति कराइये।

सरस्वती जी:- हे मां! मेरी जिह्वा पर बुद्धि पर विराजमान होकर ऐसे शब्द निकलवाइये कि मुझे और मेरे समाज को वैभवता मिले, मेरा क्रोध शांत हो। मुझे सुखी भाव से कल्कि भगवान के प्राकट्य के लिए प्रचार का कार्य करना है।

गणेश जी:- हे गणेश जी महाराज! मेरी सुबुद्धि बनी रहे, मैं डगमगाऊँ नहीं, मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए। मुझे कल्कि जी के प्रचार का कार्य करना है।

विश्वकर्मा जी:- हे विश्वकर्मा जी मेरी दुकान व उत्पादन को ऐसे व्यवस्थित करा दो कि मेरा व्यापार बढ़े, मैं कल्कि जी का अधिक से अधिक प्रचार का काम करूँ।

बंदर दिखने पर

—सुश्री शलभ गोयल (9910066506)

मुझको घर के आंगन में 30-35 बंदर कूदते दिखाई दिये। हमारे घर के सारे दरवाज़े बंद हैं। मुझे डर लग रहा है। मैं अपने पति से कहती हैं कि बंदर बच्चों को उठाकर ले जाते हैं। कही हमारी परी (बेटी) को उठाकर न ले जाएं। मैं बहुत डरी हुई हूँ कि ये बंदर अंदर आ जाएंगे, हम उन्हें रोक नहीं पाएंगे। मैं परी को मेरे कमरे में छोड़ने की सोचती हैं । में नन्द के कमरे में परी को लाती हैं पर डरती हैं

कि बंदर उसे न ले जाएं।

अर्थ : आपकी बेटी भाग्यशाली है।

उपचार:-

1. 35 रुद्राभिषेक, काली जी, योगमाया जी, वासुकि जी का।

2. वासुकि जी का 1 लड्डू 1 सिक्का तब तक जब तक अनुकूल अनुभव न आ जाए।

3. काली जी का 20 रुपये से— कि जो आसुरी दुराचारी शक्तियाँ मेरे घर में उत्पात मचा रही हैं या हम से हमारी परी को छीनना चाह रही हैं, हमें उनसे बचाएं, उनका भाग उन तक पहुँचाएं। हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

4. ऊँ नम: कल्कि फट सवाहा मंत्र पूरे दिन परी के रूम में चलाकर प्रार्थना करें कि जो आसुरी शक्तियाँ हमारी बेटी को हमसे छीनना चाह रही हैं, उनसे हमारी बेटी को बचाएं। हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

5. योगामया जी का 20 रुपये से।

प्रार्थना:- जो बंदर रूपी आसुरी शक्तियाँ मेरी बेटी को किसी भी तरह से हानि पहुँचाना चाह रही हैं या हमसे छीनना चाह रही हैं, उन शक्तियों को सम्मोहित करें, उनकी दिशा मोड़ें और दैवी शक्तियों को प्रेरित कर उनकी कृपा दिलवाएं, अपनी भी कृपा करें, हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

सरला बहन जी का तरीका :- अगर दृष्टा सरला बहनजी की तरह दृढ़ होकर नाम जाप उपचार तब तक करे जब तक सकारात्मक अनुभव न आए तो मामाजी का कहना है कि वह लोक-परलोक की अनंत ऊचाइयों को छुएगा। दृष्टा अगर मामाजी के बताए तरीके से अनुभवों की सूची बना ले और प्रति सप्ताह उसको पूजा में अथवा जब समय मिले बन पड़े तो उसे वस्तु स्थिति मालूम चलती रहेगी कि—

1. किस अनुभव का उपचार बाकी है।

2. कौनसे अनुभव का पोजिटिव अनुभव आ गया।

3. कौनसे अनुभव का पोजिटिव नहीं आया।

4.लंबे समय तक भी पोजिटिव अनुभव नहीं आया तो पुन: पैनल मैंबर से सलाह लें। विश्वास करें आपके घर-व्यापार में अनंत सुख, धन, वैभवता स्वयं झलकेगी। बन पड़े तो इसी दृष्टा से मालूम करें।

जब तक पोजिटिव अनुभव न आ जाए तब तक प्रार्थना करनी है। उपचारों के

15 दिन बाद पोजिटिव अनुभव आया कि, परी बैठी हुई है, एक सुडौल बंदर परी का बार-बार मुँह नोचने की कोशिश कर रहा है। परी के चारो ओर सुदर्शन चक्र आ जाता है, तो चक्र की वजह से बंदर उसे छू नहीं पा रहा है। वो बंदर जितनी कोशिश करता है उतना ही वह चक्र भी तीव्र हो जाता है, उसमें से चिंगारियाँ निकल रही हैं और परी खिलखिला कर हँस रही है। उसे डर नहीं लग रहा।

इस अनुभव के बाद फिर कल्कि भगवान का फिर 20 रुपये हाथ लगाकर धन्यवाद दिया।

प्रार्थना:- हे कल्कि भगवान! आपने दिव्य सुदर्शन चक्र के द्वारा परिधि को सुरक्षा प्रदान की है। इसके लिए आपका धन्यवाद। हमें आपका काम करना है।

अब सिर्फ एक अभिषेक शंकर भगवान का होगा।

जब पितृ पित्रियों ने मंत्रो की रिकार्डिंग में मदद की

—मामाजी

अनुभव— मंत्र बॉक्स के लिये के लिये श्री कल्कि जी के सिद्ध मंत्रों की स्टूडियो में रिकार्डिंग चल रही थी। उसमें सालों, महीनों से रुकावटों पर रुकावटें ही आ रही थीं। आखिर एक दिन मुझे जीजाजी, बहनजी एवं उनकी नन्द इतने वैभवशाली रूप में दिखे जो मैंने 1970 के दशक में बैरूत (लैबनान) में राजा रानियों की वैभवता, किंग विक्टोरिया की सी छवि देखी थी। यह उसे भी फीका कर रही थी, वैसी वैभवता मैंने तीनों की देखी। साथ ही यह उत्सव पूर्ण वैभवता पूर्ण रूप में ही सम्पन्न हो रहा है।

अर्थ— स्टूडियो में जो हमारी मंत्र रिकार्डिंग होनी थी उसे एक मृदु भाषी भावुक साथी ने यह कहकर लंबा खिंचवा दिया कि मेरा कोई जानकार है, मैं यह काम मुंबई से सस्ता और अच्छा करवा दूंगा। समय निकलता रहा, हमारे पैनल के सभी सदस्य बहुत दुखी थे। अनुभव के उपरांत, तुरन्त निर्णय लिया कि पैसों की परवाह न करो। जो जैसे होगा करेंगे। जिस स्टूडियो में पहले से बात की थी वहाँ आज ही एडवान्स दो और काम चालू करवाओ।

दान पुण्य कर्म उपचार— तीन जनों का सीधा (दाल, चावल, चीनी, आटा, दक्षिणा के रुपये) का संकल्प लिया।

प्रार्थना— हे स्वधा महारानी! तीनों पितृ जो वैभवता पूर्वक दिखे हैं, उन्हें यह सीधा, गंगा जी मिले और वह अपने लोकों में जाएं। हमारे रिकार्डिंग के काम को एसी ही वैभवता से सफल कर दें, हमें रास्ता दें, मुझे कल्कि जी के प्राकटय के

प्रचार का कार्य करना है।

निष्कर्ष— हम उस दिन रिकार्डिंग पर गए। हमारे 5 मंत्रों की रिकार्डिंग हुई।

अनुभव—मुझे पिताजी का लंबी गर्दन वाला रूप दिखाई दिया।

अर्थ—पितृ का दिखना ज्यादातर परेशानी दर्शाता है। आज के दिन हमारी दूसरी रिकार्डिंग चलनी थी। हृदय को एसा झटका लगा कि अब फिर काम रुक जाएगा। लेकिन थोड़ी देर में दिमाग और शरीर नार्मल हुआ। पिताजी की स्वप्न वाली शक्ल को याद करके सोचने की कोशिश की, कि वह किस रूप में थे (क्रोध, शांत, दुखी, असमंजस) तो निष्कर्ष निकला वह मुस्कराते नज़र आए हैं तो मन को शांति मिली कि रिकार्डिंग रुकेगी नहीं। आज रिकार्डिंग साज के सभी आर्टिस्ट आएंगे और यह चालू रहेगी। क्योंकि रिकार्डिंग ग्रुप में से एक भी सदस्य न आए तो काम रुक जाता है। लेकिन कल्कि जी की माँ सरस्वती की कृपा से सब आए।

दान उपचार—एक पितृ का सीधा निकाला।

प्रार्थना—हे स्वधा महारानी! मेरे पिताजी को सीधा व गंगाजल प्राप्त हो। वह अपने लोक में जाएं। मुझ पर वह ऐसी कृपा करें कि आज स्टूडियो में कल्कि जी के मंत्रों की रिकार्डिंग बिना रुके पूरी हो जाए। कोई भी सदस्य आज छुट्टी न करे।

निष्कर्ष— काम रुका नहीं उस दिन और आगे बढ़ा।

पितृ के कढ़ी परोसने पर असाध्य रोगी की मृत्यु

अनुभव— जब अनुभव में पितृ लोग अथवा बड़े लोग खाना बनाते हुए या कढ़ी परोसते दिखें।

अर्थ— संशय छोड़ो, काम करो। परिवार में बीमार का ध्यान रखो। यह अपशकुन दर्शाता है।

दान पुण्य उपचार— त्रयंबकम् यजामहे सुगंधिम पुष्टी वर्धनं उर्वारुकमिव बधनान् मृत्योर्मोक्षय माम्रतात। मंत्र की एक माला अथवा यज्ञ (हवन) अस्वस्थ्य सदस्य की तरफ से आवश्यक है।

प्रार्थना : उन्हें (जिसको पितृ कढ़ी परोस रहे हैं या जो घर में अस्वस्थ है) जीवन दान दें, इन्हें कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है। बीमार सदस्य की तरफ से 5 रुपये के 5 सिक्के, भगवान शंकर के अभिषेक के लिये हाथ लगा दें और प्रार्थना करें कि हे शंकर भगवान! इनकी परेशानी दूर कीजिए, बीमार को जीवन दान दीजिए, अपने गणों (भूत प्रेत पिशाच) से इनकी रक्षा

कीजिए। रुकावटों से बचने के लिये संकल्प इतना प्रभावशाली है कि जिस प्रकार आपने एक लाख तक की इमारत का सौदा किया है उसके लिये बीस हजार रुपया बयाना दे दिया तो बिल्डिंग आपको मिलेगी तो संकलप तुरंत ले लें बेशक उपचार दो-चार दिन बाद कर दें।

विशेष— पितरों की उपेक्षा न करें। समय-समय पर वह जो चाहते हैं उन्हें दें। वरना वह पितृ लोक से हट कर शिव गणों में मिलकर आपके बनते पूरे होते हुए कामों में रुकावटें डालते हैं। आप असमंजस की स्थिति में आ जाते हैं। इस पर भी आप परवाह नहीं करते तो शिव गणों में जाकर मिल जाते हैं। जैसे मोहल्ले का दादा अंडर वर्ल्ड के दादा से मिल जाता है। शिवगण अलमस्त व क्रूर होते हैं। बार-बार ऐसा अनुभव दिखना एक या एक ज्यादा की मृत्यु को दर्शाता है।

पितरों से छत्तीस का आंकड़ा बिल्डिंग पर बेवजह कहर

अनुभव— व्यवसायी इमारत की छत्त पर (स्वर्गीय) सास ससुर चलते हुए दिखाई दिये।

अर्थ— इस अनुभव में जो इमारत दिखाई दी वह निर्माणाधीन थी। स्वप्न दृष्टा ने सोचा कि, मां बाऊजी आर्शीवाद स्वरूप दिखाई दिये हैं। अत: कोई उपचार नहीं किया (स्वत: ही अर्थ निकाल लिया) लेकिन बाद में इमारत के गिरने के आर्डर आ गए। अनुभव में कभी भी यदि पितृ इस प्रकार दिखाई दें तो फौरन उनका हिस्सा मात्र एक सीधे का संकल्प लेना चाहिए था अन्यथा विपत्तियाँ तो आएंगी ही। नाराज होने पर पितरों का 36 का आँकड़ा होता है।

कोई माने या न माने पितृों को तो भाग्यवान से भाग चाहिए

—उपासना गोयल (7503215558)

अनुभव— जन्माष्टमी का दिन है। एक मंदिर में मैं और मेरी माँ बैठी हैं। वहाँ बहुत शोर हो रहा है। मुझे अपने अंकल जिनकी मृत्यु हो चुकी है, दिखाई देते हैं, उन्हें पसीने आ रहे हैं, सफेद रंग की चादर बिछी है, उस पर लाल रंग से लिखा है "6 पितृ " और अदृश्य रूप से पितृ वहाँ बैठे भी हैं। मेरी माँ भगवान के दर्शन करके आती हैं। इतने में अंकल मुझपर जोर-जोर से चिल्लाते हैं। मैं डर कर उस सफेद चादर पर गिर जाती हूँ। मम्मी-मम्मी कह कर चिल्लाने लगती हूँ। माँ फौरन मेरी सहायता के लिये आती हैं, और मैं माँ के गले लगकर जोर-जोर से रोने लगती हूँ। अंकल धोखे से आकर हमें पकड़ लेते हैं और मैं चिल्लाने लगती हूँ।

अर्थ— अतृप्त पितृ शंकर जी के गण बन गए हैं। यहाँ दिख रहा है कि, परिवार के सदस्यों को घर व व्यापार में बेवजह क्लेश, धन आने में रूकावटें हो रही हैं असावधानि की तो और भी ज्यादा आएंगी।

उपचार— एक बार तुरन्त और बन पड़े तो प्रत्येक मावस के दिन भी सभी उपचार होंगे:-

1) उड़द की दाल की पिट्ठी का गोला बनाकर बड़े की तरह बीच में जगह बनाकर, उसमें कच्चा दूध 3 बार छोटी करछी से डालकर उच्चारण करें।

'' ऊँ पितृ तृप्ताय नम: ''

2) शंकर जी का अभिषेक, और प्रार्थना हे शंकर भगवान! जो आपके गण कलियुगी, आसुरी व अतृप्त शक्तियाँ व मेरे परिवार का विनाश करना चाह रही हैं, इन्हें इनका भाग देकर स्वधा महारानी के पास वापिस भेजिए। हमें सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

3) हथेली में काले तिल, जौं और चावल (मिले हुए) एक चुटकी भर लेकर पितृों का तर्पण करते हुए तीन बार बोले '' ऊँ पितृ तृप्तयां नम: '' हे स्वधा महारानी जो भी अतृप्त पितृ व पितरी हैं उन्हें श्राद्ध व श्राद्ध समर्पित उन्हें उनके लोक में पुन: स्थापित करें हम पर वह कृपा करें।

4) अंकल व अन्य पितरों का सिर्फ एक सीधा एवं प्रार्थना— हे स्वधा महारानी! इस सीधे के द्वारा अतृप्त पितृ को उनका भाग दिलवाइये। मेरे परिवार का बुरा होने से बचाएं। हमें कल्कि जी के प्रचार का कार्य करना है।

जब दोतरफा पितृ दोष हो

—सुश्री सविता चौधरी (कोलकाता)

अनुभव— बेटी कोलकाता में है, उसकी स्वर्गीय मां (मायके वाली)रांची में रहती थीं, ननद (बेटी की) जिसके पति बीमार हैं मद्रास में रहती है। वह ननद से खून मांग रही है। बेटी को अनुभव आया कि अस्पताल में स्वर्गीय मां बेटी से खून की बोतल मांग रही है।

अर्थ— यहाँ दोतरफा, पितृ दोष दर्शाता है।

उपचार— दो चमच सफेद चन्दन चूरा लेकर उसे जलाएं, फिर उसकी राख सीधे हाथ में रखकर 11 बार ऊँ पितृ दोषाय नम: कहें। यह कोलकाता वाली लड़की व चेन्नाई वाली ननद दोनो को करना है।

2) भाभी व ननद दोनों ही पितरी के लिये एक-एक सीधा निकालेंगी।

3) ननद के पति से जमुना जी से 5 रुपये का सिक्का जीवन रक्षा के लिये निकालकर श्रीकृष्ण के आगे चढ़ा कर कहें कि इसे यमुना जी के पास पहुँचा दें।

पितृ यदि मल में सना दिखे

अनुभव— जब पितृ ऊपर नीचे से मल से सना हो।

अर्थ— यह पितृ को परेशानी में दर्शाता है।

उपचार— उस पितृ का नाम लेकर जौं, तिल व चावल से उनका तर्पण करके कहें कि उसको श्राद्ध समर्पण। यह तर्पण 11 दिन तक करें।

जब पितृ भोग विलास मुद्रा में दिखे

अनुभव— जब पितृ अथवा अनुभव देखने वाला भोग विलास की मुद्रा में हो।

अर्थ— यह अनुभव अशुभ का द्योतक है। इस में घर व व्यापार में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके लिये नांदी श्राद्ध करने से अशुभ टलता है।

दान पुण्य उपचार— नांदी श्राद्ध में शंकर जी के अभिषेक का 5 रुपये का सिक्का हाथ लगाकर संकल्प करें कि हे भोले बाबा मैं नांदी श्राद्ध करुँगा। मुझे व मेरे पितर को असुविधा से बचाएं। जिस प्रकार शंकर जी का अभिषेक करते हैं उसी प्रकार अब शुरु में कहें कि हे शंकर भगवान मैं यह नांदी श्राद्ध कर रहा हूँ इसे स्वीकार कीजिए, मुझे व मेरे परिवार को बचाइये, यह कहकर 5 रुपये का सिक्का चढ़ा दीजिए। एक सीधा निकालें, जिसमें दो कटोरी आटा आधी कटोरी दाल चावल व चीनी तथा एक पुड़िया नमक और साथ में 5 रुपये का सिक्का और प्रार्थना करें कि हे स्वधा महारानी मैं यह पितृ जो भोग विलास में दिख रहे हैं उनका सीधा निकाल रहा हूँ/ रही हूँ। यह उन तक पहुँचाइये, उन्हें जा चाहिए वह उन्हें दिलवाइये। वह और हम परेशानी से बचें, वह अपने लोक में जाएं। हमें श्री कल्कि जी के प्रचार का कार्य करना है। यह संकल्पित सीधा शंकर जी की पिंडी से छुआ कर वहीं सुरक्षित स्थान पर रख दें।

चोरी होने से बचें

स्वपनानुभव : मेरी जेब से रुपये थोड़े बाहर आ रहे हैं। मेरे तीनों तरफ तीन चोर लड़के हैं।

अर्थ : रुपयों को संभालकर गुजराती सेठों की तरह सीधे करके एक पर एक लगाकर रखें। लेन देन में सावधानी बरतें। यह धन-हानि दर्शाता है।

उपचार: भैरों बाबा का 20 रुपये से रोट का संकल्प।

प्रार्थना: हे भैरों बाबा जो कलियुगी आसुरी शक्तियाँ मुझे आर्थिक नुकसान पहुँचाना चाहती हैं, उनसे मेरी व मेरे परिवार की रक्षा कीजिए। मैं 20 रुपये से यह संकल्प कर रहा हूँ। आपको चार रोट चढ़ाऊँगा। मुझे व मेरे परिवार को धन हानि से बचाइये। मुझे सुखीभाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

विशेष : वैभवता के लिये रुपये तरीके से लगाकर जेब व पर्स रखने से लक्ष्मी जी को इज्जत मिलने से अभिवृद्धि होती है।

आओ सग्रह घंटे

—मामाजी

सुबह दिन निकलने वाला है, मैं पैट्रोलपम्प पर गाड़ी लेकर आया हूँ। वहाँ भगवान जीजाजी के रूप में बैठे हैं। मैंने उनके पैर छुए। उन्होंने खुश रहने का आर्शीवाद दिया और बोले ''जूते कल से पहने हैं! अर्थात क्या कल से काम ही कर रहे हो रात को आराम भी नहीं किया'' (जैसा की ऐसा पहले कई बार हो चुका है) मैंने कहा— नहीं मैं अभी सुबह उठकर आया हूँ। मैंने उनके माथे पर हाथ फेरा जैसे उन्हें पसीना आया हुआ है।

नोट: भगवान हमें अनेक रूपों में दर्शन देते हैं, उस रूप में जिसमें हमारी अनुभव सांकेतिक भाषा होती है। अपने ऊपर चल रही परिस्थिति के हिसाब से हल निकालें तो श्रेयस्कर होगा। फिर भी समझ न आए तो अनुभव पैनल के मैम्बरों से अवश्य बात करें। यहाँ जीजाजी के रूप में श्री कल्कि जी ने कुछ आवश्यक निर्देश दिये हैं।

अर्थ: रात्रि के चौथे पहर में जल्दि उठिए। योगा में घूमने अवश्य जाऐं। लगातार काम न करें। बीच में थोड़ा आराम अवश्य करें। लेकिन हरामखोरी में भी न पड़े रहें। काम करना, धन्धे व्यापार नौकरी पर जाना बहुत जरूरी है- तभी पैट्रोल मिलेगा अर्थात घर और व्यापार की गाड़ी तभी चलेगी उससे ही घर व समाज में इज्जत मिलेगी। बीच में यदि आराम न किया तो लंबे अरसे तक बीमार होने पर स्वस्थ होने में ज्यादा समय लगेगा, ऐसी उनकी सलाह है।

उपचार: गाय माता को भोजन देते समय भैरों बाबा का संकल्प लेते समय।

प्रार्थना: हे गाय माता, हे भैरो बाबा, मुझे शक्ति दो कि मैं अपने कामों को सत्यता से निभाऊँ और कलियुगी शक्तियाँ जो मुझे आराम नहीं करने देतीं, मुझे आराम दिलवा दें ताकि मेरा स्वास्थ्य बना रहे। मैं पहले की तरह लंबे अरसे तक बीच-बीच में बीमार न पड़ूं इस प्रकार मैं व्यापार और श्री कल्कि जी का कार्य सुचारु रूप से कर सकूँ।

निष्कर्ष: सत्रह घंटे के संबोधन से डॉक्टर राजीव गोयल स्वप्न दृष्टा पर कटाक्ष किया करता था। मुझे दो वर्ष सर्दियों में 5 से 9 हफ्तों तक परेशानी उठानी पड़ रही थी। इस अनुभव के बाद अपनाए तरीके से 2008, 2009 और 2010 में तो बिलकुल स्वस्थ्य रहते हुए नैमिषारण्य तीर्थ में श्री कल्कि जी की मूर्ति लगी। उसके बाद से श्री हरि कल्कि काम ले रहे हैं और वर्ष 2011 में प्रतिमास के अनुसार श्री कल्कि जी की मूर्ति लगीं।

घर का टूटा दरवाजा

यदि अनुभव में घर का दरवाजा टूटा दिखाई दे।

अर्थ: घरेलू कलह को दर्शाता है।

उपचार: हनुमान जी के योगी-योगनियों का 20 रुपये लेकर कहें हे हनुमान जी अपने योगी-योगनियों को मेरे घर में कलह करवाने से रोकें मैं आपका प्रसाद बाँटकर प्रसाद व बाकी रुपये आपके योगी-योगनी, भिखारियों को (जो मन्दिर के बाहर बैठते हैं) दूँगी। इन शक्तियों को ऐसा करने से रोकिए, हमें सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

शील भंग का प्रयास

मैं बहुत ही खतरनाक रास्तों से होकर निकल रही हूँ। बहुत परेशानियाँ उठानी पड़ रही हैं। आगे चलने पर दो लड़के मुझ पर प्रहार करना चाहते हैं। तभी कोई शिकारी कुत्ते की चेन हाथ में देकर कहता है कि आप इसके साथ जाओ। वह कुत्ता मुझे सही सलामत मंजिल/घर तक छोड़ जाता है।

उपचार: भैरो बाबा का 20 रुपये का संकल्प कि मैं बुधवार को चार रोट चढ़ाऊँगी। 20 रुपए से कुत्ते को दूध का संकल्प।

प्रार्थना: हे भैरो बाबा जो कलियुगी आसुरी शक्तियाँ मुझे खतरे में डालकर राक्षसी दानवों द्वारा मेंरा शील भंग व धन-संपदा लूटना चाह रही हैं उन्हें उनका भाग देकर मुझे अपने कमांडो द्वारा सुरक्षा प्रदान करवाते रहें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक श्री कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

भैरों बाबा के वाहन दो कुत्तों को धन्यवाद करते हुए दूध दे दें।

आसुरी शक्तियों द्वारा प्रहार

मुझ पर चीता, बाघ और जानवर वार कर रहे हैं, और मैं एक को उठाकर फेंकती हूँ तो दूसरा वार करता है लेकिन मैं बहादुरी से उनसे लड़ रही हूँ तभी कोई मेरी सहायता करने के लिये डंडा पकड़ाता है, और मैं उन पर वार करती हूँ। मेरी आँख खुल जाती है।

उपचार: 5 रुपये के सिक्के से शंकर जी का अभिषेक 20 रुपये हनुमान जी के योगी-योगनी का संकल्प काली जी का 20 रुपये का संकल्प

प्रार्थना: हे शंकर भगवान/हनुमान जी/काली जी जो आपके गण, योगी-योगनी मुझे व मेरे परिवार को मांसिक, आर्थिक व शारीरिक नुकसान पहुँचाना चाहती हैं उनसे मेरी रक्षा कीजिए हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

भयानक जानवर द्वारा प्रहार

मुझे अपने घर में एक भयानक जानवर दिखा। हमारे घर में एक छोटा सा बच्चा आँगन में खेल रहा है, और एक बच्चा गेंद लेकर आया है। श्री कल्कि बाल वाटिका की दो बालिकाएं हम सब को उस भयानक जानवर से बचाने की कोशिश कर रही हैं। वह भयानक जानवर उनमें से एक लड़की का हाथ पकड़ लेता है, लेकिन वह लड़की उसे ऊपर से नीचे धक्का दे देती है। वह जानवर गिरकर भी मरता नहीं है और उठते हुए कहता है कि मैं ऊपर आ रहा हूँ। मेरी आँख जय श्री कल्कि जय माता दी बोलते हुए खुल जाती है।

उपचार: काली जी का 5 रुपये से संकल्प गिरी गोले पर सतिया बना कर मौली बाँधकर चढ़ाना है

प्रार्थना: हे काली जी मैं आपको गिरी गोला व दक्षिणा के 5 रुपये चढ़ा रही हूँ इस भयानक एवं दैवीय शक्तियों की जानवर रूपी राक्षस को उसका भाग देकर मुझे, मेरे बच्चों व मेरे पूरे परिवार की रक्षा कीजिए इसका दमन कीजिए, हमें रास्ता दिखाइये। हमें सुखी भाव से वैभवतापूर्वक श्री कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

जोखिम भरा जीवन

छोटा बच्चा रो रहा है। मैंने उसे पास बुलाया तो साथ में बहुत सारे बच्चे आ गए। मैंने सभी को उपहार दिये। फिर मुझे कुछ सरकारी लोग दिखाई दिये जो मुझ

से कुछ मांग रहे हैं। उन सबको भी मैंने उपहार दिये। उसके बाद मैंने देखा कि, मैंने सरकारी लोगो को जो उपहार दिये हैं, उनकी एन्ट्री एक रजिस्टर में देख रहा हूँ। स्वप्न में ही यह भाव आता है कि सब ठीक है। वहाँ से निकलकर मैं अपने घर के लोगो के साथ बस में चढ़ता हूँ।

अर्थः इसका अर्थ है दृष्टा का जीवन कठिनाइयों से भरा है। बाल श्री कल्कि सच्चाई से अवगत करवा रहे हैं आपकी आराधना बोल कबोल के तरीकों में कमी है इसलिए आपको मदद नहीं मिल रही है सो बाल कल्कि आपको रोते हुए दिख रहे हैं। मिलते मिलते रूक जाता है।

उपचारः दो सीधे, पानी की बोतल, दुर्गा जी का उपचार, गणेश जी का 20 रुपये का प्रसाद व कुछ सिक्के मन्दिर के बाहर गरीब लोगों में बाँटें।

प्रार्थना: हे स्वधा महारानी जी यह दो सीधे निकाल रहा हूँ इन्हें स्वीकार करें। इनके द्वारा पित्र गणों में जिसका जो भाग है, उनको पहुँचा दें। जिससे मेरे बनते कामों में रुकावट न आए। मुझे कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

दुर्गा जी का उपचारः 26 पूरी हलवा व 3 रुपये। हे मां भारतीय सरकार के दंडनीय अधिकारियों को जो भाग वह मुझसे चाहते हैं, उन को दिलवा दें, जिससे मेरे बनते कामों में रुकावट न आए। मुझे कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

गणेश जी का उपचार: गणेश भगवान को 20 रुपये की सफेद बरफी का भोग लगाएं व प्रार्थना हे गणेश भगवान! मेरा कार्य पूरा होने में जो विघ्न बाधाएं आ रही हैं उन्हें दूर कीजिए मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

इन उपचारों का संकल्प लेने के बाद उसी रात्रि पुनः स्वप्न अनुभव हुआ कि— काफी भीड़ वाली जगह है वहाँ से एक साँप निकल कर भागा है। उसके पीछे एक कुत्ता भाग रहा है उसने झपटकर उस साँप को पकड़ लिया और मारना शुरु कर दिया।

निष्कर्षः जिसका जो भाग आपने दिया तभी जड़ में बैठा सांप निकलकर भागा और भैरो बाबा ने आपको अपने कमांडो से सुरक्षा दिलवाई वरना ज्यादा जटिल परेशानियों में फँस जाते।

उपचारः भैरो जी का 20 रुपये+10 रुपये का संकल्प ले रहा हूँ, आपको रोट चढ़ाऊँगा इसे स्वीकार कीजिये आपके वाहन (कुत्ते) को दूध अथवा बरफी

दूँगा। जिस प्रकार आपने अनुभव में मुझे सुरक्षा प्रदान की है, प्रत्यक्ष प्रदान करके मेरे कष्टों का निवारण कीजिए।जो आसुरी शक्तियाँ मुझे ।।द्ग्द्वद्दद्धह्ल श्द्ध द्दय्श्ह्र4पर जाने में रोड़े अटका रही हैं उन्हें दूर हटाएं मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

विशेष : श्री गणेश जी को सफेद बर्फी स्वप्न अनुभव में कष्ट निवारक बताई है। एकदम आई विपदा के लिए गणेश जी को अर्पित करें।

कल्कि जी के शुभ/धर्म के खजाने से खिलवाड़ नहीं

सत्यनारायण व्रत कथा हो रही है। कथा की समाप्ति पर जब पण्डित जी अपना सामान लेकर जा रहे थे, साथ में एक ब्राह्मण और दिखा। मैंने कहा, ''जो सामान आप लेकर जा रहे हैं, उस में से इस ब्राह्मण को भी दे देना।'' इस पर वह पण्डित जी नाराज हो गए और सामान दिखाकर बोले, ''इसमें है ही क्या जो इसे भी दे दूँ—दो फूल माला हैं और दो चार फल।'' इस पर मेरे पति बेटे की तरफ इशारा करके बोले, ''जो रुपये तेरे पास रखवाए हुए हैं, उस में से इन्हें 1100 रुपये दे दो।''

अर्थ: दैवी शक्तियाँ अतृप्त हैं, बीमारियाँ आएंगी, आपको सावधान रहना होगा। कल्कि जी का शुभ का रुपया ज्यादा दिन अपने पास न रखें। उन्हें कल्कि जी के प्रगट होने के लिए प्रचार के कार्यों में जल्द से जल्द लगाते रहें तो घर मे खुशहाली के साथ रुपया आपके चाहने से भी ज्यादा आएगा।

उपचार (दान): कल्कि जी के शुभ के रखे रूपयों में से 1100 रुपये का हनुमान जी का प्रसाद और सिक्के योगी योगिनियों को बाँटने का संकल्प लेना होगा। इन रुपयों को प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को हनुमान जी को 100 रुपये में से 70 रुपये का प्रसाद चढ़ाकर 30 रुपये के 1, 2, 5 के सिक्के मंदिर के बाहर बैठों को बाँट दें।

प्रार्थना: हे हनुमान जी! यह हम आपके योगी योगिनियों के लिये प्रसाद चढ़ा रहे हैं, इसके द्वारा उन्हें उनका भाग दे दें। हमें संकटों व बीमारियों से बचाइये। हमें श्री कल्कि जी का कार्य करना है। यदि बीमारी घर में है या आनी शुरु हो गई है तो इस मंत्र का 21 बार जाप शुरु करें—

''ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ हूँ जूं स:''

यदि भक्त के शुभ के डिब्बे में रूपए कम है और 1100 रुपये निकालने की शक्ति न हो तो इसका 5 प्रतिशत अर्थात 55 रुपये का संकल्प ले लें, जिसमें से 35

रुपये का प्रसाद और 20 रुपये के सिक्के मंदिर के बाहर बैठे गरीबों को बाँट दें। मोटी रकम के मामले में 0.5 प्रतिशत भी ले सकते हैं।

बस से सिर कुचलने से बचा

—श्री राजन चौधरी, सविता चौधरी (कोलकाता) 09830012386

15 अक्टूबर 2007 को अनुभव हुआ कि हमारा परिवार सालासर बालाजी के दर्शनों को गया है। हम कहते हैं कि चलो झुनझुनवाला भी चलते हैं। गाड़ी ड्राइवर चला रहा है, राजस्थानी इलाके से गाड़ी जा रही है, तभी हमारा ड्राइवर कहता है कि बाबू मेरे सिर में देखना कुछ हुआ है क्या? मैंने उसका सिर देखा तो उसके टाँके खुल गए हैं और खून बह रहा है।

उपचार (दान-पुण्यकर्म-इलाज): ड्राइवर से धनवन्तरी जी का ''हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टा नाशनं पापहा'' की 5 माला और भैरों जी का 1 रुपये 2 बताशे और काली जी का 1 रुपये 2 बताशे से संकल्प करवाएं।

प्रार्थना: 1 हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टा नाशनं पापहा की माला करके प्रार्थना हे कल्कि भगवान यह माला आपके अर्पण है, मुझे धनवन्तरी वैद्य जी की कृपा दिलवाते हुए, भविष्य में सिर पर लगने वाली चोट, असाध्य रोग से बचाइये, अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करवाइये, मुझे आपका कार्य करना है।

2 भैरों बाबा से—हे भैरो बाबा/काली मां जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी शक्तियाँ मेरे सिर पर भयंकर प्रहार करना चाह रही हैं उन्हें उनका भाग देकर ऐसा करने से रोकिए। मुझे कल्कि जी का काम करना है।

यह सारे उपचार करने के बाद 16 अक्टूबर 2007 को रात्रि 10 बजे जब ड्राइवर साइकिल पर अपने घर वापस जा रहा था तभी उसका जबरदस्त एक्सीडेंट हुआ। साइकिल बुरी तरह टूट गई, वह उछलकर **सड़क पर जा गिरा।** उसका **सिर ट्रक के पहिए के बिलकुल पास था**। लेकिन **कल्कि भगवान ने समय** से पहले स्वप्नानुभव दिखाकर जो उपचार करवाए थे, उसकी वजह से **उसे खरौंच तक नहीं आई**। इसके बाद उन सभी उपचारों **को पुनः धन्यवाद के साथ करवाया।**

संघर्षमय जीवन

—श्री राजन चौधरी, सविता चौधरी (कोलकाता) 09830012386

आसाम जा रही ट्रेन जैसे पहाड़ी पर चल रही है, और लगा परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं। मुझे सपरिवार आसाम के लिये जाना था, उसके ठीक 2 दिन पहले मेरी बेटी को यह स्वप्नानुभव हुआ।

उपचार: भैरों जी 1 रुपये और 2 बताशे (4 दिन के लिये) काली जी के 1 रु 2 बताशे (4 दिन)

प्रार्थना: हे भैरों बाबा/काली मां कलियुगी, आसुरी, दुराचारी शक्तियाँ हमारी यात्रा के बीच में कोई परेशानी न खड़ी करें। हमें मुसीबत में न डालें, इसके लिये उनका भाग उन्हें दे दें। हमें सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

आसाम पहुँचने के बाद दूसरे दिन मुझे पुनः अनुभव हुआ—

मुझे कोई तकलीफ हो गई है, और डॉक्टर दवाई लिखकर दे रहे हैं। मैं डॉक्टर से कहता हूँ कि कल्कि भगवान का चमत्कार तो देखो। उठकर देखा तो मेरे पास ही दवाइयों का पर्चा रखा था।

उपचार : धनवन्तरी जी का हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टा नाशनं पापहा की 5 माला का संकल्प।

प्रार्थना: हे श्री कल्कि भगवान मुझे धनवन्तरी वैद्य जी की कृपा दिलवाते हुए किसी भी होने वाली अकस्मात दुर्घटना व असाध्य रोग से बचाएं। मुझे शारीरिक स्वास्थ्य दिलवाएं मुझे सुखी भाव से वैभवता पूर्वक आपके प्राक्टय के लिए प्रचार का कार्य करना है।

उपचार : इस संकल्प को करने के बाद मेरे साथ जो घटित हुआ, कल्कि भगवान का चमत्कार ही है। एक उत्सव के दौरान वहाँ काफी लोग थे, मैं कोने में रखी एक कुर्सी पे जाकर बैठ गया। कुर्सी टूटी हुई थी। मेरे बैठते ही कुर्सी उलट गई, और जिस तरीके से मैं गिरा, **शत्-प्रतिशत् मेरा सिर वहाँ पर बनी नुकीली मुंडेर पर लगना ही था और मेरा सिर घहरा फटना ही था।** लेकिन संकल्प पूरे किये जाने की वजह से उस दिन यह दुर्घटना सूली से कांटा बन गई अर्थात मैं कुर्सी से गिरा अवश्य, मैं भयंकर विपदा से बच गया। मैंने पुनः उपचार करके कल्कि भगवान का धन्यवाद किया।

कल्कि साहित्य सृजन से आनंद

—सुश्री स्वाति जैन (09968314876)

वाणी अनुभव— सन् 2007 में मुझे एक कल्कि भक्ता के लिये एक दैवी शक्ति के द्वारा वाणी अनुभव हुआ कि वह पढ़ने के लिये जो विदेश जा रही है और उसे पांच मुश्किल विषय पढ़ने हैं। एक दैवीय शक्ति द्वारा उन्हें निर्देश मिलता है कि वहाँ उसे शेरनी (ख्र्श्ठ्ठद्गह्यह्य) बनना पड़ेगा क्योंकि किताबों में ऐसा लिखा है कि वहाँ भेद-भाव बहुत है।

अर्थ: वाणी अनुभव बताता है कि उस भक्ता को अपनी पांचों ज्ञान इन्द्रियों (स्द्गठ्ठह्यद्गह्य) को शेरनी बनकर अपने पर विश्वास रखकर सूझ-बूझ से काम लेना पड़ेगा। भगवान श्री कल्कि के प्रचार के लिए साहित्य का कार्य करने हेतु सरस्वती जी, गंगा महारानी जी से रास्ता मांगे, अगर समझकर कर गई तो साहित्य सृजन आपको निहाल कर देगा।

उपचार : हे गणेश जी, गंगा महारानी व सरस्वती मां! मुझपर कृपा करते हुए मुझे ज्ञान एवं सद्बुद्धि प्रदान कीजिए। हवन में ऊँ ऐं ऊँ की आहूतियाँ डालकर भी यही प्रार्थना करें कि मां मुझे उपहास से बचाओ हे मां कल्कि भगवान का कार्य करते हुए मैं उनके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं। मुझे सपरिवार सुखी भाव से स्वस्थ शरीर से वैभवता पूर्वक रानियों की तरह कल्कि जी के प्राक्टय के लिए प्रचार का कार्य करना है।

उपचार संकल्प की पुष्टि भक्ता के शब्दों में : पहले मैं दो नावों पर सवार थी। राम कृष्ण परमहंस जी के आवेशावतार पण्डित लक्ष्मीनारायण जी की कृपा से मुझे सही दिशा मिल गई। भगवान श्री कल्कि का साहित्य सृजन के कार्य से जुड़कर तो देखते ही देखते मेरा परिवार निहाल हो गया।

जब कल्कि जी ने बैंक में नौकरी दिलवाई

—कुमारी मेघा गर्ग (9990485395)

मैंने एक नौकरी के लिए बैंक में साक्षात्कार दिया था। उसके डेढ़ महीने बाद मुझे अनुभव आया कि हमारे घर एक पत्र आया है जो बैंक से आया नियुक्ति पत्र है। तभी मेरे दादा जी एक छोटे से बच्चे के साथ ऊपर आते हैं, और पूछते हैं, अच्छी तरह देखलो बुलाया है या नियुक्ति पत्र है। मम्मी कहती हैं कि नहीं नहीं नियुक्ति पत्र है।

अर्थ: बिल्कुल साफ है बैंक में नौकरी मिलेगी।

उपचार: भगवान श्री कल्कि को उसी समय 20 रु के प्रसाद का संकल्प

प्रार्थना: हे कल्कि भगवान, आपने जो स्वप्न अनुभव मुझे दिखाया है उसे सत्य कीजिए। मुझे नियुक्ति पत्र दिलवाइये। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक आपका कार्य करना है। यही प्रार्थना इसी प्रकार मेरी मम्मी ने भी की।

चमत्कार : अगले ही दिन दोपहर को 2.30 बजे मुझे बैंक में नियुक्ति का पत्र मिल गया।

उपचार: भगवान श्री कल्कि जी का पुन: नियुक्ति पत्र मिलने का धन्यवाद।

प्रार्थना: हे कल्कि भगवान आपने जो स्वप्न अनुभव सच करके दिखाया है उसके लिये आपका धन्यवाद करती हूँ। इसी प्रकार आगे भी मेरा मार्गदर्शन करते रहें, मुझे आपका काम करना है।

विशेष: इस स्वप्न अनुभव से पहले इस कल्कि भक्ता के द्वारा यह उपचार डेढ़ महीने से चल रहे थे—

1 सूर्य भगवान को प्रतिदिन जल समर्पण एवं प्रार्थना।

2 कल्कि जी को आठ बार की नमस्कार, माला एवं प्रार्थना।

3 गाय माता की रोटियों का संकल्प करके हाथ लगाना एवं प्रार्थना।

4 हनुमान चालीसा का पाठ करने के बाद फल समर्पण एवं प्रार्थना।

जब सिलैंडर छत से फेंका

—सुश्री ऊषा गोयल (01123952028)

मुझे अनुभव हुआ कि मैं पुराने मकान की छत्त पर गैस पर काम कर रहीं हूँ। लपटों के तेज होने के कारण हाथ जल रहे हैं। हमारे हितैशी बड़े जीजाजी जिनका शरीर शांत हो चुका है। वह एक तौलिए द्वारा सिलेन्डर को ढक रहे हैं ताकि इससे लपटे कम उठें परन्तु मैं कहती हूँ कि ऐसे तो आग लग सकती है। मैं छत्त पर बैठे सभी लोगों को वहाँ से हटने को कहती हूँ। इतने में जीजाजी सिलेन्डर को छत्त से नीचे फेंक देते हैं। मैं कहती हूँ कि ऐसे फेंकने से नीचे दुकानों, फैक्ट्रियों में आग लग जाएगी। परन्तु ऐसा नहीं होता। सिलेन्डर से लौ पतली हो जाती है। मुझे लगता है कि कुछ समय बाद हानि किये बिना शांत हो जाएगी। जागने पर सिलेन्डर से आग के तीन बड़े गोले भी निकलते देखे।

अर्थ: इस अनुभव में जो समस्या दिख रही है, वह विकराल है। जिसे हितैशी पितृशक्ति चाहते हुए भी हल नहीं कर पा रही है। हो सकता है यह समस्या अभी दबी हुई है, परन्तु भविष्य में यह अत्यंत विकराल रूप ले सकती है। अत:

सावधान रहें।

उपचार/दान: शंकर जी के 5 रुद्राभिषेक का संकल्प, एक पितृ का सीधा। बन पड़े तो अमावस्या के दिन भी एक सीधा निकाल दें।

प्रार्थना: हे शंकर भगवान, मेरे यहाँ आपके गण आसुरी शक्तियाँ, षड्यंत्रकारी चालबाज मक्कार शक्तियाँ विध्वंस करना चाह रही हैं उन्हें उनका भाग देकर ऐसा करने से रोकिए। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

गुमशुदा पितृ की तृप्त पितृ पर पैनी नजर

हमारे घर में मेरे स्वर्गीय जेठ बैठे हुए दिखे, मैंने उनसे पूछा हमने जो भागवत कराई थी, उसके बाद पिताजी दिखे क्या? तो वह बोले— हां, बाथरूम करते हुए दिखे थे। मैंने कहा चलो तेज़ की प्राप्ती हुई। फिर उन्होंने मेरे आगे हाथ फैलाकर कहा, 16 जगह छोले कुलचे दो।

अर्थ: यह अनुभव भविष्य में घर व व्यापार पर आने वाली परेशानियाँ दर्शा रहा है।

उपचार/दान: डॉक्टर बाला जी जिन्होंने भागवत में पितृ पूजा का सम्पूर्ण अनुष्ठान किया था, उन्होने संकल्प करवाया कि 16 जगह कुलचे छोले, दक्षिणा के साथ अमावस को ब्राह्मणों को दें।

प्रार्थना: हे स्वधा महारानी जी! हमारी पूजा अर्चना में जिसके भाग में जो कमी रह गई है, इनके द्वारा उसे पूरी करा दीजिए। हमें समृद्धि प्रदान कीजिए। घर और व्यापार में जो परेशानियाँ आ रही हैं या आने वाली हैं उन्हें दूर कीजिए।

विशेष: पितृों का एक सीधा, उड़द की दाल की पिट्ठी बनाकर उसमें (सांभर वड़ा की तरह) छेक करके 3 बार कच्चा दूध चम्मच से ऊँ पितृ तृप्तायय नम: करके फिर पीपल के पेड़ में चढ़ाना बहुत उत्तम है।

कल्कि उत्सवों में दिखावा नही श्रद्धा में दैवी आगमन

भगवान श्री कल्कि की बाल वाटिका व उत्सव हो रहा है। उस में बहुत सी देवियाँ आ रही जा रही हैं। बहुत सी शक्तियाँ बैठी हुई हैं, प्रसाद ले रही हैं। ममतामयी **देवी झलक** भी दिखलाई दी। **जबरदस्ती छीनने वाले अपना सामान उठा रहे हैं,** तो मैंने उनका सामान उठाने में साथ दिया।

अर्थ: जहाँ भगवान का कीर्तन होता है, उसमें शक्तियाँ आती हैं व प्रसाद लेकर जाती हैं। तुम श्रद्धा और विश्वास से लगे रहो जितने आएं समझों बहुत आए। चिंता मत करो। श्री कल्कि उत्सवों में

इजाजत लेकर पितृ शक्तियाँ भी आती हैं।

उपचार: दुर्गा जी का (धन्यवाद) हे दुर्गा महारानी जी, श्री कल्कि उत्सव में इसी प्रकार की कृपा बनाए रखें व दैवी शक्तियाँ आती रहें। हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

उपचार: भैरों जी का 20 रुपये हाथ लगाकर रोट का संकल्प लें। और प्रार्थना करें। हे भैरों बाबा! श्री कल्कि कीर्तन से आप जो कष्ट दूर करवा रहे हैं, और अपनी **योगी योगिनियों** और दूसरों को जो हिस्सा दिलवा रहे हैं उसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मुझपर अपनी कृपा बनाएं रखें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी का काम करना है।

अपने ही जब काले रूप में दिखाई दें तो

अर्थ: ये डाकिनी, योगिनी अथवा योगी होते हैं, यह **शक्तियाँ** लेकर ही जाते हैं।

उपचार: 11 रुपये से प्रसाद का संकल्प व कुछ सिक्के लें।

प्रार्थना: हे भैरों बाबा! **मैं डाकिनी, योगी/योगिनियों के** लिए यह संकल्प कर रहा हूँ मैं मीठा (लड्डू) तथा सिक्के गरीबों को दूंगा उनको उनका भाग पहुँचा दें। मुझे व मेरे परिवार को दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक शक्तियों व पारीवारिक क्लेशों से बचाएं, हमें कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है।

तीर्थों में भावुकता से बचो

एक धार्मिक आयोजन है। सब लाइन में लगकर दर्शनों को जा रहे हैं। उसमें से एक जानकार ने रोककर कहा, लाइन में लगकर आएं। मैंने कहा आप चले जाएं। मैं पीछे आकर बैठ गया। सूचना मिली कि मेन रोड पर दंगा हो गया, सड़कें खाली करा दी गईं। फिर झगड़ा शांत हो गया।

अर्थ: जिस प्रकार शूद्र को मंदिर पर लगे झंडे मात्र को देखकर ही फल मिल जाता है इसी प्रकार लाइन में लगे भक्त जिस देवी देवता के दर्शनों को जाते हैं, वह देवी देवता उसे बहुत फल देते हैं क्योंकि हर धार्मिक स्थल पर शक्ति विराजती है। यहाँ अभिमान वश आपसे उस शक्ति का अपमान हुआ है। आपको शारीरिक व मांसिक कष्ट उठाना पड़ेगा। बन पड़े तो इस अनुभव के बाद परेशानी वाले स्थान पर आप एक बार पुन: हो आएं।

उपचार: दुर्गा जी का 20 रुपये से अनजाने में हुई गलती की क्षमा मांगेंगे। भैंरों जी का 20 रुपये रोट का संकल्प। अनहोनी परेशानियों से बचाएं कल्कि जी

प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

बार बार गल्ती करने से बचें

एक बहुत बड़ी जगह दिखाई दी, वहाँ दीवार सी बनी हुई है, जिसे कुछ मजदूर तोड़ रहे हैं। किसी ने कहा कि इस दीवार के पीछे से बहुत बड़ा पक्षी निकलेगा, जो काफी समय से यहाँ बंद है। तभी किसी आवाज ने मुझे कहा कि, ''तुम यहाँ से दूर हट जाओ और मैं वहाँ से आगे की तरफ निकल जाता हूँ।''

अर्थ: किसी सही शक्तिवान रुह के साथ आपसे गलत काम हो गया है, जिससे उसे कष्ट उठाना

पड़ा है। अब उसके पुराने कर्म फल पूरे हो गए हैं, वह मुक्त होते ही आप पर वार करेगी। आप जो पुण्य कर्म कर रहे हैं, उसके अनुरूप दैवीय शक्ति ने आपको दूर हटने का संकेत दिया है।

उपचार: 1 काली जी का 20 रुपये का बताशे और दक्षिणा का संकल्प करें, बताशें मंदिर में रहने दें। प्रार्थना करें कि हे काली मां मेरा अपराध क्षमा कराओ। जिसका जो भाग है वह लेकर संतुष्ट हों। मुझे सुखीभाव से कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

2 शंकर जी का पंचामृत द्वारा अभिषेक का 5रुपये से संकल्प करें।

प्रार्थना: हे भोले बाबा! जाने अनजाने में मुझसे जो गलती हुई है, उसे क्षमा कर दो, मेरी रक्षा करो। मुझे कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

जब स्वर्गीय नेता ने स्वागत किया

उपराष्ट्रपति स्वर्गीय शंकर दयाल शर्मा ने काफी नेताओं के तमगे लगाए हैं, मुझे भी लगाए हैं। उन सभी के पसीने बह रहे हैं। मैं परेशान होकर घूम रहा हूँ।

अर्थ: अनुभव में आपके पितृों के अलावा जो अन्य व्यक्ति दिखाई देता है पहले उसके परिवार की परिस्थिति देखें कि उसकी परिस्थितियाँ कैसी हैं। अगर नहीं मालूम चलता है तो उन्हें भी आपसे भाग चाहिए सो देना पड़ेगा। नहीं देने पर आपका काम बिगड़ेगा। आप तेजवान हैं इसलिए आपसे मांगा जा रहा है। अंजाने में कुछ गलत काम आपसे हो गए हैं या करने की प्लानिंग है।

उपचार: यमुना महारानी के नाम से संकल्प करके चार वस्त्र, भोजन (सीधा) पानी 5 रुपये के सिक्के के साथ यमुना जी के घाट पर बनें किसी मंदिर के ब्राह्मण को दे दें। प्रार्थना करें कि हे यमुना जी जो दैवीय शक्तियाँ कलियुग की कुटिल

शक्तियों में फँसकर अंधे कुएं में कैद हैं उन्हें स्वतंत्र कराइए। यमराज के माध्यम से कलियुग की उन कुटिल शक्तियों को उनका भाग दिलवाकर स्वधा महारानी के पास भेजें जो उनको उनके स्थानों पर स्थापित करवा दें। दैवीय शक्तियों को मुक्ति प्रदान कर मुझे उनकी मदद दिलवाएं।

प्रार्थना: हे स्वधा महारानी जी! यह (नाम) जो भी मुझसे शक्ति चाह रहे हैं मैं यह दे रहा हूँ, स्वधा महारानी इनका भाग इन्हें दे दें। मुझे रास्ता दीजिए। मुझे कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

साधु का दिखना ठीक नहीं

एक बहुत बड़ा हॉल है। मैं कहीं बाहर से आया हूँ। बहुत सारे साधु बैठे हैं।

अर्थ: यहाँ साधुओं का दिखना आने वाली बहुत विपत्तियों, पारिवारिक, व्यापारिक, शारीरिक कष्टों का सूचक है।

उपचार: मछलियों को 200 ग्राम आटे की गोलियाँ बनाकर यमुना या जहाँ मछलियाँ हों खिलाएं। जितने साधु दिखे हैं उतने सिक्के 5-5 के यमुना जी के हाथ लगाएं। जितने साधु दिखे हैं उतने ही शंकर जी के अभिषेक का संकल्प तुरंत कर दें।

धन व जीवन की सुरक्षा के लिए

मैं कुछ पैसा जमा कराने जाती हूँ, वहाँ पर भीड़ है। कोई पैसा जमा नहीं करता। मैंने जेवर पहन रखे हैं, वो आदमी मुझे पकड़कर पैसे छीन लेते हैं। मैं डरकर मृत्युंजय महामंत्र का जाप करती हूँ।

अर्थ: इस अनुभव में नारायण ने उपचार भी बताया है। आपको पैसों की हानि, जेवरों का लूटा जाना है।

उपचार: इसके लिये भैंरों जी का संकल्प राक्षसी शक्तियों से बचने के लिए।* भगवान शंकर की मृत्युंजय महामंत्र की एक माला का 5 दिन तक हवन। शुरु में उपचार में बताई विधि के अनुरूप।

प्रार्थना: अपने जीवन व धन की सुरक्षा मांगें। मुझे कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

गंगा महारानी से रास्ता

मैं गाड़ी चला रहा हूँ हरिद्वार जाने के लिए। काफी सड़क पार करने के बाद बाईं तरफ घूमते हैं तो वहाँ पानी ही पानी होता है। थोड़ी दूर पानी में गाड़ी चलाने को बाद वापिस हो लेते हैं।

अर्थ: पानी शक्ति का प्रतीक है। हरिद्वार-गंगा महारानी ज्ञान का प्रतीक है। वापिस आना रुकावट है। ऊँचा नीचा (+ -) चलेगा।

उपचार: गंगा महारानी से रास्ता मांगना पड़ेगा कि हे ज्ञान की देवी शक्ति दें। दो खरबूजे या छोटे शरदे में चाकू के 2-2 कट मारकर गंगा जी के किसी मंदिर में चढ़ा दें और प्रार्थना करें हे मां गंगा रुकावट दूर करें, भगवान जो मुझे पैसा शक्ति देना चाहते हैं मुझे दिलवा दीजिए। मुझे कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

जमादार राहु की दशा दर्शाता है

जब अनुभव में बार-बार जमादार (भंगी) दिखे।

अर्थ: जमादार राहू का सूचक है।

उपचार: मंगलवार या शनिवार के दिन या जब बन पड़े एक गिरि के गोले में सादा आटा भरकर पीपल के पेड़ के पास एक गड्डा खोदकर गााड़ दें और 5 परिक्रमा लगाएं। ऊँ हनुमते नम: का 11 बार उच्चारण करें कि हे हनुमान जी! मुझपर कृपा कराएं। मुझे कल्कि भगवान का कार्य करना है। 2.बहते पानी (नाले आदि) में हाथ लगाकर साबुन की टिकिया भी इसी प्रार्थना के साथ बहा दें।

छत का पड़ना

स्वप्न में लैन्टर्न अथवा छत का पड़ना।

अर्थ: यह शक्ति का संचार करता है।

उपचार: कल्कि जी का प्रसाद चढ़ाकर कहें कि हे विश्वकर्मा जी देवी शक्तियाँ मुझे जो धन संपदा दिलवाना चाह रहीं हैं वह दिलवा दें। कलियुग की बुरी शक्तियाँ उसमें रोड़े न अटकाएं। फिर 20 रुपये का संकल्प करके प्रसाद विश्वकर्मा जी को चढ़ा दें इसे कल्कि जी, श्री रामजी, श्री कृष्ण जी को भी दे सकते हैं कि यह प्रसाद विश्वकर्मा जी को पहुँचा दें। प्रसाद चढ़ाकर वह प्रसाद लाकर बाहर व घर में बाँट सकते हैं और स्वयं भी लें।

भाईयों में तनाव

स्वप्नानुभव— जब दो भाइयों में जिनमें बहुत प्रेम है परेशानी नजर आए।

अर्थ: यह आपसी मलीनता दिखा रहा है।

उपचार: इसमें भैंरों बाबा प्रसन्न नहीं हैं। उनका रोट अथवा जो उन्हें विशेष प्रसाद (शराब) पसंद है वह चढ़ाएं। फिर ''ऊँ भगवते भैरवाय दु:ख मोचनाय नम:'' 5 बार कह कर रोट या दूसरी उनकी पसंद की चीज उनके पास रख आएं।

प्रसाद को घर नहीं लाएं। उनसे कहें हमें सुखी भाव से वैभवता पूर्वक सहपरिवार कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

अपहरण दिखने पर

जब स्वप्न में किसी का अपहरण दिखाई दे।

अर्थ: परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

उपचार: काली जी, योगमाया, महारानी, बगुलामुखी मां का संकल्प 20/20/20 रुपये का। भगवान श्री कल्कि का 20 रुपये का प्रसाद चढ़ा दें।

प्रार्थना: हे काली जी, योगमाया महारानी, बगुलामुखी मां जो शक्तियाँ मेरा व मेरे परिवार का अपहरण कर रही हैं उनका मुँह मस्तक मेरी तरफ से कीलिए/घुमाइये। उन्हें अपनी ही परेशानी में फाँसिए, मुझे इस झंझट से निकालिए। यह तीनों प्रसाद दुर्गा जी के किसी भी मंदिर में देकर उनसे प्रार्थना में कह दें इसे योगमाया/बगुलामुखी माता को पहुँचा दीजिए। यह तीनों प्रसाद मंदिर के बाहर खुद बांट दें। मुझे कल्कि जी प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

दूसरे का अनुभव न बता पाने पर

दैवीय शक्तियों को मैंने चाबी दी है, इस पर दैवीय शक्तियों ने ज्योत जलाकर मुझे चाबी वापस कर दीं।

अर्थ: यदि किसी दूसरे व्यक्ति का अनुभव हमें बार-बार आता है और हमें लगता है कि वह हमारा

कहा गलत ढंग से ले सकता है, तो ज्योत जगाकर भगवान से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! जिसका अनुभव मुझे दिया है, अब इसे **उसे या उसके मानने वाले** विश्वासी या करीबी को दें। आपकी कृपा होगी। मेरे को इसके पाप व रुकावटों से बचाएं।

सच्चे मार्गदर्शक हनुमान जी

मेरी 3 साल की बेटी मुझसे बोल रही है कि मम्मी आप ने दीवाली पर सारे भगवान लिये हनुमान जी नहीं लिये।

अर्थ: जीवन में सदैव मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए व कल्कि भगवान के सच्चे मार्ग पर चलने के लिये हनुमान जी को अपने परिवार का गुरु मानकर नमस्कार करें। आपको अच्छे फल के साथ अच्छा रास्ता भी यह देते हैं। आपका

परिवार भौतिक, अध्यात्मिक, आर्थिक ऊँचाई पर जाएगा।

उपचार व प्रार्थना: 11 रुपये के हनुमान जी के प्रसाद का संकल्प लें, और प्रार्थना करें कि मुझे व मेरे परिवार को जिन विकट परिस्थितियों से निकाला है, ऐसे ही साथ देते रहें। श्री कल्कि जी की कृपा दिलवाते रहें। हमें कल्कि जी का कार्य करना है। हनुमान जी के कार्यों में, कल्कि जी के चित्रों में कल्कि जी के खजाने के शुभ के रुपये अवश्य लगाएं।

1 रु 2 बताशे लेकर बिटिया का हाथ लगवाकर श्री हनुमान जी उसके परिवार ने जिसने भी हनुमान जी को गुरु नहीं बनाया है उनकी तरफ से भी बन पड़े तो हनुमान जी को गुरु बनवा दीजिए। कृप्या ध्यान रहे कि कल्कि नाम का उद्घोषण श्री हनुमान जी ने ही किया है। अगर आपने अपना गुरु किसी और को भी बना रखा है तो कोई हर्ज नहीं है उनमें वैसी ही आस्था रखें। दत्तात्रेय ने 24 गुरु बनाए थे यहाँ तक कि एक शिकारी को भी उन्होंने अपना गुरु बनाया जो एक आँख बंद करके अपनी निगाह तीर पर साधकर पेड़ पर बैठे पक्षी का शिकार कर रहा था। आप श्री हनुमान जी को बिटिया के साथ गुरु बना कर तो देखें,

दिवाली ही नहीं समस्त दिनों में आपके घर में हनुमान जी, श्री कल्कि जी की कृपा से हर्षोल्लास भरा रहेगा।

षडयंत्र (धोखे से) बचना है तो

मेरे परिवार के लिए एक कल्कि भक्त को 24 सितम्बर 2007 को अनुभव हुआ कि हम पर पुलिस की भयंकर परेशानी आने वाली है।

उपचार: भैंरों जी का 1 रुपया 2 बताशे

दुर्गा जी का 10-10-6 पूरी हलवा 1-1-1 के तीन सिक्के

बगुलामुखी माता— 20 रुपये प्रसाद व हवन में 21 आहुतियाँ बगुलामुखी माता के मंत्र की डालें।

प्रार्थना: हे भैंरों बाबा/दुर्गा जी/बगुलामुखी माता जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, षडयंत्रकारी शक्तियाँ मुझे मेरे परिवार व व्यापार पर पुलिस का शिकंजा कस कर हमें मुसीबत में डालना चाह रही हैं, उन्हें उनका भाग देकर ऐसा करने से रोकें, हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

यह उपचार तब तक करें जब तक सकारात्मक अनुभव नहीं आए, वरना परेशानी में फँस सकते हैं। 16.11.2007 को मुझे पुन: अनुभव आया कि—

सुप्रीम कोर्ट का जज दिखाई दिया, वह प्रतिदिन ज्यदा से ज्यादा समन (जेल

में डालने के आदेश) भेज रहा है कि इन इनको जेल में ठूस दो। बिलकुल वैसा ही दबाव है जैसा 2006 में सुप्रीम कोर्ट के मैजिस्ट्रेट श्री सब्बरवाल की बैंच ने सीलिंग की तलवार दुकानों व ऑफिसों पर लटकाई थी। कुछ अच्छी शक्तियों के समन निकले हुए हैं, वे औरों के भी समन लेकर आ रहे हैं। फिलहाल जज स्टाफ कम होने की वजह से उनसे अपने समन भेजने का काम निकलवा रहा है। जबकि उन्हें भी जेल में बंद होना है। मैं जेल के परिसर में बैठा हूँ। बैरक में बंद होने के लिए जैसे मेरा भी समन दिया है। मैं अपनी स्वर्गवासी पत्नी सरोज से कह रहा हूँ, ''तुम यह कीमती समान संभाल लेना।'' इस पर उन्होंने कहा कि-''तुम निश्चिंत रहो मैं सम्भाल लूंगी।'' जेल में मेरी स्वर्गवासी दादी (पितृ) भी बंद हैं। लेकिन उस दिन मेरा समन नहीं आया। फिर मैं कोर्ट में पहुँचकर देखता हूँ कि मेज पर ढेरो फाइलें रखी हैं, और पीछे से आवाज आती है, ''छोटा मोटा भी जिसका जुर्म हो उसे भी जेल में डालो।'' ऐसा प्रतीत हुआ मानो जेल भरो आंदोलन चल रहा है।

अर्थ: यहाँ सभी कल्कि भक्तों के लिए यह निर्देश आया है कि, कलियुग **के आंतरिक गहरे षडयंत्र से बचने के लिए नियमित पूजा, हवन व माला करें।** तथा हवन में 11 या 21 आहूतियाँ बगुलामुखी माता के मंत्र की डालें कि षडयंत्रकारी दोगली शक्तियों से, मुझे मेरे परिवार व व्यापार को बचाओ। इसमें आप पाएंगे कि दैवी शक्तियों के साथ पितृ शक्तियों की भी आपको मदद मिलेगी।

उपचार : दुर्गा जी का 10-10-6 हलवा पूरी का उपचार, दो सीधे—पत्नी व दादी जी के लिए, बगुलामुखी माँ का 20 रु से संकल्प।

प्रार्थना : हे दुर्गा महारानी, भारत सरकार की, कलियुग की, यम की दंडनीय शक्तियाँ अपने प्रचंड रूप में कल्कि भक्तों, सज्जन लोगों को, पितृ-पितृियों को जेल में डलवा रही हैं, हमें अपना सुरक्षा कवच प्रदान करके इनके प्रहारों से बचाइए। हम निर्भय होकर जीते जी श्री कल्कि भगवान के प्रगट होने के लिए उनके प्रचार का कार्य करना चाहते हैं। हमारी मदद कीजिए, हमें रास्ता दीजिए।

हे बगुलामुखी माँ, दुष्ट लोगों के मुँह, मस्तिष्क, वाणी को स्थिर करके बुद्धि का विनाश करके हमारी तरफ से उनका ध्यान हटाइए, हम निर्भय होकर जीते जी श्री कल्कि भगवान के प्रगट होने के लिए उनके प्रचार का कार्य करना चाहते हैं। हमारी मदद कीजिए, हमें रास्ता दीजिए।

हे स्वधा महारानी, मैं अपनी पत्नी व दादीजी के लिए सीधे (आटा, दाल, चावल, चीनी, जल, दक्षिणा, नमक पुड़िया में बाँधकर, जल बाद में पौधे में अथवा

सूर्य भगवान को चढ़ा दें) दे रहा हूँ इसके द्वारा उन्हें उनका भाग दिलवाकर उन्हें उनके लोकों में भेजें। मुझे उनका सहयोग दिलवाइए। हम सुखी भाव से कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना चाहते हैं।

परेशानी से बचने के लिए बडों की सलाह शुभकारी

मुझे लगा कि मैंने एक दरवाजा खोला है, जिसके बाहर कुछ वृद्ध सभ्य लोग बैठे हैं। दरवाजे के अंदर एक काला व एक भूरा कुत्ता खड़ा है। वह मेरी गर्दन पर जोरदार वार करते हैं। मुझे चोट लगने पर वह वृद्ध लोग मुझसे कुछ कहते हैं। लेकिन व याद नहीं।

अर्थ: इस अनुभव का अर्थ है— दरवाजा खोलना, यानि तुम्हारे द्वारा किया गया प्रयत्न। काला और भूरा कुत्ता बुरी शक्तियों का रूप दर्शाता है जो तुम्हारा अनिष्ठ करके तुम्हें आगे बढ़ने से रोकना चाहती हैं। वृद्ध और सभ्य लोगों का कहा याद न रहने का अर्थ है कि आप बड़ों की सलाह नहीं मानते। यदि आप यह आदत बदलेंगे तो देखते ही देखते आप सफलता की ओर अग्रसर होंगे। आपके रुके कामों को भी रास्ता मिलेगा।

उपचार: भैंरों जी का— 2 कुत्तों के (हिस्से) के लिए 20 रुपये व 1 रोट के (2-2 बर्फी कुत्ते की भी रखें)रूप में 2 बार उपचार। यह रोट आप बुधवार, शनिवार व रविवार कभी भी कर सकते हैं। सरस्वती जी— 1 रुपये 2 बताशे। हे मां! मुझे सद्बुद्धि, ज्ञान, सही मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान कीजिए। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है। श्री कल्कि साहित्य के एक पेज का पाठ व दो भजन प्रतिदिन करें, रुकावटें दूर होंगी।

प्रार्थना भैंरों जी से— हे भैंरों बाबा जो कलियुगी बुरी शक्तियाँ मुझे शारीरिक नुकसान पहुँचाकर मेरे प्रगति के मार्ग में बाधक बन रही हैं इसके द्वारा इन्हें इनका भाग देकर मुझे रास्ता दीजिए मुझे कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

विश्वास रखो सब बदल जाएगा

14 जून 2009, रविवार को मेरी छोटी बेटी को वायरस डायरिया होने की वजाह से उसके शरीर में पानी की काफी कमी हो गई। उस दिन हम श्री कल्कि बाल वाटिका में नहीं गए और उसे अस्पताल ले गए। वहां से मैंने अपने भाई को फोन कर यह बताकर मामाजी से उपचार पूछने को कहा। उन्होंने कहा तुरन्त 129 रुपया बिटिया का हनुमान जी का योगी योगिनियों का, हाथ लगवाकर आधे का

प्रसाद व बाकी पैसे मंदिर के बाहर प्रसाद के साथ मांगने वालों में बँटवा दें।

मैंने रुपये तो हाथ लगवाकर दिये लेकिन प्रसाद नहीं बाँट पाई। अत: मंगलवार 16.6.2009 को मुझे अनुभव हुआ—

मैं व मेरे पति कहीं से आ रहे हैं। सड़क पर ढलान इतना ज्यादा है कि जैसे किसी पहाड़ से उतर रहे हों। फिर आगे एक दीवार है, जो थोड़ी टूटी हुई है, उसमें से सबको उलांघकर आना जाना पड़ रहा है। कई लोग बड़ी मुश्किल से आ रहे थे। मैंने पैर मारकर दीवार तोड़ दी जिससे आराम से निकल सकें। मैं और मेरे पति व कई लोग उसमें से निकलकर बहुत बड़े मैदान में पहुँचे जिसके एक तरफ मंदिर था। मैंने मंदिर में झांककर देखा तो वहाँ भगवान श्री कृष्ण, हनुमान जी, गणेश जी लगभग सभी देवी देवताओं की 10-10 फुट लम्बी व 4-5 फुट चौड़ी बाल रूप की मूर्तियाँ थीं। उन सभी का मनोहर रूप था। मैंने सोचा जो बच्चों की हनुमान जी वाली फिल्म है, यह तो उससे भी कई सुन्दर मूर्तियाँ हैं। हनुमान जी को प्रणाम करके मैंने अपने पति को भी दर्शनों के लिए बुलाया।

फिर हम एक घर में पहुँचे तो मेरे जेठ का बेटा बोला, मम्मी ने कहा है— आपको जो 85 रुपये देने हैं वह दे दो। मैंने उसे 55 रुपये देकर कहा खुले नहीं हैं, तीस रुपये बाद में दे दूँगी। तुम्हारी तरफ से भी तो साहित्य में कुछ डालना चाहिए। तभी मेरी मम्मी दिखीं, वह बोली मैंने अपनी व तेरी मासी की तरफ से भी 200 रुपसे श्री कल्कि जी के साहित्य के लिए दिये हैं। मैंने खुश होकर अच्छा कहा! मैंने जेठ के लड़के से कहा कि भाभी जी को मत बताना कि 30 रुपये चाची ने कम दिये हैं। पर उसने फोन करके बता दिया कि चाची ने 55 रुपये दिये हैं 85 नहीं।

अर्थ: ढलान से उतरना जीवन में कठिनाइयों का सूचक है, यह परेशानियों को दर्शाता है। आपने आराम से निकलने के लिए जो दीवार पैर मार कर तोड़ी है यह आपको भगवान श्री कल्कि जी द्वारा तेज का सूचक है। लेकिन मानसिक द्वेष, अहम जो प्रत्येक जीव के साथ लगा है उसी में दुविधा, अनिश्चिंतता ने भी आपको व्यथित कर रखा है। अत: इन सब से पार होने का सरल तरीका है भगवान श्री कल्कि का साहित्य सृजन व सत्संग इन दोनों की खान आपके परिवार में है महज मन में श्री कल्कि जी के लिए मामाजी की तरह दृढ़ विश्वास करके जिस प्रकार पैट्रोल से भरे टैंकर में पैट्रोल पंप पर गाड़ी में पैट्रोल भरकर इंजन चालू होकर आप सर्वत्र सफर कर सकते हैं ऐसे ही आप साहित्य सृजन, सत्संग द्वारा

आपको देखते ही देखते ऐसे रास्ते मिलेंगे जो कभी स्वप्न में भी आप नहीं सोच सकती। हम यह काल्पनिक नहीं सत्य आपबीतियों द्वारा आपको प्रमाणित कर रहे हैं। आपबीती (मेरी तो दुर्गा माँ) खुली आँखो से आप जरा देखें श्री कल्कि जी की कृपा से श्री कल्कि बाल वाटिका का सारा काम कैसे सौम्यता और निरअभिमान हो रहा है लेकिन कर सब श्री कल्कि जी, श्री हनुमान जी, श्री गुरु जी कर रहे हैं और नाम श्री कल्कि बाल वाटिका का हो रहा है।

बाल रूप मूर्तियों का दिखना आपके संशयों का निवारण एवं झुककर काम निकालना बताता है। बाल रूप (छोटा बनकर सबमें बड़ा बनकर नहीं) दर्शाता है कि बच्चों को प्रेम बाँटो इनका करो इनके लिए सोचो क्या कर सकती हूँ यह सारे बाल रूप आपके साथ हैं एक के बाद एक ऐसे रास्ते खुलेंगे सूझेंगे कि आपकी अंतर्आत्मा औरों की तरह कहेगी कल्कि जी के काम में तो महान आनंद है। बन पड़े तो हनुमान जी को अपना गुरु बनाकर एक रुपया 2 बताशे भेंट करके देखते ही देखते आपकी समस्याएं दूर होने लगेंगी।

उपचार: 14 जून 2009 का उपचार न करने की देरी के लिए पुन: 85 रुपये का हनुमान जी के योगी योगिनियों का संकल्प व क्षमा याचना। 5 रुपये यमुना महारानी का हाथ लगाकर, प्रार्थना कि यम शक्तियों को उनका भाग दिलाकर हमें अस्पताल से सकुशल घर भेजें। * 20 रुपये का भगवान श्री कल्कि जी का प्रसाद— 15 रुपये व 5 रुपये दक्षिणा कि मुझ से व मेरे पति से भावुकता व जाने अनजाने जो गलतियाँ हुईं हैं उसे क्षमा करें। क्योंकि श्री कल्कि बाल वाटिका के सभी रूपों में आप ही हैं। हमें परेशानियों और झटकों से बचाएं, हमें रास्ता दें। * 230 रुपये श्री कल्कि साहित्य के अपनी माता जी के (100) मासी जी के (100) व जेठानी जी के (30) अपने पास से लें और कल्कि जी का संकल्प करके साहित्य सृजन में खुद लगाएं, अथवा जहाँ साहित्य का सृजन हो रहा है वहाँ दें। और प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान! मैं और मेरा परिवार अब साहित्य सत्संग की ओर भी ध्यान देगा हमें परेशानियों से निकलने का रास्ता दें। हम आपकी विशिष्टता के अनुरूप सुखी भाव से आपके प्राकट्य के लिए प्रचार का काम करना चाहते हैं।

ज्यादा पाना है तो पहला चुकाना पड़ेगा

—मेघना गोयल (9136377829)

10 जून 2009 को मेरी बेटी को अनुभव हुआ कि हमारा परिवार कलियुगी

(गलत) शक्तियों के चंगुल में फँस गया है हम पर अत्याचार किये जा रहे हैं और हम सब सहने को मजबूर हैं। कलियुग की आसुरी नगरी में हमें ले जाया जा रहा है, जहाँ कलि राक्षस हमारी 3 कठिन परीक्षा लेता है। फिर हमारी बलि देने की तैयारी होने लगती है। हम किसी तरह से बचकर भागते हुए ''जय कल्कि जय जगत पते, पद्मापति जय रमापते'' का जाप कर रहे हैं।

अर्थ: राक्षसी शक्तियाँ प्रचन्ड रूप धारण कर आपको व आपके परिवार को मिटाना चाहती हैं। लेकिन चमत्कारी भगवान श्री कल्कि के नाम जाप के प्रताप से विकट कठिनाइयों के बावजूद आपके परिवार को रास्ता मिला था, मिला है, मिलता रहेगा, आप ऊँचाइयों पर जाएंगे। मन में एक ही धारणा रखें कि भगवान श्री कल्कि के रहते हमारा नाश नहीं हो सकता। जो ऊँचाइयां आपके परिवार को छूनी हैं अवश्य उसमें जरा देर से सफलता मिलेगी।

उपचार: 1) कल्कि सहस्त्रनाम का 11 पाठ का संकल्प।

2) 20 रुपया योगमाया जी का प्रसाद व दक्षिणा।

3) 4 रोट भैंरों जी के व 20 रुपये दक्षिणा।

4)तीन लोगों के 3 सिक्के 5 रुपये के यमुना जी के यम की शक्तियों के भाग के हमें जीवन दान के लिए

5) 20 रुपये बगुलामुखी माता का प्रसाद व दक्षिणा। आसुरी, राक्षसी, दण्डनीय शक्तियों के लिए।

हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

प्रार्थना: 1) हे कल्कि भगवान हम सहस्त्र नाम का जो पाठ करेंगे उसका सम्पूर्ण फल हम आपको

अर्पण करते हैं। कलियुगी, भारत सरकार की दण्डनीय, आसुरी शक्तियों व क्रूर ग्रहों के प्रहारों से बचाने के लिए हमें दैवीय शक्तियों को सुरक्षा कवच दिलाएं हमें हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

2) हे योगमाया जी/ हे भैंरों बाबा/ हे बगुलामुखी मां, जो कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, भारत सरकार के दण्डनीय, तांत्रिक, षडयंत्रकारी शक्तियां हमें चारों ओर से घेर कर हमारा विनाश करने पर तुली हैं, उन्हें उनका भाग देकर हमें बचाइये। जो दैवीय शक्तियाँ हमें श्री कल्कि जी का कार्य करने से सफलता की बुलंदियों पर ले जाना चाहती हैं, हमें वह सफलता दिलवाइये, हमें रास्ता दिलवाइये। हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है। हमें कल्कि जी के

प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

3) हे यमुना महारानी, यम की शक्तियों के लिए हम सामान व दक्षिणा के लिए तीन सिक्के दे रहे हैं, उन्हें संतुष्ट करके, हमें जीवन दान दिलवाएं।

विशेष: इन्हीं उपचारों के दौरान हमें एक कल्कि भक्त का फोन आया कि उन्हें अनुभव आया है कि हमें 4 दिन की अखण्ड ज्योत जगानी है। मैंने तुरन्त अखण्ड ज्योति का संकल्प लेकर, घर में मंदिर में 4 दिन के लिए ज्योत जगा दी व प्रार्थना की '' हे कल्कि भगवान! भावुकता में या जाने अनजाने में मुझ से व मेरे परिवार से जो भूल हुई है, उसके लिए हमें क्षमा करें। हम अखण्ड ज्योत जगा रहे हैं, जिस अनिष्ठ से आप हमें बचाना चाह रहे हैं, बचा लीजिए। जो अच्छा फल दिलवाना चाहते हैं दिलवा दीजिए।

जब चकला टूटा

—मेघना गोयल (9136377829)

17 मार्च 2010 चैत्र मास के दूसरे नवरात्री के दिन सुबह रसोईघर में काम करते समय अचानक मेरे हाथ से चकला फिसला और टूट गया। मैं घबरा गई और नकारात्मक विचारों ने मुझे घेर लिया। मुझे आज से दस वर्ष पहले की घटना याद आई, **जब श्री कृष्ण का चित्र दीवार से गिर के टूट गया था।** उसके दो दिन बाद ही मेरे पति को व्यापार में भारी नुकसान उठाना पड़ा था। अब हमें अपने नए घर में जाना है, और इससे पहले चकले का टूटना मुझे भयभीत कर गया। मैंने श्री कल्कि बाल वाटिका के अनुभव पैनल को तुरन्त फोन करके अपनी समस्या बताई, तो उन्होंने मुझे कुछ उपचार व प्रार्थनाएं तुरन्त करने को (ढ्ढष्ट)* की तरह बताई। इससे पहले कि मैं उपचार कर पाती, मैं घर में बेगौन स्प्रे करने लगी। उससे मेरी बेटी की तबीयत अचानक बिगड़ने लगी, उसके मुँह में भी बेगौन स्प्रे चला गया जिसके कारण उसका दम घुटने लगा। हम फौरन उसे अस्पताल ले गए। वहाँ पहले उसे ऑक्सीजन लगाया गया फिर नैब्यूलाईज़र से दवाई दी गई। तब कहीं जाकर वह ठीक हुई। इस सब में दोपहर के 2 बज गए। मैंने घर आकर भगवान की पूजा के साथ जो उपचार व प्रार्थनाएं बताई थी उन्हें करने के लिए ज्योत जगाई तो वो अचानक बुझ गई। लेकिन मैंने हिम्मत न हारते हुए पूरे विश्वास व आस्था के साथ उपचारों के लिए संकल्प व प्रार्थना बोली।

*जैसे मरीज को तुरंत नाक द्वारा आक्सीजन व ट्रिप द्वारा ग्लूकोस देना शुरु कर दिया जाता है।

सुबह चकला टूटने का अपशकुन, फिर मेरी बेटी का दम घुटना ये सब किसी होने वाले अनिष्ट

का सूचक था। किन्तु कल्कि जी की कृपा से सब ठीक हो गया। 18 मार्च को मुझे अनुभव हुआ जैसे हम अपने परिवार सहित किसी विवाह में शामिल होने जा रहे हैं। रास्ते में एक अनपढ़ अड़ियल औरत मिली जिसके हाथ में एक कागज है। उस कागज पर मेरे पति का नाम और मेरे नए घर का नम्बर, पता लिखा है। वह औरत मेरी बेटी से कलम मांगती है क्योंकि उसे उस पेपर पर हस्ताक्षर करने हैं। मेरे पर्स में कलम पहले से मौजूद है, उस कलम से वह अड़ियल औरत उस कागज पर अपने हस्ताक्षर करती है और कहती है—''**अब तुम अपने नए घर में जा सकते हो।**'' और इस तरह 4 अप्रैल 2010 को हम अपने नए घर में आ गए।

अर्थ: चकला टूटने का अर्थ था कि अशुभ शक्तियाँ हमें अपने नए घर में जाने से रोकना चाह रही हैं, हमारा अनिष्ट करना चाह रही हैं। लेकिन समय पर किए गए उपचारों व प्रार्थनाओं से क्रूर शक्तियों ने अपना भाग लेकर हमें नए घर में जाने की अनुमति हस्ताक्षर करके दे दी।

अगले ही दिन ही मुझे मेरी सखी से फोन पर पता चला कि उनकी सास के हाथ से भी इसी तरह नए घर में जाने के बाद चकला टूटा था आज से 20 साल पहले। उन्होंने भी सब उपचार व प्रार्थनाएं कर दी थीं। सखी को अगले ही दिन स्वप्न आया, जैसे दो क्रूर शक्तियाँ आपस में कह रही हैं—''हम कुछ नहीं कर पाए, हम कुछ नहीं कर पाए।''

यह कल्कि परिवार अपनी वैभवता पर पहुँचता है फिर फिसल के नीचे आ जाता था। लेकिन आसुरी शक्तियों को अब यहाँ से अपनी छावनी उठानी पड़ी। भगवान श्री कल्कि जी की कृपा से यह परिवार तरक्की के साथ वैभवता पर जाएगा और टिका रहेगा। बरसों से कल्कि जी के कार्य करने की इन्हें चाह थी।

उपचार व प्रार्थनाएं: दुर्गा जी 10-10-6 (26) पूरी, हलवे का संकल्प 1-1-1 रुपये के तीन सिक्कों के साथ।

भैंरों जी का 20 रुपये 4 रोट का संकल्प

काली जी का 20 रुपये से सफेद बर्फी का संकल्प

बगुलामुखी माता जी का 20 रुपये से पीली बर्फी का संकल्प

हनुमान जी की योगी योगिनियों का 20 रुपये से संकल्प

प्रार्थना सभी से अलग-अलग रहेगी।

हे दुर्गा मां ! भैंरों बाबा ! काली जी ! बगुलामुखी मां ! हनुमान जी ! जो कलियुगी, आसुरी, अनिष्टकारी अशुभ शक्तियाँ हमारे नए घर में जाने से हमें रोक रही हैं, हमारा अनिष्ट करना चाह रही हैं, उन्हें उनका भाग देकर उनके स्थानों पर वापिस भेजिए, हमें अपना सुरक्षा कवच प्रदान कीजिए, हमें रास्ता दीजिए,हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

प्रार्थना यमुना महारानी: हे यमुना महारानी, यमराज की मारक शक्तियों का उनका भाग देकर मुझे व मेरे परिवार को बचाइये। हमें जीवन दान दीजिए, हमें रास्ता दीजिए। हमें कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

विशेष: दिल्ली पब्लिक स्कूल की एक लड़की मात्र डस्ट उसकी नाक में जाने से अस्पताल देर से जाने के कारण बच नहीं पाई तो कितने महान चमत्कारी हैं श्री कल्कि की कलियुग की चालों (अड़ियल औरत की रुकावट) को जानकर मुझे प्रत्यक्ष अनहोनी दिखाई और जान

दोस्तों को पहचानो

—राजुल गुप्ता (9899245365)

मुझे यह दिखा कि मैं अहमदाबाद की तरफ घूमने गया हूँ। वहाँ पर मुझे जिस मकान में ठहराया गया है वह किनारी बज़ार वाले मकान की तरह है। मुझे जिस कमरे में ठहराया गया है वह किनारी बाज़ार वाले घर के छोटे कमरे की तरह है। कुछ समय बाद मैं अपना सामान उठाकर जिसमें एक काला बैग भी है दूसरे कमरे में चला जाता हूँ। मेरे साथ कुछ दोस्त भी हैं। वो कहते हैं कि तू दूसरे कमरे में क्यों चला गया है ? मैंने यह भी देखा कि पहले कमरे में कुछ सीलन भी आ रही है। कुछ समय बाद मैं पहले कमरे में आता हूँ तो देखता हूँ कि उस कमरे की दीवार में दरार आई हुई है तथा दीवार अपनी जगह से बीच में से खिसकी हुई है। मैं छत पर जाकर देखता हूँ कि मेरे 4-5 दोस्त बैठे हुए हैं। तथा छत खोद रहे हैं। मैं उनसे कहता हूँ कि तुम्हारी सामने वाले से दुश्मनी है तो क्या हुआ इसका मतलब यह थोड़े ही है कि तुम उसका नुकसान करो।

अर्थ:- अहमदाबाद की तरफ जाने का मतलब है कि हाईट ऑफ ग्लोरी। भगवान ने अहमदाबाद घूमने के लिये भेजा है यह हाईट ऑफ ग्लोरी है। भगवान

बता रहे हैं कि आपके जीवन में झंझावात आया हुआ है। सीलन आगे आने वाली दीमक को दर्शाती है। मगर दीमक लगी नहीं है। वर्ल्ड ट्रेड टावर की तरह जो विनाश हुआ या वैसा ही है जो दोस्त छत पर खुदाई कर रहे हैं वो तुम्हारी खुदाई कर रहे हैं क्योंकि पिछले जन्म में हमने उनको सताया था। हमें उनका भाग देना पड़ेगा। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं इतना ब्रीलियंट होने के बाद भी कुछ नहीं कर पा रहा हूँ तथा मेरे से कम समझदार लोग बढ़ते ही चले जा रहे हैं क्योंकि मैंने जो पिछले जन्म में लोगों को टार्चर किया है वो उसका बदला ले रहे हैं। वह कर्ज़ तो मुझे चुकाना पड़ेगा। उसे चुकाने का एक तरीका तो है। जो दोस्त हैं वो नाश कर रहे हैं। मुझे अपने निर्णय स्वयं लेने की जरूरत है। किसी के दबाव में आकर काम नहीं करना है।

उपचार :- 1) हनुमान जी की योग योगनियों के लिये 20 रु0 निकालने हैं। जिसमें से 10 रु0 का प्रसाद 1 रू0 भगवान का तथा 9 रु0 भिखारियों के लिये निकालने हैं।

2) दुर्गा जी की योग योगनियों के लिये 20 रु0 निकालने हैं। जिसका आलू की सब्जी व कचौड़ी 1रु0 के साथ भिखारियों को देने हैं।

3) दुर्गा जी के लिये 10+10+6=26 पूरी तथा 1+1+1=3 रुपये निकालने हैं। जिन लोगों को पिछले जन्म में प्रताड़ित किया है उसका दण्ड भुगतान करने के लिए।

आपको जो रुपये मिलने वाले होते हैं वह मिलते नहीं है। बनते हुए काम रुक जाते हैं। इसलिए आपसे जो दुर्गा जी की योग योगनियों का हाथ लगवाया है क्योंकि दुर्गा महारानी की योग योगनियाँ मनुष्य को उसके पिछले जन्मों के पापों का फल देने के लिये बीमारी और मृत्यु प्रदान करती हैं। विकराल तो ये इतनी हैं कि अपना सिर खुद काट कर अपने ही रक्त का रक्तपान कर लेती हैं। सो यह पिछला आपका भुगतान करके ऊँचाई पर जाने का रास्ता दें।

हनुमान जी की योग योगनियों का:- ये इतने विकराल हैं कि आदमी के चलते हुए काम में विघ्न

डाल कर उसे तहस नहस कर देते हैं। आशा की किरण निराशा में परिवर्तित हो जाती है।

प्रार्थना दुर्गा जी :- हे मां जो आपने मुझे बेघर होने से बचाया है उसका मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ। इज्जत से रह रहा हूँ उसका भी आभार प्रकट

करता हूँ वैभवता प्रदान करी है उसका भी आभारी हूँ। हे मां जो आपकी योग योगनियाँ मनुष्य को उसके पापों का फल देती हैं उनसे मुझे बचाइये। उनको उनका भाग देकर जो वे मेरे व्यापार में एवम परिवार में उधम मचा रही हैं और तबाही के रास्ते पर खड़ा कर दिया है उन्हें हटाइये। मुझे रास्ता दीजिये। मुझे वैभवता प्रदान कीजिये। मुझे कल्कि जी के प्राकट्य के लिए उनके प्रचार का कार्य करना है।

हनुमान जी :- हे हनुमान जी महाराज जो आपके योग योगनियाँ मेरे व्यापार में उधम मचाए हुए हैं मुझे तबाही के रास्ते पर खड़ा कर रहे हैं उन्हें उनका भाग देकर मुझे रास्ता दीजिये। हे हनुमान जी महाराज मुझे चतुर कबूतर बनाइये ताकि मैं अपना तथा परिवार का भरण पोषण करके वैभवता का अनुभव कर सकूँ। मुझे स्वस्थ शरीर से सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का कार्य करना है।

जब घर व्यापार के स्थान में आग लगती दिखाई दे अथवा नुकसान होता दिखाई दे

अर्थ: यह उपद्रव व नुकसान की निशानी है शीघ्र ही 5 रू हाथ लगाकर भगवान शंकर के रूद्राभिषेक का संकल्प लें।

प्रार्थना: हे शंकर भगवान मुझे व मेरे परिवार को तथा व्यापारिक स्थान को जो आपके गण जलाना चाहते हैं उन्हें उनका भाग देकर रोकिए। हमें कल्कि जी का काम करना है।

बम बारूद व आर्तंकवाद का दिखना

20रू हाथ लगाकर भैंरो जी को रोट चढ़ाने का संकल्प लें।

प्रार्थना: हे भैंरो बाबा जो कलियुगी आसुरी आतंकवादी शक्तियाँ मेरा मेरे परिवार व व्यापारिक स्थान का विनाश करना चाह रही हैं उन्हें उनका भाग देकर उनके स्थानों पर वापस भेजिए हमें रास्ता दीजिए हमें कल्कि जी का काम करना है।

अंकल के नाम का सीधा—हे स्वधा महारानी इस सीधे के द्वारा अतृप्त पितृ को उनका भाग दिलवाकर उन्हें उनके लोको में भेजिए, मेरे परिवार का बुरा होने

से बचाइये, हमें रास्ता दीजिए, हमें कल्कि जी का काम करना है।

स्वप्न में केंचुआ दिखना

अर्थः- यह पेट की बीमारी को दर्शाता है।

उपचारः- कल्कि भगवान से प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान मैं यह आधी कटोरी चीना व 5 रुपये से संकल्प ले रही हूँ। मैं हक् अनीह् निष्कलंक गौरण्डा दुष्टा नाशनं पापहा के पाँच हवन करूंगी/करूंगी। मुझे व मेरे परिवार को:-

क) धन्वंतरी वैद्य जी से स्वास्थ्य प्रदान करवा दीजिए।

ख) हनुमान जी के योगी-योगिनियों से मुझे व मेरे परिवार को सुरक्षा कवच दिलवा दीजिए।

ग) दुर्गा महारानी की योगिनियाँ जो सड़क पर बीमारी फैलाती हैं और मनुष्य को उनके कर्मों के अनुसार फल देती हैं उनको उनका भाग देकर मुझे व मेरे परिवार को सुरक्षा दिलवा दीजिए। हमें रास्ता दीजिए। हमें कल्कि जी का काम करना है।

पाँच हवन पूरे होने के बाद पहले की तरह दोबारा एक कटोरी में चीनी व सिक्का रखकर संकल्प कर दें कि हे कल्कि भगवान मैंने जो पाँच हवन पूरे किए हैं इन्हें स्वीकार करते हुए मुझे व मेरे परिवार को स्वास्थ्य व खुशहाली प्रदान करें। हमें आपका कार्य करना है।

रुके हुए काम आगे बढ़ेंगे

स्वप्नानुभव—जिस कार्य (project) पर मैं काम कर रही हूँ मेरी फाइल आगे की गई है

अर्थः- जिस जगत में हम रह रहे हैं उस जगत में सिर्फ़ देवता व राक्षस होते हैं ऐसा नहीं है, अंतरजगत जिन्हें हम नहीं देख पा रहे हैं वहाँ भी देवता कम, राक्षस ज्यादा हैं। वह अपनी शक्तियों से हमारे बनते कामों मं विघ्न पैदा करते हैं। आपका जो कार्य लंबे समय से रुका है वह अब आगे बढ़ेगा और आपको सफलता मिलेगी।

उपचारः- विश्वकर्मा जी का 20 रुपये का संकल्प करके कहें कि हे विश्वकर्मा जी! जो राक्षसी शक्तियाँ मेरी उन्नति के रास्ते रोड़ा अटका रही हैं और दैवी शक्तियाँ जो मेरी मदद करनी चाह रही हैं, उन्हें उनका भाग दिलवाकर, मेरी फाइल आगे बढ़वाकर मुझे उन्नति प्रदान करें। मुझे रास्ता दें, मुझे कल्कि जी का

काम करना है।

नोट:- 15 रुपये का प्रसाद लें व 5 रुपये दक्षिणा में चढ़ा दें।

भावुकता में बोल कबोल न करें

मैं कीर्तन में से वापिस आ रही थी, तभी किसी ने आवाज़ दी कि पानी गहरा है, रेत पर भी पानी आ जाता है। उसके बाद मैं पानी के ऊपर गहरी नींद में सो जाती हूँ। बहुत कोशिश के बाद मुश्किल से आँखें खुलती हैं।

अर्थ:- नींद का अर्थ है योगमाया द्वारा भ्रमित किया जाना, यहाँ आप लापरवाही बरत रही हैं।

उपचार:- गंगा महारानी जी की आप पर बहुत कृपा है। वह आपके द्वारा भक्तों को सहारा चाहती हैं। आपकी गंगा जी से वायदा खिलाफी हुई है, सो उन्हें नाराज़गी है। इसलिये गंगा जी से माफ़ी मांगे तथा किसी ब्राह्मण परिवार को ले जाकर गंगा स्नान कर लें।

नोट:- प्रिय भक्तवर कहीं आप भी किसी तीर्थ या मंदिर में जाकर अथवा किसी और के कहने पर उस तीर्थ या देवी-देवता के लिये कुछ करने का अनायास संकल्प न लें क्योंकि ऐसा करते ही वहाँ की शक्ति जागृत हो जाती है। भविष्य में आपके द्वारा भाग न दिये जाने पर तकलीफ़ उठानी पड़ सकती है। हम भाग्यशाली हैं कि हमें कल्कि भगवान कृपा करके स्वप्न, जागृत, वाणी अनुभव द्वारा बता देते हैं कि तुम किस देवी-देवता या तीर्थ से कह करके आए हो उसे पूरा करो वरना झटके सहने पड़ेंगे। यह झटके तभी खत्म होंगे जब आप उनका भाग उन्हें देंगे।

जब कोयला पर्स में से निकले

अर्थ:- यह पिछले जन्म में सर्प हत्या को दर्शाता है जो धन हानि का संकेत है।

उपचार:- चांदी का साँप बनाकर उसे प्लास्टिक या ऐल्यूमीनियम कि डिबिया में गंगा जी या यमुना जी में प्रवाहित करना है, बहाते समय 11 बार ऊँ वासुकी देवाय नम: तथा ऊँ शेष नागाय नम: कह कर बहाना है।

प्रार्थना:- हमें धन हानि बीमारी से बचाएं। हमें कल्कि जी का काम करना है।

15 नाग को बेसन के लड्डू के 5 टुकड़े करके चढ़ाएं

अर्थ:- जब आपके ऑफिस, व्यापार, घर में बहुत परेशानी चल रही है और

किसी टेढ़े आदमी के पास आपको जाना हो अथवा उसके साथ काम करना पड़ रहा हो तो इस उपचार के द्वारा उस व्यक्ति के ऊपर बैठी हुई नाग रूपी शक्ति को संतुष्ट करना है।

उपचार:- ऊपर बताए तरीके से उपचार करें और जब आपको जाना व काम करना पड़े तो ऐसी अवस्था में एक बेसन के लड्डू के 5 टुकड़े करके शंकर जी से प्रार्थना करें कि हे वासुकि जी! सामने वाले में जो नाग (सर्प) शक्ति विराजमान है उसे निकालें, मुझे रास्ता दें, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

नोट:- बन पड़े तो जब उस स्थान पर जाएं, अपने साथ प्रसाद (लड्डू) के 5 टुकड़े ले जाएं, वहाँ बाहर किसी भी पौधे में या जगह में एक-एक टुकड़ा रख दें। कोई टोके या कुछ कहे तो कहें कि भाई प्रसाद है तुम ले लो।

कल्कि जी ने मेरी भरपाई के लिए माल खराब करवाया

(मुझे श्री कल्कि नाम अपनी बुआ से मिला। सत्संग में मैंने उनसे सुना कि व्यापार में कोई विशेष परेशानी आए तो कल्कि जी का एक प्रतिशत शेयर रखने से वह काम पूरा हो जाता है। मेरे पास कपड़े का काफी पुराना स्टॉक रखा था जो बिक नहीं रहा था। मैंने ऐसा ही किया जो देखते ही देखते 4-5 महीने में बिक गया और गोदाम खाली हो गया। मैंने मिल से नया सही माल मंगाना शुरू किया। नवंबर 2012 से मिल से कुछ खराब माल आना शुरू हो गया। मैंने मन से दुखी होकर कहा कि मैं भगवान का शेयर भी निकालता हूँ फिर भी ऐसा हो रहा है आज रात मैं हाथ पांव धोकर सोने से पहले भगवान से प्रश्न पूछकर सोऊंगा कि भगवान बताओ कि ऐसा मेरे साथ क्यों हो रहा है?) मुझे 3 दिसंबर 2012 को **स्वप्नानुभव आया—**

मुझे भगवान ने बताया कि तेरा माल इसलिए खराब कर रहा हूँ कि जो तेरे विद्रोही खडे हो रहे हैं अव वह माल नहीं खरीदेंगे जिस क्वालिटी का तू खरीद रहा था अब वो खरीदना बंद कर देंगे और तेरा माल बिकना शुरू हो जाएगा। तेरा कोई माल अब खराब नहीं होगा।

उपचार— 20 रूपए से संकल्प लेकर लक्ष्मी जी और कल्कि जी का धन्यवाद। माँ दुर्गा का धन्यवाद। 26 हलवे पूरी के संकल्प के द्वारा।

परिणाम— मेरा सारा खराब हुआ माल जिस तरह से सिलकर बना बिका वह गूंगे के गुड़ से भी अधिक है।

प्रार्थना—मेरे माल को सुरक्षित करने के लिए और व्यापार को ठीक करने के लिए आपका अति धन्यवाद। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

हाय रे ये अनुभव हाय रे ये उपचार

—सुश्री शुचि माथुर (इंग्लैंड) 09810135085

(हम कल्कि भक्तों के चार प्रकार के अनुभव स्वप्न, जागृत, वाणी व मानसिक अनुभव बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। यह जो भविष्य में होने वाले खतरों के प्रति सावधान करते हैं और साथ ही साथ अचानक मिलने वाली वैभवता और खुशियों के लिये भी हमें तैयार करते हैं। भगवान श्री कल्कि तो हमें स्वप्नअनुभवों के माध्यम से सचेत करते रहते हैं। उस में प्रेम भावुकता का कोई स्थान नहीं है पर हमारी तत्परता में ही कमी रहती है कि हम उन्हें गंभीरता से नहीं लेते और परेशानियों में पड़ जाते हैं।)

स्वप्न अनुभव—एक रात मुझे दिखाई दिया कि मेरे पति को विदेशी पुलिस ढूंढ रही है, मैं उनसे सम्पर्क करने की कोशिश कर रही हूँ पर सम्पर्क नहीं कर पा रही हूँ। (मैंने इस अनुभव को गंभीरता से नहीं लिया और न ही किसी को बताया। क्योंकि इसके कुछ ही दिन बाद सपरिवार मुझे भारत जाना था। जैसे ही मेरे पति ने एयरपोर्ट पर लैंड किया, उन्हें पुलिस ने हिरासत में ले लिया।)

मेरी मां जो कल्कि भगवान में बहुत आस्था रखती हैं ने श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी (मामाजी) को फोन किया और उनके निर्देशानुसार हमने उपचार करने शुरु किये।

उपचार:-भगवान श्री कल्कि की अखण्ड ज्योत जलाई गई।

पति के सुरक्षित वापस आने पर भगवान श्री कल्कि के कीर्तन का संकल्प। दुर्गा मां का 10-10-6 पूरी हलवे और उनपर तीन सिक्कों का संकल्प कर के प्रार्थना जब तक लंदन वापिस न पहुँच जाए, करनी है।

प्रार्थना:- हे मां 10-10-6 पूरी हलवे का प्रसाद आपको दे रही हूँ। इसे स्वीकार कीजिए। मां! कलियुग जो भारत सरकार के दण्डनीय पुलिस वालों द्वारा मेरे पति को प्रताड़ित करवाना चाह रही हैं, हानि पहुँचाना चाहती हैं उन सबका दमन करके, उनके मुख, मस्तिष्क, वाणी को बंद करके मेरे पति को इंग्लैंड वापस भेजो।

दैवीय शक्तियों की सहायता प्रदान करते हुए उन्हें अपना सुरक्षा कवच प्रदान करो और फैंसला मेरे पति के पक्ष में करवाते हुए उन्हें सुरक्षित कलियुग के चंगुल से निकालकर जल्द से जल्द अपने घर वापिस जाने का रास्ता दीजिए। मुझे सपरिवार स्वस्थ शरीर से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य के लिये प्रचार का

कार्य करना है।

हनुमान जी:- हनुमान जी के चोले के लिये 165 रुपये हाथ लगाकर रखे और उपर्युक्त प्रार्थना की।

प्रार्थना:- जय जय जय हनुमान गुसाईं कृपा करो गुरुदेव की नाई
बेगि हरो संकट हनुमान प्रभु जो कोई संकट होए हमारो

हे हनुमान जी! आप हमारे गुरु हैं। हम इन पुलिस के चक्कर में अपनी नादानी से फँसे हैं। हमे क्षमा करो। हमें यहाँ से सुरक्षित निकलवाकर घर वापस आने का रास्ता दीजिए। हमें तो स्वस्थ रहकर वैभवतापूर्वक सुखीभाव से कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार का कार्य करना है। हनुमान जी की योगी योगिनियों के 20 रुपये हाथ लगाकर प्रार्थना करें कि—ये 20 रुपये आपके योगी योगिनियों के लिये निकालें हैं। लड्डू और दक्षिणा द्वारा उनका भाग उन तक पहुँचा दें। हमें रास्ता दें। जो हम पर संकट आया है (संबंधित व्यक्ति का नाम लें) उसे शीघ्र अति शीघ्र दूर करें। हमें स्वस्थ रहकर सुखीभाव से वैभवता पूर्वक सपरिवार कल्कि जी का कार्य करना है।

भैरों बाबा—हे भैरों बाबा! मैं आपको 20 रुपये और 4 रोट चढ़ाऊंगी (ऊपर वाली प्रार्थना के साथ) हमें सपरिवार....

योगमाया—20 रुपये हाथ लगाकर प्रार्थना करें।

मां! कलियुगी, दुराचारी शक्तियों को सम्मोहित करके मेरे पति को उनके चंगुल से छुड़ाइये (ऊपर वाली प्रार्थना)

बगुलामुखी मां—20 रुपये हाथ लगाकर उपर्युक्त प्रार्थना करें।

ऊँ ह्रीम् बगुलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जीव्हां कीलय बुद्धिं विनाशाय ह्रीम् ऊँ स्वाहा

फिर ऊपर वाली प्रार्थना बोलकर साथ में यह और कहना है कि हे मां हमें आपका ही सहारा है। इन सब षड्यंत्रकारी मक्कार चालबाज शक्तियों का ध्यान हमारी तरफ से हटाकर हमें निश्चिंत कीजिए। इनके मुख, मस्तिष्क, वाणी को कीलकर हमारे पक्ष में फैंसला करवाइये। हमे स्वस्थ रहकर वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार का कार्य करना है।

यमुना महारानी—दो जगह वस्त्र (5 स्त्री और 5 पुरुष के वस्त्र) 2 जगह सीधा, 1-1 पानी के बोतल, 1-1 गोला और 1-1 धूप की डिब्बी से घुप लेकर हाथ से भींच कर रखें और दक्षिणा हाथ लगाकर प्रार्थना करें—हे

यमुना महारानी ! ये वस्त्र और सीधा हाथ लगा रही हूँ, इसके द्वारा कलियुगी आसुरी दुराचारी पैशाचिक यम की मारक शक्तियाँ, अतृप्त पितृ और पितरी शक्तियाँ, और नरक में पड़ी हुई अतृप्त शक्तियों को उनका भाग देकर उनके लोकों में भिजवाइये (जो मुश्किल में हो उसका नाम लेकर) उन्हें पुलिस, कोर्ट के चंगुल से निकालकर उन्हें घर वापस आने का रास्ता दीजिए। अंधे कुएं में पड़ी पितृ शक्तियों को बाहर निकालिये। (ऊपर वाली प्रार्थना) हमें स्वस्थ रहकर सुखीभाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार का कार्य करना है।

काली मां—20 रुपये और गोले पर सतिया बनाकर पहले ऊपर वाली सेम प्रार्थना बोलें, इस गोले द्वारा उन शक्तियों का दमन करो हमें परेशानी से निकालो हमें रास्ता दो। हमें स्वस्थ रहकर सुखीभाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी का कार्य करना है।

गाय माता—5 रुपये का सिक्का, एक कटोरी चीनी में रखकर (प्रार्थना जो ऊपर कही गई थी)

सूर्य भगवान—जल अर्पण करते हुए उपर्युक्त प्रार्थना के साथ आप असंभव को संभव करने वाले हैं। अपनी कृपा तो करते हैं और देवी देवताओं की कृपा भी कराते हैं। हे सूर्य भगवान मुझे मेरी लड़की को मेरे पति को सकुशल इंग्लैंड अपने घर में वापिस जल्द से जल्द भेजें।

8 बार की नमस्कार में भी वही प्रार्थना दोहरानी है।

21 माला कल्कि महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते। जाप की — बेहद व्यस्त होते हुए भी रात तक पूरी करी।

श्री कल्कि के सहारे मालकिन ने घर-व्यापार से राक्षस को निकाला लेकिन मालिक ने रोका

—संकलनकर्ता मामाजी (9911830603)

स्वप्नानुभव— एक बिल्कुल काला गोल चेहरे वाला, कानों में कुंडल, माथे पर टीका लगाए ऊपर से नीचे तक काला आदमी दिखा। उस आदमी को मैं घर के अंदर नहीं आने दे रही थी। मैं उस आदमी से कह रही थी कि तू यहाँ से जा। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि वह आदमी कमरे में बैठा है। दृष्टा ने उससे कहा कि मेरे पति और जेठ जी ने तुम्हारी खातिरदारी करने के लिए कहा है। मुझे माफ कर देना मैं तुम्हें बाहर निकाल रही थी।

अर्थ— देखें चार वर्ष पहले आपने क्या प्रापर्टी या कोई विशिष्ट चीज पाई है

जिसके सहारे राक्षसी शक्तियों को आपके घर में घुसने का रास्ता मिल गया और अब ऐसे आए हैं कि चाह कर भी अब आप तीनों उसे बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। तरीके से उपचार तीनों सदस्यों को करने होंगे।

उपचार— एक गोला सतिया बनाकर कलावा बाँधकर 5 रू दक्षिणा के साथ काली जी को चढ़ाना है। एक जोड़ी वस्त्र-सीधा गोला धूप के साथ यमुनाजी को आसुरी अतृप्त शक्तियों, प्रेत शक्तियों को उनका भाग दिलवाने, अनचाहे मेहमान का आना दर्शाता है आप बेकार की परेशानी में फंसे हैं। एक भैंरो बाबा का दवाई (शराब) का संकल्प करके तीनों प्रार्थना करें हमें राक्षसी तांत्रिक शक्तियों के चंगुल से निकालें।

प्रार्थना— हे माँ हमारे घर व्यापार को जो कलियुगी शक्तियों ने जकड़ रखा है उन्हें निकालो हम पहले की तरह वैभवतापूर्वक अपना काम करें। उन्हें उनका भाग देकर उनके लोकों में भेजो, हमें रास्ता दो।

निष्कर्ष—सरला बहिन जी की तरह ये तीनों उपचार अपनी बनाई विषय सूची में लिख लें और प्रतिदिन संकल्प में प्रार्थना करते रहे व दो हफ्ते बाद तीनों उपचारों का सामान मंदिर में चढ़ाते रहें। यह उपचार जब तक करते रहे जब तक आपको पहले वाली वैभवता नहीं मिल जाती। नए अनुभवों का उपचार तुरंत करें।

वनमानुष से नाश नहीं सर्वनाश

—सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)

स्वपनानुभव—मुझे दिखा कि बहुत ही डरावना काले सफेद रंग का लंबा मुँह शरीर कांटे की तरह बैठा एक वनमानुष एक जाली में से मेरे ऊपर झपट रहा था। मैं डर और घबराहट से पीछे की ओर हो रही थी जिससे मुझे वनमानुष पकड़ न पाए।

उपचार—11 सिक्कों के साथ शंकर जी के 11 रूद्राभिषेक करने का संकल्प।

प्रार्थना— इस ब्रह्मांड की समस्त अघोरी, प्रेत, पैशाचिक, कुटिल, शैतानी शक्तियां पूर्ण रूप से शंकर भगवान के आधीन हैं। वो ब्रह्मांड का संचालन करने वाली तीन महाशक्तियों में से एक हैं। (शंकर भगवान के दो अधिकार क्षेत्र हैं। एक तरफ सृष्टि के संहारक हैं तो दूसरी तरफ शिव स्वरूव में सभी दुखों और कष्टों का नाश करने वाले महादेव हैं।) हे भोलेनाथ, कलियुग की जो अघोरी, तांत्रिक, प्रेत, पैशाचिक और अतृप्त पितृ शक्तियां आपके गणों के साथ मिलकर मुझे

वनमानुष के रूप में तबाह और बर्बाद करना चाहती हैं मैं शंकर भगवान के 11 रूद्राभिषेक 11 सिक्कों के साथ संकल्प कर रही हूँ उसे स्वीकार करें। इस संकल्प द्वारा उन्हें उनका भाग देकर संतुष्ट और तृप्त करें। उन्हें उनके लोकों में भेजें, उनके हर प्रहार से मेरी व मेरे परिवार की रक्षा करें, हमें सुख सौभाग्य आरोग्यता का दान दें। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

व्यापार और परिवार की रक्षा के लिए सूर्य भगवान, गाय माता, अन्नपूर्णा माँ, एक ब्राह्मण का सीधा।

प्रार्थना—हे सूर्य भगवान आप असंभव को संभव करने वाले हो। आप प्रगट नारायण हैं मैं आपको जल अर्पण कर रही हूँ इसे स्वीकार करें। मेरे पूरे परिवार की रक्षा करें व्यापार की रक्षा करें, वनमानुष के कुप्रभाव से हमारा बुरा होने से रोकें और मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

गाय माता—हे माँ! वनमानुष के कुप्रभाव से हमारा बुरा होने से रोकें हमारे व्यापार और परिवार की रक्षा करें हमें वैभवता प्रदान करें अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें हमें सुखी भाव से मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

अन्नपूर्णा—हे कल्कि भगवान मैं एक ब्राह्मण का भोजन और दक्षिणा के साथ अर्पण कर रही हूँ इसे स्वीकार करें। मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

दृष्टा ने व्यापार और परिवार को संकटों से बचाने के लिए व्यापार में आए नुकसान से बचने के लिए यह उपचार किए—

दुर्गा मां की हलवा पूरी, योगमाया महारानी, वासुकि जी, विश्वकर्मा जी, बगुलामुखी माँ, भैरों बाबा, लक्ष्मी जी, गणेश जी, हनुमान जी, कल्कि जी और माँ बगुलामुखी का हवन। (सभी देवी देवताओं की प्रार्थना के लिए पुस्तक के अंत में देखें।

सब प्रार्थनाओं में अपने व्यापार और परिवार की रक्षा के लिए प्रार्थना वासुकि जी से सर्पशक्तियों को हटाने की प्रार्थना की।

उपचार— प्रतिदिन 1 बेसन के लड्डू के पाँच टुकड़े करके 1 रूपए दक्षिणा

के साथ वासुकि जी को चढ़ाना है और प्रार्थना करनी है कि हे वासुकि जी हमारे घर और व्यापार से सर्प शक्तियों को हटाइए। मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

हनुमान जी— व्यापारिक और घरेलू परेशानियां ज्यादा होने पर शनिवार को शाम को हनुमान जी के सामने बैठ कर मंदिर में श्री कल्कि जी द्वारा बताई यह पूजा (क्रूर ग्रहों के निवारण अपनों व परायों के नजर टोटके से बचने के लिए) की जाती है।

सामग्री—लाल कपड़ा, हरा आसन, 11 आटे के दीपक, सूखा गोला, बत्ती, काली उड़द, 11 सिक्के, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक आरती के लिए, माला जपने के लिए गोमुखी।

विधि—मंदिर में हनुमान जी की मूर्ति के आगे लाल कपड़ा बिछाकर 11 दीवों में गोल बत्ती लगाकर उसमें सरसों का तेल और काली उड़द डालें बत्ती को ऐसे चिपकाएं कि वह हिले नहीं। हर दीवे में 4 या 5 दाने उड़द की दाल के डालें दीवे जला कर 11 सिक्के हाथ में लेकर संकल्प करें— हे गुरू जी महाराज, आप कल्कि मंडल के आदि गुरू हैं मैं आप से रास्ता चाहती हूँ मैं यह तांत्रिक पूजा (समय बोलना है) शुरू कर रही हूँ जिसमें मैंने आटे के 11 दीपक जलाए हैं सरसों का तेल और काली उड़द डाल कर।

हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा की एक माला का जाप, गुरू हनुमान जी की आरती, कल्कि जी की आरती करके यह संकल्प ले रही हूँ इसे स्वीकार करें। कलियुग की उन सारी दुराचारी, अघोरी, तांत्रिक, काली, म्लेच्छ, आसुरी शक्तियों का दमन करें। फिर अपनी परेशानी बताएं, हमारी परेशानियों हमें बाहर निकालिए हमारे व्यापार और परिवार की रक्षा करें। मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

आरती मिट्टी की दीवे से करनी है। दीवा आसन पर नहीं रखें। आरती के बाद सारी प्रार्थना दोबारा बोलनी है पूजा का समय समाप्त वाला भी बोलना है। आसन अपना साथ में ले आएं लाल कपड़े पर जो दीवे हैं वो वहीं छोड़ दें।

जब पितृ ने पितृ से स्पष्टीकरण मांग कर निर्णय सिंधु मंगवाया

—संकलनकर्ता मामाजी (9911830603)

स्वप्नानुभव— मेरे स्वर्गीय दादा जी के छोटे भाई का जिस दिन स्वर्गवास हुआ उसी दिन अनुभव आया कि मेरे स्वर्गीय पिताजी के पास उनके छोटे भाई जिनका उसी दिन स्वर्गवास हुआ था आए और बोले कि तुम मेरा साथ क्यों नहीं दते तुम तो उसको बहुत चाहते थे। पिताजी ने मुस्कुराते हुए धैर्य से कहा मैं सब ठीक कर दूँगा।

(यह अनुभव अब तक जा पितृ संबंधी आए उनसे हट कर है सो इसके लिए मुझे अनुभव पैनल ने मुझे निर्णय पुराण लाने को कहा कि इसका अर्थ मैं वहां से पितृ की पितृ से वार्ता अथवा जब गया करके आया पितृ दृष्टा का काम नहीं कर रहा। मेरी गरज थी सो मैं दरीबे से खेमराज श्री किशन दास मुंबई द्वारा मुद्रित 450 रुपए का निर्णय पुराण खरीद कर लाया उसके पेज नं. 601 पर स्पष्ट लिखा जवाब मिल गया।)

अर्थ— मुझे अपने स्वर्गीय पिताजी जो गया धाम में गया करके आ चुके थे उनके श्राद्ध वाले दिन गया जाकर जिसको उन्होंने भोजन पहले करवाया था उसी ब्राह्मण को भोजन कराना पड़ेगा। तब आपके रूके हुए काम आगे बढ़ेंगे।

(पहले वाला ब्राह्मण निर्णय पुराण के अनुसार मिलना असंभव है जिसको स्व. पिताजी ने भोजन करवाया था सो पैनल मैंबर ने कहा कि जो भी श्रेष्ठ ब्राह्मण मुझे मिले उसमें मन के भाव श्रद्धा यही रखें। हर ब्राह्मण को श्रद्धा से भेंट करी हुई सामग्री पितृ अवश्य ग्रहण करते हैं।)

उपचार— पैनल की सलाह थी कि मुझे गया जी जाना पड़ेगा वहाँ जाकर संतोषप्रद तरीके से ब्राह्मणों को भोजन एवं स्वप्नानुभव में आया सिल्क का कुर्ता व वस्त्र, फल फूल दक्षिणा भेंट करें।

(मैं 1 अक्टूबर 2012 को गया जी गया और पैनल की सलाह के अनुसार ही किया)

प्रार्थना— हे स्वधा महारानी स्वप्नानुभव एवं निर्णय पुराण के अनुसार मैंने ब्राह्मण देव को पूर्णरूपेण संतुष्ट किया है इससे मेरे स्वर्गीय पिताजी को संतुष्ट करवाएं मुझ पर पहले की तरह प्रेम बनाए रखें। मुझे धीरज व हिम्मत दें। मेरे रूके हुए काम बनाएं।

परिणाम— गया जी से आने के बाद मेरे में प्रेम व शक्ति का संचार हुआ मेरे पारिवारिक, व्यापारिक कार्यों में से परेशानियां श्री कल्कि जी की कृपा से हटनी शुरू हो गई मुझे रास्ते मिलने शुरू हो गए।

तीन में से कौन सी लूँ?

संकलनकर्त्ता : मामाजी (9911830603)

स्वप्नानुभव 30 जुलाई 2012— मैं अपने बेटे कि लिए लड़की देखने गई हूँ लड़की बहुत बदसूरत है और सलीके वाली भी नहीं है। मैं घबरा कर उठ गई। मैंने फौरन अनुभव पैनल से बात की।

अर्थ— कल्कि भगवान की आराधना आपने जो मन से करनी शुरू की है सो भगवान ने आपको पिछले जन्म के अनुरूप हकीकत दिखाई है कि तुम्हारे घर में ऐसा होना है। यह आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि जो खानदानी, सुंदर, सुशील परिवार वाला आपके यहाँ आया है, उन्होंने आगे बात नहीं बढ़ाई होगी। क्योंकि कल्किजी ने आपको ऐसा दिखाया है इसलिए अगर बताए गए तरीके से बेटे की शादी के लिए ज्यादा लालायित न होते हुए नीचे लिखे कदम उठाने से आपको सफलता मिल सकती है।

1. बेटे की पत्री दो विद्वान पंडितों को दिखवा कर मालूम करें कि कौन से ग्रह शादी में रूकावटें पैदा कर रहे हैं उसके हिसाब से कल्किजी द्वारा दिए उपचार आप कर सकती हैं।

2. संकल्प 5 या 10 रुपए से अथवा मानसिक भी कर सकते हैं लेकिन भूल न पड़े। अपने पास लिख कर एक पर्ची रख लें (ज्यादातर ऐसा देखा गया है कि काम पूरा होने के बाद बोल कबोल याद नहीं रहती)

अर्थ— अनुभव एवं पत्री के ग्रहों के हिसाब से आप वास्तव में परेशानी में है। जन्मकुंडली का सप्तम भाव जो विवाह संबंधित होता है, वह काफी पीड़ित है एवं बाकी ग्रह भी प्रतिकूल हैं। इसके लिए आपको जब तक शादी न हो जाए प्रतिदिन नियमित उपचार, हवन, जाप करना पड़ेगा। जो भी स्वप्नानुभव आपको आए वह तुरंत कॉपी में लिख लें। पैनल मैंबर से उसका अर्थ उपचार समझ कर करें।

उपचार— कल्कि महिमा सी.डी. द्वारा सत्संग, गणेश जी, योगमाया महारानी, राहू, भैंरो बाबा, वासुकि जी, माँ दुर्गा (10-10-6 पूरी हलवा), माँ बगुलामुखी के मंत्र का हवन श्री कल्कि महामंत्र का जाप करें। संपूर्ण प्रार्थना पुस्तक के अंत में जैसी लिखी गई है उस प्रकार करें। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

परिणाम— 30 जुलाई 2012 से मेरे ये सारे उपचार 9 दिसंबर 2012 तक

चले इस समय में अधिक मास भी आ गया। कल्कि जी की कृपा से अब सभ्य घरों से रिश्ते आने शुरू हो गए जिसमें पैनल मैंबर के अनुसार लड़का-लड़की की पत्री सिर्फ अनूप कमल, मॉडल टाऊन द्वारा ही मिलवाती थी। मैंने उपचारों से दुखी होकर पैनल मैंबर से पूछा कि उपचार बंद कर दूँ? इस पर उन्होंने कहा कि आप मालिक हैं जो चाहे सो करें लेकिन ग्रह बिल्कुल सही नहीं हैं। अफसोस कि जब आपके यहाँ खाना बनाने वाले महाराज हैं और शुभ के खजाने में रूपया है तो उपचार करने में क्या परेशानी है? इसका नतीजा यह हुआ कि जरा आग में घी ज्यादा डल गया कि अनूप कमल जी ने कहा कि तीनों लड़कियों की पत्री आपके बेटे से सही मिल रही है जिससे चाहो शादी कर दो सब बेहतरीन होगा। हमारे पास लडकी वालों के बार बार फोन आ रहे थे कि जवाब दो। इस पर हमने मामाजी से फोन करके पूछा कि तीनों में से कौन सा रिश्ता लें? इस पर उन्होंने कहा कि अपने अनुभव पढ़ो या जिनसे अर्थ पूछते हो उनसे पूछो वह आपको अपने रिकॉर्ड से बता देंगी कि आपके परिवार के हिसाब कौन सी बिटिया सही है। मैंने वैसा ही किया। देखते ही देखते मेरे बेटे की कुलीन परिवार की सुशील लड़की से शादी हो गई। इसके लिए मैं और मेरा परिवार कल्कि भगवान का बहुत- बहुत आभारी है।

नोट— पैनल मैंबर ने मेरी बहन और मुझे शादी में आगाह करा दिया था कि प्रत्येक उपचार में तुमने भगवान से वायदा किया है कि कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करूंगी इसलिए काम पूरा होने के बाद कोई नई परेशानी तब तक भगवान के समक्ष मत रखना कि जब तक उनका पहला कर्जा न चूक जाए। नई परेशानी या डिमांड बैंक लोन की तरह स्वीकृत नहीं होती है। *इसके लिए देखें इसी पुस्तक में लेख पुनर्भुगतान के द्वारा राजा रानी बने रहने का तरीका*

योगेश जी हम 15 लोगों को कल्कि जी ने बचा लिया

—मूर्तिकार श्री मोहनलाल (अलवर) 08058828266, 09694154603

(मैं भगवान श्री कल्कि जी की संगमरमर की मूर्तियाँ बनाता हूँ और श्री अनिल गड़ौदिया जी की मार्फ़त उन मूर्तियों को मैं श्री कल्कि मंदिर, सीताराम बाज़ार में पहुँचाता हूँ। भगवान श्री कल्कि की कृपा से हमारा 15 जनों का भयंकर एक्सीडेंट होते-होते बचा।)

मैं अपने स्थान अलवर राजस्थान से श्री कल्कि जी की मूर्ति को एक सवारी गाड़ी में लोड कराकर उसे जयपुर दिल्ली राष्ट्रीय मार्ग एन.एच. 8 से दिल्ली ला रहा था। गाड़ी में मेरे साथ नयाबाजार दिल्ली में व्यापारियों के यहाँ पल्लेदारी का काम करने वाले पल्लेदार थे। सुबह 10 बजे मैं अपने स्थान से रवाना हुआ। उस दिन गाड़ी को गाड़ी मालिक के स्थान पर ड्राईवर चला रहा था। गाड़ी मेरे गाँव की ही थी। गाड़ी में हम दोनो बाप-बेटे तथा चार फुट की भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति जिसका वजन करीब 8 क्विंटल होगा तथा ड्राईवर समेत हम 15 सवारियाँ थीं। गर्मियाँ चालू हो गई थीं। दोपहर होते-होत गर्मी भी बढ़ने लगी। धूप तेज हो गई थी। 12 बजे के आस-पास हमने एन.एच. 8 को पकड़ा। सभी सवारियों को नींद सी आ रही थी। रास्ते में वो सवारियाँ हमसे पूछ रहीं थी कि **यह किस भगवान की मूर्ति है और कहाँ जाएगी ? तो हम उनको कल्कि भगवान के बारे में बता रहे थे कि ये कलियुग के अवतारी हैं तथा संकट में याद करने पर तुरन्त हाजिर होते हैं।** बहरोड से आगे निकलने के बाद राजस्थान का आखरी कस्बा शाहजहाँपुर आता है। हाईवे पर ट्रैफिक अपनी पूरी गति से चल रहा था। जगह-जगह निर्माण कार्य हाईवे को चार लेन से छः लेन में बदलने के लिये चल रहा था। राजस्थान बार्डर पर टोल टैक्स पार करने के बाद हरियाणा चालू हो गया। कुछ देर बाद एकाएक बीच हाईवे पर चलते-चलते हमारी गाड़ी का आगे का पहिया फट गया। गाड़ी 80-100 कि.मी. की स्पीड पर थी। एकाएक गाड़ी लहराने लगी। ड्राईवर के हाथ पाँव काँपने लगे। उसका स्टेयरिंग पर से कंट्रोल हट रहा था। उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया। एकाएक हुए इस घटनाक्रम से सभी सवारियाँ डर गईं और गाड़ी एक तरफ को झुकती हुई फटे हुए टायर से ही करीब 1 कि.मी. चलती रही। इस दौरान अप्रत्याशित चमत्कार के तहत ड्राईवर ने धीर-धीरे गाड़ी को धीमा किया तथा अंत में गाड़ी डिवाईडर से टकराकर बीच हाईवे पर तिरछी हो गई तथा पलटने की कंडीशन में हो गई। **परन्तु गाड़ी के अंदर**

विराजित कल्कि जी ने ऐसा कुछ चमत्कार किया कि बिना किसी नुकसान के गाड़ी पलटने से बच गई और अपने आप धीरे होते-होते रुक गई। हाईवे पर जाम लग गया। सवारियों की तथा हमारी साँसे अटक गई थीं। हमने तो आँखें बंद कर लीं थी कि प्रभु अगर आपकी कुछ सेवा की है तो रक्षा करें आप ही बस सहारा हो। चमत्कारी श्री कल्कि जी ने तुरन्त हमारी सुनी। अंत में गाड़ी को धक्का देकर साईड में किया। साईड में करने पर गाड़ी की सवारियों ने वहीं पास की दुकान से ही प्रसाद खरीदा तथा प्रभु श्री कल्कि जी को प्रसाद चढ़ाया। अगर उस दिन श्री कल्कि जी हमारे साथ नहीं होते तो हम 15 सवारियों का हाईवे पर क्या हो सकता था आप सब भाग्यवान सोच सकते हैं।

आशा है मेरा यह अनुभव पत्रिका में प्रकाशित करके अन्य साथियों को भी यह अनुभव बताएंगे ताकि भगवान श्री कल्कि का व्यापक रूप से प्रचार प्रसार हो।

जब कल्कि जी की कृपा से माँ सरस्वती की प्रसन्नता भी मिली

—सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)

8 अप्रैल 2012 को राजपुर रोड मामाजी के घर में भगवान श्री कल्कि की भजन संध्या का आयोजन था। हमारे परिवार को भी निमंत्रण मिला। 7 अप्रैल की रात को मुझे एक स्वपनानुभव आया कि एक जादुई सा दिखने वाला बॉक्स है उसमें चॉकलेट या भूरे रंग का कुछ पदार्थ है। मुझसे उस बॉक्स को हिलाने को कहा गया। मैंने काफी देर तक उस बॉक्स को हिलाया, और जब उसको खोला तो उसमें सफेद बर्फ जैसा कुछ बना था जिस पर नौ देवियों की मूर्तियाँ थी। सबसे आगे सरस्वती जी कमल पर विराजमान थी, सफेद वस्त्र, वीणा के साथ मनमोहक रूप में दिखीं। सभी देवियों के चित्रों के बाहर सुनहरी रंग से आउट लाइन की गई थी। एक सफेद पत्थर पर सुनहरी रंग से सरस्वती जी लिखा था। मैंने उस पत्थर को उठा कर सीधा खड़ा किया, फिर मेरी आँख खुल गई।

मेरे मन में यह अनुभव देख कर एक उत्साह था कि आज जरूर कुछ विशेष कृपा प्रभु श्री कल्कि जी दिलवाने वाले हैं। इतने में मेरी सखी का फोन आया और उसने कहा कि आप आज कल्कि जी के उत्सव में अवश्य आना। उसके आग्रह में मुझे कुछ विशेष आकर्षण सा लगा। अत: शाम को मेरे पतिदेव ने मेरे मन का भाव समझ कर खुद ही गाड़ी राजपुर रोड मामाजी के पुराने घर की तरफ मोड़ ली। वहाँ भजन संध्या में जो अमृत बरस रहा था उसे देखकर मन में विचार आया कि आज यहाँ न आकर तो जाने मैं क्या खो देती ? उससे अगला क्षण तो मेरे जीवन का यादगार पल था जब अचानक मामाजी ने माईक पर मेरा नाम पुकारा, और कल्कि साहित्य लेखन के लिए मुझे मेरी ही नवासी (मनस्वी जिसके माथे पर पट्टी चिपकी थी जिस पर लिखा था हमें आपसे अपने भविष्य के लिए कल्कि जी का साहित्य चाहिए) के हाथों से पुरस्कार दलवाया। उस पल की महिमा को वो ही जान सकता है जिसे अपने जीवन में कभी अपने किसी कार्य के लिए सराहना न मिली हो। वो पल मेरे ह्रदय में हमेशा के लिए कैद हो गए। कल्कि जी की कृपा स्वरूप मिला यह उपहार मुझे सदा मेरे अस्तित्व की सार्थकता का अहसास कराता रहेगा। इस एक साल में कल्कि भगवान ने असंख्य उपहार मेरी झोली में डाले हैं। मुझे अपने सुबह के स्वप्न का अर्थ भी समझ आ गया कि आज लेखनी द्वारा माँ सरस्वती जी की विशेष कृपा का फल मुझे मिला है।

जब चार वर्ष से रुकी मेरी बहिन की मंगनी हुई

—**श्री मनोज पांडे** 9212703815

2011 मार्च में मेरी पत्नी को असरोही में जो प्रत्यक्ष मौत का अनुभव हुआ था तब से अपनी पत्नी की सलामती के लिये जहाँ भी जैसे भी हो मेरा परिवार कल्कि जी की मूर्ति प्रतिष्ठित करने में अग्रणीय है।

इससे गूंगे के गुड़ की तरह भगवान श्री कल्कि जी ने तो मुझे खुशियाँ भी देनी शुरु कर दीं। पहले मैं मजाक समझता व करता था कि जब सतसंग में एक दो बार सुना कि सुश्री इंदु बंसल जी ने वैष्णो देवी मंदिर गुलाबी बाग में मूर्ति स्थापना मामाजी के सतत निरीक्षण में की और अगले दिन उनकी सुपुत्री कनिका को सुबह दिखाया और शाम को उसका रोकना हो गया।

मैंने अपनी पत्नी के साथ 1 अप्रैल को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना गीता भवन सनातन धर्म मन्दिर यमुना विहार बी ब्लॉक दिल्ली में की और प्यारे बच्चों 4 अप्रैल बुधवार को मेरी बहिन का रिश्ता पक्का हो गया और 15 अप्रैल को रोकना हो गया। इसके लिए मैं और मेरे परिवार वाले पिछले 4 वर्ष से खूब जूते घिसा रहे थे। क्या कहूँ कि श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना तो दूर की बात है, मन में संकल्प करने मात्र से असंभव काम जो मैं सोचता था जो कि मेरे भाग्य में ही नहीं हैं, सच कहता हूँ पूरे होने शुरु हो गए। महर्षियों, विद्वानों की भाषा में मैं तो कहूँगा चमत्कारी श्री कल्कि जी से तो वह मिलता है जिसे गूंगे की गुड़ की तरह सही तरह से बताया भी नहीं जा सकता सिर्फ अहसास किया जा सकता है।

जिज्ञासू सम्पर्क तो क्या मेरे परिवार जनों से मिलकर उनकी खुशियों से अंदाजा लगा सकते हैं।

मुझे कल्कि भगवान ने दी है कि अपनी बुआ को दे देना

—सुश्री शालिनी पांडे (धर्मपत्नि श्री मनोज पांडे)

लगभग एक साल पहले मेरी दो अंगूठियाँ घर से या यूँ कहो कि पता नहीं कहाँ से खो गईं थीं क्योंकि मुझे अपनी उँगलियों से दोनों अंगूठी एक साथ उतारकर रखने की आदत थी लेकिन अचानक श्री सनातन धर्म मंदिर यमुना विहार (जहाँ पर अभी 1 अप्रैल 2012 को कल्कि जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हुई है।) के प्रांगण में एक छोटी सी कन्या जिसकी उम्र 4 साल की है वह बाल वाटिका की मीटिंग खत्म होने के बाद मेरी खोई हुई अंगूठी लेकर मेरे पास आई और बोली आंटी देखो यह क्या है ? देखा तो मेरी ही अंगूठी थी, जिनके लिये शांति के पलों में मैं अपने हाथ को देखकर दुखी हुआ करती थी। वहाँ अन्य लोग भी इस बात को देखकर आश्चर्य चकित थे। कुछ देर तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि मैं मूर्ति स्थापना से पहले उस मंदिर में कभी नहीं गई थी।

तभी याद आया कि दूसरी अंगूठी भी साथ ही खोई थी। शायद वो भी यहाँ मिल जाए। यह सोचकर मैंने पूरे मंदिर में झाड़ू लगाई पर मुझे वहाँ दूसरी अंगूठी नहीं मिली। परन्तु मैं एक ही अंगूठी मिलने से खुश थी। थोड़ी देर बाद मैं, अपनी मम्मी जी के घर पर आ गई। जब मैंने उन्हें यह बात बताई तो वो लोग भी बहुत खुश हुए। दो घंटे बाद मैं वापिस अपने घर आने लगी तभी मेरे भतीजे को बेटा जोकि साढ़े तीन साल का है जिसका नाम ओम है वह अंदर से खेलते खेलते आया और बोला शानू बुआ देखो मुझे क्या मिला ? देखा तो मेरी दूसरी खोई अंगूठी उसके हाथ में थी। यह देखकर मेरा और मेरे साथ घर के सभी लोगो के आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा। बस मेरे मुँह से यकायक कल्कि भगवान के जयकारे और आँखों से आँसू निकल रहे थे और मैं कह रही थी कि भगवान के देने में कोई कमी नहीं है केवल कमी हमारी प्रार्थनाओं में है। तीन साल के मेरे भतीजे से रात को मेरी भाभी और भाई ने पूछा कि तुम्हें बुआ की अंगूठी कहाँ से मिली इस पर वह बोला कि मैं चाची के कमरे में गया था वहाँ कल्कि भगवान ने मुझे दी और कहा कि अपनी शानू बुआ को जाकर दे दो। यह सुनकर तो हमारा आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

नोट : शायद यह चमत्कार जब हुआ है। जब मैंने बच्चों को पूजा करने की विधि सिखाई जैसाकि मैंने इंदु बहन के घर पर हुए संस्कार सेमिनार में कोलकाता से आईं सुश्री रश्मि गनेरीवाल के माईक पर कहने पर संकल्प लिया था। उसे पूरा करते ही भगवान ने मेरी खोई हुई अंगूठी मुझे बच्चों के द्वारा दिलवाई। पहले मुझे कल्कि जी पर विश्वास था अब मुझे उनपर दृढ़ विश्वास हो गया है।

रोजी-रोटी पर सावधान वरना

—सुश्री मेघना गोयल

मेरा परिवार पिछले 12 वर्षों से भगवान श्रीकल्कि की आराधना करता है। इस दौरान हमें कई बार स्वप्न जागृत वाणी अनुभव हुए। हमने विद्वानों से अर्थ पूछकर उनका उपचार किया जिससे हम परेशानियों से बचे और बहुत से अनुभवों से हमारा भाग्योदय भी हुआ। इसी संदर्भ में मैं अपना एक अनुभव लिख रहा हूँ। भगवान कल्कि ने कृपा करी तो भविष्य में और भी अनुभव आपके समक्ष पेश करूँगा।

मैंने 23 जनवरी, 2006 को साझेदारी में व्यापार शुरू किया था। मेरी पत्नी को तीन महीने बाद भगवान श्री कल्कि ने साझेदार की खोटी नीयत को बताने वाला एक अनुभव दिया जिसे मैंने हल्के रूप में लिया। जुलाई में मेरे पार्टनर ने दुकान के रातो-रात ताले बदल दिए, फाइलें व नगद रुपये गायब कर दिए। अब मेरे सामने कानूनी रूप में सारे रास्ते बंद हो गए। परिस्थिति अत्यन्त जटिल हो गई, तब हमने श्री कल्कि बाल वाटिका के अध्यक्ष श्री ओ.पी. गुप्ता को अपना पिघला स्वप्न अनुभव और अब की पूरी घटना लिखकर उसके साथ 251 रु. रखकर श्री कल्कि प्राकट्य के रहस्यमयी ज्ञानियों की सलाह के लिए भेजा। उन्होंने सलाह करके तुरंत आई.सी.यू. पेशेंट की तरह जिस प्रकार तुरंत ऑक्सीजन दी जाती है हमें फौरन भैरो जी, दुर्गा जी, बगुलामुखी, काली जी, हनुमान जी, विश्वकर्मा जी की प्रार्थना व उपचार बताये। कुल मिलाकर 15 संकल्पों के फलस्वरूप 24 घंटे के अंदर हमें आध्यात्मिक मदद प्राप्त होनी शुरू हुई।

18 जुलाई की रात को भगवान श्री कल्कि ने तीन अनुभव दिखाए जिनके अर्थ थे—अपनी पुरानी आदतों को बदलो, जीत तुम्हारी होगी, पैसा तुम्हें वापिस मिलेगा। भगवान श्री कल्कि कृपा से हमें व्यापार में लगा अपना रुपया मिल गया। इसके पश्चात् हमने बगुलामुखी माता, दुर्गा जी, भैरों जी, काली जी, हनुमान जी व कल्कि जी का धन्यवाद का उपचार भी विद्वानों द्वारा बताया गया किया।

निष्कर्ष : भगवान ने यह दिखा दिया कि कल्कि जी की कृपा में कमी नहीं है बल्कि मेरे में रही। इसलिए मुझे यह ध्यान रखना होगा कि— कभी

भी भगवान श्री कल्कि के अनुभवों को हल्के रूप में न लेकर श्री कल्कि प्राकट्य के रहस्यमयी ज्ञानियों से अर्थ जानकर उपचार करना होगा।
भक्तों की जीवन यात्रा सुगम रूप से चलने के लिए भगवान श्री कल्कि ने विशेष कृपा करके अपने 12 देवी-देवताओं का जो सुरक्षा कवच दिया है उनका हिस्सा देते हुए सहयोग प्राप्त करूँ और हर उपचार के बाद यह अवश्य कहूँ कि मेरी परेशानी दूर करें मुझे कल्कि जी का काम करना है।
व्यापार में, रिश्तेदारी व दोस्ती में आँख मूँदकर कभी विश्वास नहीं करूँ।

बिना घर बदले सदस्य बचा

—सुश्री इंदू बंसल

एक प्रतिष्ठित संपन्न सनातन धर्म परिवार में भगवान ने कृष्ण भक्त को दिखाया कि एक शक्ति परिवार से लुप्त हो रही है और कुछ ही समय बाद मेरी कन्या का शरीर पूरा हो गया। इसके उपरान्त परिवार घबराया और मेरे बेटे की हाल बहुत खराब हो गई जो-संभालने में नहीं आ रही थी। बेटा उल्टा ही लेटा रहता था और कहता था कि कोई काली भयंकर औरत खड़ी है और जैसे कि वह मुझे लेने आई है। वह आँख ही नहीं खोल रहा था। मेरा परिवार मथुरा का रहने वाला है। और वहाँ के पंडितों से पूछा तो उन्होंने बताया कि आपको यह घर बदलना होगा, इसमें बुरी शक्तियों का वास हो गया है। मकान हमारे घर का था (हमने मन भी बना लिया कि इसे बेच देते हैं) मैं कालका जी मंदिर श्री कल्कि मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर आई थी सो हम दिल्ली आये और मामा जी से पूछने पर मैंने भैरों जी का, कालका जी का और यमुना जी का उपचार किया।

विधि—(1) भैंरो बाबा—हे भैंरो बाबा जो कलियुगी, तांत्रिक, आसुरी व अघोरी शक्तियाँ मेरे लड़के को एवम् मेरे परिवार को घेर रही हें उन्हें दूर कीजिए। इसे और हमें कल्कि जी का काम करना है। मैं यह संकल्प के 20 रुपए हाथ लगा रही हूँ और आपका रोट चढ़ाऊँगी। इसे स्वास्थ्य प्रदान करें।

(2) काली—20 रुपए का संकल्प चढ़ाकर के कहा—हे कालका माई मैं आपका संकल्प ले रही हूँ, जो आसुरी, तांत्रिक, अघोरी व कलियुगी

शक्तियाँ मेरे बेटे व हमें घेर रही हैं, घर से बेघर करना चाहती हें उन्हें रोकिए, दूर कीजिए हमें कल्कि जी का काम करना है।

(2 क) कालका महारानी का जहाँ भोग लगता है उस तसले में 11 लौंग के जोड़े, दो साबुत सुपारी, 5 मेवा के छोटे टुकड़े, दो इलायची छोटी, एक कपूर की डली और एक जायफल हाथ लगाकर चढ़वाया कि दुराचारी, आसुरी कलियुगी शक्तियों से मेरे बेटे व परिवार को बचाएँ जो हमें नुकसान पहुँचाना चाहती हैं और हमें घर से बेघर करना चाहती है, उन्हें रोकिए हमें कल्कि जी का काम करना है।

(3) यमुना जी का उपचार—5 रुपए का सिक्का, एक धोती, बनियान, रुमाल, कुर्ते का कपड़ा, काली धूप, सूखा गोला उस पर कलावा लपेटकर हाथ लगाकर प्रार्थना की हे यमुना महारानी मुझे नहीं मारना जो दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी शक्तियाँ हमें घर से बेघर करना व मुझे मारना चाह रही हैं उनको उनका हिस्सा इसमें से दिलवा दीजिए और मुझे जीवनदान दिलवाएँ। मुझ व मेरे परिवार को कल्कि जी का काम करना है।

(4) कल्कि जी से प्रार्थना—हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनम् पापहा, की एक माला का हवन किया कि मेरे लड़के को धनवंतरि जी से स्वास्थ्य प्रदान कराइए हमें कल्कि जी का काम करना है।

भगवान श्री कल्कि की कृपा से यह सब उपाय करने के बाद पुत्र सही हो गया, भय दूर हो गये और हम दिल्ली से मथुरा आ गए। उन्होंने यह सुझाव दिया कि भगवान का नाम, हवन करते रहें और समय-समय पर भैरों जी का संकल्प करके रोट चढ़ाते रहें। लेकिन किसी कारणवश/भूलवश वह वहाँ जाकर हम न कर पाए तो—उसमें से एक बोरी फटकर उसमें से गेहूँ गिर रहे हैं। गेहूँ का गिरना यह दर्शाता है कि दोबारा कुछ परेशानी है जो हो चुकी हैं। अतः जो उपचार पहले किए हैं उनमें से कुछ उपचार जरूरत के अनुसार दोबारा करेंगे तो ही बुरी शक्तियों के चंगुल से पूर्णतया निकलेंगे वरना फिर हालत में बिगाड़ आ सकता है।

अब भगवान श्री कल्कि की कृपा से न तो मुझे मकान बदलना पड़ा मेरा परिवार सकुशल हें।

जब प्रोपर्टी का उलझा विवाद सुलझा

—अंकुर गोयल (9818522778)

एक प्रतिष्ठत संपन्न सनातन धर्म परिवार में मैंने बाल्यकाल से ही जब से होश सम्भाला भगवान श्री कल्कि का आँचल पकड़ा। मैं बचपन से ही बाल वाटिका की सभा में उत्सवों, प्रतियोगिताओं में जाता रहा और भाग लेता रहा। Convent Education मेरे माता-पिता ने जो मुझे शिक्षा दिलाई और समय-समय पर जो मुझे Courses कराए उसका प्रभाव यह रहा कि मैंने हर चीज को जब ही माना जब उसका पूरा Logic मुझे समझ में आया। बचपन के कुछ संस्कार, मान्यताएँ भी मेरे दिल व दिमाग में जगह बनाए हुए थी जिसकी वजह से मैंने बाल वाटिका की बातों को नहीं माना और कलियुग के कुछ झटके सहने पड़े।

इसी संदर्भ में एक बार मेरा परिवार बहुत बड़ी विकट परेशानी में फँसा कि हमें रास्ता नजर नहीं आ रहा था। मैंने बाल वाटिका के अनुभव पैनल के सदस्यों से संपर्क किया जिसमें उन्होंने भगवान श्री कल्कि के अनुभवों के आधार पर बताया कि अगर आप झगड़े वाली जायजाद में भगवान श्री कल्कि का 5 प्रतिशत भाग रख देते हैं तो आपका काम जल्द निपट सकता है।

मुझे व मेरे परिवार को यह उम्मीद ही नहीं थी कि जो काम 8 या 9 साल में नही निपट सका वह निपट जाएगा इसलिए भगवान से कहने में क्या हर्ज हैं देखा जाएगा जो होगा ? धन्य भगवान श्री कल्कि की लीला कि ऐसा चमत्कार हुआ कि असंभव कार्य हमारी उम्मीदों से भी ज्यादा जल्दी भगवान श्री कल्कि ने कर दिखाया।

एक दिन दबी हुई भाषा में बिना किसी को बताए अध्यक्ष महोदय से पूछा कि अगर काम बन जाए और मोटा Amount भगवान को न दिया जाए तो कोई फर्क पड़ेगा। इस पर उन्होंने उत्तर दिया देना-नहीं देना तो आपका काम है पर दुर्गा जी की तरह भगवान श्री कल्कि भी किसी पर अपना बाकी नहीं छोड़ते हैं और दोस्त उनकी लाठी में आवाज नहीं होती। इस पर उन्होंने यह भी बताया कि अगर थोड़ा-थोड़ा करके भी देना पड़ता हो तो Accounts की तरह एक तरफ भगवान का रुपया जमा कर लो, दूसरी तरफ जो कल्कि

भगवान से संबंधित खर्चा है वह लिखते रहे तो रास्ता मिलता जाएगा अन्यथा पहले जैसे कुछ झटके पुनः सहन करने पड़ सकते हैं।

जब डाक्टरों ने भी हाथ झाड़ा

—सुश्री प्रतिभा अग्रवाल (कोलकाता) 98184161

मेरी बड़ी बहन जो दिल्ली में रहती है और माँ दुर्गा एवं भगवान श्री कल्कि की उपासक है। उनसे भगवान श्री कल्कि के विषय में अधिकतर वार्तालाप होता रहता था। परंतु भगवान श्री कल्कि ने इस सत्संग के फलस्वरूप मेरी बहन को निमित्त बनाकर जिस प्रकार मुझे अपनी कृपा का पात्र बनाया वह एक अविस्मरणीय घटना है।

मैं कलकत्ता के एक संपन्न परिवार से संबंध रखती हूँ। मेरा बेटा 9 वर्ष का है काफी दिनों से पेट के दर्द से पीड़ित था। शाम को 7 बजते ही वह असहनीय पीड़ा महसूस करता था। विशेष डॉक्टरों से सलाह ली, सभी जाँच करवाई परंतु समस्या का हल नहीं निकला। हमें ज्ञात हुआ कि जादू टोटका की झपेट में मेरा बेटा आया हुआ है। मेरी बहन जो दिल्ली में है उन्होंने मुझे भगवान श्री कल्कि का नाम जाप व उपचार करने की सलाह दी। जिसमें, भैरों बाबा का उपचार, रुद्राभिषेक, माँ काली के नियमित उपचार करवाए। इन उपचारों को करते-करते मुझे अपने जीवन में पहली बार कोई स्वप्नानुभव हुआ जिसमें भगवान श्री कल्कि ने स्वयं आकर मुझे मुसीबतों से बचाया मुझे यह कहकर मार्गदर्शन दिलवाया कि, मैं लापरवाह हूँ लेकिन मेरा भाग्य अच्छा है। इस अनुभव को देखने के बाद आशा व विश्वास की किरणों से मैं भगवान श्री कल्कि के रंग में रंगने लगीं। फिर सहसा ही मेरा दिल्ली जाने का कार्यक्रम बना और मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब पता चला कि दिल्ली में 24 सितम्बर को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना माँ वैष्णों देवी के मंदिर में हो रही है जहाँ मुझे भी सम्मिलित होने का अवसर मिला। दिल्ली में मेरा बेटा बिलकुल सही रहा, उसे पीड़ा भी नहीं हुई। भगवान श्री कल्कि की कृपा से नियमित रूप से मेरा बेटा अब हवन (हक अनीह निष्कलंक···) कर रहा है और भगवान इस समस्या से निकलने के लिए हमारा स्वप्नानुभवों द्वारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

जब योगनियां भी अपना भाग चाहती हैं

—सुश्री बीना गग (9899774568)

मेरा जन्म भगवान श्री कल्कि की भक्ति से परिपूर्ण परिवार में हुआ जहाँ पूरे दिन का आधे से ज्यादा समय मुझे भगवान श्री कल्कि का सत्संग सुनने को मिलता था। भगवान श्री कल्कि और गुरु जी की कृपा से शादी के बाद मुझे भगवान श्री कल्कि की भक्ति के अनुकूल माहौल अपने पतिदेव के घर पर भी मिला।

पिछले दिनों मेरा बेटा जो 20 वर्ष का है उसे काफी तेज बुखार चढ़ा और उसकी हालत इतनी गंभीर हो गई कि 6 दिन वह आई.सी.यू. में रहा व 6 दिन कमरे में इलाज चला। 12वें दिन तक इतनी दवाइयाँ खाने के बाद भी बुखार नहीं उतरने पर मेरी चिंता बढ़ गई। लेकिन मन में भगवान श्री कल्कि व गुरु जी की कृपा की आस्था ने मुझ इतने कठिन समय में भी सहनशीलता व धैर्य प्रदान किए रखा। घर पर लाने के बाद भी बुखार नहीं उतर रहा था। उसी रात मुझे स्वप्नानुभव हुआ कि अस्पताल के वार्ड में 5 पलंग बिछे हैं उनमें से एक मेरे बेटे का भी है सभी पलंगों के नीचे एक-एक, दो-दो रुपए के सिक्के पड़े हैं। मैंने अपने बेटे के पलंग के नीचे पड़े सिक्कों को इकट्ठा किया तो वह 129 रु. निकले। मैंने इस अनुभव को जब पैनल कमेटी के सामने रखा और सदस्यों से अर्थ व उपचार पूछा तो उन्होंने बताया।

अर्थ : आपके बेटे को दुराचारी आसुरी तांत्रिक अघोरी शक्तियों द्वारा घेरा गया है जिसमें कि उसको कोई बीमारी न होते हुए भी बीमारी की दशा में डाला हुआ है। इसका हल सिर्फ योगिनियों द्वारा ही हो सकता है।

उपचार : 129 रु. निकालकर गणेश जी, हनुमान जी, दुर्गा जी, कल्कि जी से नमस्कार करके कहें कि हे योगिनियों! मैं यह 129 रु. का संकल्प आपके लिए कर रही हूँ जिसे विभिन्न स्थलों में आप तक पहुँचाया जाएगा आप स्वीकार करें। हमें कल्कि जी का काम करना है।

मेरे बेटे का बुखार उतारो उसे स्वास्थ्य व जीवन दान दो। अचरज है कि यह संकल्प करने के उपरांत मेरे बेटे का बुखार उतर गया और अब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है।

काश! तुम्हारा खोजी 21 साल पहले मिलता

—सुश्री मेघना गोयल

मैं बचपन में आज के समाज के हिसाब से जरा चंचल और नास्तिक स्वभाव की थी। मैंने शादी से पहले कभी कल्कि नाम न सुना, न पढ़ा था। शादी के बाद मैंने अपने जेठ-जेठानी से कल्कि का नाम सुना जिसमें मुझे संशय तो हुआ लेकिन आकर्षण भी महसूस हुआ। शादी के बाद जो उतार-चढ़ाव प्रायः लड़कियों के जीवन आते हैं, हो सकता है, वह मेरे पूर्व जन्म के लेन-देन के जरा ज्यादा ही थे कि मुझे बेहद विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ रहा था। मेरे जीवन की एक-एक परेशानी पहाड़ बनकर खड़ी थी। ऐसा लगता था कि यह विपदा के आसूं तो मेरे साथ ही जायेंगे। कभी-कभी तो मुझ लगता था कि ऐसे जीने से नहीं जीना अच्छा है। लेकिन अंदर से कोई ऐसी शक्ति थी जो मुझे इन विषम परिस्थितियों में भी सहारा दे रही थी। मैं धीरे-धीरे भगवान श्री कल्कि का नाम लेने लगी और मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे यह सच्चा मार्ग मिल गया है मैं इन परिस्थितियों से उबर पाऊंगी।

यह बात ग्यारह वर्ष पहले की है जब भगवान श्री कल्कि का नाम जाप करते हुए कुछ समय बीता तो मुझे स्वप्न, वाणी, जागृत अनुभव आने शुरू हो गए। स्वप्न, वाणी अनुभव के अलावा, जागृत अनुभव की मुझे बड़ी अभिलाषा रहती थी। एक दिन पूजा करते हुए मुझे भगवान श्री कल्कि की तेजोमय छवि दिखी और एक 8-10 साल का बालक दिखा जो धोती, जनेऊ धारण किए हुआ था। मेरे मन में प्रश्न उठा कि यह बालक कौन है? मुझे उत्तर मिला यह मेरा खोजी है, जो विश्व भर से मेरे भक्तों को खोज-खोज कर लाता है और मुझसे मिलाता है।

मैंने पुनः कहा प्रभु! मैं आपके खोजी से बहुत नाराज हूँ। इसने मुझे खोजने में 21 साल लगा दिये। भगवान ने कहा कि तुम खोजी से नाराज मत होना यह मेरे ही निर्देश पर काम करता है। जब जिसका समय आता है तभी उसकी मुझसे मिलना संभव हो पाता है। मैं सोचती रह गई काश! यह 21 वर्ष पूर्व मिल गया होता···

इस अनुभव के बाद मेरे मन के संशय और दुःखों के बादल गति से छंटने शुरू हो गये।

मेरी तो दुर्गा माँ

—सुश्री इंदू बंसल

मैं, कलकत्ता की रहने वाली हूँ। जिस तरह एक सम्पन्न परिवार में मेरा लालन-पालन हुआ उसमें सभी की महत्वाकांक्षा कुछ ऊँची हो ही जाती है। मेरी शादी दिल्ली में एक सम्पन्न प्रतिष्ठित सात्विक परिवार में हुई। मैं शुरू से दुर्गा जी की उपासक रही और ससुराल में भी मायके की तरह दुर्गा माँ की उपासना करती थी। शादी के बाद जो उतार-चढ़ाव प्रायः लड़कियों के जीवन में आते हैं मेरे जीवन में मेरी महत्वाकांक्षाओं की वजह से जरा कुछ ज्यादा ही आये। मैं अपने आप में इतनी व्यथित रहती थी कि जीवन में दो-तीन बाद तो ऐसा समय आया व सोचा इस जीवन को रखने से क्या फायदा है लेकिन कोई शक्ति मुझे नहीं मालूम, ऐसा करने से मुझे रोक देती थी।

मेरे पड़ौस में मेरी ही हम उम्र की दो बहुएं रहती थीं जिनसे मेरा सम्पर्क हुआ, उन्होंने बातों-बातों में भगवान श्री कल्कि का नाम जपने के लिये मुझसे कहा। मैंने यह नाम पहली बार सुना जिसे मेरे अन्तःकरण ने बिल्कुल स्वीकार नहीं किया और मैंने उनसे कहा मेरी तो दुर्गा माँ है, मैं तो उन्हीं का जाप और पूजा करती हूँ। लेकिन मेरी वह सखी मुझ पर बार-बार दबाव बनाए हुए थे कि श्री कल्कि नाम जोड़ने से आपको दुर्गा माँ की और ज्यादा प्रसन्नता मिलेगी। एक बार मेरी सखी ने कहा कि भाभी जी आप सिर्फ 21 बार श्री कल्कि महामंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' का जाप करके तो देखो आपको जरूर कुछ अनुभव होगा और जो अनुभव आपको होगा वह अनुभव हमें बता देना। इस बात को मेरे मन ने तो मान लिया कि इतने सभ्रांत परिवार की सखी जिसका श्री कल्कि जी पर इतना विश्वास है तो चलो 21 बार यह नाम भी अपनी पूजा में शमिल कर लेती हूँ। इस मंत्र में भगवान विष्णु का नाम और 2 बार लक्ष्मी जी का नाम ही आ रहा है। कुछ दिन बाद फिर हम मिले तो मेरी सखी का प्रश्न था की कुछ अनुभव हुआ, मेरा जवाब था, अभी तो कछ नहीं। वह बोली भगवान श्री कल्कि बहुत सामर्थ्यवान हैं आप करती रहो देखना एक दिना आप अवश्य सफल होगी।

एक दिम मैं एक ऐसी बड़ी समस्या में फंसी कि मुझे कोई रास्ता ही

नहीं नजर आ रहा था। तब मुझे मेरी सखी द्वारा भगवान श्री कल्कि के विषय में कहे गए शब्द याद आए और मैंने कल्कि भगवान से कहा कि अगर यह मुसीबत मुझे बिना परेशान करे निकल गई तो मैं आपके महामंत्र की 21 माला करूंगी।

जिज्ञासुओं, विश्वास मानो वह परेशानी मेरे ऊपर से इस तरह से निकल गई कि जैसे मैं उसका भाग ही नहीं थी। अगले दिन मेरा मन भगवान श्री कल्कि का अत्यन्त आभारी हो गया। मन को लगा कि कल्कि भगवान तो वाकई में चमत्कारी भगवान हैं। मैंने उनके महामंत्र की 21 माला शुरू की और उसका फल सर्मण सखी के बताये तरीके से किया कि हे कल्कि भगवान! इन मालाओं का फल आपको अर्पण है, गौ-ब्राह्मणों की रखा कीजिए, धर्म की रक्षा कीजिए, मुझे समस्याओं से निकालिये, मुझे और मेरे परिवार को रास्ता दीजिए। मुझे उसी रात एक स्वप्नानुभव हुआ···

एक वृद्ध अत्यन्त तेजस्वी तात्सल्यमयी, करुणा, दया, प्रेम से ओत-प्रोत, अपार भीड़ में एक छोटे कद की नारी सिंहासन पर बैठी थी, जिसकी एक झलक मैनें देखी। उनके पास पहुंचने के लिये दर्शकों की अपार भीड़ छटपटा रही थी। उस दिव्य नारी ने मुझे देखते ही अपने पास बुलाया और मुझे अपनी कोमल वाणी से आश्वासन दिया कि जा तेरा सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैंने पूछा कि क्या मेरे पति का व्यापार भी अच्छा चलेगा। उन्होंने कहा कि हां सब ठीक हो जायेगा। जब मेरी आंख खुली तो मन में एक नई स्फूर्ति व आशा का संचार हो रहा था।

मेरी तार्किक बुद्धि अब भी कुछ संशय प्रश्न लिये इस तथ्य को नकार नहीं पा रही थी कि यह स्वप्न अनुभव आधारहीन नहीं हो सकता। रह-रहकर मेरी सखी की बात मन में उठ रही थी कि मेरी आराध्य माँ दुर्गा भी भगवान श्री कल्कि की भक्ति की प्रसन्नता को स्वप्न अनुभव मे आकर प्रमाणित करेंगी।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा आज माँ दुर्गा और भगवान श्री कल्कि की कृपा से यह अनुभव ऐसा सच हुआ कि देखते-ही-देखते जो शादी से पहले मेरी महत्वाकांक्षायें थीं, भगवान समय-समय पर स्वप्न अनुभव देकर

रास्ता देते रहे और आज मैं अपनी गृहस्थी को उसी के अनुरूप चला रही हूँ। अगर में पिछली परिस्थितियों के मुकाबले इस समय का मिलान करूं तो मेरे मन और शरीर में एक खुशी की लहर दौड़ कर बुदबुदा जाती है।

मेरे घर में आया कन्हैया

—सुश्री मेघना गोयल

यह बात आज से बीस साल पहले की है। हमारे घर में कुछ पारिवारिक रिश्तों को लेकर तनाव चल रहे थे। बस मन में कल्कि भगवान का विश्वास और हारे का हरि ठिकाना यही भाव लिए संतोष था कि भगवान जो करेंगे अच्छा करेंगे। उस दौरान मुझे स्वप्नानुभव हुआ—

मैं पलंग पर लाचार सी लेटी हूँ तभी एक 8-10 साल का बच्चा मुझे मैया-मैया कहता हुआ आता है। मुझसे कहता है कि उठो मेरे पीछे आओ! मैं खड़ी हो जाती हूँ फिर वो मेरी साड़ी का पल्ला पकड़कर कहता मैं आगे चलूँगा तुम पीछे आनाा मैं नीचे देखती हूँ कि बहुत बड़े-बड़े गड्डे हैं। मैं डर जाती हूँ और कहती हूँ न बाबा मैं तो तेरे चक्कर में गिर जाऊँगी। वो बच्चा कहता है घबराओं नहीं मैया पहले मैं कुदूंगा फिर तुम यह कहते हुए कूदना मेरे घर में आया कन्हैया मेरे घर में आया कन्हैया। मैं उसके कहने पर ऐसा ही करती हूँ। जैसे ही वो कूदता मैं कसके आँख बंद कर के कूदती गई और कहती गई मेरे घर में आया कन्हैया मेरे घर में आया कन्हैया। जब मैंने आँख खोली तो हैरान रह गई सारे गड्ढे पार करवा दिये। वह बालक बोला मुम्हीं मेरा विश्वास नहीं कर रही थीं। मैंने उसे प्यार किया फिर वो बालक मुझे 20 रुपये देकर चला गया।

इस स्वप्नानुभव के उपरान्त वास्तविक जीवन में बड़ी-बड़ी परेशानियाँ तो बहुत आईं लेकिन भगवान श्री कल्कि द्वारा दिखाए जा रहे अनुभव व उपचारों के माध्यम से हम इन परेशानियों से निकलते गए।

मैं मेरी क्या तू मेरी उंगुली पकड़

—सुश्री संजू गड़ौदिया (9312539397)

मेरा बचपन सिरसा हरियाणा के एक प्रतिष्ठित सम्पन्न परिवार में बीता जहां भगवान श्रीराम की मान्यता है। मेरी शादी दिल्ली में हुई, जहां मुझे मेरे अनुकूल भक्तिमय वातावरण मिला। मेरे देवर की शादी के उपरांत जब मेरी देवरानी आई तो उसके मुख से कलियुग के अवतार भगवान श्री कल्कि का नाम सुनकर और उसके आग्रह करने पर भी मेरा मन श्री कल्कि नाम को स्वीकार नहीं करता था। लेकिन मुझे अपनी देवरानी की प्रतिदिन की दिनचर्या, भगवान श्री कल्कि की पूजा करना, चलते-फिरते, उठते-बैठते, काम करते, खाना बनाते, सफाई करते उसके मुहँ से 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' गाते रहना, घर से बाहर जाती और आती भगवान के चरण छूना इत्यादि मुझे कल्कि जी की ओर बहुत आकर्षित करने लगी। मेरी देवरानी ने कहा भाभी जी आप 21 बार श्री कल्कि महामंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' बोलना तो शुरू करो। मैंने कहा मैं तो भगवान राम की जप करती हूँ । वह बोली आज जो करती हैं वह करती रहें आप सिर्फ 21 बार अपनी पूजा में 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' महामंत्र का जाप करके तो देखें आपको भगवान का अनुभव अवश्य होगा और जब भगवान आपको अनुभव दें तो करना वरना छोड़ देना। मैंने उसके कहने से बेमन से 21 बार महामंत्र का जाप अपनी पूजा में शुरू कर दिया। अब वह हर 2-4 दिन में पूछती भाभी जी कुछ दिखा मैं कहती कुछ नहीं दिखा।

2 महीने बाद मुझे एक स्वप्न अनुभव हुआ कि मेरी देवरानी के लड़का हुआ है और जन्म लेते ही बड़ा हो गया। मैं उसको अपने साथ लेकर सब्जी खरीदने मंडी जा रही हूँ। रास्ते में सड़क पार करनी है, मैंने उससे कहा मेरी उंगुली पकड़ ले, तुझे सड़कर पार करा दूंगी। उसने जैसे अनसुनी कर दी। मैंने फिर कहा पकड़ना देर हो रही है माँ (सास) डांटेगी कहकर, जो उसकी तरफ उंगली बढ़ाकर देखा तो वह मुस्करा रहा है और मुझे उसके चेहरे में कल्कि जी के दर्शन हुए और वह बच्चा बोला—कि तू मुझे सड़क पार क्या कराएगी और मेरी कनिका उंगुली पकड़कर बोला—ला मैं तुझे सड़क पार

करा देता हूँ और पार करा दी···मैं दौड़ी-दौड़ी घर आई पूजा घर में घोड़े पर चढ़े भगवान श्री कल्कि की शक्ल और बाहर सड़क पर मेरे साथ उंगुली पकड़े कन्हैया की शक्ल मिलाई तो दोनों एक थीं। फिर तो मेरी आंखों से झर-झर आसूं बहने लगे जिन्हें मैं रोक ना पाई। फिर धीरे-धीरे इन कल्कि कन्हैया ने मेरा मन ऐसा रमाया कि आज मैं तो क्या मेरे मायके वाले भी भगवान श्री कल्कि का नाम जपकर ऐसी विषम परिस्थितियों से बाहर निकले हैं जिसको सोचकर मेरा मन आनन्द के झकोरे खाने लगता है।

बचपन के दो घंटे माला का महत्व

—मामाजी (9312533445)

मेरे पिताजी की मृत्यु सन् 1957 में हो गई थी, जब मैं 8वीं क्लास में पढ़ता था। सन् 1959 में परम दयालु वैष्णव वैकुण्ठवासी रामेश्वरदास गोयल जी द्वारा रामकृष्ण परमहंस के अवतार महर्षि लक्ष्मी नारायण जी से मिला। उस समय मेरी उम्र लगभग 16 वर्ष थी। उनके अत्यन्त सादगी, सरल और सत्य शब्दों का मेरे दिल पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैंने उन्हें गुरुरूप में स्वीकार करके स्वयं को भाग्यवान समझा। सत्संग में वह भगवान श्री कल्कि की लीला तो बताते ही थे उसके साथ वह यह भी बताया करते थे कि भगवान की आराधना नाम, जाप, पूजा, हवन जो कि नवधा भक्ति के हिस्से हैं उसमें यदि भगवान की लीला देखनी है तो कम-से-कम 2 घंटे माला अवश्य करनी होगी। गुरुजी कहते थे कि बच्चों की माला और पूजा को भगवान दुगना मानते हैं। उनके वचनों का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि प्रतिदिन मैंने 2 घंटें की माला शुरू कर दी। मुझे पारिवारिक द्वंद के बाद मुश्किल से कॉलेज जाने की इजाजत मिली अन्यथा नौकरी करने पर जोर दिया जाता रहा। माला करने के दौरान पद्मासन लगाना शुरू किया जिसमें एक घंटे बाद ही पैर की अवस्था बदलता था।

हमारे पूजा गृह के बराबर में ही रसोईघर था। बहुत सी बार जब खीर बनती थी तो मेरा मन यह करता था कि 2 घंटे पूजा क्या करनी है, जल्दी उठो खीर खाओ, मस्ती मारो, लेकिन गुरु जी के साथ सत्संग में सुने हुए महात्माओं के कुछ शब्द ऐसे याद आते थे जो दृढ़ता से भगवान में खड़े रहने

के लिये रास्ता देते थे। सो माला के दौरान मन को रोकने के लिये यह संकल्प कर लिया कि मैं पूजा करने के बाद खीर नहीं खाऊंगा और उस दिन रसोई घर में बनी खीर नहीं खाई। उसका परिणाम यह हुआ कि आगे चलकर जब कभी भी रसोई में कोई खुशबूदार चीज बनती थी तो मन कभी नहीं कहता था कि जल्दी पूजा खत्म करो यह व्यंजन खाना है।

शाम को 5 बजे कॉलेज से आने के बाद अक्सर मैं गुरुजी के पास जाता था और रात को 11.30-12.00 बजे तक घर वापिस लौटता था। समाज और भगवान में विरोधाभास है जो समाज के कार्य करते हुए अपनी परेशानियां बताता है उसे सब सही कहते हैं लेकिन जो भगवान के लिये चले, उनका काम करता है उसे पागल कहा जाता है, वही स्थिति मेरी भी रही।

कॉलेज में पहले दो क्वार्टर तक मेरी पढ़ाई ढीली रही। दिन में जगह का अभाव और शोर की वजह से एकाग्रता नहीं आ पाती थी। लेकिन भगवान श्री कल्कि की कृपा से जाप और पूजा का सत इतना रहा कि मैं परीक्षा में दो महीने रात को 11.00 बजे से सुबह 3.00 बजे तक एकाग्रता से पूरा अध्ययन करता था।

मुझे स्वप्न अनुभव तो कई हुए जिसमें एक अनुभव विशिष्ट हुआ, जिसमें मैं भगवान विष्णु और लक्ष्मी के बीच में बैठा हुआ हूँ, इस स्वप्नानुभव के बाद भगवान की ऐसी कृपा हुई की मैं कॉलेज में फर्स्ट आया और वित्त मंत्री वाई.पी. चव्हाण से मुझे पुरस्कार भी मिला।

कॉलेज के बाद एक साल नौकरी की काफी तलाश करता रहा तब भगवान की कृपा से स्वप्न अनुभव द्वारा ही जिस प्रकार लड़के-लड़की की शादी कराई जाती है, मेरा हाथ लगभग एक 40 साल के व्यक्ति के हाथ में दिया गया। मैंने शाम को गुरुजी को बताया कि लड़के-लड़की की शादी होते तो देखी है पर गुरुजी आज तो अनुभव में मेरा हाथ एक 40 साल के व्यक्ति के हाथ हमें दिया गया जैसे मेरी उससे शादी हो रही हो। इस पर गुरुजी बोले सब अच्छा ही होगा, हालांकि वह सब जानते थे। कुछ ही महीने बाद जिनसे मेरा हाथ भगवान ने पकड़वाया था, मैं तब तो नहीं समझ पाया

था, लेकिन उनके साथ मेरी व्यवसायिक पार्टनरशिप 16 फरवरी, 1964 को हुई तो मैं स्तब्ध रह गया। उसमें सन् 1974 में हम बगैर किसी खास विवाद के अलग हो गए। सन् 1974 से 1986 तक भगवान श्री कल्कि ने अपनी कृपा से केन्द्र सरकार और दिल्ली सरकार से मुझे एक्सपोर्ट अवार्ड दिलवाए, जिसमें प्रधानमंत्री राजीव गांधी से भी मुझे एक एक्सपोर्ट अवार्ड मिला शामिल है।

जब संतान प्राप्ति का योग बना

—राहुल अग्रवाल (9891879718)

मेरी सन् 2004 में शादी हुई थी, मेरे ससुराल में भगवान कृष्ण की मान्यता है। जैसा हर गृहस्थी में होता है कि इस साल बेटा या बेटी हो, उससे मैं वंचित रही। डाक्टरों को बहुत बार दिखाया, सब कुछ नार्मल होते हुए भी 5 बार आई.ओ. डब्ल्यू. कराया लेकिन पोजिटिव नहीं रहा और एक बार पोजिटिव भी रहा किन्तु फिर भी कामयाब न रहा। मेरे देवर श्री कल्कि भगवान को मनते हैं उन्होंने मुझसे कहा कि भाभी आप श्री कल्कि की माला और उपचार करके तो देखो, आप कहें तो मैं इस विषय में मौसाजी से बात करके देखता हूँ।

मौसाजी ने सलाह दी कि आप पहले किसी विद्वान् से यह पूछें कि कौन-सा ग्रह ऐसा है जो हमारे घर में शिशु आने से रोक रहा है। उसके बाद ही भगवान श्री कल्कि के नाम जाप के साथ उस ग्रह के स्वामी को हम उसका भाग यह कहकर दें कि हमें कल्कि जी का काम करना है तो आपको अवश्य सफलता मिलेगी। उसके बाद आप उपचार करें। करने वाले भगवान हैं मैं तो सिर्फ आपको अजमाया हुआ रास्ता बता रहा हूँ। उस पर भैय्या ने ऐसा ही किया और मुझे उस पर जो उपचार बताये वह मैंने 20 मई, 2006 से करने शुरू किए।

उपचारों के बाद भगवान श्री कल्कि की कृपा से जनवरी 2007 में मुझे शिशु की प्राप्ति हुई। जिस दिन से डॉक्टर ने मुझे पोजिटिव बताना शुरू किया और जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा महीने पर महीने बीतने लगे मेरा स्नेह, विश्वास श्री कल्कि नारायण के साथ उन सभी देवी-देवताओं

के साथ तो बढ़ा। लेकिन इस दौरान कल्कि जी ने जो मुझे अनुभव दिये और रास्ता दिखाया, भैय्या मौसाजी से उसका फौरन अर्थ व उपचार पूछ लेते थे। उससे मेरा भगवान श्री कल्कि और उनके उपचारों में अटूट श्रद्धा और विश्वास हो गया। मैंने पाया जैसे माँ-बाप अपने बच्चों का ख्याल रखते हैं उसी प्रकार कल्कि जी मेरा ख्याल रख रहे हैं।

उपचार—मंगलवार और शनिवार को हनुमान जी के चरणों में (सीधे पैरे की उंगुलियों में 11 बार फिर उल्टे पैर की उंगुलियों में 11 बार) सिन्दूर लगाना 'ॐ हनुमते नमः' का जाप करते हुए । फिर घी का दीपक जलाकर हनुमान जी व कल्कि जी की आरती करना। कटोरी का जल आरती पर घुमाकर अपने ऊपर छिड़क कर फिर आरती लेकर प्रार्थना बोला—हे हनुमान जी मेरी दुराचारी शक्तियों से रक्षा करो—मुझे सन्तान प्राप्ति कराएं मुझे कल्कि जी का काम करना है।

गाय माता का भोजन निकालना (चार रोटी पर सब्जी/चीनी) हाथ में जल लेकर प्रार्थना बोलना—गणेश जी को नमस्कार, हनुमान जी को नमस्कार, दुर्गा जी को नमस्कार, कल्कि जी को नमस्कार, गौ-माता को नमस्कार, हे गाय माता मैं आपको यह भोजन दे रही हूँ, स्वीकार करें। हे माँ, मेरी और मेरे परिवार की रक्षा करें। मेरे ऊपर आने वाली विघ्न-बाधाओं को दूर करें, शीघ्रातिशीघ्र मुझे स्वस्थ संतान की प्राप्ति करायें। मैं कल्कि जी का काम करूंगी।

पूर्णिमा के दिन सत्यनाराण भगवान की कथा रचना व संकल्प छोड़ना मुझे कल्कि जी का काम करना है। शुभ के पैसों में भैरों बाबा के रोज के 20 रुपये के संकल्प पर हाथ लगाना कि आपका रोट चढ़ाऊंगी।

सरस्वती कवच का रोज दो बार पाठ करना। दुर्गा जी का 30 रुपये का संकल्प निकालना कि हे माँ मैं 10-10-6 की पूरी व उन पर हलुआ रखकर आपको चढ़ाऊंगी। पूरी की गड्डियों पर हलुआ रखना होता है। यह पूरी हलवे का प्रसाद घर नहीं लाना होता है। प्रति शुक्रवार पूरी हुलआ बनाकर संकल्प के रुपये रखकर दुर्गा जी के मन्दिर में भेजे देते थे।

4-इन-1 पद संग्रह गुरु जी (हनुमान जी/बालमुकुन्द जी) के चरित्र का शनिवार एवम् मंगलवार को पाठ करना।

प्रार्थना—गणेश जी को नमस्कर, हनुमान जी को नमस्कार, दुर्गा जी को नमस्कार, भैरों बाबा को नमस्कार, कल्कि भगवान को नमस्कार, हे कल्कि भगवान मुझे और मेरी आने वाली संतान को सुरक्षा चक्र प्रदान कीजिए। जो कलियुगी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी बुरी शक्तियां मुझे और मेरे बच्चे को परेशान करना चाहती है उससे मुझे बचाएँ। मुझे और मेरे परिवार, मेरे पति और मेरे बच्चे को आसुरी शक्तियों से बचाओ। हमें कल्कि जी का काम करना है।

यह प्रार्थना सब संकल्प के बाद करनी है बस जिन देवी, देवता का संकल्प निकाल रहे हो उनका नाम आखिरी में बोलना होता था।

तलाक का बंद रास्ता तो खुला–उसी संकल्प उपचार से बहन की शादी भी हुई

—मामाजी

मैं हिसार (हरियाणा) की रहने वाली हूं। मेरी शादी दिल्ली में हुई। मैं खरीदारी कर रही थी कि मुझे मेरी बहन मिली तो उसने मुझसे पूछा तुम कैसी हो ? मैंने उसको अपनी व्यथा सुनाई कि मैं ठीक नहीं हूँ। मुझे ससुराल वालों ने शादी के बाद बेहद तंग कर रखा है। मेरे बेटे को भी रोक लिया है। मैं अब पिता के घर में हूँ। न मेरे बेटे को देते हैं न तलाक के पेपर पर हस्ताक्षर करते हैं। वकील और कोर्ट को भी गुमराह करते हैं। हमें ऐसा फंसा दिया है कि समय बीतता जा रहा है और यह तलाक का मामला निपटना असम्भव सा है। इस पर मेरी बहने ने कहा कि मैं तुझे मामाजी का फोन नं. देती हूँ तू बात करके देख। मैंने मामाजी से बात की तो उन्होंने मुझे कहा कि क्या आप इस परेशानी के लिए भगवान को 2000/–रुपये उधार दे सकती हैं। मेरी सहमति पर उन्होंने कहा कि इसकी 20 रुपये के नोट की गड्डी लेकर एब डिब्बे में रख लें और इस डिब्बे पर लिख दें कल्कि जी के शुभ के रुपये। अपनी आमदनी या जो रुपये मिले उसमें से 1000 रुपये में से 5 रुपये कल्कि जी के शुभ के रुपये कहकर डिब्बे में गेरती रहे। जब ज्यादा हो जावे अपने उधार वाले रुपये वापिस ले लेना। इसमें से ही प्रतिदिन आप संकल्प करेंगी। इसके बाद मुझे उन्होंने भैरों जी, हनुमान जी और गाय माता के उपचार और प्रार्थनायें बताई।

(1) भैरों बाबा का उपचार—प्रतिदिन 20 रुपयों को हाथ लगाकर संकल्प करती थी, गणेश जी को नमस्कार, हनुमान जी को नमस्कार, (मामा जी ने बताया था कि आप हनुमान जी को गुरु बना लेवें), दुर्गा जी को नमस्कार, कल्कि भगवान को नमस्कार, भैरों बाबा को नमस्कार।

हे भैरों बाबा, मैं ये 20/-रुपये के संकल्प को हाथा लगा रही हूं रोटी चढ़ाऊंगी मुझे कलियुग, दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक शक्तियों के चुंगल से निकालें जो मेरे तलाक के पेपर साईन नहीं होने दे रही है और मेरे बेटे को मुझे वापिस नहीं दिला रहीं हैं। मुझे कल्कि जी का काम करना है।

(2) जिस दिन कोर्ट जाना हो अथवा कोई इस सम्बन्ध में कोई (छमहवजपंजपवद) बात करने जाना हो तो हनुमान जी की आरती करके जाएं।

(3) ॐ हूं हनुमते नमः की एक माला का जाप करें और हनुमान जी से कहें कि मेरा काम करायें मुझ कल्कि जी का काम करना है।

वैसे मैं प्रतिदिन की पूजा में बजरंग बाण, सुन्दर काण्ड, दुर्गा चालीसा का पाठ किया करती थी सो इन उपचारों के साथ यह सब चालू रखा।

(4) बन पड़े तो कल्कि जी के शुभ के रुपयों में से आटे की एक बोरी मंगाकर चार रोटी गाय की बना देवें और उस पर जरा सी चीनी रखकर जो साग घर में बना है, रखकर ऊपर भैरों जी के बताए संकल्प की तरह सिर्फ भैरों जी के जगह गाय माता का नाम आएगा—हे गाय माता मेरे घर से अलक्ष्मी और दरिद्रता निकालें, लक्ष्मी लाएं—इसके बाद वही प्रार्थना कर दें जो हमने भैरों बाबा से की है।

मैंने मामाजी को बताया कि रोहिणी (दिल्ली) में गाय आसानी से नहीं मिलती सो मामाजी ने बताया कि गाय के प्रतिदिन न मिलने पर यह रोटियां आप डिब्बे में रख सकते हैं। हफ्ते दो हफ्ते में जब कभी सुविधा हो तो किसी गौ-शाला या जहां गाय उपलब्ध हो वहां दे देवें। रोटी की भी सुविधा न बन पड़े तो उस केस में 10 रुपये अथवा जो श्रद्धा हो यही प्रार्थना के साथ संकल्प कर दें।

श्री कल्कि जी के साथ विशेष एक साल

—डा. वेद प्रकाश गुप्ता (011-23936187)

परिचय : वैसे तो जब से होश संभाला, घर में पूजा, पाठ, कथा, व्रत, सत्संग व मामाजी का कल्कि जी में अटूट विश्वास देखा। मेरा नाता श्री कल्कि जी से लगभग सन् 1965 से है और मेरी पूरी श्रद्धा है। शुरूआत में श्री गुरूवर लक्ष्मी नारायण जी से उनके निवास स्थान कूंडेवालान में मिला था। उनके पास मैं मामाजी के साथ जाता था। जब कभी पढ़ाई के बीच होस्टल अथवा विदेश से आता था तो मिलना होता था। गुरूजी, मामाजी, व अन्य कल्कि भक्तों से बहुत कुछ सीखा। वहाँ पर बहुत सी बार संभल से भी भक्तगण आते थे व अनुभवों की भी बातें होतीं थीं। जैसा कुछ ख्याल पड़ता है उस समय हफ्ते में दो बार सत्संग होता था। एक बारह घंटे का रविवार को किसी सदस्य के घर पर व बुधवार को 3 घंटे के आसपास घर पर या मंत्री जी के घर में होता था। विश्वास मानिए बहुत ही आनंद आता था। एक अद्भुत सा प्यार गुरूजी व उनके साथ भक्तों में देखा।

इन 45-46 वर्षों में प्रभु श्री कल्कि, देवी देवताओं व बड़े बुजुर्गों से बहुत कुछ पाया व पा रहा हूँ। जैसे एक सुखी परिवार, पत्नी, बच्चे, पोता-पोती, अच्छा व्यापार व उच्च शिक्षा और समाज में खड़े रहने के लिए नाम।

मैं इसमें कोई बढ़ाई नहीं कर रहा हूँ पर मैं यह बताना चाहता हूँ कि पूरे कष्ट में भी श्री कल्कि जी हमारे साथ हैं। जिस प्रकार खुशी में व दुख में होते हैं। यह कुछ मैंने इस एक साल में देखा है। किस प्रकार श्री कल्कि जी कष्टों में से निकाल कर ले जाते हैं, यह बहुत आश्चर्य की सी बात लग रही है।

इस एक साल को अपनी सहूलियत के हिसाब से मैं तीन भागों में बाँटना चाहूँगा कि किस प्रकार कल्कि जी की कृपा से मैं परेशानियों से बाहर निकल कर आआ हूँ।

1. शारीरिक स्थिति

2. आर्थिक स्थिति

3. पारिवारिक स्थिति

दिसंबर 2009—मेरे मुँह में ऊपर की तरफ तालू में एक लाल दाना सा हो गया था, जिसे मैंने दाँतों वाले डॉक्टर को तीन चार बार दिखाया। डाक्टर ने दवाई खाने की व लगाने की भी दी लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा।

जनवरी 2010—मैंने इस तालू के लाल दाने को दूसरे दाँत वाले डॉक्टर को दिखाया। बहुत अच्छी तरह जाँच करने के बाद यह बताया गया कि दाना अच्छा नहीं है। इसके लिए दवाई दी व खाने पीने का काफी परहेज बताया व किसी भी प्रकार के शौक के लिए मनाई करी। यह बात 3 जनवरी 2010 की है। मैं बहुत परेशान था। मुझे 7 जनवरी को अपनी पत्नी के साथ पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मदुराई व रामेश्वरम जाना था। रामेश्वरम धाम में रामायण का सत्संग हमारे परिवार के गुरू जी करवा रहे थे उसमें उन्होंनं बुला रखा था । मैंने मामाजी से बात की। उन्होंनं बहुत अच्छी तरह से समझाया कि घबराने वाली कोई बात नहीं है और न ही प्रोग्राम में फेरबदल करने की जरूरत है। उन्होंने कुछ उपचार बताए और कहा कि बन पड़े तो जल्दी कर लो तो अच्छा होगा।

1. 100 रूपए के नोट पर पर्ची लगाकर 5 दिन 20 रूपए के हिसाब से **श्री हनुमान जी के योगी योगिनियों के लिए।**

प्रार्थना : हे गुरूदेव हनुमान जी मैं यह पैसे निकाल रहा हूँ। आप की योगी योगिनयाँ जो मुझे परेशान कर रही हैं इसके द्वारा उन्हें उनका भाग दिलवा दीजिए। मैं सुखी भाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी का कार्य करना चाहता हूँ। मुझे रास्ता दीजिए।

2. **यमुना महारानी**—5 रूपए का सिक्का हाथ लगा कर रोज यमुना जी में प्रवाहित करना। **प्रार्थना :** हे यमुना महारानी यह सिक्का मैं निकाल रहा हूँ यह यमराज व उनकी शक्तियों को दिलवा दीजिए। मुझे नहीं मरना, मुझे वैभवतापूर्वक कल्कि जी का काम करना है। मुझे रास्ता दीजिए।

7 जनवरी, 2010—अच्छे काम में दिक्कतें तो आती ही है पर कल्कि जी सहायता करते हैं। एयरपोर्ट पहुँचने में देर होने की वजह से हवाई जहाज के गेट बंद हो गए। वहाँ हमें यह बताया गया कि या तो नए टिकट लेकर जाया जा सकता है या प्रोग्राम बदल दें। वहाँ एक महिला को सारी बात समझाई तो उन्होंने हमें थोड़ी देर इंतजार करने को कहा। उन्होंने कुछ देर बाद अपने सहयोगी से कुछ कहकर मुझे प्रमुख ऑफिस में भेजा। उस सज्जन ने बिना कुछ अतिरिक्त पैसे लिए शाम को हमें बंगलौर भेज दिया व अगले दिन पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम में हमने भाग लिया। हमारा प्रोग्राम श्री कल्कि जी की कृपा से बहुत अच्छा रहा। मीनाक्षी मंदिर व रामेश्वर धाम का हमने पूरा आनंद लिया।

10-11 जनवरी, 2010—जब तालू के निशान के लिए दिखाने के लिए

गया तो जीभ पर पीछे की तरफ भी दिखाया कि कहीं पैने दाँतों की वजह से तो तालू पर दिक्कत नहीं हो रही है। डाक्टरों ने जीभ को अच्छी तरह से चैक करने बाद यह बताया कि जीभ पर आखिरी में निशान है जो कैंसर भी हो सकता है। 10-15 दिन दवाई खाई और 4-5 बार दिखाया पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

27 जनवरी, 2010—मामाजी से बात हुई और उनसे पहले दिन हुए स्वपनानुभव पर भी चर्चा हुई।

स्वपनानुभव : जी मिचला रहा था। मैं किसी जानने वाले स्वर्गीय प्रतिष्ठित अनुसाशन प्रिय सज्जन के ऑफिस में गया और उन्हें अपनी परेशानी बताई। उन्होंने सलाह दी कि ज्यादा पानी पीयें उल्टी में सब निकल जाएगा।

उपचार—सीधा निकाल कर स्वधा महारानी को उन सज्जन के नाम से दूँ। मैं ज्यादा पानी पियूँ। और जो एक के बाद एक बीमारी बढ़ रही थी उसके लिए उन्होंने दुर्गा महारानी जी से प्रार्थना के लिए कहा।

दुर्गा महारानी जी से प्रार्थना व उपचार—20 रूपए रोज निकाल कर उनसे प्रार्थना करूँ कि हे दुर्गा महारानी आपकी योगी योगिनियाँ जो सड़को पर बीमारी फैलाती हैं व मनुष्यों को उनके पापों का फल देती हैं उनके लिए मैं कचौरी आलू का साग व खुले सिक्के बाँटूगा यह हिस्सा उनको दिलवाएं। मुझे नहीं मरना, मुझे बीमार नहीं रहना, मुझे वैभवतापूर्वक कल्कि जी का काम करना है।

3 फरवरी, 2010—दिक्कत व मानसिक परेशानी बढ़ती गयी मुझे एक स्वपनानुभव हुआ—कुछ सिक्के खाने का सामान व पट्टी बाँट रहा हूँ। उनके जैसे पैसे निकाले हुए हैं। कुछ देर बाद दिखा कि किसी जगह पर कोई भोजन के लिए इंतजार कर रहा है।

प्रार्थना गाय माता के लिए—हे गाय माता मेरे भाग्य में से जो अन्न खत्म हो रहा है उसे खत्म न कराया जाए मैंने हनुमान जी व दुर्गा माता का भाग दे दिया है। माँ मैं हरी मेथी मिलाकर रोटी आपके भोजन के लिए दे रहा हूँ इसे स्वीकार करें सुखी भाव से मुझे वैभवता पूर्वक कल्कि जी का कार्य करना है।

प्रार्थना धनवंतरी जी—20 रूपए रोज हाथ लगाकर हे धनवंतरी जी मैं यह पैसे निकाल रहा हूँ यह आपकी योगी योगिनियां जो बीमारी इत्यादि फैलाती हैं जख्म या कष्ट आदि देती हैं काट फाँस या आपरेशन इत्यादि कराती हैं उनके लिए मलहम, पट्टी, दवाई इत्यादि दूँगा। उनका हिस्सा उनको दिलवाइए मैं कोई ऑपरेशन नहीं चाहता। मुझे सुखी भाव से, वैभवता पूर्वक कल्कि जी का कार्य करना है।

12 फरवरी, 2010—दाँत वाले डॉक्टर साहब भी काफी चिन्तित थे क्योंकि

तालू व जीभ का निशान ठीक नहीं हो रहा था। तालू के निशान के लिए यह विचार बनाया कि आखिरी का ऊपर का व नीचे का दाँत निकाल दें तो हो सकता है कुछ फर्क पड़े। जीभ के निशान के लिए किसी कैंसर विशेषज्ञ को दिखाएं। उसके लिए एक कैंसर विशेषज्ञ से भी राय ली जो मेरे भी परिचित हैं।

इस बीच मामाजी से बात हुई उन्होंने कहा जैसे पहले धन्वंतरी जी से प्रार्थना की थी उन्होंने लगातार करने के लिए कहा। मैंने फिर से धन्वंतरी जी से चमत्कारी प्रार्थना शुरू करी।

श्री कल्कि जी की कृपा से उन दोनों डॉक्टरों में आपस में बातचीत हुई और वो इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अभी 10-15 दिन इंतजार करें अभी बॉयोप्सी न करवाई जाए।

दोस्तों यही बात हर बार दिमाग में आती थी कि अगर कैंसर निकला तो बहुत बड़ा ऑपरेशन होगा। चेहरा भी खराब होगा व खाने पीने की भी दिक्कत होगी। फरवरी 2010 के मध्य कैंसर विशेषज्ञ से मेरी बात हुई उन्होंने ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टिटयूट में चैकअप करवाने को कहा, क्योंकि वहां सारे साधन उपलब्ध थे।

निश्चित दिन हम अस्पताल पहुँचे। वहाँ डॉक्टर साहब व उनके सहयोगी डॉक्टरों ने काफी अच्छी तरह से भिन्न भिन्न औजारों से देखा। मैंने तो सब कुछ चमत्कारी श्री कल्कि जी पर छोड़ दिया था। इसके बाद डॉक्टर्स ने मुझे बताया—

1. तालू का दाना खराब नहीं है। वो कुछ खून की नली का सा हिस्सा है और वो कुछ समय में अपने आप सामान्य हो जाएगा। मानो जैसे कन्हैया ने मरा हुआ संदीपन का पुत्र गुरुमाता को यह कहकर सौंप दिया, तुमने खोजा ही नहीं यह तो नदी के पार खेल रहा था।

2. जीभ पर जो निशान है वो कैंसर का नहीं है और उसकी बायोप्सी की भी जरूरत नहीं है।

यह राय उन्होंने दी कि हर दो तीन महीने में इन दोनों निशानों की जाँच करवाता रहूँ।

तालू का दाना तो दो तीन महीने में ठीक हो गया। जीभ का निशान चैक करवाता रहता हूँ। दाँतों की वजह से दोनों गाल में सफेद सा निशान है उसको भी चैक करवाता रहता हूँ।

अनुभव के आधार पर जो भी उपचार बताए जाते हैं मैं अवश्य करता रहता हूँ। श्री कल्कि जी की अपार कृपा व परिवार वालों के प्यार से पूजा पाठ की लगन से अब जीवन का आनंद ले रहा हूँ।

मुझे भी चाहिए

—मामाजी

16 जुलाई, 2005 को अनुभव गोष्ठी में श्री ओ.पी. गुप्ता जी ने एक भक्त के यह पूछने पर कि मुझे अनुभव नहीं होते बताया कि आप भगवान के जप पूजादि कर्म कर रहे हैं बहुत अच्छा है, इसके साथ कोशिश करें कि सुबह साढ़े चार बजे से साढ़े पाँच बजे के बीच में अवश्य उठें और अपने अनुभव सुबह बाथरूम जाने से पहले अथवा आने के बाद अवश्य लिखें। तब एक अन्य भक्त ने पूछा कि अनुभव लिखने का क्या फायदा है ? यह याद तो रहेंगे नहीं। तब गुप्ता जी ने अपना 27 जून, 2005 को जागृत अवस्था का अनुभव बताया।

मेरी धर्मपत्नी का 15 जून, 2005 को शरीर पूरा हुआ। 27 जून को ऑफिस जाने के लिए जैसे ही मैं गाड़ी में बैठा तो मेरी बाँईं ओर कनपटी पर टक सा हुआ 'मुझे चाहिए' मैं एकदम स्तब्ध रह गया कि सारे काम पंडितों के हिसाब से पूरा कर रहे हैं दसवें का पूरा काम पंडितों के बताये विधान द्वारा किया जा रहा है तब इन्हें (मेरी धर्म पत्नी) को क्या चाहिए। एक दिन दिमाग पूरा सोचता रहा फिर याद आया कि अनुभव में मेरी बहनजी (श्रीमती सरला देवी) ने अनुभव में कुछ साल पहले अपने शरीर पूरा होने के बाद सतरहवीं के लिए कुछ माँगा था। फिर ध्यान आया कि कहीं इन्हें भी तो बहन जी वाला सामान नहीं चाहिए। उसके लिए दस साल पुराना रजिस्टर खोजना शुरू किया जो कि दो दिन बाद मिला। वह अनुभव आपकी जानकारी के लिए नीचे दिया जा रहा है।

15 अप्रैल, 1995 को श्रीमती सरला देवी का शरीर पूरा हुआ। सतरहवीं 1 मई, 1995 को थी अनुभव 24 अप्रैल, 2005 को सुबह चार बजे हुआ कि बहन जी ने जैसे कहा कि सतरहवीं में थाली में लड्डू सब ब्राह्मणों को, एक शैय्या पर और एक जो लड़का शैय्या के बराबर गैलिस जैसे लगाये बैठा है उन्नीस जगह दें। मैंने सोचा खाली लड्डू थोड़े ही दिये जाते हैं। सतरहवीं में चबैनी तो सुनी है वह भी लड्डू कचौड़ी थैली (कागज) में होते हैं। अतः मुझे तो समझ में नहीं आया मुझे तरीके से बता देवें तो वैसा करा देंगे। हे

भगवान मुझे समझ में नहीं आया कृपा करो।

मैं दूसरी करवट लेट गया तो जैसे अनुभव फिर शुरू हुआ होगा और श्री किशन बाबू (मेरे बड़े भाई) जैसे मुझसे पूछ रहे हैं और मैं पंडित की तरह विश्वासपूर्वक उनको जवाब दे रहा हूँ—(1) लड्डू कितने होंगे ? पाँच-पाँच (2) काहे के होंगे ? रवे, बेसन के। (3) काहे में रख कर देने हैं ? कन्ने उठी थाली में। (4) थाली काहे की ? काँसे की थाली। (5) कितनी जगह ? उन्नीस जगह। (6) किस किस को देने हैं ? सत्रह ब्राह्मणों को एक शैय्या पर, एक लड़का जो शैय्या ले जावेगा उसे। (7) लड्डूओं का वजन कितना होगा ? सवा-सवा किलो दोनों मेल के। (8) यह बाजार से ही बनवाकर मंगवा लें ? नहीं यह घर पर ही बनेंगे।

इसके पश्चात् शक्ति रूप में बहन जी बैठी हैं योगी रूपणी (देह नहीं) तेजरूप में और उसमें से आवाज निकली जैसे ठरक के बोली मैं तेरे से सत्संग करने (बात करने) जैसे फोन पर करा करती थी आती रहूँगी और जैसे घर पर आया करती थीं बातें (सत्संग करने) आऊँगी-आती रहूँगी जब यह सामान श्रीमती सरोज की सत्रहवीं के लिए परिवार व पंडितों के बीच में आया तो वह कहने लगे यह तो नहीं, देखे भी नहीं, शास्त्र में भी कहीं नहीं लिखा है। गुप्ता जी ने विनम्र निवेदन किया कि मैं मानता हूँ कि शास्त्रों में नहीं लिखा लेकिन कल्कि भगवान् ने बताया है और इसका फल मैंने अपनी बहनजी के केस में देखा है तो वह राजी हुए। यह चर्चा दो दिन गर्म रही। इस दौरान गुप्ता जी के सुपुत्र योगेश धर्म संघ में शास्त्री जी के पास गए तो उन्होंने बताया कि काँसे की थाली (काँसा एक ऐसी धातु है जो यमराज को पसंद है) लड्डू (रवे या बेसन) का देना मोक्ष का सूचक है।

तो प्रिय भक्तवर! जैसा कि इस अनुभव व इसके उपचार से जो निष्कर्ष निकला है वह हम आपकी जानकारी के लिए बताना चाहेंगे जिसे आप चाहे तो कालान्तर में इच्छानुसार श्री कल्कि का भजन करने वाले कल्कि भक्त के लिये अपना सकते हैं। इससे यह पाया गया है कि जो भी कल्कि भक्त भगवान् के धाम जाता है, यह उपाय उसे एक ऐसा वी.आई.पी. कार्ड उपलब्ध करा देता है, कि वह स्वप्न अनुभवों द्वारा परिवार को निर्देश/संभालता रहता है और आवश्यकता पड़ने पर वह उनसे आवश्यकतानुसार

लेते भी रहता है। बहुत से साथियों को यह भी कहते सुना है कि पितृों का दिखना अच्छा नहीं होता है लेकिन यह भगवान् श्री कल्कि के अनुभवों से विपरीत पाया गया कि यह शाश्वत सत्य है कि पितृ हमारे दुःख, सुख के साथी हैं और उनकी माँगी गई सामग्री देकर हम उन्हें सहयोग पहुँचाते हैं।

भगवान श्री कल्कि द्वारा प्रदान विभिन्न देवी देवताओं के सुरक्षा कवच को प्राप्त करने हेतु किए जाने वाले उपचारों की प्रार्थनाएं

श्री गणेश जी

हे गणेश जी आप विघ्न हर्ता और ऋण हर्ता कहलाते हैं। शंकर भगवान के समस्त गणों के अधिपति होने के कारण आप गणपति कहलाते हैं। आप लाल रंग के फूलों, वस्त्र के श्रृंगार तथा लड्डुओं (मोदक) के भोग से शीघ्र प्रसन्न होते हैं। आप मनुष्य के शरीर में स्थित आठ चक्रों में से प्रथम मूलाधार चक्र के स्वामी हैं। आपकी कृपा के बिना मनुष्य में दैवी शक्तियों का जागरण असम्भव है। हे गणेश जी अपनी परेशानियाँ बताकर—मुझे श्री कल्कि जी का कार्य करना है। मुझे (इन बताई गई परेशानियों) से निकालिए। मुझे रास्ता दीजिए, मैं आपको प्रसाद, दक्षिणा भेंट (चढ़ाना) चढ़ाऊँगा/चढ़ाऊँगी।

काली मां

हे काली मां आप प्रथम महाविद्या, तंत्र की अधिष्ठात्री देवी, समय और मृत्यु की स्वामिनी हैं। आप चंडी रूप में दुष्ट असुरों का नाश कर उनका रक्त पान करती हैं। आप शमशान रूप में समस्त अघोरी, दुराचारी, तांत्रिक, अतृप्त, प्रेत और पैशाचिक शक्तियों पर शासन करती हैं। आप रक्षा रूप में मनुष्य की समस्त विपत्तियों से रक्षा करती हैं। हे काली मां कल्कि नाम से जुड़कर अपनी अराधना करने वाले भक्तों पर अतिशीघ्र प्रसन्न होकर उनके पूर्व जन्मों के दोषों का नाश कर सुख और सौभाग्य प्रदान करती हैं। हे काली जी अपनी परेशानियाँ बताकर—मुझे श्री कल्कि जी का कार्य करना है। मुझे (इन बताई गई परेशानियों) से निकालिए। मुझे रास्ता दीजिए। मैं आपको प्रसाद, दक्षिणा भेंट (चढ़ाना) चढ़ाऊँगा/चढ़ाऊँगी।

उपचार स्वप्न, जागृत, वाणी एवं मानसिक अवस्था में होने पर—

1) यदि अनुभव में अघोरी, दुराचारी, तांत्रिक, अतृप्त, प्रेत और शैतानी शक्तियाँ दिखाई दें, किसी तरह की दुर्घटना, खून-खराबा, चोरी, डकैती या आतंकवादी घटनाएं दिखाई पड़ें तो 1 रुपया 5 बताशे या 20 रुपये का दक्षिणा और प्रसाद का संकल्प होता है।

प्रार्थना : हे काली मां, मैं यह 1 रुपया 5 बताशे या 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। कलियुग के नेतृत्व में उसकी जो भी आसुरी (अनुभव के अनुसार) शक्ति मुझपर प्रहार करके (अनुभव का विवरण) या (प्रत्यक्ष घटना के अनुसार) मुझे, मेरे परिवार, घर और व्यापार को तबाह और बर्बाद करना चाहती है, इस संकल्प के द्वारा उन्हें उनका भाग दें, उन्हें तृप्त और संतुष्ट करें, उनके हर दैहिक, दैविक, भौतिक, शारीरिक और मांसिक प्रहार से मेरी, मेरे परिवार घर और व्यापार की रक्षा करें, मुझे आयु और आरोग्यता का दान दें। स्वस्थ

शरीर से, सुखी भाव और वैभवता के साथ अपने परिवार के सदस्यों के साथ जीते हुए मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

2) अनुभव में यदि भीषण अग्नि कांड, बड़ी आतंकवादी घटनाएं, प्रत्यक्ष में किसी भी तरह का कोई बड़ा सरकारी झमेला (S.Tax, I.Tax, Custom, Exise, DRI इत्यादि) किसी बड़ी प्रेत, शैतानी शक्ति का पीछे पड़ जाना, किसी बड़े और प्रभावशाली व्यक्ति का दुश्मन बन जाना इत्यादि घटनाओं में 1 नं० वाले उपचार के साथ।

1 जायफल, 2 इलायची, 22 लौंग, पंचमेवा के टुकड़े, 2 सुपारी और कपूर की 1 टिकिया का संकल्प करके ऊपर लिखी प्रार्थना के साथ काली जी के धूने में डाल देना चाहिए। यदि काली जी के मंदिर के धूने में डालना संभव न हो तो घर के हवन कुण्ड में हवन करते समय काली मां के नाम से उसमें डाल दें।

3) यदि अनुभव में कोई प्रेत या शैतानी शक्ति प्रहार करते हुए दिखाई दे तो 1 गोला/गट पर रोली या सिंदूर से सतिया बनाकर मोली/कलावे के 7 लपेटे बांधकर काली मां के चरणों में प्रार्थना के साथ अर्पण कर देना चाहिए। यदि आप घर में हवन करते हो तो 1 गोला/गट काली मां के नाम से संकल्प करके हवन में डाल दें। (यह ज्यादा प्रभावी होता है)

प्रार्थना : हे काली मां, मैं यह गोला (अनुभव में जो भी शैतानी शक्ति दिखाई पड़ी है) उस शक्ति के निमित्त 1 रुपया, 5 बताशे दक्षिणा के साथ संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा हूँ, इसे स्वीकार करें। उसे उसका भाग दें, उसे तृप्त और संतुष्ट करें, उसके लोको में उसे वापिस भेजे, वहाँ से आने के उसके सारे रास्ते बंद करें। या उसका दमन करें, उसका नाश करें पर उसके हर प्रहार से मेरी रक्षा करें। मुझे कल्कि जी की प्रसन्नता का काम करना है।

4) जिस तरह 3 नं० वाले उपचार में काली मां के गोले का संकल्प किया गया है उसी तरह 2 नं० वाले अनुभवों के उपचार के साथ यमुना महारानी के नाम से 1 गोले और 1 रुपया और 5 बताशे दक्षिणा का संकल्प किया जाना चाहिए। यमुना महारानी के नाम से संकल्प प्रार्थना करके गोले को और दक्षिणा को यमुना नदी में ऊपर से फेंक देना चाहिए। जहाँ पर यमुना नदी नहीं हो वहाँ पर इस गोले और दक्षिणा को भगवान श्री कृष्ण के चरणों में अर्पण करके प्रार्थना करें कि वो इस संकल्प को यमुना महारानी तक पहुँचा दें। यह एक पूरक (Complimentory) उपचार है।

नोट : काली मां को सफ़ेद बर्फी, कलाकंद, बताशे इत्यादि चढ़ाया जाता है।

मां सरस्वती

हे मां सरस्वती आप बुद्धि, ज्ञान, चेतना, विद्या, संगीत और कला की देवी हैं। आप ब्रह्म ज्ञान की संरक्षिका और वेदों की जननी हैं। देवी महात्म्य के ज्ञान श्लोक के अनुसार हे मां आप सरस्वती गौरी मां के शरीर से उत्पन्न हुई हैं। जगत को धारण करने वाली (महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती) तीन महाशक्तियों में से आप एक हैं। हे मां आप ब्राह्मणों पर विशेष कृपा करती हैं, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण ब्रह्म ज्ञान के अधिकारी

होते हैं। नील सरस्वती के रूप में महाविद्या मां तारा का आप एक रूप भी हैं।

हनुमान जी के योगी-योगिनी

हे श्री कल्कि मण्डल के आदिगुरु श्री हनुमान जी महाराज, मैं 5 रु०/20 रु०/129 रु० (अनुभव के अनुसार) आपकी योगी-योगिनियों को प्रसाद और दक्षिणा के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। जब क्रूर ग्रहों के प्रभाव, आसुरी शक्तियों के प्रहार, इस जन्म और पूर्व जन्मों के मेरे संचित पापों के कारण **1) क)** (प्रगट रोगों, परेशानियों का विवरण) जो कष्ट दे रहे हैं।

ख) अनुभव में कल्कि जी द्वारा दिखाई जा रहे नौकर का जाना, उनका झगड़ा, गाँव जाना अथवा वापिस नहीं आने की दुविधा दिखे।

ग) जब छिपे हुए असाध्य रोग का यदि कोई भी जहर मेरे शरीर में फैलकर मुझे बिस्तर पर सुलाना चाहता है, डॉक्टर, अस्पताल और ऑपरेशन के चक्कर में फँसाकर तबाह और बर्बाद करना चाहता है या कर रहा है, कल्कि जी के कार्य करने से रोकना चाहता है, इस संकल्प के द्वारा अपनी योगी-योगिनियों और सम्बन्धित आसुरी शक्तियों को उनका भाग देकर तृप्त और संतुष्ट करें, मुझे आयु और आरोग्यता प्रदान करें। स्वस्थ शरीर से, सुखी भाव और वैभवता पूर्वक जीते हुए अपने परिवार के सदस्यों के साथ मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

2) जब घर ओर व्यापार में अव्यवस्था, रुकावट और अशांति है, तो भी हनुमान जी की योगी-योगिनियों का संकल्प पूर्ण प्रभावी है।

नोट : यदि अस्पताल, ऑपरेशन या किसी बड़ी बीमारी का अनुभव आता है तो 129 रुपये का संकल्प निकाला जाता है। प्रसाद में 60 रुपये की बूंदी अथवा बूंदी-बेसन के लड्डू, लगाए जाते हैं। 10 रुपये हनुमान जी का प्रसाद चढ़ाते हुए मंदिर में दें बाकी 69 रुपये गरीबों, मंदिर में बैठे ब्राह्मण, ब्राह्मणियों में प्रसाद के साथ बाँट दें।

अपनी आमदनी, सेल्स, तनख्वा, घर खर्च, पॉकेट मनी, किराए, ब्याज आदि के रुपयों में से (कम से कम 1 अधिकतम 10 प्रतिशत) शुभ के रुपयों का संकल्प हे कल्कि भगवान मैं संकल्प करके आपके शुभ के खजाने में रख रही/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। मेरे धन और व्यापार समृद्धि में वृद्धि करें, मुझे आगे बढ़ने का मार्ग दें और बरकत दें जिससे मैं आपके शुभ के खजाने में स्वत: बढ़ौतरी हो। मुझे अपने परिवार के साथ स्वस्थ शरीर से सुख, समृद्धिपूर्वक, वैभवशाली जीवन जीते हुए आपके प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

हे कल्कि भगवान, मैं हक् अनीह् की 5 माला के हवन/जाप का संकल्प करके आपको अर्पण कर रही/रहा हूँ, इसे स्वीकार करें। कलियुग के नेतृत्व में उसकी आसुरी शक्तियाँ प्रहार करके मुझे असाध्य रोगों से पीड़ित कर बिस्तर पर लिटा देना (सुलाना) चाहती हैं, मृत्यु तुल्य कष्ट देकर नारकीय जीवन जीने को मजबूर करना चाहती हैं (जिस रोग का अनुभव आया या जिससे हम पीड़ित हैं उसका विवरण) आपके शुभ व प्रचार के कार्य करने से रोकना चाहती हैं। इस संकल्प के द्वारा मुझे भगवान धनवंतरी वैद्य एवं दुर्गा

जी की योगिनियों की कृपा प्रदान कर रोग से छुटकारा दिलवाएं। उसके चंगुल में फँसने से रोकें, पूर्ण (पूरी) आयु और आरोग्यता प्रदान करें। मुझे स्वस्थ शरीर से, सुखी भाव से वैभवतापूर्वक आपके प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

यज्ञ नारायण भगवान

हे यज्ञ* (नारायण भगवान) मैंने जो भी हवन किया है उसके पूर्ण फल की प्राप्ती के लिये मैं आपको व आपकी पत्नी देवी दक्षिणा के निमित्त

** **संकल्प :** संकल्प हवन शुरु करने से पहले कर लें। पूर्ण आहूति से पहले जब आप घी की चार बूंदे यज्ञ कुण्ड के चार कोनो व एक बीच में यह कह कर आहूति देते हैं, बोलो कल्कि भगवान की जय। बीच में उससे पहले 2 बताशे हवन कुण्ड में यज्ञ नारायण के लिये चढ़ा दें। 1 रुपये का सिक्का मंदिर अथवा पंडित जी को दे दें।

1 रुपया 2 बताशे का संकल्प कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार कर तृप्त और संतुष्ट हों। इस हवन को पूर्णत: प्राप्त करें, जो भूल, त्रुटि, कमी, दोष हो उसे क्षमा करें, उन्हें पूर्ण करें। प्रत्येक आहूति को सम्बन्धित दिव्य शक्तियों तक पहुँचाएं और उनके आशीर्वाद के साथ मुझे वापिस प्रदान करें, मेरी संकल्प प्रार्थना स्वीकार (फलीभूत) हो, सार्थक हो। मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है। * यज्ञ नारायण भगवान श्री विष्णु के ही अवतार हैं।

दुर्गा मां की योगिनियाँ

हे दुर्गा महारानी, मैं 20 रुपये आपकी योगिनियों की दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। आपकी योगिनियाँ जो इस संसार में बीमारी फैलाती हैं। क्रूर ग्रहों के प्रभाव, आसुरी शक्तियों के प्रहार, इस जन्म और पूर्व जन्मों के संचित पापों के अनुसार मनुष्य को बीमारी और दुख प्रदान करती हैं, कर्मों का भुगतान लेकर तबाह और बर्बाद करती हैं।

1) आपकी योगिनियों और सम्बन्धित आसुरी शक्तियों को मुझ से जो भी चाहिए इस संकल्प के द्वारा उन्हें प्रदान कर तृप्त और संतुष्ट करें। क) प्रगट रोगों का विवरण।

ख) अनुभव में कल्कि जी द्वारा जो रोग दिखाए जा रहे हैं।

ग) किसी भी छुपे हुए असाध्य रोग के जहर का नाश करें।

मुझे आयु और आरोग्यता प्रदान करें। स्वस्थ शरीर से सुख, शांति, वैभव और एश्वर्य के साथ जीते हुए मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

2) यदि अनुभव में हिंजड़े दिखाई देते हैं, किसी के विवाह में बाधा है, वैवाहिक जीवन में कलह और अशांति है, बच्चे के गर्भ में न टिकने (Formation) में परेशानी है, विवाह टूटने के अनुभव आ रहे हैं तो भी दुर्गा जी की योगिनियों का संकल्प किया जाता है।

3) यदि कोई बीमारी पीछा नहीं छोड़ रही है, भीतर ही भीतर हमारे शरीर को घुन की तरह खा रही है तो 20 रुपये और 14 पराँठे का संकल्प करके दुर्गा मां के मंदिर में उनके चरणों में प्रार्थना के साथ चढ़ाना चाहिए।

नोट : योगिनियों के प्रसाद में पूड़ी/कचौड़ी-सब्जी और खुले पैसे गरीबों/भिखारियों में बाँटना चाहिए।

विशेष : * जहाँ 20 रुपये संकल्प के हाथ लगवा रहे हैं का निष्कर्ष है कि 15 रुपये अथवा 10 रुपये का प्रसाद बाकी 5 रुपये अथवा 10 रुपये दक्षिणा में चढ़ा दें।

दुर्गा मां हलवा पूड़ी

हे दुर्गा महारानी, मैं यह 10-10-6 हलवा-पूड़ी और 1-1-1 रुपयों के तीन सिक्कों के साथ संकल्प कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। भारत सरकार की दंडनीय शक्तियाँ (पुलिस/एक्साईज/इन्कम टैक्स/सेल्स टैक्स या अन्य कोई भी विभाग) कस्टम/डी.डी.आर छापा मारकर तबाह और बर्बाद करना चाहती हैं एवं यमराज और कलियुग की दंडनीय शक्तियों को उनका भाग (हिस्सा) देकर मुझे परेशानियों से बचाएं। हे मां, यह तीनों (कलियुग, भारत सरकार, यमराज) मेरे बच्चों की शादी, व्यापार में, ज़मीन जायदाद का विवाद खत्म नहीं होने दे रही हैं, इस संकल्प के द्वारा उनका भाग उन्हें दें, उन्हें तृप्त और संतुष्ट करें, उनका ध्यान मेरी तरफ़ से हटाएं, उनसे हर प्रकार से मेरी, मेरे परिवार, मेरे व्यापार की रक्षा कर मेरा कार्य सिद्ध करें, मुझे सुखी भाव से जीते हुए कल्कि जी की प्रसन्नता का कार्य करना है।

* सुगमता न होने पर 26 पूड़ी हलवा की जगह 26 बताशे, तीन 1-1-1 के सिक्के भी कर सकते हैं। जरा समय तो लगता है लेकिन यह भी प्रभावशाली पाया है। * प्रतिदिन यह संकल्प करने वाले पूड़ियां-हलवा हफ्ते अथवा दो हफ्ते में इकट्ठी बनाकर दुर्गा जी के पास भेज सकते हैं।

योगमाया महारानी

हे योगमाया महारानी, मैं यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा हूँ इसे स्वीकार करें। इस जगत की समस्त दैवीय और आसुरी शक्तियाँ आपके सम्मोहन के आधीन हैं। आपकी इच्छा से गतिशील हैं। कलियुग के नेतृत्व में उसकी जो भी अघोरी, दुराचारी, तांत्रिक, शैतानी, मायावी, कुटिल शक्तियाँ मुझे तबाह और बर्बाद करना चाहती हैं। परेशानियाँ कहें (अनुभव के अनुसार) उन्हें मोहित करें, भ्रमित करें, मेरी तरफ से उनका ध्यान हटाएं, उनके प्रहार की दिशा मोड़ें। उन्हें उनका भाग देकर संतुष्ट करें। उनके हर प्रहार से मेरी रक्षा करें। मुझे सुख, सौभाग्य, आयु और आरोग्यता का दान दें। हे मां मैं स्वस्थ शरीर से सुख, शांति, वैभव के साथ जीते हुए कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना चाहता हूँ। मुझे रास्ता दीजिए।

पितृ पित्री तर्पण

तर्पण के लिए जौ, काला तिल और जौ न मिलने पर चावल मिला लें। दाहिने हाथ में जल के साथ लेकर अंगूठे और तरजनी के बीच में दो बार गिरा दें। जिनके नाम से तर्पण करना है उनका नाम बोलें।

1) अमुक का श्राद्ध **2)** अमुक का श्राद्ध समर्पण

प्रार्थना : 1) हे देवी स्वधा आपको प्रणाम। मैं अपने पितरों के नाम से संकल्प करके यह तर्पण कर रहा हूँ। इसे स्वीकार करें, उन्हें प्रदान करें। इस तर्पण को प्राप्त करके वह तृप्त और संतुष्ट हों, मुझ पर और मेरे परिवार पर दया करें, हमें सुख, सौभाग्य, आयु और आरोग्यता का दान दें। मुझे कल्कि जी की प्रसन्नता का कार्य करना है।

2) मैं नरक में रहने वाली अशांत, असंतुष्ट और अतृप्त आत्माओं, पितृ शक्तियों (जो वायु मण्डल में मौजूद मेरे वंशज अथवा दूसरों के वंशज जिनको पहले मेरे से स्नेह/लगाव है अब वह मुझ से और मेरे परिवार से किसी भी तरह का कोई भाग चाहती हैं) के नाम-अनामिका से तर्पण कर रहा हूँ, इसे स्वीकार करें, उन्हें प्रदान करें, उन्हें उनका भाग दें, उन्हें तृप्त और संतुष्ट करें, उनके लोकों में उन्हें वापिस भेजें, वहाँ से आने के उनके सारे रास्ते बंद करें, उनके हर देव-दैविक, शारीरिक, भौतिक और मानसिक प्रहारों से मेरी, मेरे परिवार, घर और व्यापार की रक्षा करें। मुझे कल्कि जी की प्रसन्नता का अति विशिष्ट कार्य करना है।

चित्रगुप्त जी

हे चित्रगुप्त महाराज, मैं यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा हूँ, इसे स्वीकार करें। आप सभी प्राणियों के पाप व पुण्य का हिसाब रखते हैं। पिछले जन्मों व मेरे इस जन्म के मेरे जो भी संचित पाप हैं, इस संकल्प के द्वारा उनका भुगतान करके मेरे खाते से हटाएं। पूर्व जन्मों के मेरे जो भी संचित पुण्य हैं और जाने-अनजाने मैंने भगवान कल्कि के जो भी अच्छे काम किये हैं, इस जन्म के उनके जो भी अच्छे कार्य मैं कर रहा हूँ उन पुण्यों का फल मुझे प्रदान करें जिससे मुझे सुख और सौभाग्य की प्राप्ति हो। मुझे स्वस्थ शरीर से सुख, शांति और वैभवपुर्वक रहते हुए अपने परिवार के साथ रहते हुए कल्कि जी की प्रसन्नता का काम करना है।

यमुना महारानी

संकल्प :

1) हे यमुना महारानी, मैं 4 वस्त्र (मर्दाने/जनाने), सतिया करके मोली/कलावे के सात लपेटे बांधकर 1 गट/गोला, काली धूप, मौली का एक गोला और 5 रुपये संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा हूँ इसे स्वीकार करें। अपने भाई यमराज से कहकर यम की मारक शक्तियों को उनका भाग दें, उन्हें तृप्त और संतुष्ट करें, उनसे हर प्रकार से मेरी रक्षा करें, मुझे जीवन दान दें। मुझे नहीं मरना। मुझे स्वस्थ शरीर से सुख, शांति, वैभवपूर्वक अनेक वर्षों तक जीवित रहते हुए अपने परिवार के सदस्यों के साथ कल्कि जी की प्रसन्नता का कार्य करना है।

अनुभव :

क) यदि अनुभव में अपनी मृत्यु दिखाई दे तो ऊपर लिखा हुआ संकल्प किया जाता है।

ख) यदि अनुभव में गोली लगी हुई दिखाई दे, तो जितनी गोलियों के घाव होंगे उतने केवल 5 रुपयों के सिक्के का संकल्प प्रार्थना के साथ जाएगा।

2) यदि मृत्यु का अनुभव बार-बार आए, तबाही और बर्बादी भी दिखाई दे, नरक

की अतृप्त प्रेत और पितृ शक्तियाँ दिखाई दें तो ऊपर लिखे संकल्प के साथ 1 सीधा, पानी की बोतल और 5 रुपये का भी संकल्प नीचे लिखी प्रार्थना के साथ जाता है—हे यमुना महारानी.....मैं 4 वस्त्र (मर्दाने/जनाने), सतिया करके मोली/कलावे के सात लपेटे बांधकर 1 गट/गोला, काली धूप, मौली का एक गोला, 5 रुपये और 1 सीधा (आटा, दाल, चावल, चीनी, नमक, पानी की बोतल (घर से भरकर)) संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। नरक में पड़ी, मुझे, मेरे परिवार को दुख देने वाली अतृप्त, कुटिल, शैतानी शक्तियाँ, प्रेत शक्तियाँ, पितृ-पित्रियाँ, यम की मारक शक्तियों के साथ मिलकर मेरे प्राण लेने चाहती है, मेरे परिवार को तबाह और बर्बाद करना चाहती है, यमराज और देवी स्वधा के माध्यम से उन्हें उनका भाग दें, उन्हें तृप्त और संतुष्ट करें, उनके उचित लोकों में उन्हें भेजें, उनके हर प्रहार से मेरे प्राणों की और मेरे घर-परिवार की रक्षा करें, मुझे जीवन दान दें, सुख, सौभाग्य और पूर्ण आयु प्रदान करें। इसी स्वस्थ शरीर से सुख, शांति, वैभव और ऐश्वर्य पूर्वक रहते हुए मुझे अपने परिवार के सदस्यों के साथ कल्कि जी की प्रसन्नता का काम करना है, अपने नाती और पातों का विवाह देखना है।

3) हे यमुना महारानी, जो दैवीय शक्तियाँ कलियुग की कुटिल शक्तियों के चंगुल में फँसकर अंधे कुएं में कैद हैं, यमराज के माध्यम से कलियुग की उन दंडनीय शक्तियों को उनका भाग दिलवाकर, दैवीय शक्तियों को मुक्ति प्रदान करें और उन्हें हमारी रक्षा के लिये भेजें। मुझे कल्कि जी की प्रसन्नता का काम करना है।

नोट : यह 2 नं० वाली प्रार्थना के साथ की पूरक प्रार्थना है।

4) जब तक कोई सही आयु प्रदान का अनुभव नहीं आए, यमुना जी का 5 रुपये का रोज संकल्प चलता रहेगा।

बगुलामुखी मां

हे बगुलामुखी मां, आप दस महाविद्याओं में से एक हैं। आदिकाल में एक अति तीव्र भयंकर तूफान ने प्रकट होकर सृष्टि का विनाश प्रारम्भ किया। सभी देवी-देवता सौराष्ट्र प्रदेश में एकत्र होकर आदि महाशक्ति से मदद की प्रार्थना करने लगे। उस समय हरिद्र सरोवर से मां बगुला आप प्रकट हुईं। देवताओं की प्रार्थना से प्रसन्न होकर आपने उस तूफ़ान को शांत कर सृष्टि की रक्षा की। हे महाशक्ति आप दाएं हाथ में मुदगल धारण करती हैं, जिससे आप दुष्टों का नाश, आसुरी, षड्यंत्रकारी शक्तियों का दमन करती हैं। आप बाएं हाथ से अपने भक्त के शत्रुओं की जीभ खींचकर उनकी बुद्धि, विवेक, वाणी और गति को स्तम्भित (स्थिर) करती हो। आप महाशक्ति

स्तम्भन (स्थिरता) उच्चारण और वशीकरण की स्वामिनी हैं। भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र की संहारक शक्ति में मां बगुला आप ही विद्यमान हैं। शत्रु, षड्यंत्रकारी, छद्मवेशधारी, तांत्रिक शक्तियों के हर प्रहार से आप अपने भक्त की रक्षा करती हैं, विरीत परिस्थितयों का सामना करके उन्हें अपने भक्त के अनुकूल बनाने की शक्ति प्रदान करती हैं, हर मुकदमें में विजय प्रदान करती हैं। हर प्रकट जीव/वस्तु प्रत्यक्ष

(visible) और वस्तु अप्रकट जीव/वस्तु अप्रत्यक्ष (invisible) होकर शुन्य में किस रूप में रहती है, ब्रह्माण्ड के इस गूण रहस्य का ज्ञान हे महाशक्ति आप ही के पास है।

हे बगुलामुखी माँ, मैं यह 20 रुपये (इसमें 15 रुपये का प्रसाद, 5 रुपये दक्षिणा) अथवा 1 रुपये, 2 बताशें आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। कलियुग के नेतृत्व में जो भी कुटिल, शैतानी, षड्यंत्रकारी, छद्मवेशधारी आसुरी शक्तियाँ मुझपर प्रहार करके मेरे मान, सम्मान, यश और प्रतिष्ठा, व्यापार, सुख-समृद्धि का नाश करना चाहती हैं, समाजिक रूप से मुझे निन्दा का पात्र बनाना चाहती हैं, मेरे मन और मस्तिष्क पर प्रहार करके मुझे मानसिक रूप से विक्षिप्त और पंगु बनाना चाहती हैं (अनुभव का विवरण अपनी परेशानी बताकर), उनका मुख मस्तिष्क बांधें, उन्हें स्तम्भित (स्थिर) करके उनमें कील ठोको, उनका दमन करो, नाश करो, उनसे मुझे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करें। अपनी दिव्य शक्तियों और तेज का सुरक्षा कवच मुझे प्रदान करो, उनके हर दैहिक, दैविक, भौतिक, शारीरिक और मानसिक प्रहारों से मेरी रक्षा करो। मुझे कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है। मुझे रास्ता दो।

हे बगुलामुखी मां, अपनी परेशानियाँ बताकर—मुझे श्री कल्कि जी का कार्य करना है। मुझे (इन (बताई गई) परेशानियों) से निकालिए। मैं आपको प्रसाद, दक्षिणा भेंट (चढ़ाना) चढ़ाऊँगा/चढ़ाऊँगी।

नोट : बगुलामुखी मां को पीली बर्फी, नुकती, बूंदी, बेसन के लड्डू का प्रसाद चढ़ा सकते हैं।

शंकर भगवान (भोले नाथ) का रुद्राभिषेक

इस ब्रह्माण्ड की समस्त अघोरी, प्रेत, पैशाचिक, कुटिल, शैतानी शक्तियाँ, अतृप्त पितृ शक्तियाँ पूर्ण रूप से शंकर भगवान (भोलनाथ) के आधीन हैं। वो ब्रह्माण्ड को संचालन करने वाली तीन महाशक्तियों में से एक हैं। शंकर भगवान के दो अधिकार क्षेत्र हैं। एक तरफ़ वह सृष्टि के संहारक हैं तो दूसरी तरफ़ शिव स्वरूप में सभी दुखों और कष्टों का नाश करने वाले महादेव हैं।

कल्कि नाम से जुड़े हुए 1 रुपये अथवा 5 रुपये और पंचामृत के एक छोटे से अभिषेक को (जो इनके पूरे परिवार का किया जाता है) भोलेनाथ एक रुद्राभिषेक का फल प्रदान करके कल्कि भक्तों की विशेष रक्षा करते हैं।

1) अनुभव में आसुरी शक्तियों के प्रतीक स्वरूप उड़ता हुआ तिलचट्टा, छिपकली, मगरमच्छ, आग उगलता हुआ ड्रैगन, साँप, अजगर, शेर, बंदर या किसी भी तरह का जानवर प्रहार करता हुआ या ऐसे ही खड़ा/बैठा दिखाई पड़ता है तो संकल्प प्रार्थना के साथ किया हुआ एक अथवा पांच अभिषेक एक ही दिन एक ही बार में हम बारी-बारी हम 5 अभिषेक कर सकते हैं। इन सभी प्रहारों से कल्कि भक्त की रक्षा करता है।

2) स्वप्न अनुभव में हवन और खाना बनाने वाली आग के अलावा दिखाई देने वाली किसी भी तरह की अग्नि विनाश की सूचक होती है। यह आसुरी शक्तियों का

तबाह और बर्बाद करने वाला प्रचण्ड प्रहार होता है, पर एक या पांच अभिषेक का संकल्प उन शक्तियों को उनका भाग देकर शांत कर तृप्त और संतुष्ट करता है और उनके हर प्रहार से कल्कि भक्त की रक्षा शर्तीया होती है बशर्ते समय रहते अभिषेक करता है।

3) यदि पितृ शक्तियाँ बार-बार दिखाई पड़े या कोई भुगतान मांगती हुई दिखाई पड़े तो नांदीमुख श्राद्ध का संकल्प करके किया हुआ एक अभिषेक ही उनके ऋण से कल्कि भक्त और उसके परिवार को मुक्त कर देता है।

4) अनुभव में यदि अतृप्त पितृ अपनी या औरों की शक्तियाँ एक से अधिक बार दिखाई देतीं हैं तो पितृ लोक की स्वामिनी देवी स्वधा और भोलेनाथ के नाम से एक सीधा, पानी की बोतल और 5 रुपये का संकल्प उन पितृ शक्तियों को तृप्त और संतुष्ट करने के लिये कल्कि भक्त और उसके परिवार की रक्षा करता है।

5) शनिवार को गाय के कच्चे दूध में काले तिल मिलाकर कल्कि हवन महामंत्र की एक माला का शिवलिंग पर एक अभिषेक (108 बार) शनि, राहू और केतू ग्रह के दोष को शांत करता है। यह तब तक करते रहना चाहिए जब तक कोई सही अनुभव न आ जाए।

6) सोमवार को गाय के कच्चे दूध में काला तिल मिलाकर कल्कि हवन महामंत्र की एक माला का शिवलिंग पर एक अभिषेक मार्केश योग से कल्कि भक्त के प्राणों की रक्षा करता है। इसके साथ ही सोमवार को महामृत्युंजय मंत्र की तीन माला का हवन किया जाता है। कुछी हफ्तों में मार्केश की दशा कट जाती है और अनुभव में कल्कि जी इसका संकेत भी देते हैं।

7) यदि जीवन में बहुत ज्यादा परेशानी आ जाए तो तीन केलों के साथ पंचामृत का अभिषेक शीघ्र ही उन परेशानियों से बाहर निकलने का रास्ता देता है।

8) यदि कुण्डली में बुद्ध ग्रह खराब है और उसके कारण परेशानियाँ आ रही हैं, पति-पत्नि में बे वजह कलह है तो 11 भिंडी (ऊपर से टोपी काटकर चढ़ायें) के साथ किया हुआ अभिषेक इस ग्रह के दोष को धीरे-धीरे शांत कर देता है।

पंचामृत तैयार करने की विधि : यह कलियुग है (मनुष्य गायों को ही काट कर खा रहे हैं, श्रेष्ठ तो गाय का दूध ही है नहीं मिले तो जो उपलब्ध हो उपचार न रोकें) गाय का कच्चा दूध, शहद, चीनी, गंगाजल, घी, दही से पंचामृत बनाया जाता है।

प्रार्थना : 1) हे भोलेनाथ, कलियुग की जो भी अघोरी, तांत्रिक, प्रेत, पैशाचिक और अतृप्त पितृ शक्तियाँ आपके गणों के साथ मिलकर मुझपर प्रहार करके मुझे तबाह और बर्बाद करना चाहती हैं (अनुभव का विवरण), अभिषेक के संकल्प के द्वारा उन्हें उनका भाग देकर तृप्त और संतुष्ट करें, उनके लोकों में उन्हें वापिस भेजें, उनके हर प्रहार से मेरी, मेरे परिवार, घर और व्यापार की रक्षा करें, मुझे सुख, सौभाग्य, आयु और आरोग्यता का दान दें। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक जीवन जीते हुए कल्कि जी के प्राकट्य का विशिष्ट कार्य करना है।

2) नांदीमुख श्राद्ध—हे भोलेनाथ, मैं नांदीमुख श्राद्ध का संकल्प करके यह अभिषेक आपको अर्पण कर रहा हूँ, इसे स्वीकार करें। संबंधित अतृप्त पितृ शक्ति को उसका भाग

देकर संतुष्ट करें। उसे मुझसे और मेरे परिवार से जो भी चाहिए इस संकल्प के द्वारा उसे प्रदान करें (मेरे घर और परिवार में उसका प्रवेश बंध करें)। मुझे स्वस्थ शरीर, सुखी भाव से वैभवतापूर्वक अपने परिवार के लोगों के साथ जीते हुए कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

भैरों बाबा (भैरव जी)

हे भैरव बाबा, देवाधिपति महेश्वर के साक्षात स्वरूप और अमर अवतार हैं। ब्रह्मा, विष्णु एवं भगवान शिव से अनेक वरदान और अधिकार प्राप्त होने के कारण आप अन्य सभी देवों और ईश्वर के अन्य अवतारों से अधिक शक्तिशाली हैं। आप परम उदार, दयालु और भक्तवत्सल हैं। भगवान कल्कि का नाम जुड़ने पर आप छोटे-छोटे साधारण संकल्पों से ही कल्कि भक्तों के बड़े संकटों का टाल देते हैं। भैरों बाबा उपचार स्वप्न जागृत वाणी एवं मानसिक अवस्था में होने पर

1) 1 रुपया 2 बताशे या 20 रुपये 1 मीठा रोट शनिवार या रविवार अनुभव, लक्षण और प्रार्थना

यदि अनुभव में अघोरी, दुराचारी, तांत्रिक, अतृप्त, प्रेत और शैतानी शक्तियाँ दिखाई दें, किसी तरह की दुर्घटना, खून-खराबा, चोरी, डकैती या आतंकवादी घटनाएं दिखाई पड़ें तो 1 रुपया 2 बताशे या 20 रुपये 1 रोट का संकल्प होता है।

*शिव पुराण के अनुसार इसके प्राकट्य की कथा इस प्रकार है : एक बार महर्षि सतुत्व की जिज्ञासा से सभी देव तथा ऋषिगण सुमेरू पर्वत पर ब्रह्मा जी के पास गए और उनसे 'अव्यय तत्व ' के बारे में पूछा। ब्रह्मा जी ने स्वयं को 'सर्वातिशायी परम तत्व' रूप बताया। जब यह बात विष्णु भगवान को मालूम हुई, तो उन्होंने ब्रह्मा जी को अज्ञानी कह कर अपने को ही परम तत्व के रूप में प्रतिपादित किया। किंतु जब वेदों से पूछा गया तो उन्होंने शिव को ही सर्वश्रेष्ठ परम तत्व बताया। इस पर भी ब्रह्मा जी और भगवान विष्णु ने माह वश उनके कथन का खण्डन कर दिया। उसी समय एक दिव्य तेज पुन्ज के मध्य एक नीली पुरुषाकृति प्रगट हुई, जिसे देखकर ब्रह्मा का पंचम सिर कोप से प्रज्वलित हो उठा। ब्रह्मा ने कहा—चंद्रशेखर! डरो मत। पूर्वकाल में तुम मेरे भाल स्थान से उत्पन्न हुए थे। मैंने ही तुम्हारा नाम 'रुद्र' रखा था। तुम मेरे पुत्र हो। अत: मेरी शरण में आ जाओ। ब्रह्मा जी की इस गर्वपूर्ण उक्ति से भगवान शिव को बहुत क्रोध आया और उन्होंने भीषण विकराल पुरुष को प्रकट कर के कहा ''काल की तरह शोभित होने के कारण तुम कालराज हो, भीषण होने के कारण भैरव हो, अत: तुम कालभैरव हो। दुष्ट आत्माओं का मर्दन करके तुम आमर्दक कहाओगे, काशी के तुम अधिपति रहोगे।'' भगवान शिव से इन वरों को प्राप्त करके श्री भैरव ने अपनी वामांगुली के नरवाग्र से ब्रह्मा की उस अपराधी सिर को काट दिया। लोक मर्यादा की रक्षा हेतू शिव ने तदन्तर भैरव को ब्रह्म हत्या से मुक्त होने के लिये कापालिक व्रत धारण करके वाराणसी में निवास करने का आदेश दिया। जहाँ वो काल भैरव के रूप में विराजमान हैं। इसीलिए मंत्र शास्त्रों में भगवान शिव के रौद्र रूप को भैरव कहा गया है, वेदों में उसे रुद्र कहा गया है। ''जिसके भय से अग्नि एवं सूर्य तपते

हैं, इन्द्र, वायु, और मृत्यु के देवता अपने-अपने कार्य में तत्पर हैं, श्रुतियाँ जिस सहस्त्रशीर्ष महा भयंकर वेद पुरुष का वर्णन करती हैं। '' तंत्र शास्त्र में भी उसे ही भैरव कहा गया है।

2) यदि ऊपर लिखा 1 नं० वाला उपचार धीमा लगे और ऐसे लगे कि किसी ऐसी परेशानी ने घर और व्यापार को जगड़ लिया है जिससे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा है, या एक के बाद एक परेशानी आती जा रही है, कलह और अशांति खत्म नहीं हो रही है अथवा जमीन जायदाद का विवाद नहीं सलट (निबट) रहा है तो हफ्ते में 6 दिन एक पेपर पर भैरों बाबा का नाम लिखकर पिन से 20 रुपये का नोट लगाकर चाहें तो उसपर अपनी परेशानी भी लिख दें, आप और आपका परिवार अपनी अपनी अलग अलग परेशानियाँ मानसिक अथवा बोलकर अन्त में कहें हे भैरों बाबा भगवान कल्कि जी के बताए अनुसार मैं बुधवार को आपको यह 20 रुपये और 4 रोट (मीठा परांठा थोड़ी सौंफ डालकर) अर्पण करूंगा तो इससे रास्ता मिलना शुरु हो जाएगा.....अन्तोगत्वा सफल होंगे।

प्रार्थना : परेशानियाँ बताने के बाद प्रतिदिन एवं बुधवार को 4 रोट दक्षिणा के 20 रुपये के हाथ लगाते समय—हे भैरों बाबा, आज बुधवार के दिन मैं यह 20 रुपये 4 मीठे रोट संकल्प करके आपको अर्पण कर रहा/रही हूँ, इसे स्वीकार करें। हमारी रक्षा करने वाली दैवीय शक्तियों को शक्ति प्रदान करें, हमें परेशान करने वाली कलियुग की आसुरी शक्तियों को उनका भाग देकर संतुष्ट करें, उनके लोकों में उन्हें अथवा जिसने हमें फाँसा है उन्हीं के पास वापिस भेजें। मुझे सपरिवार, स्वस्थ शरीर से, सुखीभाव, वैभवतापूर्वक भगवान श्री कल्कि जी का कार्य करना है। हमें रास्ता दीजिए।

3) यदि अघोरी, तांत्रिक, शैतानी प्रेत शक्तियाँ अनुभव में प्रहार करते दिखाई दें, जादू-टोना करते हुए दिखाई दें, यदि ऐसा लगे कि किसी ने हमारे घर-परिवार और व्यापार पर नजर लगा दी है तो शनिवार/रविवार को भैरों बाबा को शराब की एक छोटी बोतल (पऊआ) और 5 रुपया दक्षिणा के संकल्प और ऊपर बताई प्रार्थना के साथ चढ़ा देना चाहिए। पंडित जी यदि प्रसाद रूप में देते हैं प्रसाद न खुद (स्वयं) लें अथवा न घर लाएं। मंदिर के बाहर ही बाँट दें।

4) यदि ऐसा लगे कि शैतानी शक्तियों ने हमें चारों तरफ से जकड़ लिया है, घर की दीवार भी दुश्मन हो गई है, घर के कोने-कोने से नकरात्मक किरणें (Negative waves) आती हुई दिखाई दें अथवा मालूम पड़े तो 547 रुपये का विक्रम तांत्रिक के नाम से संकल्प करके शनिवार या रविवार के दिन भैरों बाबा को शराब और दक्षिणा के रूप में अर्पण कर देना चाहिए। पंडित जी यदि प्रसाद रूप में देते हैं प्रसाद न खुद (स्वयं) लें अथवा न घर लाएं। मंदिर के बाहर ही बाँट दें।

इससे यह स्पष्ट है कि भैरव जी के रूप में भगवान शिव ने एक ऐसी शक्ति को प्रगट किया जो दैवीय और आसुरी दोनों शक्तियों पर समान रूप से शासन करती हैं। इसीलिए भगवान कल्कि के 12 देवी-देवताओं के सुरक्षा कवच में भैरव बाबा का विशेष स्थान है। आसुरी शक्तियों के किसी भी प्रहार से अपनी रक्षा करने के लिए कोई भी कल्कि भक्त अपने अनुभव के अनुसार भगवान कल्कि का नाम जोड़कर केवल 1 रुपया-2 बताशे, 20

रुपया-1 मीठा रोट, या शराब की 1 बोतल का भैरों बाबा के नाम से ज्यों ही संकल्प करता है, भैरों बाबा की दिव्य शक्तियां उसी समय जागृत होकर उस आसुरी शक्ति को उसका भाग देकर कल्कि भक्त की रक्षा करती है, उस भक्त की रक्षा करने वाली दैवीय शक्तियों को शक्ति प्रदान करती है और उसे परेशानी से बाहर निकालती हैं।

नोट : आम धारणा है कि मां वैष्णो देवी के दर्शन को जाने के समय भैरव बाबा का जो मंदिर है, वो रुद्र-अवतार भैरव जी का है। पर यह गलत है। वास्तव में वह मंदिर भैरव नाथ नाम के एक सिद्ध तांत्रिक भैरवनाथ योगी जो गुरु गोरखनाथ का शिष्य था। अपनी अपरा शक्ति के अहंकार में उसने मां वैष्णो देवी की शक्ति को ललकारा था, उन पर बुरी नजर डाली थी। अनेक अवसर देने के बाद जब मां वैष्णो देवी ने उसका वध किया तब उसके कटे सिर ने पुत्र रूप में मां वैष्णो देवी से क्षमा याचना की। चूंकि वह एक महान तपस्वी था, मां वैष्णो देवी ने उसे क्षमा किया और उसके कटे हुए सिर को अमरता प्रदान करके यह वरदान दिया कि उसके दर्शन और उपासना के बिना मां वैष्णो देवी की दर्शन-यात्रा पूजा अधूरी रहेगी इसीलिए हर भक्त मां वैष्णो देवी के दर्शन करने के बाद भैरोनाथ के मंदिर का दर्शन करता है।

सूर्य भगवान

दैवीय जगत की प्रमुख शक्तियों में से सूर्य भगवान ही इस जगत के ऐसे प्रत्यक्ष देवता हैं जो प्रतिदिन अपनी अनंत किरणों के तेज से एक पिता की तरह पृथ्वी, देवता और असुरों सहित तीनों लोकों का पालन करते हैं। इनकी किरणों में प्रचंड अग्नि का वास है जिससे वह स्वयं भी व्याकुल हो जाते हैं इसलिए सृष्टि के प्रारंभ से ही भगवान सूर्य को जल द्वारा अर्घ्य दिया जाता है, जो इन्हें अत्यंत प्रिय है क्योंकि वह इन्हें शीतलता प्रदान करता है। जिस तरह एक पिता इच्छा न होने पर भी अपने लाडली पुत्री-पुत्रों की हर इच्छा को पूरी करता है—क्योंकि संपूर्ण लोकों में जितनी भी क्रियाएं होती हैं उन सब का पूर्ण फल देनें में यह पूर्ण समर्थ हैं। उसी तरह अर्घ्य के साथ भगवान श्री कल्कि का नाम जुड़ते ही सूर्य देव अत्यंत प्रसन्न होकर कल्कि भक्तों के असंभव कार्यों को संभव कर देते हैं, इसलिए हर कल्कि भक्त को प्रतिदिन सूर्य भगवान के जो बारह नाम इस प्रकार हैं— * आदित्य, दिवाकर, भास्कर, प्रभाकर, सहस्त्रांशु, त्रैलोक्यलोचन, हरिदश्वश्च, विभावसु, दिनकर, द्वादशात्मक, त्रयोमूर्ति, सूर्य। इनका उच्चारण करके नमस्कार करें एवं तांबे के लोटे में गुलाब/ गेंदा फूल, चावल और चीनी के साथ जल में डाल कर, रोली से लोटे पर सतिया बनाकर भगवान सूर्य को गायत्री मंत्र के साथ पंजे के बल बन पड़े तो खड़े होकर तीन बार में अर्घ्य देना चाहिए। अपनी हर परेशानी आप सूर्य भगवान से एक सच्चे पिता की तरह कहें और आप देखेंगे कि कितनी जल्दी आपको परेशानी से निकलने का रास्ता मिलता है।

प्रार्थना : हे सूर्य भगवान! आप असम्भव को सम्भव करने वाले हैं। आप मुझपर अपनी ही नहीं और भी देवी-देवताओं की कृपा कराते हैं। (एक या दो परेशानी बताकर) मुझे इनसे निकालो, मुझे रास्ता दो। मुझे मेरे परिवार को आयु और आरोग्यता प्रदान करें

(जो परेशानी है वह कहें) मुझे कल्कि जी के प्रचार का काम करना है मुझे रास्ता दो।

गाय माता

शास्त्रों में गाय को माँ के नाम से संबोधित किया जाता है क्योंकि माँ के दूध की तरह ही गाय के दूध से हमारा पोषण होता है। गाय में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास होता है इसलिए इसे बहुत ही पवित्र माना जाता है। हर हिन्दू परिवार में खाना बनते समय गाय के नाम की पहली रोटी निकाली जाती है क्योंकि गाय के नाम से निकाला गया संकल्प 33 करोड़ देवी देवताओं को तृप्त करता है और उनकी कृपा और आशीर्वाद हमें प्रदान करता है। गाय के गोबर में माँ लक्ष्मी का और मूत्र में माँ गंगा का वास है * इसलिए पूजा में पंचकर्म और पंचगव्य का विशेष स्थान है। भगवान श्री कल्कि का अवतार गौ, विप्र, धर्म व भक्तों की रक्षा के लिये हुआ है इसलिए कल्कि नाम से जुड़ा हुआ गाय का संकल्प बहुत ही प्रभावशाली है। गाय माता में निवास करने वाली 33 करोड़ दैवीय शक्तियाँ जाग्रत होकर कल्कि भक्तों की रक्षा करती हैं और उन्हें हर परेशानी से निकलने का रास्ता देती हैं। पर सप्तमात्काओं का मन्दिर बना हुआ है।

ब्रह्माणी संतान प्राप्ति के लिये

मां के गर्भ में जीव को स्थापित करके ब्रह्मा जी सृष्टि चक्र को आगे बढ़ाते हैं। मां के गर्भ में पल रहा जीव अत्यंत ही असुरक्षित होता है। ब्रह्माण्ड की अनेक आसुरी शक्तियाँ ऐसी होती हैं जो इन भ्रूणों के भक्षण के लिये लालायित रहती हैं। उन्हें मौका चाहिये, और यह मौका उन्हें जीव के पूर्व जन्मों के पापों के भुगतान के रूप में मिलता है। गर्भस्त शिशु की रक्षा के लिये ब्रह्मा जी ने ब्राह्मणी नाम की एक तीव्र शक्ति को नियुक्त किया है जो **सप्तमात्काओं** में से एक है। गर्भवती माता यदि संकल्प और पूजा द्वारा ब्राह्मणी जी से अपने शिशु की रक्षा के लिये प्रार्थना करती हैं तो ब्राह्मणी जी आसुरी शक्तियों के हर प्रहार से उस शिशु की रक्षा कर उसे आयु-आरोग्यता प्रदान करती हैं।

ब्राह्मणी जी सुनहरी आभायुक्त चार मुख और चार हाथ वाली देवी हैं जो लाल कमल पर विराजमान रहती हैं परन्तु उनकी सवारी सरस्वती मां की तरह **हंस** ही है। उन्हें पलाश के पेड़ के नीचे बैठना बहुत अच्छा लगता है।

कल्कि नाम के साथ जुड़ने पर ब्राह्मणी जी का 20 रुपये की दक्षिणा और प्रसाद का संकल्प उनके साथ-साथ **सप्तमात्काओं** की शक्तियों को जागृत कर देता है और ये **सातों शक्तियाँ मिलकर उस गर्भस्त शिशु को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती हैं।**

प्रार्थना:- हे ब्रह्माणी मां मैं 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके अपने होने वाले बच्चे की सुरक्षा के लिये आपको अर्पण कर रही हूँ इसे स्वीकार करें। सप्तमात्काओं की शक्तियों से बना अति विशिष्ट सुरक्षा कवच इसे प्रदान करें जो आसुरी शक्तियों के हर प्रहार से इसकी रक्षा करें। मुझे स्वस्थ शरीर और सुखी भाव से वैभवता पूर्वक अपने इसे बच्चे के साथ रहते हुए कल्कि जी के प्राकट्य का अति विशिष्ट कार्य करना है।

नोट:-

1. अधिकांश लोग यही जानते हैं कि ब्राह्मणी जी ब्रह्मा जी की **पत्नी** हैं, पर ऐसा नहीं है। वो ब्रह्मा जी की **शक्ति** हैं, **पत्नी नहीं।**

2. ब्रह्मा जी formation करते हैं, ब्राह्मणी जी उस formation **की रक्षा करती** हैं। जब तक formation नहीं हो, ब्रह्मा जी का 20 रुपये दक्षिणा और प्रसाद का संकल्प करना चाहिये, पर formation होने के बाद ब्राह्मणी जी का 20 रुपये का संकल्प करना चाहिये।

3. भगवान शिव के हाथों अंधकासुर नामक अत्यंत शक्तिशाली असुर के वध के समय ब्रह्माण्ड की सात शक्तियों ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, कुमार, वरहा, इन्द्र और यम ने अपनी-अपनी शक्तियों ब्राह्मणी, वैष्णवी, महेश्वरी, कुमारी, वराही, इन्द्राणी और चामुन्डा को प्रकट कर भगवान शिव की मदद के लिये भेजा था जो कालांतर में **सप्तमात्काओं** के नाम से पूजित हुईं। ये हमेशा साथ में रहती हैं।

तमिलनाडू के रमानाथापुरम, और राजस्थान के जयपुर में वैतरणी नदी के दशाश्वमेधघाट के किनारे पर सप्तमात्काओं का मन्दिर बना हुआ है।

4. हिन्दू परिवार में गर्भवती माताएं अपने बच्चों की रक्षा की कामना हेतू इन शक्तियों की ही बेमाता, गुप्तमाता इत्यादि के रूप में पूजा करती हैं।

हनुमान जी

व्यापारिक और घरेलू परेशानियां ज्यादा होने पर शनिवार को शाम को हनुमान जी के सामने बैठ कर मंदिर में यह पूजा की जाती है।

सामग्री—लाल कपड़ा, हरा आसन, 11 आटे के दीपक, सूखा गोला, बत्ती, काली उड़द, 11 सिक्के, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक आरती के लिए, माला जपने के लिए गोमुखी।

विधि—मंदिर में हनुमान जी की मूर्ति के आगे लाल कपड़ा बिछाकर 11

दीवों में गोल बत्ती लगाकर उसमें सरसों का तेल और काली उड़द डालें बत्ती को ऐसे चिपकाएं कि वह हिले नहीं। हर दीवे में 4 या 5 दाने उड़द की दाल के डालें दीवे जला कर 11 सिक्के हाथ में लेकर संकल्प करें— हे गुरू जी महाराज, आप कल्कि मंडल के आदि गुरू हैं मैं आप से रास्ता चाहती हूँ मैं यह तांत्रिक पूजा (समय बोलना है) शुरू कर रही हूँ जिसमें मैंने आटे के 11 दीपक जलाए हैं सरसों का तेल और काली उड़द डाल कर।

हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा की एक माला का जाप, गुरू हनुमान जी की आरती, कल्कि जी की आरती करके यह संकल्प ले रही हूँ इसे स्वीकार करें। कलियुग की उन सारी दुराचारी, अघोरी, तांत्रिक, काली, म्लेच्छ, आसुरी शक्तियों का दमन करें। फिर अपनी परेशानी बताएं, हमारी परेशानियों हमें बाहर निकालिए हमारे व्यापार और परिवार की रक्षा करें। मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

आरती मिट्टी की दीवे से करनी है। दीवा आसन पर नहीं रखें। आरती के बाद सारी प्रार्थना दोबारा बोलनी है पूजा का समय समाप्त वाला भी बोलना है। आसन अपना साथ में ले आएं लाल कपड़े पर जो दीवे हैं वो वहीं छोड़ दें।

(समय बोलना है) शुरू कर रही हूँ जिसमें मैंने आटे के 11 दीपक जलाए हैं सरसों का तेल और काली उड़द डाल कर।

हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा की एक माला का जाप, गुरू हनुमान जी की आरती, कल्कि जी की आरती करके यह संकल्प ले रही हूँ इसे स्वीकार करें। कलियुग की उन सारी दुराचारी, अघोरी, तांत्रिक, काली, म्लेच्छ, आसुरी शक्तियों का दमन करें। फिर अपनी परेशानी बताएं, हमारी परेशानियों हमें बाहर निकालिए हमारे व्यापार और परिवार की रक्षा करें। मेरे परिवार को अपना सुरक्षा कवच प्रदान करें मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी के प्राकट्य का प्रचार का कार्य करना है।

आरती मिट्टी की दीवे से करनी है। दीवा आसन पर नहीं रखें। आरती के बाद सारी प्रार्थना दोबारा बोलनी है पूजा का समय समाप्त वाला भी बोलना है। आसन अपना साथ में ले आएं लाल कपड़े पर जो दीवे हैं वो वहीं छोड़ दें।

पितृ दोष निवारण हेतू पितृों के नियमित तर्पण के साथ नीचे लिखी विधि अपनाएं–

16 सोमवार के व्रतों का कल्कि जी के निमित्त संकल्प लें। वैसे तो सोमवार के व्रत शंकर जी के निमित्त किये जाते हैं किन्तु पितृ दोष निवारण के लिये कल्कि जी के निमित्त सोमवार के व्रत किये जाते हैं। व्रत में सवेरे स्नान करके पास के शिवालय में जाकर जल चढ़ाएं, एक समय भोजन ग्रहण करें। प्रसाद चढ़ाने में खोए की बर्फी न लें।

व्रत का फल समर्पण— हे कल्कि भगवान! मैंने जो यह व्रत किया है इसे स्वीकार कीजिए। इसका जो भी फल है उसे मेरे पितृों को जिसको जैसी जरूरत है दिलवा दीजिए और मेरे पितृ दोष को दूर करते हुए (जो भी परेशानी हो बोलें) मेरी परेशानी को दूर करें, मुझे रास्ता दें।

यदि बन पड़े तो प्रत्येक अमावस पर सौ ग्राम उड़द की दाल की पिट्ठी का एक गोला (सांभर बड़ा वाला) बनाकर बीच में जगह बना दें और उसमें छोटी करछी से तीन बार दूध डालते हुए कहें, ''ऊँ पितृ तृप्ताय नम:''

प्रार्थना:– हे स्वधा महारानी! मेरे पितृों को तृप्त कीजिए, उन्हें कल्कि जी के कार्यों की ओर अग्रसर कीजिए, हमें रास्ता दीजिए, हमें स्वस्थ शरीर से सपरिवार, सुखीभाव से वैभवता पूर्वक कल्कि जी के प्रचार का कार्य करना है। फिर इसे पीपल के पेड़ पर या यमुना जी में चढ़ा दें। इससे आपको परिवार, व्यापार में धन की विशेष निश्चित वृद्धि मिलेगी।

भगवान श्री कल्कि को नमस्कार करने का तरीका

जो नमन करें प्रत्येक याम
यश कीर्ति बढ़े हो पूर्ण काम

जो बाल, वृद्ध स्त्री, पुरुष हर तीन घन्टे बाद भगवान् श्री कल्कि को एक दिन मे नमस्कार करता है उसका यश और नाम बढ़ता है तथा उसके रूके हुऐ काम पूरे हो जाते हैं। हर तीन घन्टे बाद अथवा प्रतिदिन सुबह जागने के बाद श्री कल्कि जी के आगे किसी भी दिखाये नमस्कार के तरीके से एक बार में ही हर पहर का ध्यान करते हुये कहें—''हे कल्कि भगवान् मेरा (1) प्रातः चार बजे का नमस्कार, (2) प्रातः सात बजे का नमस्कार, (3) प्रातः दस बजे का नमस्कार, (4) दोपहर एक बजे का नमस्कार, (5) सायं चार बजे का नमस्कार, (6) सायं सात बजे का नमस्कार, (7) रात दस बजे का नमस्कार, (8) मध्यरात्रि एक बजे का नमस्कार स्वीकार किजियें। इसके बाद प्रार्थना करें—''हे श्री कल्कि भगवान! मेरी आठों बार का नमस्कार का फल आपके चरणों में समर्पण है। गउ, विप्र, धर्म और सज्जन लोगों की रक्षा कीजिए। भूमि का भार उतारियें। कलियुग का नाश किजिए। शीघ्र प्रकट हो जाईए।''इसके बाद यदि आप किसी शंका का समाधान चाहें या कुछ माँगना चाहें तो भगवान से माँगें। आप स्वयं ही चमत्कार देखेंगे कि भगवान् कैसे-कैसे अनुभव देकर या प्रत्यक्ष में उसे पूरा करते हैं। कभी स्वप्न अनुभव में कुछ गलत अथवा अच्छा देखें तो उसका उपचार करके बुरा दूर करें, अच्छा पायें यह हम प्रत्यक्ष देख रहें है। जिन कल्कि भक्तों के साथ ऐसा हुआ है ज्यादातर उनके नाम व मोबाईल नंबर लिखकर आपबीतियों में व स्वप्नानुभवों में देते हैं ताकि जिज्ञासु संपर्क करके चमत्कारी श्री कल्कि जी की कृपा से लाभांवित हों।

जैसी करनी वैसी भरनी

—सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)

सुख दुख वास्तव में मनष्य के कर्मों का भुगतान ही है। वास्तव में हमारे जन्म-जन्मान्तर के कर्म हमारा पीछा नहीं छोड़ते। सीधी-साधी जिंदगी चल रही होती है, और हवाएं हमारे किये हुए कर्मों के पन्ने उलटने लगती हैं। कभी इनमें ये ईश्वरीय संदेश होते हैं, कभी ये अपना हिसाब चुकता करते हैं, कभी वरदान बनकर आते हैं और कभी श्राप बनकर। कभी स्वप्न बनकर हमें राह दिखाते हैं, कभी जागृत अवस्था में किसी के मुख से कुछ कहलवा देते हैं। कर्मों का यह बड़ा ही पेचीदा सिद्धांत है। कोई भी घटना अकारण नहीं होती, सृष्टि की हर घटना एक दूसरी घटना से जुड़ी होती है। मनुष्य के इस जन्म के ही पितृ, पितृ नहीं माने जाते, बल्कि कई बार पिछले जन्मों के असन्तुष्ट पितृ इस जन्म में उसका पीछा नहीं छोड़ते। मनुष्य के पास मकान, धन, वैभव सब कुछ होते हुए भी वह अकारण तनावपूर्ण स्थिति में रहता है। सब कुछ अच्छा करते हुए भी उसे उलाहना मिलता है। अचानक असमय भौतिक रुकावटें आना और जल्दी उनका निवारण न होना इस बात का द्योतक है कि इस जन्म के पितृ अगर संतुष्ट भी हैं तो कोई उनके पिछले जन्म का असंतुष्ट पितृ अकारण बाधाएं उत्पन्न करता है। बहुत सी बार और कुल के पितृ भी, यदि उनको अपने कुल के प्राणियों से उनका भाग नहीं मिलता, तो वह भी आपके कामों में बाधा डालते हैं। पर ऐसे वो पितृ होते हैं कि जब आप छोटे होते हैं तो वो आप पर स्नेह रखते हैं क्योंकि आप उनसे इज्जत से बोलते थे और स्नेह से मिलते थे। यदि वे आपको स्वप्नानुभव में दिखें तो, आप उनको बताए तरीके से जल समर्पण कर दें तो वो संतुष्ट हो जाते हैं। इसके लिये आप तपर्ण करते समय उनका ध्यान व नाम लें। उदाहरण के तौर पर, अ को स्नान एवं तीन बार कहेंगे अ को जल समर्पण। अगर रुकावट एक-दो बार से पूरी न हो तो आप यह एक-दो सप्ताह तक भी कर सकते हैं।

चचेरी बहन की तरह तेरी जिंदगी को भूत-प्रेत बर्बाद कर देंगें

एक कल्कि भक्त को अनुभव हुआ कि जैसे उसकी कज़न (चचेरी बहन) की ज़िन्दगी को भूत-प्रेतों-पिशाचों ने जकड़कर बर्बाद कर दिया है वैसे ही उसकी अपनी ज़िन्दगी भी बर्बाद कर देंगे। उन्होंने कल्कि बाल वाटिका पैनल के सदस्यों से बात की। उन्होंने थोड़ा समय मांगा। पैनल की एक सदस्या का गीता पढ़ने का मन हुआ, उन्होंने गीता पढ़ना शुरु किया। गीता के तीसरे अध्याय का पाठ उन्होंने पढ़ा। उस अध्याय का महातम था कि उसे पढ़ने से या सुनने से प्रेत योनी से छुटकारा मिलता है। उन्हें श्री कल्कि जी से रास्ता मिल गया। इसका अर्थ यह था कि इस अनुभव से अपने वंश या अन्य वंश के पितृ जो प्रेत योनी में हैं वो परेशानी में थे। उनके पीछे भूत-प्रेत-पिशाच शक्तियाँ पड़ी हुई थीं और अपना हिस्सा मांग रही थीं। हमने उन्हें उपचार बताया।

उपचार:- स्त्री पितृ के लिये- साड़ी, ब्लाऊज़, पेटीकोट, रुमाल, धूप, दक्षिणा 20 रुपया, गोला कलावा लपेटकर और सीधा।

पुरुष पितृ के लिये- धोती, कुरता, अंगोछा, बनियान, धूप मुट्ठी में भींच के, 20 रुपये, गोला कलावा लपेटकर और सीधा देकर प्रार्थना करें।

प्रार्थना:- हे यमुना महारानी जी नारकीय यंत्रणा भोगने वाले मेरे वंशज या हमसे हिस्सा चाहने वाले भूत, प्रेत, पिशाचों को स्वधा महारानी और यमराज के द्वारा उन्हें उनका भाग देकर उन्हें तृप्त करवाकर उन्हें नरक से निकालकर उनके लोकों में भेजिए और स्वधा महारानी के द्वारा उनके स्थानों पर स्थापित करा दें। हमें कल्कि जी के प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है। हमें रास्ता दिलवाइए।

किसी कारण वश वो यह उपचार नहीं कर पाई। फिर उन्होंने संकल्प लिया, संकल्प करते ही उनकी ज़िन्दगी में अफ़रा-तफ़री मच गई। उन्हें अपने चारो ओर भूत, प्रेत का आभास होने लगा।

यहाँ एक बात और स्पष्ट हुई आलस्य, लापरवाही त्यागकर संयम बरतते हुए हमें इन उपचारों को गंभीरता से करना चाहिए क्योंकि जब हम भगवान का संकल्प करते हैं तो भगवान हमारे पापों का भुगतान करके, हमारे पुण्यों को फलीभूत करके हमारे आगे लाते हैं। इसलिए संयम खोए बिना धैर्य से काम करना चाहिए। कई

बार ये उपचार बहुत मुश्किल लगते हैं। लेकिन हम भक्तों को यही बताना चाहते हैं कि हमारे एक नहीं कई जन्मों के पाप भगवान कटवाते हैं। **चेतो रे भाई पाप कटत है कोटि जन्म के कलियुगी कटत कसाई।** इसमें संशय नहीं करना चाहिए।

सबसे अहम एक और बात सामने आई कि उन कल्कि भक्ता को भृगुसंहिता से पता चला कि वो पिछले जन्म में डॉक्टर थीं जिन्होंने बहुत भ्रूण हत्याएं भी की थीं। बहुत सारे पाप अनजाने में हमसे होते हैं। लेकिन उनका भुगतान तो हमें देना/करना ही पड़ेगा, जिसका जो हिस्सा है उस तक पहुचाएं। हम उऋण तभी होंगे जब हम चेतेंगे-सुधरेंगे।

क्या आप जानते हैं राम जी की सीता, कान्हा की राधा, पितृ की स्वधा महारानी

हमारे सनातन धर्म में श्राद्ध तर्पण का विधान कितने हजारों वर्ष पुराना है। जब चित्रकूट में राजा दशरथ की मृत्यु का समाचार श्री राम को मिला तब श्री राम ने अपने पिता के अंतिम संस्कार के निमित्त जो भी विधान था वह वैदिक रीति से संपन्न किया। उसके बाद वो गया जी में फल्गु नदी के पास पहुँचे और नदी में स्नान करने लगे, तो उन्हें अपने पिता राजा दशरथ के दोनों हाथ पानी में से निकले दिखाई दिये और उनकी छवि भी दिखाई दी। सीता जी ने तुरंत बालू के पिण्ड बनाकर श्री राम जी को उन्हें देने को कहा। उन्होंने ने जैसे ही अपने पिता के हाथों पर पिण्ड रक्खा हाथ तुरंत अदृश्य हो गए। ऐसी मान्यता है कि तब से अब तक गया पितृों का तीर्थ स्थल बना हुआ है। आज भी पितृों की मुक्ति के लिए लाखों लोग वहाँ पिण्ड दान करते हैं। (जो लोग गया श्राद्ध करके आते हैं। वहाँ यह कथा अवश्य सुनाई जाती है।)

2. इतना ही नहीं जिन्होंने शिव पुराण पढ़ा है उसमें लिखा है कि दक्ष पुत्री स्वधा का विवाह पितृों के साथ हुआ और उनकी तीन पुत्रियाँ हुईं— मैना, धन्या, कलावती। पहली पुत्री मैना हिमालय पत्नी मैना हुई जिनसे पार्वती का जन्म हुआ। दूसरी पुत्री धन्या का विवाह राजा जनक से हुआ जिनकी पुत्री सीता जी हुईं। तीसरी पुत्री कलावती द्वापर में वृषभान की पत्नी कलावती हुईं जिनके घर राधा जी का जन्म हुआ। यही स्वधा महारानी जी समस्त पितृ लोक की अधिष्ठात्री देवी हैं (शिव पुराण में वर्णित) इतनी समृद्ध संस्कृति है हमारी, इतनी शानदार विरासत,

हमारे यहाँ वेद पुराणों में सब कुछ है। अगर हम इन सब बातों से अंजान हैं तो दोषी कौन है ?

3. राजा भागीरथ ने अपने 60 हजार पूर्वजों के उद्धार के लिये ही हजारों वर्षों तक तप करके गंगा जी को पृथ्वी पर उतारा था। उनके इस प्रयास के कारण ही गंगा जी का एक नाम भागीरथी भी है। त्रेता में भी कुंती पुत्र कर्ण जब मृत्यु को प्राप्त हुए थे, तो माता कुंती ने युधिष्ठिर से उनके लिये तर्पण कराया था।

अभी मैं ये लेख लिख ही रही थी कि मुझे एक जागृत अनुभव हुआ। मैंने इस लेख के लिये सीता जी का एक उदहारण अपनी ननद से पूछने के लिये फोन की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि उनका ही फोन आ गया। हालचाल के बाद उन्होंने कहा कि रविवार को बाबाजी (दादसरे) की पुण्य तिथि नौमी है, तुम क्या करती हो। मैंने कहा दीदी कुछ भी नहीं। वह बहुत हैरान हुईं कि हमारी दुकान जिनके नाम पर है, उनमें से एक को हम बहुत पूजते हो, और दूसरे के लिये साल में एक दिन भी भोजन नहीं देते। यह बात एकदम मेरे हृदयपटल को छू गई। मैंने उनसे कहा दीदी इसबार से ठीक होगा।

पाश्चात्यता ने हमें इस तरह जकड़ा हुआ है कि हमारे भौतिक मूल्य, परंपरा सबका पतन हो रहा है। हमें विरासत में मिली संस्कृति को उन्होंने समूल नष्ट करने की बहुत कोशिश की, हमें स्कूलों में पढ़ा-पढ़ाकर हमारे दिमागों में ठूसा गया कि हम आर्य हैं बाहर से आए हैं। हमारा कोई इतिहास नहीं है। हमारी संस्कृति चार हजार साल पुरानी है। पितृ भगवान नहीं होते, इन सबकी रक्षा के लिए भगवान श्री कल्कि आ रहे हैं।

समस्त देवी-देवताओं को तर्पण की विधि

देवताओं को हाथ की सात उंगलियाँ व दो अंगूठों को मिलाकर तर्पण किया जाता है। सीधे हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली को अलग रखा जाता है।

सातों उंगलियाँ और दोनों अंगूठों को मिला लोटे से अथवा नल के नीचे से सीधी धार से जल लेकर कहें, 'गणेश जी महाराज को स्नान, गणेश जी महाराज को जल सर्म्पण', (जल सर्म्पण तीन बार करें), हाथ में से जल नीचे श्रद्धापूर्वक छोड़ते रहें। इसी प्रकार गुरुजी को, दुर्गा जी को, हनुमान जी को, सरस्वती जी को, कल्कि भगवान एवम् पद्मा जी को जल भेंट करें।

पितृ तर्पण की विधि

आठों उंगलियों व दोनो अंगूठों को मिलाकर तर्पण करें जिसका बहाव सीधे हाथ वाले अंगूठे की तरफ़ रहेगा।

पितृ वह होते हैं जो अब जीवित नहीं हैं। जीवित को तर्पण नहीं करते। पिता-माता, दादा-दादी, पढ़दादा-पढ़दादी, पितामहदादा-पितामहीदादी, नानी के परिवार की भी आपको देनदारी है सो नाना-नानी, पड़नाना-पड़नानी, पितामहनाना-पितामहीनानी। अपनी तरफ़ की भूलचूक से पितरों का स्नान-३ बार जल सर्म्पण-अपने नाना जी की तरफ़ से भूलचूक से पितरों के स्नान-३ बार जल समर्पण।

एक स्वप्न अनुभव के अनुसार श्री कल्कि सहस्त्रनामावली में लिखा मन्त्र 11 बार बोलें—ऊँ श्री कल्कि पितामह पितामहाय नमः। यह बोलते ही आपके द्वारा किया गया तर्पण बड़े वेग से पितरों तक पहुँचेगा।

मंत्र बॉक्स में भरी गई सिद्ध मंत्र ध्वनियां

जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापति।

卐

श्री कल्कि श्री कल्कि कल्कि, कल्कि कल्कि हरे हरे।

卐

जय श्री कल्कि जय माता दी

卐

ॐ नमः सत्य श्री कल्कि भगवान

卐

राम कहो कृष्ण कहो और कहो कल्कि
श्री कल्कि का नाम है धार गंगाजल की* (ज्ञान)

卐

गुरू जी करेंगे कल्कि जी करेगें* (डावॉडोल)

卐

श्री कल्कि कहना सदा हँसते रहना* (तनाव)

卐

करत करत तव चरण वन्दना बिगड़ी वनत गई
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लइ* (असाध्य परिस्थितियों में)

卐

मन मन्दिर में बैठकर तू झाड़ू रोज लगाया कर
श्री कल्कि श्री कल्कि कल्कि कल्कि के गुण गायाकर* (ध्यान योग)

卐

हक् अनीह् निष्कलंक गोरण्डाह, दुष्टा नाशनम पापहा*
(भय, कष्ट व रोग)

हवन मन्त्र

ॐ नमः श्री कल्कि भगवते मलेच्छ दल हन्त्रे फट स्वाहा

कांवेंट एजूकेशन के साथ संस्कार देने वाली श्री कल्कि बाल वाटिका की वर्कशॉप

कांवेंट एजूकेशन के साथ संस्कार देने वाली श्री कल्कि बाल वाटिका की 8 वर्कशॉप

श्री कल्कि बाल वाटिका, चाँदनी चौक

संरक्षक : श्री ओम प्रकाश गुप्ता 9312533445

संचालक : श्री योगेश गुप्ता 9311033445

भैया : श्री राहुल गोयल, **दीदी :** सुश्री अल्का गोयल

पटपड़गंज

संरक्षिका : सुश्री पूजा गुप्ता 9811858723,

संचालक : श्री रवि अग्रवाल 9873606251

भैया : कुमार अनिरूद्ध, **दीदी :** कुमारी मनस्वी

उस्मानपुर

संरक्षिका : सुश्री मेघना गोयल 9911830603

संचालिका : सुश्री शालिनी पांडे 9582143784

भैया : कुमार उज्जवल पांडे, **दीदी :** कुमारी पूजा

पंजाबी बाग

संरक्षिका : सुश्री मीनाक्षी गुप्ता 9811242748

संचालिका : सुश्री नलिनी गुप्ता 9818647564

भैया : कुमार तनिष्क, कुमार सार्थक, कुमार शुभ

गगन विहार

संरक्षिका : सुश्री इंदू बंसल 9818416191

संचालिका : सुश्री संगीता रस्तोगी 9911453848

भैया : कुमार शौर्य **दीदी :** कुमारी हिना

नोएडा

संरक्षिका : सुश्री मुक्ता शर्मा 9811134378

संचालिका : सुश्री प्रतिभा शर्मा 9717417753

भैया : कुमार देव, **दीदी :** कुमारी अंबिका

किरोड़ीमल कॉलेज

संरक्षिका : सुश्री संजू गड़ौदिया 9312539397

संचालिका : सुश्री इंदू गुप्ता 9891085091

भैया : कुमार श्रेयांस, **दीदी :** कुमारी साक्षी

संरक्षिका : सुश्री सपना खन्ना 9953989891,

संचालिका : सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल 9810135085

भैया : श्री अंकुर गोयल, **दीदी :** सुश्री गरिमा गोयल

श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी प्रोजेक्ट में

मासिक पत्रिका कम्पोजिंग, सम्पादन प्रभारी : श्री राजेश गुप्ता-9811658415, सुश्री पूजा गुप्ता-9811858723, सुश्री मेघना गोयल-9968066625, सुश्री श्रुति सर्राफ-9830157545, सुश्री उपासना गोयल-7503215553

साहित्य सलाहकार समीति : श्री ओ.पी. गुप्ता-9212533445, सुश्री अलका गोयल-9811281271, सुश्री मेघना गोयल, सुश्री इंदु बंसल-9818416191, सुश्री रश्मि गुप्ता-9873345859, सुश्री संगीता गर्ग-9873349478, सुश्री रश्मि गनेरीवाल 9831273015, श्री हेमंत गुप्ता 9321128789, श्री वेद प्रकाश गुप्ता 9810000012, श्री महावीर चौधरी 09830334529

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना : श्री अनिल गड़ोदिया 9810025302, श्री योगेश गुप्ता-9311033445, श्री विपुल गुप्ता

सांस्कृतिक कार्यक्रम (नृत्य, कीर्तन व नाटक लीला) : श्री अंकुर गोयल-9818522778, सुश्री गरिमा गोयल 9999133046, सुश्री शलभ गोयल 9910066506

श्री कल्कि कीर्तन एवं व्यवस्था : श्री पदम गोयल 9910291711, कुमार अक्षय गड़ोदिया 9958161610, चंद्र मोहन राजपूत 9873434237, कुमार महावीर

तीर्थों पर आने-जाने की व्यवस्था : श्री नवीन गुप्ता 9971193344, श्री मनोज पाण्डे 9212703815

मूर्ति, श्रृंगार, पोशाक व लाईट व्यवस्था : श्री हर्षित गुप्ता 9999885277, अंकित गड़ोदिया 9812539397

श्री कल्कि साहित्य व्यवस्था : पं. अनिल कौशिक 9873091036, श्री लव जेटली 9899095693

वेबसाईट प्रभारी : सुश्री श्रेया चौधरी, श्री विष्णु गोयल 7503215553

श्री कल्कि हवन व्यवस्था : सुश्री अलका गोयल 9811281271, श्री रमेश चंद्र

श्री कल्कि मंदिर अखण्ड ज्योत एवं रख रखाव : श्री राहुल अग्रवाल 9891879718, श्री अनिरुद्ध गुप्ता 9873523985, श्री रोहित गुप्ता 9899499848

प्रसादम् व्यवस्था (अब अन्य मंदिरों में भी) : सुश्री वीना गर्ग 9899774568, श्री अमित गर्ग, श्री प्रेम शर्मा 9953048408

रामलीला सवारी व्यवस्था : श्री हितेश गुप्ता 9891248888, श्री आदर्श सिंघल, 9818525601

कानूनी सलाहकार : श्री अमित तिवारी 9310810888 (एडवोकेट दिल्ली हाई कोर्ट)

मानेसर मंदिर निर्माण : श्री सुभाष गुप्ता 9810300045, श्री राजीव गुप्ता 9818000012, सुश्री रेनू बंसल 981000012

मंत्र बॉक्स प्रभारी : श्री आनंद अग्रवाल 9891748188, श्री संतोष वैद्य

गौ सेवा भोजन प्रभारी : सुश्री पूर्णिमा गुप्ता 9810135805, श्री अजय गुप्ता

भक्ति की दो बहिना : सुश्री संजू गड़ोदिया 9312539397, सुश्री रमा गड़ोदिया 9313040701

इंग्लिश हिंदी दुभाषिया : कुमारी साक्षी गड़ोदिया 9868250570

प्रिंटिंग डिजाइनिंग पेपर सलाहकार : श्री अशोक सिंघल, श्री आदर्श सिंघल

असंभव को संभव कराने का स्त्रोत

कल्कि जी के शुभ/धर्म का खजाना

आपकी जो भी आमदनी, बिक्री (प्रतिदिन की सेल्स कम हो, मुनाफा ठीक हो तो) हो उसका 1 प्रतिशत (अर्थात् 100 रूपए में से 1 रूपया अधिकतम 100 रूपए में से 10 रू तक) भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें। भगवान श्री कल्कि की पूजा, हवन करने का सारा खर्चा उस खजाने में से लें। जैसे—पोशाक, फूल, घी, जोत, प्रशाद, माला, आसन इत्यादि। भगवान श्री कल्कि के विविध कार्यों के लिए भी (साहित्य, कीर्तन, भोजन, गऊ, ब्राह्मणों, मंदिर प्रभु के कार्य के लिए धर्म के कार्यों व मंदिर जाने का किराया) इस शुभ के खजाने से लें। अपने जीवन की परेशानियों से निकलने के लिए स्वपनानुभव में यदि दैवीय अथवा पितृ शक्तियाँ आपसे कुछ भी भुगतान माँगती हैं अथवा अपनी परेशानियों से निकलने के लिए किसी भी देवी देवता के निमित्त कुछ भाग निकालना है या उन्हें प्रसाद दक्षिणा चढ़ानी है तो वह सब खर्च कल्कि जी के शुभ के खजाने से ही होगा।

99 रू से 90 रू तक का परिवार का खजाना इसे घर के आवश्यक खर्चे, व्यापार में पुन: लगाने के लिए, भविष्य के खर्चों के लिए, समाज सेवा में लगाने के लिए रखें। समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से आप धन खर्च करके कृप्या फल की कामना न करें

कुपात्र * दाने भवे दरिद्री, दरिद्र प्रभावेण करोति पापम्
पाप प्रभावेण भवेत कुबुद्धि सदा दरिद्री पुनरेव रोगी

— *धर्म का रूपया समाज सेवा (गरीबों की मदद, अनाथालाय, अंधविद्याालय, बाढ़पीढ़ितों की मदद बीमारों, हस्पतालों, गरीब विद्यार्थियों, आदि की मदद) में लगाने से मनुष्य दरिद्र होता है

अगर सामाजिक कार्यों में रूपया लगााते हुए फल की इच्छा रखी तो पशु, पक्षी योनी में जिन्हें वैभव मिलते हैं आपको भी वही वैभव मिलेंगे। जैसे कुत्ते का एयरकंडीशन कार में घूमना, तोते का सोने के पिंजरे में घर के आंगन में टंगे रहना आदि। इसलिये बन पड़े तो समाज की सहायता को दान न समझें न उसका फल चाहें।

भगवान् श्री कल्कि के प्रमुख दिव्य मन्दिर

महाविष्णु का पहला ऐसा अवतार है जिनकी आने से पहले मूर्तियां लग रही है और विधिवत पूजा हो रही है।

दानघाटी मुखारविंद मंदिर, गिरिराज जी, गोवर्धन

श्री कल्कि मंदिर, श्री गौरीशंकर मंदिर, लाल किले के सामने, दिल्ली-6

श्री कल्कि मंदिर, श्री हनुमान मंदिर, किरोड़ीमल कॉलेज परिसर, छात्रा मार्ग, दिल्ली-7

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना यहाँ नई पीढ़ी को निर्भीकता से आगे बढ़ते रहने का संदेश देती है।

कालीघाट मंदिर, कोलकाता (विश्व प्रसिद्ध सिद्ध पीठ जहाँ माँ सती की उंगुली गिरी थी।)

श्री कल्कि मन्दिर, काली मन्दिर, ए जी ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता-64

श्री कल्कि मंदिर, बड़े हनुमान जी, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1

श्री कल्कि मन्दिर, योगमाया मन्दिर, महरौली, नई दिल्ली-30

श्री कल्कि मन्दिर, श्री कालका जी मन्दिर, नई दिल्ली-65

श्री कल्कि मन्दिर, श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान, बसंत विहार नई दिल्ली-57

ईस्कान टैम्पल, वैदिक एक्स्पो, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-65

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर (रानी वाला), पूर्वी कोट, सम्भल-244302

कनॉट प्लेस एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में 20 जून, 2011 को एक ही दिन एक ही नक्षत्र में भगवान श्री हनुमान जी के दो सिद्ध पीठों में श्री कल्कि की दो मूर्तियों की स्थापना

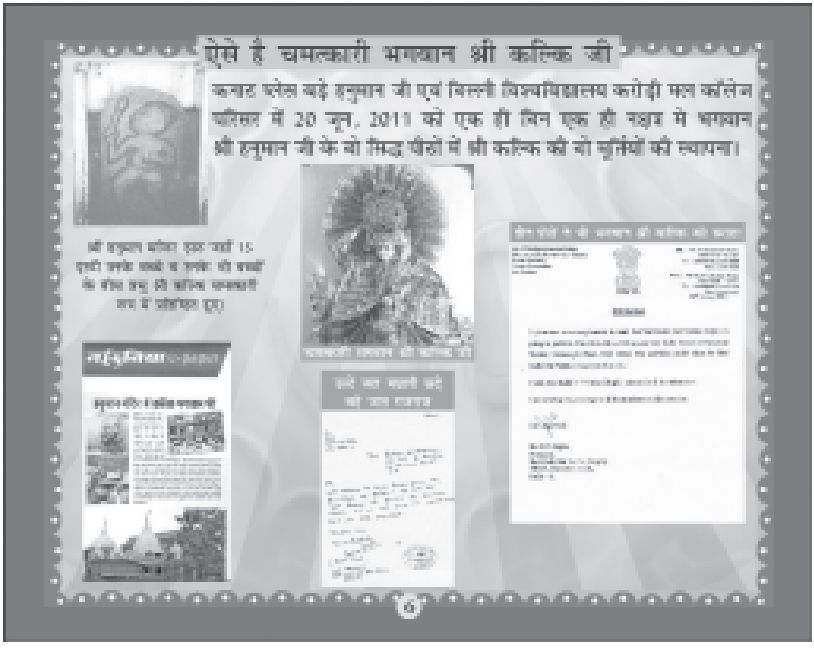

श्री कल्कि जी महाराज मन्दिर, गुप्ता कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)

श्री कल्कि मन्दिर, अमृत परिसर शिवगंगा पुरम, बृजघाट, गढ़ गंगा, उत्तर प्रदेश

शिव मंदिर (प्राचीन पांडव कालीन), मादीपुर, वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

श्री कल्कि मंदिर, श्री रघुनाथ मंदिर, लाल क्वाटर, कृष्णा नगर, दिल्ली-52

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, 815, चौक श्री कल्कि मन्दिर, कुण्डेवालान, श्री कल्कि मार्ग, अजमेरी गेट, दिल्ली-6

विष्णुपाद मन्दिर

गया धाम, गया (बिहार)

श्री कल्कि मंदिर वसुंधरा, कल्कि चौक, धापासी गाविस-9, काठमांडू (नेपाल)

(2) सम्भल पुरी कल्कि तीर्थधाम, नेपाल प्रजापति अंचल, जिला प्यूठान सारी गाविस-1, काठमांडू (नेपाल)

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, मनोकामना, पूर्वी कोट, सम्भल- 244302,

काशी विश्वनाथ शंभु की नगरी वाराणसी में दुर्गा कुंड मंदिर परिसर में सिद्ध श्री हनुमान जी के बराबर भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 19 अक्टूबर 2012 को

श्री कल्कि मन्दिर, नैमिषारण्य तीर्थ (लखनऊ से मात्र 30 कि.मी. पहले) जिला सीतापुर

An application has been received from Shri Kalki Bal Vatika through Pradhan Sri Om Prakash Gupta, V-2, Bahadur Apartment, 9, Raj Narain Road, Civil Line, Delhi-54, for seeking permission to install temple of Lord Kalki. It is averred that in several parts of India in different places, temple of Lord Kalki have been installed. The oldest one is of year 300-400 years. This process is repeatedly increasing in recent times. Installation of temple of Lord Kalki in the compound of ~~sitapur~~ Maa Lalita Devi in Naimisharanya will inevitably be in the interest of Deity, as it will augment the income and will add to the improvement of the temple of Maa Lalita Devi. Further the probability/chances of illegal encroachment by the intruders would be avoided, as reported by the Manager of temple of Maa Lalita Devi.

After considering the entire facts and circumstances and the interest of Deity, I hereby accord permission to construct temple of Lord Kalki in the verandah situated towards left of the eastern gate of the temple in front of Hawan Kund. After the temple is constructed and Deity is vivified, the whole of the temple of Lord Kalki shall vest in Maa Lalita Devi and all the offerings, gifts, income, donations etc. of every kind shall be the part and parcel of the temple of Maa Lalita Devi.

Inform all concerned.

(N.L.Agrawal)
District Judge,
Sitapur.
25.11.2009.

श्री कल्कि मन्दिर, दूधिया भैरों मन्दिर, पुराना किला, दिल्ली
श्री कल्कि मन्दिर, वैष्णों देवी मन्दिर, गुलावी बाग, दिल्ली
दयानंद विहार श्रीरघुनाथ मंन्दिर, दिल्ली • 23 जनवरी, 2011
मंदिर गिंदोड़ियान अग्रवाल, सदर बाजार, दिल्ली • 8 फरवरी, 2011
श्री महाशक्ति दुर्गा मंदिर, गगन विहार, दिल्ली • 12 फरवरी, 2011
श्री कल्कि हनुमान मन्दिर, चंदौसी • 11 मार्च, 2011

कोलकाता में राणी सती मंदिर, काकुड़ गाची • 4 अगस्त 2011
शुभ मूर्ति माँ का मंदिर, चावड़ी बाजार • 6 मई 2011
करावल नगर में श्री गौरी शंकर मन्दिर • 10 अप्रैल 2011
गिरिराज जी में दानघाटी मुखारविंद मंदिर • 21 नवंबर 2011
श्री सनातन धर्म मन्दिर, यमुना विहार • 1 अप्रैल, 2012
श्री हनुमान मंदिर, मॉडल बस्ती, फिल्मिस्तान के सामने,21 जून, 2012
श्री राधा मंदिर, श्री निवास पुरी, आश्रम चौक, नई दिल्ली 21 जून, 2012
श्री हनुमान मंदिर, मैट्रो गेट नं. 2 के सामने, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली 27 जून, 2012
श्री शिव मंदिर गली पासवान, चर्खे वालान, बल्ली मारान, दिल्ली

प्रस्तावित मन्दिर—

माँ चामुंडा मंदिर, मौहल्ला हल्लू सराय, संभल (यू.पी)
भगवान श्री कल्कि की मूर्ति पदमा रमा सहित
अग्रोहा धाम, सिरसा
नैनीताल, मुक्तेश्वर मंदिर